सम्पूर्ण पवित्रता

Complete Purity: 42 अव्यक्त मुरलियों का संग्रह

Writer: Brahma Kumaris Mt Abu

Published by: Shiv Baba Services Initiative

Main Website: www.shivbabas.org | **BK Google**: www.bkgoogle.org

Get more PDF books: shivbabas.org/books

“सम्पूर्ण पवित्रता”
एक धवल क्रांति
(42 अव्यक्त मुरलियों का संग्रह)

सम्पूर्ण पवित्रता - एक धवल क्रांति

1.) 28-07-1972 अपवित्रता और वियोग को संघार करने वाली शक्तियाँ ही - असुर संघारनी है 04

2.) 18-07-1974 सम्पूर्ण पवित्र वृत्ति और दृष्टि से श्रेष्ठ तकदीर की तस्वीर. 07

3.) 27-12-1974 'योगी भव' और 'पवित्र भव' द्वारा वरदानों की प्राप्ति. 11

4.) 05-02-1975 पवित्रता - प्रत्यक्षता की पूर्वगामिनी है और पर्सनेलिटी की जननी 13

5.) 09-05-1977 सम्पूर्ण पवित्रता ही विशेष पार्ट बजाने वालों का श्रृंगार है. 16

6.) 25-06-1977 पवित्रता की सम्पूर्ण स्टेज. 18

7.) 14-01-1979 ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार – पवित्रता. 24

8.) 12-12-1979 रूहानी अलंकार और उनसे सजी हुई मूरतें. 29

9.) 23-01-1980 "पवित्रता का महत्व". 35

10.) 23-03-1981 "फर्स्ट या एयरकन्डीशन में जाने का सहज साधन". 41

11. 06-01-1982 "संगमयुगी ब्राह्मण जीवन में पवित्रता का महत्त्व". 47

12.) 24-03-1982 "ब्राह्मण जीवन की विशेषता है - "पवित्रता". 51

13.) 24-04-1983 रूहानी पर्सनेलिटी. 55

14.) 09-05-1983 ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार स्मृति, वृत्ति, और दृष्टि की स्वच्छता. 59

15.) 01-12-1983 सुख, शान्ति और पवित्रता के तीन अधिकार. …….. 66

16.) 15-03-1984 "होली उत्सव – पवित्र बनने, बनाने का यादगार". …….. 70

17.) 12-04-1984 ब्राह्मण जीवन का फाण्डेशन - 'पवित्रता'. ……. 74

18.) 02-03-1985 वर्तमान ईश्वरीय जन्म - अमूल्य जन्म. …….. 78

19.) 01-03-1986 "होली हंस बुद्धि, वृत्ति दृष्टि और मुख". ……. 82

20.) 22-03-1986 सुख, शांति और खुशी का आधार- "पवित्रता". ……. 88

21.) 25-03-1986 "होली का रहस्य". …… 92

22.) 20-02-1987 याद, पवित्रता और सच्चे सेवाधारी की तीन रेखाएं. ……. 96

23.) 17-10-1987 ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार - 'पवित्रता'. …… 103

24.) 14-11-1987 पूज्य देव आत्मा बनने का साधन - 'पवित्रता की शक्ति'. ……. 110

25.) 03 - 03 - 1988 होली कैसे मनायें तथा सदाकाल का परिवर्तन कैसे हो? ……. 114

26.) 25-03-1990 सर्व अनुभूतियों की प्राप्त का आधार पवित्रता. …… 119

27.) 04-12-1991 सफल तपस्वी अर्थात् प्योरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी वाले. …… 129

28.) 07-03-1993 होली मनाना अर्थात् हाइएस्ट और होलिएस्ट बनना. ……. 136

29.) 23-12-1993 पवित्रता के दृढ़ व्रत द्वारा वृत्ति का परिवर्तन. ……. 149

30.) 06-04-1995 प्योरिटी की रूहानी पर्सनालिटी की स्मृति स्वरूप द्वारा मायाजीत बनो. …… 162

31.) 07-11-1995 ‘‘बापदादा की विशेष पसन्दगी और ज्ञान का फाउण्डेशन - पवित्रता’’ ……. 173

32.) 04-12-1995 ‘‘यथार्थ निश्चय के फाउण्डेशन द्वारा सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करो’’ …….. . 184

33.) 27-02-1996 ‘‘सत्यता का फाउण्डेशन है पवित्रता और निशानी है-चलन वा चेहरे में दिव्यता’’ ….. 196

34.) 01-03-1999 होली मनाना अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र बनकर संस्कार मिलन मनाना. …… 204

35.) 15-12-2001 "एकव्रता बन पवित्रता की धारणा द्वारा रूहानियत में रह मनसा सेवा करो" ……. 217

36.) 25-10-2002 ‘‘ब्राह्मण जीवन का आधार - प्युरिटी की रॉयल्टी’’ ……. 223

37.) 07-03-2005
सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत रखना और मैं-पन को समर्पित करना ही शिव जयन्ती मनाना है. ……. 232

38.) 25-03-2005 मास्टर सूर्य बन अनुभूति की किरणें फैलाओ, विधाता बनो, तपस्वी बनो …… 241

39.) 03-02-2006
"परमात्म प्यार में सम्पूर्ण पवित्रता की ऐसी स्थिति बनाओ जिसमें व्यर्थ का नामनिशान न हो". 249

40.) 30-11-2007
‘‘सत्यता और पवित्रता की शक्ति को स्वरूप में लाते बालक और मालिकपन का बैलेन्स रखो’’. ……. 257

41.) 02-02-2008
‘‘सम्पूर्ण पवित्रता द्वारा रूहानी रॉयल्टी और पर्सनालिटी का अनुभव करते, अपने मास्टर ज्ञान सूर्य स्वरूप को इमर्ज करो’’. 269

42.) 30-11-2008
‘‘फुलस्टाप लगाकर सम्पूर्ण पवित्रता की धारणा कर, मन्सा सकाश द्वारा सुख-शान्ति की अंचली देने की सेवा करो’’. 281

28-07-1972 अपवित्रता और वियोग को संघार करने वाली शक्तियाँ ही - असुर संघारनी है

बाप द्वारा आने से ही मुख्य दो वरदान कौन से मिले हैं? उन मुख्य दो वरदानों को जानते हो? पहले-पहले आने से यही दो वरदान मिले कि - 'योगी भव' और 'पवित्र भव'। दुनिया वालों को भी एक सेकेण्ड में 35 वर्षों के ज्ञान का सार इन ही शब्दों में सुनाती हो ना। पुरूषार्थ का लक्ष्य वा प्राप्ति भी यही है ना। वा सम्पूर्ण स्टेज वा सिद्धि की प्राप्ति तो यही होती है। तो जो पहले-पहले आने से वरदान मिले वा स्मृति दिलाई कि आप सभी आत्माओं का वास्तविक स्वरूप यही है, क्या वह पहली स्मृति वा यह वरदान प्राप्त करते जीवन में यह दोनों ही बातें धारण कर ली हैं? अर्थात् योगी भव और पवित्र भव - ऐसी जीवन बन गई है कि अभी बना रही हो? धारणामूर्त बन गये हो वा अभी धारण कर रहे हो? है तो बहुत कामन बात ना। सारे दिन में अनेक बार यह दो बातें वर्णन करते होंगे। तो यह दो बातें धारण हो गई हैं वा हो रही है? अगर योगीपन में ज़रा भी वियोग है, भोगी तो नहीं कहेंगे। बाकी रही यह दो स्टेज। तो कब माया योगी से वियोगी बना देती है। तो योग के साथ अगर वियोग भी है तो योगी कहेंगे क्या? आप लोग स्वयं ही औरों को सुनाती हो कि अगर पवित्रता में ज़रा भी अपवित्रता है तो उसको क्या कहेंगे। अभी भी वियोगी हो क्या? वा वियोगी बन जाते हो क्या? चक्रवर्ता राजा बनने के संस्कार होने कारण दोनों में ही चक्र लगाती हो क्या - कब योग में, कब वियोग में? आप लोग विश्व के सर्व अत्माओं को इस चक्र से निकालने वाले हो ना। कि बाप निकालने वाला है और आप चक्र लगाने वाले हो? तो जो चक्र से निकालने वाले हैं वह स्वयं भी चक्र लगाते हैं? तो फिर सभी को निकालेंगे कैसे? जैसे भक्ति-मार्ग के अनेक प्रकार के व्यर्थ चक्रों से निकल चुके हो, तब ही अपने निश्चय और नशे के आधार पर सभी को चेलेंज करती हो कि इन भक्ति के चक्रों से छूटो। ऐसे ही वह है तन द्वारा चक्र काटना, और यह है मन द्वारा चक्र काटना। तो तन द्वारा चक्र लगाना अब छोड़ दिया। बाकी मन का चक्र अभी नहीं छूटा है? कब वियोग, कब योग - वह मन द्वारा ही तो चक्र लगाती हो। क्या अब तक भी माया में इतनी

शक्ति रही है क्या, जो मास्टर सर्वशक्तिवान को भी चक्र में ला देवे? अब तक माया को इतनी शक्तिशाली देखकर, क्या माया को मूर्छित करना वा माया को हार खिलाना नहीं आता है? अभी तक भी उसको देखते रहते हो कि हमारे ऊपर वार कर रही है। अभी तो आप शक्ति-सेना और पाण्डव-सेना को अन्य आत्माओं के ऊपर माया का वार देखते हुये रहमदिल बनकर रहम करने का समय आया है। तो क्या अब तक अपने ऊपर भी रहम नहीं किया है? अब तो शक्तियों की शक्ति अन्य आत्माओं की सेवा प्रति कर्त्तव्य में लगने की हैं। अब अपने प्रति शक्ति काम में लगाना, वह समय नहीं है। अब शक्तियों का कर्त्तव्य विश्व-कल्याण का है। विश्व-कल्याणी गाई हुई हो कि स्वयं कल्याणी हो? नाम क्या है और काम क्या है। नाम एक, काम दूसरा? जैसे लौकिक रूप में भी जब अलबेले छोटे होते हैं, जिम्मेवारी नहीं होती है; तो समय वा शक्ति वा धन अपने प्रति ही लगाते हैं। लेकिन जब हद के रचयिता बन जाते हैं तो जो भी शक्तियाँ वा समय है वह रचना के प्रति लगाते हैं। तो अब कौन हो? अब मास्टर रचयिता, जगत्-माताएं नहीं बनी हो? विश्व के उद्धार मूर्त नहीं बनी हो? विश्व के आधार मूर्त नहीं बनी हो? जैसे शक्तियों का गायन है कि एक सेकेण्ड की दृष्टि से असुर संहार करती है। तो क्या अपने से आसुरी संस्कार वा अपवित्रता को सेकेण्ड में संहार नहीं किया है? वा दूसरों प्रति संहारनी हो, अपने प्रति नहीं? अब तो माया अगर सामना भी करे तो उसकी क्या हालत होनी चाहिए? जैसे छुईमुई का वृक्ष देखा है ना। अगर कोई भी मनुष्य का ज़रा भी हाथ लगता है तो शक्तिहीन हो जाती है। उसमें टाइम नहीं लगता। तो आप के सिर्फ एक सेकेण्ड के शुद्ध संकल्प की शक्ति से माया छुईमुई माफिक मूर्छित हो जानी चाहिए। ऐसी स्थिति नहीं आई है? अब तो यही सोचो कि विश्व के कल्याण प्रति ही थोड़ा-सा समय रहा हुआ है। नहीं तो विश्व की आत्माएं आप लोगों को उलहना देंगी कि - आप लोगों ने 35 वर्षों में इतनी पालना ली, फिर भी कहती हो 'योगी भव', 'पवित्र भव' बन रहे हैं, और हमको कहती हो 4 वर्ष में वर्सा ले लो। फिर आपका ही उलहना आपको देंगे। फिर आप क्या कहेंगे? यह जो कहते हो कि अभी बन रहे हैं वा बनेंगे, करेंगे - यह भाषा भी बदलनी है। अभी मास्टर रचयिता बनो। विश्व- कल्याणकारी बनो। अब अपने पुरूषार्थ में समय लगाना, वह समय बीत चुका। अब दूसरों को पुरूषार्थ कराने में लगाओ। जबकि कहते हो दिन-प्रति-दिन चढ़ती कला है; तो चढ़ती कला, सर्व का भला' - इसी लक्ष्य को हर सेकेण्ड स्मृति

में रखो। जो अपने प्रति समय लगाते हैं वह दूसरों की सेवा में लगाने से ऑटोमेटिकली अपनी सेवा हो ही जायेंगी। अपनी अपनी तरक्की करने के लिये पुराने तरीकों को चेंज करो। जैसे समय बदलता जाता है, समस्याएं बदलती जाती हैं, प्रकृति का रूप-रंग बदलता जाता है, वैसे अपने को भी अब परिवर्तन में लाओ। वही रीति-रस्म, वही रफ्तार, वही भाषा, वही बोलना अभी बदलना चाहिए। आप अपने को ही नहीं बदलेंगे तो दुनिया को कैसे बदलेंगे। जैसे तमोगुण अति में जा रहा है, यह अनुभव होता है ना। तो आप फिर अतीन्द्रिय सुख में रहो। वह अति गिरावट के तरफ और आप उन्नति के तरफ। उन्हों की गिरती कला, आपकी चढ़ती कला। अभी सुख को अतीन्द्रिय सुख में लाना है। इसलिये अन्तिम स्टेज का यही गायन है कि अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। सुख की अति होने से विशेष अर्थात् दु:ख की लहर के संकल्प का भी अन्त हो जावेगा। तो अब यह नहीं कहना कि करेंगे, बनेंगे। बनकर बना रहे हैं। अब सिर्फ सेवा के लिये ही इस पुरानी दुनिया में बैठे हैं। नहीं तो जैसे बाबा अव्यक्त बने, वैसे आपको भी साथ ले जाते। लेकिन शक्तियों की जिम्मेवारी, अंतिम कर्त्तव्य का पार्ट नूँधा हुआ है। सिर्फ इसी पार्ट के लिये बाबा अव्यक्त वतन में और आप व्यक्त में हो। व्यक्त भाव में फँसी हुई आत्माओं को इस व्यक्त भाव से छुड़ाने का कर्त्तव्य आप आत्माओं का है। तो जिस कर्त्तव्य के लिये इस स्थूल वतन में अब तक रहे हुये हो, उसी कर्त्तव्य को पालन करने में लग जाओ। तब तक बाप भी आप सभी का सूक्ष्मवतन में आह्वान कर रहे हैं। क्योंकि घर तो साथ चलना है ना। आपके बिना बाप भी अकेला घर में नहीं जा सकता। इसलिये अब जल्दी- जल्दी इस स्थूल वतन के कर्त्तव्य का पालन करो, फिर साथ घर में चलेंगे वा अपने राज्य में राज्य करेंगे। अब कितना समय अव्यक्त वतन में आह्वान करेंगे? इसलिये बाप समान बनो। क्या बाप विश्व-कल्याणकारी बनने से अपने आप को सम्पन्न नहीं बना सके? बनाया ना। तो जैसे बाप ने हर संकल्प, हर कर्म बच्चों के प्रति वा विश्व की आत्माओं प्रति लगाया, वैसे ही फालो फादर करो। अच्छा! ऐसे हर संकल्प, हर कर्म विश्व कल्याण अर्थ लगाने वाले, बाप समान बनने वाले बच्चों प्रति याद-प्यार और नमस्ते।

18-07-1974 सम्पूर्ण पवित्र वृत्ति और दृष्टि से श्रेष्ठ तकदीर की तस्वीर

श्रेष्ठ तकदीर की तस्वीर बनाने वाले, सर्व-आत्माओं के शुभ-चिन्तक व सदा कल्याणकारी परमपिता शिव परमात्मा बोले:-

आज विशेष रूप से, मधुबन निवासियों के तकदीर की लकीर देख रहे हैं। हरेक श्रीमत के अनुसार व बाप-दादा की पालना के अनुसार, अपनी-अपनी तकदीर की लकीर बना रहे हैं। क्या अपनी तस्वीर को सदैव दर्पण में देखते रहते हो? क्या इस तकदीर की लकीर की मुख्य विशेषताओं को जानते हो? स्थूल तस्वीर व चित्र बनाने वाले जानते हैं कि इस चित्र की वैल्यु (वैल्यू) किन-किन विशेषताओं के आधार पर होगी। स्थूल चित्र की मुख्य विशेषता, आकर्षण व वैल्यु उसके फेस के आधार पर ही होती है। कोई भी चित्र को देखेंगे, तो सबकी नज़र पहले उसके चेहरे अर्थात् फेस पर ही जाती है। हर चित्र के नैन-चैन देखते हुए ही, उन चित्रों की वैल्यु की जाती है। वैसे भी, इस तकदीर के तस्वीर की वैल्यु, मुख्य किन बातों पर होती हैं? उसकी मुख्य क्या विशेषतायें हैं। अगर कोई की तकदीर की तस्वीर देखेंगे तो क्या विशेषतायें देखेंगे?

एक मुख्य विशेषता यह देखी जाती है कि तकदीर की तस्वीर में क्या स्मृति पॉवरफुल है अर्थात् सदा स्मृति स्वरूप है? दूसरी बात कि क्या भाई- भाई की वृत्ति सदा कायम रहती है? तीसरी क्या रूहानी अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र दृष्टि है? मूल में ये तीन ही बातें हैं-स्मृति, वृत्ति और दृष्टि। इन तीनों विषेषताओं के आधार से ही दिव्य गुणों का श्रृंगार व चमक, झलक और फलक तस्वीर में दिखाई देती हैं। अगर यह तीनों ही बातें, युक्ति-युक्त व श्रेष्ठ हैं और यह यथार्थ हैं, तो ऐसी तकदीर की तस्वीर ऑटोमेटिकली (स्वत:) सर्व-आत्माओं को अपनी तरफ आकर्षित करती हैं। जैसे स्थूल नेत्रों के नैन-चैन, रास्ता चलते हुए आत्मा को भी अपनी तरफ आकर्षित कर देते हैं, ऐसे ही यह तकदीर की तस्वीर भी सर्व- आत्माओं को अपनी रूहानी दृष्टि व सदा स्मृति और वृत्ति से अपनी तरफ आकर्षित जरूर करती हैं। जैसे स्थूल चित्र देहधारी बनाने में अर्थात् देहअभिमान में लाने के निमित्त बन जाते हैं, ना चाहते हुए भी आकर्षित करते

हैं। कच्चे ब्राह्मणों को व देहीअभिमानी बनने के पुरूषार्थियों को भी आकर्षित कर देह-अभिमानी बना देते हैं। जो ही फिर कम्पलेन्ट करते हैं कि रास्ता चलते चैतन्य चित्र व जड़ चित्र देखते हुए, आत्म अभिमानी से देह-अभिमानी बन जाते हैं। ऐसे ही जब रूहानी चित्र व तस्वीर आकर्षणमय बनावेंगे तो अनेक आत्मायें चलते-फिरते भी देह अभिमानी से निकल देही-आभिमानी बन जावेंगी। जब स्थूल चित्रों में इतनी आकर्षण है, तो क्या आप रूहानी चैतन्य चित्रों में इतनी रूहानी आकर्षण नहीं है, अब यही चैक करना है कि मेरी तस्वीर व चित्र कहाँ तक आकर्षणमूर्त बना है? इस रूहानी चित्र में अगर इन तीन विशेष बातों में से एक की भी कमी है तो वह वैल्युएबल नहीं गिना जायेगा। जैसे स्थूल चित्रों में भी आँख, नाक व कान आदि आदि कोई भी एक चीज यथार्थ नहीं होती है, तो चित्र की वैल्यू कम हो जाती है। चाहे सारा चित्र कितना ही सुन्दर हो, लेकिन मुख्य फेस में, अगर थोड़ी-सी भी कमी रहती है, तो चित्र बेकार हो जाता है या फिर उसकी वैल्यु आधी हो जाती है। ऐसे ही, यहाँ भी इन तीन विशेषताओं में से एक की भी कमी है तो प्रालब्ध व प्राप्ति के समय में से, आधा समय कम हो जाता है अर्थात् सोलह कला से चौदह कला हो जाने से आधी वैल्यू हो गयी ना? इसलिये इन तीनों ही बातों की, हर समय चैकिंग चाहिए। अच्छा, तो क्या ऐसी चैकिंग करते हो?

क्या चैकिंग का यन्त्र जानते हो? यन्त्र द्वारा ही तो चैकिंग करेंगे ना? वह कौनसा यन्त्र है कि जिससे अपने को चैक कर सको? यंत्र है-बुद्धि, लेकिन दिव्य-बुद्धि का नेत्र ब्राह्मण बनते ही दे देते हैं। जैसे, ऐसे कई लौकिक कुल होते हैं जहाँ जन्म लेने से ही युद्ध में व हिंसा में प्रवीण बनाने के लिये बचपन से ही तलवार के बजाय चाकू व लाठी चलाना सिखलाते हैं। जिससे कि उनको अपने शूरवीर कुल की स्मृति रहे। बाप-दादा भी हर ब्राह्मण को माया के वार से बचने के लिये व माया को परखने के लिये यह दिव्य-बुद्धि का नेत्र देते हैं। लेकिन दिव्य-बुद्धि के बजाय, जब साधारण लौकिक बुद्धि वाले बन जाते हैं, तब माया को परख नहीं सकते व माया के वार से बच नहीं सकते व अपनी चैकिंग नहीं कर सकते। पहले यह देखो कि क्या अपना दिव्य बुद्धि-रूपी नेत्र अपने पास कायम है? कहीं दिव्य बुद्धि-रूपी नेत्र पर, माया के संगदोष व वातावरण का प्रभावशाली जंग तो नहीं लग रहा है व कोई डिफेक्ट तो नहीं कर रहा है?

अपनी ऐसी श्रेष्ठ तस्वीर बनाने के लिये मुख्य तीन विशेषताओं को भरने के लिये तीन शब्द याद रखो-(1) निर्वाण स्थिति में होना है (2) निर्मान बनना है और (3) निर्माण

करना है। निर्वाण, निर्माण और निर्मान अर्थात् मान से परे-यह तीन शब्द स्मृति में रखो तो तकदीर की तस्वीर आकर्षणमय बन जायेगी। चलते-चलते इन तीन बातों की कमी हो जाती है। निर्वाण स्थिति में कम रहते हैं, वाणी मे सहज और रूचि से आते हैं। जितनी वाणी से लगन है, उतनी वाणी से परे स्थिति में स्थित होने की लगन व रस कम अनुभव करते हो। निर्मान बनने के बजाए अनेक प्रकार के मान-देह का व पोज़ीशन का, गुणों का, सेवा का, सफलता का व अनेक प्रकार के मान सहज स्वीकार कर लेते हो और स्वीकार करने की इच्छा में रहते हो। आप मान के जिज्ञासु हो, इसलिये स्वमान का कोर्स अभी तक समाप्त नहीं कर सके हो? जब यह जिज्ञासु रूप समाप्त होता है, तब ही स्वमान की स्थिति स्वत: और सदा रहती है। मान, स्वमान को भुला देता है। ऐसे ही नव-निर्माण करने के बजाय या कन्स्ट्रक्शन के बजाय डिस्ट्रक्शन कर देते हो। अर्थात् नव-निर्माण के बजाय कभी-कभी कोई की स्थिति को नीचे गिराने के निमित्त बन जाते हो। सदैव हर कर्म में व हर संकल्प में चैक करो कि यह संकल्प, बोल व कर्म क्या नव-निर्माण के निमित्त हैं? ऐसी स्टेज रखने से सर्व-विशेषतायें स्वत: ही आ जावेंगी। यह है वर्तमान समय पुरूषार्थ को तीव्र करने की युक्ति।

मधुबन निवासियों की रिज़ल्ट अच्छी रही। मेजॉरिटी स्नेह और सहयोग में अथक सेवाधारी रहे हैं और आगे भी बनते रहेंगे। महिमा योग्य तो बने हो, जो कि स्वयं बाप-दादा महिमा कर रहे हैं। अब आगे क्या करना है? मधुबन निवासियों को और सब आत्माओं को विशेष व्रत लेना चाहिए। कौन-सा? व्रत यही लेना है कि हम सब एक मत, एक ही श्रेष्ठ वृत्ति, एक ही रूहानी दृष्टि और एकरस अवस्था में एक-दो के सहयोगी बन, शुभ चिन्तक बन, शुभ भावना और शुभ कामना रखते हुए और अनेक संस्कार होते हुए भी, एक बाप-समान सतोप्रधान संस्कार और स्व के भाव में रहने वाला, स्वभाव बनाने का किला मजबूत बनावेंगे-यह है व्रत। क्या स्वयं के प्रति व सर्व-आत्माओं के प्रति, यह व्रत लेने की हिम्मत है? स्वयं के प्रति तो प्रवृत्ति में रहने वाले और वातावरण में रहने वाले भी करते हैं। मधुबन निवासियों में, न सिर्फ स्वयं के प्रति, साथ ही संगठन के प्रति भी व्रत लेने की हिम्मत चाहिए। यही मधुबन वरदान भूमि की विशेषता है। समझा!

जैसे अभी हिम्मत का प्रत्यक्ष फल दिखाया, ऐसे ही एक-दो को सावधान करते हुए और एक-दो के सहयोगी बनते हुए, इस व्रत को साकार रूप में लाने में सफल हो

जावेंगे। जैसे और ज़ोन वालों को, अपनी-अपनी विशेष सर्विस का सबूत देने के लिये सुनाया है वैसे ही मधुबन निवासियों को भी इस बात का सबूत देना है। इस आधार पर ही, जनवरी में प्राइज मिलेगी। इतने समय में, सबूत देना मुश्किल है क्या? साकार रूप द्वारा व अव्यक्त रूप द्वारा शिक्षा और स्नेह की पालना, कितने समय ली है? पालना लेने के बाद, अन्य आत्माओं की पालना करने के निमित्त बन जाते हैं। क्या ऐसी पालना करने के निमित्त बने हो या अभी तक लेने वाले ही हो? अभी तो पुरानों को, आने वाले नये बच्चों की पालना करनी चाहिए अर्थात् अपने शिक्षास्वरूप द्वारा और स्नेह द्वारा उनको आगे बढ़ाने में सहयोगी बनना है और इस कार्य में दिन-रात बिजी रहना चाहिए। यह अव्यक्त पार्ट भी विशेष नयों के लिये है और पुरानों को तो, अब बाप के समान बन, नई आत्माओं के हिम्मत और उल्लास को बढ़ाना है। जैसे बाप-दादा ने, बच्चों को अपने से भी आगे रखते हुए, अपने से भी ऊँच बनाया, ऐसे ही पुरानों का कार्य है नयों को अपने से भी आगे बढ़ाने का सबूत दिखाना व सर्व-शिक्षाओं को साकार स्वरूप में दिखाना है। पालना का प्रैक्टिकल रूप रिटर्न रूप में देना है।
अच्छा,
ऐसे सपूत बच्चे, अपनी तकदीर की तस्वीर अपनी धारणाओं द्वारा दिखलाने वाले, सदा मूल-मन्त्र और यन्त्र को कर्त्तव्य में लाने वाले, बापदादा के समान हर सेकेण्ड और संकल्प सर्व-आत्माओं के कल्याण के प्रति लगाने वाले, सदा स्व के भाव में रहने वाले, बापदादा समान श्रेष्ठ संस्कार अर्थात् अनादि और आदि संस्कारों को प्रत्यक्ष रूप में लाने वाले, हर संकल्प और हर समय को सफल बनाने वाले सफलतामूर्त्त सितारों को बाप-दादा का याद प्यार, गुडनाइट और नमस्ते।

27-12-1974 'योगी भव' और 'पवित्र भव' द्वारा वरदानों की प्राप्ति

सर्व वरदानों को देने वाले वरदाता शिव बाबा बोले:-
आज की सभा वरदाता द्वारा, सर्व वरदान प्राप्त की हुई आत्माओं की है। वरदाता द्वारा, सर्व वरदानों में, मुख्य दो वरदान हैं, जिसमें कि सर्व वरदान समाये हुए हैं। वह दो वरदान कौन-से हैं? उसको अच्छी तरह जानते हो या स्वयं वरदान-स्वरूप व वरदानी-मूर्त बन गये हो? जो वरदानी-मूर्त हैं; वह स्वयं स्वरूप बन, औरों को देने वाला दाता बन सकता है। तो अपने से पूछो कि क्या मुख्य दो वरदान-स्वरूप बने हैं? अर्थात् योगी भव और पवित्र भव: - इस विशेष कोर्स के स्वरूप बने हो? इसी कोर्स को समाप्त किया है या अभी तक कर रहे हो? सप्ताह कोर्स का रहस्य, इन दो वरदानों में समाया हुआ है। जो भी यहाँ बैठे हैं, क्या उन सबने यह कोर्स, समाप्त कर लिया है या उनका अभी तक यह कोर्स चल रहा है? कोर्स अर्थात् फोर्स भर जाना। सदा योगी-भव और सदा पवित्र-भव का फोर्स अर्थात् शक्ति-स्वरूप का अनुभव नहीं होता, तो उसको शक्ति-स्वरूप नहीं कहेंगे। लेकिन उसे शक्ति-स्वरूप बनने का अभ्यासी ही कहेंगे। क्योंकि स्वयं का स्वरूप, सदा और स्वत: ही स्मृति में रहता है। जैसे अपना साकार स्वरूप, सदा और स्वत: याद रहता है और उसका अभ्यास नहीं करते हो बल्कि और ही, उसको भुलाने का अभ्यास करते हो। ऐसे ही अपना निजी-स्वरूप व वरदानी स्वरूप, सदा ही स्मृति में रहना चाहिए। अपवित्रता का और विस्मृति का नामोनिशान न रहे। इसको कहा जाता है-वरदानों का कोर्स करना। क्या ऐसा कोर्स किया है?
जैसे आप लोग, सप्ताह कोर्स समाप्त करने से पहले, किसी भी आत्मा को क्लास में नहीं आने देते हो, ऐसे ही ब्राह्मण बच्चे, जो यह प्रैक्टिकल कोर्स समाप्त नहीं करते तो बाप-दादा व ड्रामा भी उनको कौन-सी क्लास में आने नहीं देते। अर्थात् फर्स्ट क्लास में आने नहीं देते। फर्स्ट क्लास कौन-सी है?-वे सतयुग के आदि में नहीं आ सकते। जब आप लोग, उन को क्लास में आने नहीं देते, तो ड्रामा भी फर्स्ट क्लास में का अधिकारी नहीं बना सकता। फर्स्ट क्लास में, आने के लिए यह मुख्य दो वरदान प्रैक्टिकल रूप में चाहिए। विस्मृति या अपवित्रता क्या होती है इसकी अविद्या हो जाए। तुम संगम पर उपस्थित हो ना? तो ऐसा अनुभव हो कि यह संस्कार व स्वरूप

मेरा नहीं है, लेकिन मेरे पास्ट जन्म का था और अब है नहीं। मैं तो ब्राह्मण हूँ और यह तो शूद्रों के संस्कार व उनका स्वरूप है। ऐसे अपने से भिन्न अर्थात् दूसरों के संस्कार हैं, ऐसा अनुभव होना-इसको कहा जाता है 'न्यारा और प्यारा।' जैसे देह और देही अलग-अलग वस्तुयें हैं, लेकिन अज्ञानवश इन दोनों को मिला दिया है। वैसे ही 'मेरे' को 'मैं' समझ लिया है। तो इस गलती के कारण कितनी परेशानी व दुःख व अशान्ति प्राप्त की। ऐसे ही, यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो मेरे अर्थात् ब्राह्मणपन के नहीं, लेकिन जो शूद्रपन के हैं, उनको मेरा समझने से, माया के वश व परेशान हो जाते हो अर्थात् ब्राह्मणपन की शान से परे (दूर) हो जाते हो। यह छोटी-सी भूल, चैक करो कि कहीं यह मेरे संस्कार तो नहीं था, यह कहीं यह मेरा स्वरूप तो नहीं? समझा? तो पहला पाठ, पवित्र-भव व योगी-भव को प्रैक्टिकल स्वरूप में लाओ, तब ही बाप-समान और बाप के समीप आने के अधिकारी बन सकते हो।

आज कल्प पहले वाले, बहुत काल से बिछुड़े हुए, बाप की याद में तड़पने वाले व अव्यक्त मिलन मनाने के शुद्ध संकल्प में रमण करने वाले, अपने स्नेह की डोर से बाप-दादा को भी बांधने वाले और अव्यक्त को भी आप-समान व्यक्त में बनाने वाले, वह नये-नये बच्चे व साकारी देश में दूर-देशी बच्चे जो हैं, उनके प्रति विशेष मिलन के लिए बाप-दादा को आना पड़ा है। तो शक्तिशाली कौन हुए? बाँधने वाले या बँधने वाला? बाप कहते हैं-'वाह बच्चे।' 'शाबास बच्चे।' नयों के प्रति विशेष बाप-दादा का स्नेह है। ऐसा क्यों? निश्चय की सदा विजय है। विशेष स्नेह का मुख्य कारण, नये बच्चे सदा अव्यक्त मिलन मनाने की मेहनत में रहते हैं। 'अव्यक्त' रूप द्वारा, व्यक्त रूप से किये हुए चरित्रों का अनुभव करने के सदा शुभ आशा के दीपक जगाए हुए होते हैं। ऐसी मेहनत करने वालों को, फल देने के लिए बाप-दादा को भी विशेष याद स्वत: ही आती है। इसलिए आज की याद, आज की गुडमार्निंग व नमस्ते विशेष चारों ओर के नये-नये बच्चों को पहले बाप-दादा दे रहे हैं। साथ में, सब बच्चे तो है हीं। अब व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन, सदा काल तो हो नहीं सकता। इसलिए आने के बाद, जाना होता है। अव्यक्त रूप में अव्यक्त मुलाकात तो सदाकाल की है। ऐसे वरदानी बच्चों को याद-प्यार और नमस्ते।

05-02-1975 पवित्रता - प्रत्यक्षता की पूर्वगामिनी है और पर्सनेलिटी की जननी

रूहानी रॉयल्टी के संस्कार भरने वाले, सर्वोतम पर्सनेलिटी बनाने वाले, विश्व के परमपिता शिव बोले -

आज बाप सर्व देवों के भी देव, सर्व राजाओं के भी राजा बनाने वाले रचयिता की रचना, अर्थात् श्रेष्ठ आत्माओं के श्रेष्ठ भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। आप ऊंचे-से-ऊंचे, बाप से भी ऊंची बनने वाली आत्मायें हैं। आज ऐसी ऊंची आत्माओं की विशेष दो बातें देख रहे हैं। वह कौन-सी हैं? एक रूहानी रॉयल्टी, दूसरी पर्सनेलिटी। जब हैं ही ऊंचे-से-ऊंचे बाप की ऊंची सन्तान - जिन्हों के आगे देवतायें भी श्रेष्ठ नहीं गाये जाते, राजायें भी चरणों में झुकते हैं, और सर्व नामी-ग्रामी आत्मायें भी भिखारी बन ईश्वरीय प्रसाद लेने के लिए जिज्ञासा रख आने वाली हैं तो ऐसी सर्व- आत्माओं के निमित्त बने हुए आप सभी मास्टर-ज्ञानदाता और वरदाता हो। तो ऐसी रॉयल्टी है? वास्तव में तो प्योरिटी ही रॉयल्टी है और प्योरिटी ही पर्सनेलिटी है। अब अपने को देखो कितने परसेन्ट प्योरिटी धारण की हुई है? प्योरिटी की परख व पहचान हरेक की रॉयल्टी और पर्सनेलिटी से हो रही है।

रॉयल्टी कौनसी है? रॉयल आत्मा को हद की विनाशी वस्तु व व्यक्ति में कभी आकर्षण नहीं होगा। जैसे लौकिक रीति से रॉयल पर्सनेलिटी वाली आत्मा को किन्हीं छोटी-छोटी चीजों में ऑख नहीं डूबती है, किसी के द्वारा गिरी हुई कोई भी चीज स्वीकार करने की इच्छा नहीं होती है, उनके नयन सदा सम्पन्न होने के नशे में रहते हैं, अर्थात् नयन नीचे नहीं होते हैं, उनके बोल मधुर और अनमोल अर्थात् गिनती के होते हैं और उनके सम्पर्क में खुमारी अनुभव होती है, ऐसे ही रूहानी रॉयल्टी उससे भी पदम गुणा श्रेष्ठ है।

ऐसी रॉयल्टी में रहने वाली आत्माओं की कभी भी एक-दूसरे के अवगुणों या कमजोरी की तरफ ऑंख भी नहीं जा सकती। जिसको दूसरा छोड़ रहा है अर्थात् मिटाने के पुरूषार्थ में लगा हुआ है, ऐसी छोड़ने वाली चीज अर्थात् गिरावट में लाने वाली चीज

और गिरी हुई चीज, रूहानी रॉयल्टी वाले के संकल्प में भी धारण नहीं हो सकती व दूसरे की वस्तु की तरफ कभी संकल्प रूपी ऑख भी नहीं जा सकती। तो यह पुराने तमोगुणी स्वभाव, संस्कार, कमज़ोरियाँ शूद्रों की हैं न कि ब्राह्मणों की। शूद्रों की वस्तु की तरफ संकल्प कैसे जा सकता है? अगर धारण करते हैं तो जैसे कहावत है ना कि ''कख का चोर सो लख का चोर'' - तो यह भी सेकेण्ड-मात्र व संकल्पमात्र धारण करने वाली आत्माएं रॉयल नहीं गायी जायेंगी।

रूहानी रॉयल्टी वाली आत्माओं के बोल महावाक्य होते हैं। ये वाक्य गोल्डन वर्शन्स होते हैं, जिन्हें सुनने वाले भी गोल्डन एज के अधिकारी बन जाते हैं। एक-एक बोल रत्न के समान वेल्युएबल होता है वे दु:ख देने वाले, गिराने वाले या पत्थर के समान बोल नहीं होते, साधारण और व्यर्थ भी नहीं होते, समर्थ और स्नेह के बोल होते हैं। सारे दिन के उच्चारण किये हुए बोल ऐसे श्रेष्ठ होते हैं कि हिसाब निकालने पर स्मृति में आ सकते हैं कि आज ऐसे और इतने बोल बोले। रॉयल्टी वाले की निशानी व विशेषता यह है कि पचास बोल बोलने वाले विस्तार के बजाय दस बोल के सार में बोले, क्वॉन्टिटी को कम कर क्वॉलिटी में लाये। रूहानी रॉयल्टी वाले के सम्पर्क में जो भी आत्मा आये, उसे थोड़े समय में भी, उस आत्मा के दातापन की व वरदातापन की अनुभूति होनी चाहिए, शीतलता व शान्ति की अनुभूति होनी चाहिए जो हर-एक के मन में यह गुणगान हो कि यह कौन-सा फरिश्ता था, जो सम्पर्क में आया। थोड़े समय में भी उस तड़पती हुई और भटकती हुई आत्मा को बहुत काल की प्यास बुझाने का साधन व ठिकाना दिखाई देने लगे। इसको कहा जाता है - पारस के संग लोहा भी पारस हो जाए, अर्थात् रूहानी रॉयल्टी वाले की रूहानी नजर से निहाल हो जाए। ऐसी रॉयल्टी अनुभव करते हो?

अब सेवा की गति तीव्र चाहिए। वह तब होगी, जब ऐसी रूहानी रॉयल्टी चेहरे से दिखाई देगी। तब ही सर्व-आत्माओं का उलाहना पूर्ण कर सकेंगे। ऐसी प्योरिटी की पर्सनेलिटी हो कि जो मस्तक द्वारा शुद्ध आत्मा और सतोप्रधान आत्मा दिखाई दे अर्थात् अनुभव कर सके, नयनों द्वारा भाई-भाई की वृत्ति अर्थात् शुद्ध, श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा वायुमण्डल व वायब्रेशन परिवर्तित कर सको। जब लौकिक पर्सनेलिटी अपना प्रभाव डाल सकती है तो प्योरिटी की पर्सनेलिटी कितनी प्रभावशाली होगी? शुद्ध स्मृति द्वारा निर्बल आत्माओं को समर्थी स्वरूप बना सकते हो? ऐसी रॉयल्टी और पर्सनेलिटी स्वयं

में प्रत्यक्ष रूप में लाओ। तब स्वयं को व बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे! अब विशेष रहमदिल बनो। स्वयं पर भी और सर्व पर भी रहमदिल! सहज ही सर्व के स्नेही और सहयोगी बन जायेंगे। समझा? ऐसे भाग्य का सितारा चमक रहा है न? ऐसे धरती के सितारों को सब चमकता हुआ देखना चाहते हैं।

अच्छा, गोल्डन वर्शन्स द्वारा गोल्डन एज लाने वाले, सर्व के प्रति सदा रहमदिल, सर्वगुणों से सम्पन्न, सर्व प्राप्ति करने वाले, एक आत्मा को भी वंचित नहीं रखने वाले ऐसे सदा दाता, रूहानी रॉयल्टी और पर्सनेलिटी में रहने वाले, सदा चमकते हुए सितारों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते!

09-05-1977 सम्पूर्ण पवित्रता ही विशेष पार्ट बजाने वालों का श्रृंगार है

विशेष पार्टधारी आत्माओं प्रति बाप-दादा बोले –

अपने को इस ड्रामा के अन्दर विशेष पार्ट बजाने वाले, विशेष पार्टधारी समझते हो? विशेष पार्ट की विशेषता क्या है, उसको जानते हो? विशेषता यह है कि बाप के साथ साथी बन पार्ट बजाते हो, और साथ-साथ हर पार्ट अपने साक्षीपन की स्थिति में स्थित हो बजाते हो। तो विशेषता हुई - 'बाप के साथ साथी की और साक्षीपन की।' उस विशेषता के कारण ही विशेष पार्टधारी गाए जाते हैं। तो अपने आपको सदा चैक (Check;निरीक्षण) करो कि हर पार्ट बजाते हुए दोनों ही विशेषताएं रहती हैं? नहीं तो साधारण पार्टधारी कहलाए जायेंगे। बाप श्रेष्ठ और बच्चे साधारण! यह शोभेगा नहीं।

विशेष पार्ट बजाने का श्रृंगार कौन सा है? सम्पूर्ण पवित्रता ही आपका श्रृंगार है। संकल्प में भी अपवित्रता का अंश मात्र न हो। ऐसा श्रृंगार निरन्तर है? क्योंकि आप सब हद के, अल्प काल के पार्ट बजाने वाले नहीं हो। लेकिन बेहद का, हर सेकेण्ड, हर संकल्प से सदा पार्ट बजाने वाले हो। इसलिए सदा श्रृंगार की हुई मूर्त अर्थात् सदा पवित्र स्वरूप हो। इस समय का श्रृंगार जन्म जन्मान्तर के लिए अविनाशी बन जाता है। मुख्य संस्कार भरने का समय अभी है। आत्मा में हर जन्म के संस्कारों का रिकार्ड इस समय भर रहे हो। तो रिकार्ड भरने के समय सेकेण्ड-सेकेण्ड का अटेंशन रखा जाता है। किसी भी प्रकार के टेंशन (तनाव) का अटेंशन; टेंशन में अटेंशन रहे। अगर किसी भी प्रकार का टेंशन होता है, तो रिकार्ड ठीक नहीं भर सकेगा। सदा काल के लिए श्रेष्ठ नाम के बजाए, यही गायन होता रहेगा कि जितना अच्छा भरना चाहिए, उतना नहीं भरा है। इसलिए हर प्रकार के टेंशन से परे, स्वयं और समय का, बाप के साथ का अटेंशन रखते हुए सेकेण्ड-सेकेण्ड का, पार्ट बजाओ। मास्टर सर्वशक्तिवान, आलमाइटी अथॉरिटी (ALMIGHTY Authority) की सन्तान - ऐसी नॉलेजफुल (Knowledgeful;ज्ञान सागर) आत्माओं में टेंशन का आधार दो शब्द हैं। कौन से दो शब्द? 'क्यों और क्या?' किसी भी बात में, यह क्यों हुआ? यह क्या हुआ? जब यह दो शब्द बुद्धि में आ जाते हैं, तब किसी भी प्रकार का टेंशन पैदा होता है। लेकिन संगमयुगी श्रेष्ठ पार्टधारी आत्माएं क्यों, क्या का टेंशन नहीं रख

सकती हैं, क्योंकि सब जानते हैं। 'साक्षी और साथीपन' की विशेषता से, ड्रामा के हर पार्ट को बजाते हुए कभी टेंशन नहीं आ सकता। तो अपने इस विशेष कल्याणकारी समय को समझते हुए हर सेकेण्ड के संस्कारों का रिकार्ड नम्बरवन स्टेज में भरते जाओ।

नॉलेजफुल स्टेज अर्थात् इस संगमयुग की स्थिति का आसन जानते हो? भक्ति मार्ग में विद्या की देवी, सरस्वती को कौन सा आसन दिखाया है? इसे क्यों दिखाया है? इसका विशेष गुण कौन सा गाया हुआ है? उसका 'विशेष गुण' (1) भी नॉलेजफुल का ही दिखाया है ना। राइट और रांग (RIGHT And Wrong;सत्य और असत्य) को जानने वाला यह भी नॉलेज हुई ना। तो नॉलेजफुल का आसन भी नॉलेज वाला ही दिखाया है। विशष नॉलेज है 'राइट और रांग को जानने' की (2) दूसरी बात, आपकी स्थिति का यादगार भी आसन के रूप में दिखाया है। सदा शुद्ध संकल्प का भोजन बुद्धि द्वारा ग्रहण करने वाला, सदा की सर्व आत्माओं द्वारा वा रचना द्वारा गुण धारण करने वाला, उसी को मोती चुगने वाला दिखाया है। (3) तीसरी बात, 'स्वच्छता'। स्वच्छता की निशानी सफेद रंग दिखाया है। 'स्वच्छता अर्थात् पवित्रता'। तो सदा नॉलेजफुल स्थिति में स्थित ही रहने की निशानी 'हंस का आसन' दिखाया जाता है। सरस्वती को, सदा सेवाधारी रूप की निशानी, बीन बजाते हुए दिखाया है। यह ज्ञान की वीणा सदा बजाते रहना अर्थात् सदा सेवाधारी रहना। जैसे आसन यादगार रूप में दिखाया है, वैसे सब विशेषताएं धारण कर पार्ट बजाना, यही विशेष पार्ट है। तो सदा ऐसे विशेष पार्टधारी समझते हुए पार्ट बजाओ।

प्रकृति के अधीन तो नहीं हो ना? प्रकृति का कोई भी तत्व हलचल में नहीं लावे। आगे चलकर तो बहुत पेपर आने हैं। किसी भी साधनों के आधार पर, स्थिति का आधार न हो। मायाजीत के साथ-प्रकृतिजीत भी बनना है। प्रकृति की हलचल के बीच - यह क्या? यह क्यों हुआ? यह कैसे होगा? ज़रा भी संकल्प में टेंशन हुआ अर्थात् अटेंशन कम हुआ, तो फुल पास नहीं होंगे। इसलिए सदा अचल होना है। अच्छा।

सदा अपने नॉलेजफुल आसन पर स्थित रहने वाले, हर सेकेण्ड श्रेष्ठ पार्ट बजाने वाले, हर प्रकार के पेपर में फुल पास हो, पास विद् ऑनर (Pass With Honour;सम्मान सहित सफलतामूर्त) बनने वाले, सदा एक बाप की याद के रस में एकरस रहने वाले, ऐसे सदा बाप समान श्रेष्ठ आत्माओं को बाप-दादा का याद-प्यार और नमस्ते।

25-06-1977 पवित्रता की सम्पूर्ण स्टेज

सदा सच्च्ची दिल वाले, सत्यता के आधार पर सर्व के आधार मूर्त बनने वाले, हर अनुभव और प्राप्ति के आधार पर अपने जीवन को श्रेष्ठ मत पर चलाने वाले पुरूषार्थियों के प्रति बाप-दादा बोले:-

बापदादा सभी बच्चों की विशेष दो बातें देख रहे हैं। हरेक आत्मा यथा योग्य तथा यथा शक्ति ऑनेस्ट (Honest;ईमानदार) और होलिएस्ट (Holiest; परमपूज्य) कहाँ तक बने हैं। हरेक पुरुषार्थी आत्मा बाप के सम्बन्ध में ऑनेस्ट अर्थात् बाप से ईमानदार, सच्ची दिल वाले बनने का लक्ष्य रख चल रहे हैं, लेकिन ऑनेस्ट बनने में भी नम्बरवार हैं।

(1) जितना ऑनेस्ट होगा उतना ही होलीएस्ट होगा। होलीएस्ट बनने की मुख्य बात है - 'बाप से सच्चा बनना।' सिर्फ ब्रह्मचर्य धारण करना यह प्यूरिटी की हाइएस्ट स्टेज (Highest Stage;सर्वोच्च स्थिति) नहीं है; लेकिन प्यूरिटी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सच्चाई। ऐसे सच्ची दिल वाले दिलवाला बाप के दिलतख्त नशीन हैं और दिलतख्त नशीन बच्चे ही राज्य राज्यतख्त नशीन होते हैं।

(2) ऑनेस्ट अर्थात् ईमानदार उसको कहा जाता है जो बाप के प्राप्त खजानों को बाप के डायरेक्शन बिना किसी भी कार्य में नहीं लगावे। अगर मनमत और परमत प्रमाण समय को, वाणी को, कर्म को, श्वांस को वा संकल्प को परमत वा संगदोष में व्यर्थ तरफ गंवाते, स्व-चिन्तन की बजाए परचिन्तन करते हैं, स्वमान की बजाए किसी भी प्रकार के अभिमान में आ जाते हैं, इसी प्रकार से 'श्रीमत' के विरूद्ध अर्थात् श्रीमत के बदले मनमत के आधार पर चलते हैं, उसको ऑनेस्ट वा ईमानदार नहीं कहेंगे। यह सब खज़ाने बाप-दादा ने विश्व-कल्याण के सेवा अर्थ दिए हैं, तो जिस कार्य के अर्थ दिए है उस कार्य के बजाए अगर अन्य कार्य में लगाते हैं, तो यह अमानत में ख्यानत करना है। इसलिए सबसे बड़ी ते बड़ी प्यूरिटी की स्टेज है - 'ऑनेस्ट बनना।' हरेक अपने आपसे पूछो कि हम कहाँ तक आनेस्ट बने हैं।

(3) ऑनेस्ट का तीसरा लक्षण है - सदा सर्व प्रति शुभ भावना व सदा श्रेष्ठ कामना होगी?

(4) ऑनेस्ट अर्थात् सदा संकल्प और बोल वा कर्म द्वारा सदा निमित्त और निर्माण होंगे।

(5) ऑनेस्ट अर्थात् हर कदम में समर्थ स्थिति का अनुभव हो। सदा हर संकल्प में 'बाप का साथ और सहयोग के हाथ' का अनुभव हो।

(6) ऑनेस्ट अर्थात् हर कदम में चढ़ती कला का अनुभव हो।

(7) ऑनेस्ट अर्थात् जैसे बाप - जो है, जैसा है बाप बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं; वैसे बच्चे जो हैं, जैसे हैं वैसे ही बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करें। ऐसे नहीं कि बाप तो सब कुछ जानता है, लेकिन बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करना सबसे बड़े ते बड़ा 'सहज चढ़ती कला' का साधन है। अनेक प्रकार के बुद्धि के ऊपर बोझ समाप्त करने की सरल युक्ति है। वा स्वयं को स्पष्ट करना अर्थात् पुरुषार्थ का मार्ग स्पष्ट होना है। स्वयं को स्पष्टता से श्रेष्ठ बनाना है। लेकिन करते क्या हो? कुछ बताते कुछ छिपाते हैं। और बताते भी हैं तो कोई सैलवेशन (Salvation;सहूलियत) के प्राप्ति के स्वार्थ के आधार पर। चतुराई से अपना केस सज-धज कर मनमत और परमत के प्लान अच्छी तरह से बनाकर, बाप के आगे वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के आगे पेश करते हैं। भोलानाथ बाप समझ और निमित्त बनी हुई आत्माओं को भी भोला समझ चतुराई से अपने आपको सच्चा सिद्ध करने से रिजल्ट क्या होती है? बाप-दादा वा निमित्त बनी हुई आत्माएं जानते हुए भी खुश करने के अर्थ अल्पकाल के लिए, 'हाँ जी' का पाठ तो पढ़ लेंगे। क्योंकि जानते हें कि हर आत्मा की सहन शक्ति, सामना करने की शक्ति कहां तक हैं। इस राज को जानते हुए नाराज़ नहीं होंगे। उनको और ही आगे बढ़ाने की युक्ति देंगे। राजी भी करेंगे, लेकिन राज से राजी करना और दिल से राजी करना - फर्क होता है। बनने चतुर चाहते हैं, लेकिन भोले बन जाते हैं। कैसे जो थोड़े में राजी हो जाते हैं। हार को जीत समझ लेते हैं। है जन्म-जन्म की हार, लेकिन अल्पकाल की प्राप्ति में राजी हो अपने आपको सयाना, होशियार समझ विजयी मान बैठते हैं। बाप को ऐसे बच्चों के ऊपर रहम भी पड़ता है कि समझदारी के पर्दे के अन्दर अपने ऊपर सदा काल के अकल्याण के निमित्त बन रहे हैं। फिर भी बाप-दादा क्या कहेंगे? श्रेष्ठ पुरुषार्थ की भावी नहीं है।

(8) ऑनेस्ट अर्थात् किसी भी बातों के आधार पर फाउन्डेशन न हो। हरेक बात के अनुभव के आधार पर, प्राप्ति के आधार पर फाउन्डेशन हो। बात बदली और फाउन्डेशन बदला, निश्चय से संशय में आ गया। और क्यों, कैसे के क्वेश्चन में आ गया, उसको प्राप्ति के आधार पर अनुभव नहीं कहेंगे। ऐसा कमज़ोर फाउन्डेशन छोटी सी बात में हलचल पैदा कर लेता है। जैसे आजकल की एक रमणीक बात बाप के आगे क्या रखते हैं कि 1977 तक पवित्र रहना था, अब तो ज्यादा समय पवित्र रहना मुश्किल है। इसलिए बाप के ऊपर बात रखते हुए खुद को निर्दोष बनाकर खुदा को दोषी बना देते हैं। लेकिन पवित्रता ब्राह्मणों का निजी संस्कार है। हद के संस्कार नहीं है। हद की पवित्रता अर्थात् एक जन्म तक की पवित्रता हद का सन्यास है। बेहद के संन्यासियों को जन्मजन्मान्तर के लिए अपवित्रता का संन्यास है। बाप-दादा ने पवित्रता के लिए कब समय की सीमा दी थी क्या? सलोगन (Slogan) में भी यह लिखते हो कि बाप से सदा काल के लिए पवित्रता सुख-शान्ति का वर्सा लो। समय के आधार पर पवित्र रहना, इसको कौन-सी पवित्रता की स्टेज कहेंगे? इससे सिद्ध है कि स्वयं का अनुभव और प्राप्ति के आधार पर फाउन्डेशन नहीं हैं। तो ऑनेस्ट बच्चों के यह लक्षण नहीं हैं। 'ऑनेस्ट अर्थात् सदा होलीएस्ट।' समझा, ऑनेस्ट किसको कहा जाता है? अच्छा।

ऐसे सदा सच्ची दिलवाले, सत्यता के आधार पर सर्व के आधार मूर्त बनने वाले, हर कदम और प्राप्ति के आधार पर अपने जीवन के हर कदम को चलाने वाले, सदा श्रेष्ठ मत और श्रेष्ठ गति पर चलने वाले, ऐसे तीव्र पुरुषार्थियों को बाप-दादा का याद-प्यार और नमस्ते।

पार्टियों से :

स्वयं को सदा विजयी अनुभव करते हो? मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् सदा विजयी। श्रेष्ठ पार्टधारी आत्माओं का यादगार भी विजयमाला के रूप में है सिर्फ माला नहीं कहते लेकिन 'विजय माला।' इससे क्या सिद्ध होता है? कि श्रेष्ठ आत्मा ही विजयी आत्मा है। इसलिए विजयमाला गाई हुई है। ऐसे विजयी हो? या कभी माला में पिरो जाते, कभी निकल जाते।

किसी भी बात में हार होने का कारण क्या होता है वह जानते हो? हार खाने का मूल कारण - स्वयं को बार-बार चेक नहीं करते हो। जो समय प्रति समय युक्तियां

मिलती, उनको समय पर यूज़ नहीं करते। इस कारण समय पर हार खा लेते हैं। युक्तियां हैं, लेकिन समय बीत जाने के बाद, पश्चात्ताप के रूप में स्मृति में आती - ऐसे होता था तो ऐसे करते.....। तो चेकिंग की कमज़ोरी होने कारण चेन्ज (Change;परिवर्तन) भी नहीं हो सकते। चेकिंग करने का यंत्र है - 'दिव्य बुद्धि।' वैसे चेकिंग का तरीका चार्ट रखना तो है, लेकिन चार्ट भी दिव्य बुद्धि द्वारा ही ठीक रख सकेंगे। दिव्य बुद्धि नहीं तो रांग को भी राईट समझ लेते। अगर कोई यंत्र ठीक नहीं तो रिजल्ट उल्टी निकलेगी। दिव्य बुद्धि द्वारा चेकिंग करने से यथार्थ चेकिंग होती है। तो दिव्य बुद्धि द्वारा चेकिंग करो, तो चेंज हो जाएंगे; हार के बदले जीत हो जाएगी।

सदा अपने को चलते-फिरते लाईट के कार्ब के अन्दर आकारी फरिश्ते के रूप में अनुभव करते हो? जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त फरिश्ते के रूप में चारों ओर की सेवा के निमित्त बने हैं, ऐसे बाप समान स्वयं को भी लाईट स्वरूप आत्मा और लाईट के आकारी स्वरूप फरिश्ते स्वरूप में अनुभव करते हो? बाप-दादा दोनों के समान बनना है ना? दोनों से स्नेह है ना? स्नेह का सबूत है - 'समान बनना।' जिससे स्नेह होता है तो जैसे वह बोलेगा वैसे ही बोलेगा, स्नेह अर्थात् संस्कार मिलाना। और संस्कार मिलन के आधार पर स्नेह भी होता। संस्कार नहीं मिलता तो कितना भी स्नेही बनाने की कोशिश करो, नहीं बनेगा।

तो दोनों बाप के स्नेही हो? बाप समान बनना अर्थात् लाईट रूप आत्मा स्वरूप में स्थित होना और दादा समान बनना अर्थात् 'फरिश्ता'। दोनों बाप को स्नेह का रिटर्न (Return) देना पड़े। तो स्नेह का रिटर्न दे रहे हो? फरिश्ता बनकर चलते हो कि पांच तत्वों से अर्थात् मिट्टी से बनी हुई देह अर्थात् धरनी अपने तरफ आकर्षित करती? जब आकारी हो जाएंगे तो यह देह (धरनी) आकर्षित नहीं करेगी। बाप समान बनना अर्थात् डबल लाईट बनना। दोनों ही लाईट हैं? वह आकरी रूप में, वह निराकारी रूप में। तो दोनों समान हो ना? समान बनेंगे तो सदा समर्थ और विजयी रहेंगे। समान नहीं तो कभी हार, कभी जीत, इसी हलचल में होंगे।

अचल बनने का साधन है समान बनना। चलते-फिरते सदैव अपने को निराकारी आत्मा या कर्म करते अव्यक्त फरिश्ता समझो। तो सदा ऊपर रहेंगे, उड़ते रहेंगे खुशी में। फरिश्ते सदैव उड़ते हुए दिखाते हैं। फरिश्ते का चित्र भी पहाड़ी के ऊपर दिखाएंगे। फरिश्ता अर्थात् ऊँची स्टेज पर रहने वाला। कुछ भी इस देह की दुनिया में होता

रहे, लेकिन फरिश्ता ऊपर से साक्षी हो सब पार्ट देखता रहे और सकाश देता रहे। सकाश भी देना है क्योंकि कल्याण के प्रति निमित्त है। साक्षी हो देखते सकाश अर्थात सहयोग देना है। सीट से उतर कर सकाश नहीं दी जाती। सकाश देना ही निभाना है। निभाना अर्थात् कल्याण की सकाश देना, लेकिन ऊँची स्टेज पर स्थित होकर देना - इसका विशेष अटेंशन हो। निभाना अर्थात् मिक्स नहीं हो जाना, लेकिन निभाना अर्थात् वृत्ति- दृष्टि से सहयोग की सकाश देना। फिर सदा किसी भी प्रकार के वातावरण के सेक में नहीं आएगा। अगर सेक आता तो समझना चाहिए साक्षीपन की स्टेज पर नहीं हैं। कार्य के साथी नहीं बनना है, बाप के साथी बनना है। जहाँ साक्षी बनना चाहिए वहाँ साथी बन जाते तो सेक लगता। ऐसे निभाना सीखेंगे तो दुनिया के आगे लाईट हाउस बन करके प्रख्यात होंगे।

आजकल की लहर कौन-सी है? महारथियों के मन में जैसे शुरू में जोश था कि अपने हमजन्स को अपवित्रता से पवित्रता में लाना ही है। पहला जोश याद है? कैसी लगन थी? सबको छुड़ाने की भी लगन थी; शक्ति भरने की भी लगन थी। आदि में जोश था कि हमजिन्स को छुड़ाना ही है, बचाना है। अभी ऐसी लहर है? चाहे चलते- चलते कमज़ोर होने वाले, चाहे नई आत्मएं जो कि बन्धनयुक्त हैं, ऐसे को बन्धनमुक्त बनाएं - इतना जोश है या ड्रामा कह छोड़ देते हो? वर्तमान समय आप लोगों का पार्ट कौन सा है? वरदानी का, महादानी का, कल्याणकारी का। ड्रामा तो है, लेकिन ड्रामा में आपका पार्ट क्या है? तो यह लहर जरूर फैलनी चाहिए? जैसे फायर ब्रिगेडियर को जोश आता है। आग लग रही है, तो रूक नहीं सकते। तो ऐसी लहर होनी चाहिए। आपकी लहर से उन्हों का बचाव हो। अगर आप लोग ड्रामा कह छोड़ देंगे, या सोचेंगे राजधानी स्थापन हो रही है, तो उन्हों का कल्याण कैसे होगा? नॉलेजफुल होने के कारण यह नॉलेज है कि यह ड्रामा है, लेकिन ड्रामा के अन्दर आपका कर्त्तव्य कौन सा है? तो महारथियों की लहर क्या होनी चाहिए? कुछ भी सुनते हो तो 'शुभचिन्तन' चलना चाहिए, परचिन्तन नहीं। आपका शुभचिन्तन उन्हीं की बुद्धियों को शीतल कर सकता है। आप लोग छोड़ देंगे तो वह तो गए। क्योंकि प्रैक्टिकल में निमित्त शक्तियों का पार्ट है। बाप तो बैक बोन (Backbone;सहारा) है। शक्तियों को कौन सी स्थिति में रहना चाहिए? जैसे देवियों के चित्र में दो विशेषताएं दिखाते हैं। आंखों में मात्र भावना और हाथों से शस्त्रधारी अर्थात् असुर का संहार करने वाली।

मात्र भावना अर्थात् रहम की भावना और संघार की भावना भी। संघार करना अर्थात् उन्होंके आसुरी संस्कारों के खत्म करने का प्लान भी हो और रहम भी हो। लॉफुल (Lawful) और लवफुल (Loveful) का बैलेन्स हो। दोनों साथ-साथ हों। यह जो कमज़ोरी की लहर है, यह ऐसे नहीं कि विनाश के कारण प्रत्यक्ष हो गए हैं, कमज़ोरी बहुत समय की होती, लेकिन अभी छिप नहीं सकते। पहले अन्दर-अन्दर गुप्त कमज़ोरी चलती रहती, अभी समय नजदीक आ रहा है। इसलिए कमज़ोरी छिप नहीं सकती। राजा बनने वाला, प्रजा पद वाले, कम पद पाने वाले, सेवाधारी बनने वाले, सब अभी प्रत्यक्ष होंगे। अन्त में जो साक्षात्कार कहा है, वह कैसे होगा? यह साक्षात्कार करा रहे हैं। बाकी ऐसे नहीं है, कमज़ोरी नहीं थीं अब हुई है - लेकिन अब प्रसिद्ध रूप में चान्स मिला है। जैसे समाप्ति के समय सब बीमारी निकलती, वैसे समाप्ति का समय होने के कारण हरेक की वैरायटी कमज़ोरियां प्रत्यक्ष होंगी। अभी तो एक लहर देखी है और भी कई लहरें देखेंगे। अति में जाना जरूर है, अति हो तब तो अन्त हो। जो भी अन्दर कमज़ोरियां हैं, अन्दर छिप नहीं सकती, किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष रूप में आएगी, लेकिन आपकी भावना रहे कि - इन सबका भी कल्याण हो जाए। आप वरदानी हो तो आपका हर संकल्प, हर आत्मा के प्रति कल्याण का हो। लहरें तो और भी आएगी एक खत्म होगी, दूसरी आएगी, यह सब मनोरंजन के बाइप्लाटस हैं। और पद भी स्पष्ट हो रहे हैं। यह होते रहेंगे। आश्चर्यवत् सीन होनी चाहिए। एक तरफ नए-नए रेस में आगे दिखाई देंगे। दूसरे तरफ थकने वाले, रूकने वाले भी प्रसिद्ध होंगे। तीसरे तरफ जो बहुत समय से कमज़ोरियाँ रही हुई हैं, वह भी प्रत्यक्ष होगी। नथिंग न्यू (Nothing New) हैं, लेकिन रहम की दृष्टि और भावना दोनों साथ हों। अच्छा।

14-01-1979 ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार – पवित्रता

पवित्रता, सुख और शान्ति का ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करने वाले वत्सों के प्रति बाप-दादा बोले:-

आज अमृतवेले बाप-दादा बच्चों के मस्तक द्वारा हरेक की प्यूरिटी (Purity) की परसनाल्टी देख रहे थे - हरेक में नम्बरवार पुरूषार्थ प्रमाण प्यूरिटी की झलक चमक रही थी। इस ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार प्यूरिटी ही है। आप सभी श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठता प्यूरिटी ही है - प्यूरिटी ही इस भारत देश की महानता है, प्यूरिटी ही आप ब्राह्मण आत्माओं की प्रोस्पेर्टी (Prosperty) है जो इस जन्म में प्राप्त करते हो वही अनेक जन्मों के लिए प्राप्त करते हो। प्यूरिटी ही विश्व परिवर्तन का आधार है, प्यूरिटी के कारण ही आज तक भी विश्व आपके जड़ चित्रों को चैतन्य से भी श्रेष्ठ समझता है। आजकल की नामीग्रामी आत्मायें भी प्यूरिटी के आगे सिर झुकाती रहती हैं। ऐसी प्यूरिटी तुम बच्चों को बाप द्वारा जन्म-सिद्ध अधिकार में प्राप्त होती है - लोग प्यूरिटी को मुश्किल समझते हैं लेकिन आप सब अति सहज अनुभव करते हो - प्यूरिटी की परिभाषा तुम बच्चों के लिए अति साधारण है - क्योंकि स्मृति आयी कि वास्तविक आत्म स्वरूप है ही सदा प्योर। अनादि स्वरूप भी पवित्र आत्मा है। और आदि स्वरूप भी पवित्र देवता है, और अब का अन्तिम जन्म भी पवित्र ब्राह्मण जीवन है - इस स्मृति के आधार पर पवित्र जीवन बनाना अति सहज अनुभव करते हो - अपवित्रता परधर्म है पवित्रता स्वधर्म है। स्वधर्म को अपनाना सहज लगता है। आज्ञाकारी बच्चों को बाप की पहली आज्ञा है - पवित्र बनो तब ही योगी बन सकेंगे। इस आज्ञा का पालन करने वाले आज्ञाकारी बच्चों को बाप दादा देख हर्षित होते हैं। उसमें भी विशेष आज विदेशी बच्चों को, जिन्होंने बाप की इस श्रेष्ठ मत को धारण कर जीवन को पवित्र बनाया है, ऐसे पवित्र आज्ञाकारी आत्माओं को देख बच्चों के गुणगान करते हैं। बच्चे ज्यादा बाप के गुणगान करते हैं वा बाप बच्चों के ज्यादा गुणगान करते हैं? बाप के सामने वतन में विशेष श्रृंगार कौनसा है?

जैसे आप लोग यहाँ कोई स्थान का श्रृंगार मालाओं से करते हो - बापदादा के पास भी हर बच्चे के गुणों की माला की सजावट है। कितनी अच्छी सजावट होगी! दूर से ही देख सकते हो ना - हरेक अपनी माला का नम्बर भी जान सकते हैं कि हमारी गुण माला बड़ी है वा छोटी है - बापदादा के अति समीप हैं, सन्मुख हैं वा थोड़ा सा किनारे हैं। समीप किन्हीं की माला होती, यह तो जानते हो ना। जो बाप के गुणों और कर्तव्य के समीप हैं वही सदा समीप हैं - हर गुण से बाप का गुण प्रत्यक्ष करने वाले हैं, हर कर्म से बाप के कर्तव्य को सिद्ध करने वाले समीप रतन हैं।

आज बापदादा प्यूरिटी की सबजेक्ट में मार्क्स दे रहे थे - मार्क्स देने में विशेषता क्या देखी - पहली विशेषता मन्सा की पवित्रता - जब से जन्म लिया तब से अभी तक संकल्प में भी अपवित्रता के संस्कार इमर्ज न हों। अपवित्रता अर्थात् विष को छोड़ चुके। ब्राह्मण बनना अर्थात् अपवित्रता का त्याग। अपवित्रता का त्याग और पवित्रता का श्रेष्ठ भाग्य। ब्राह्मण जीवन में संस्कार ही परिवर्तन हो जाते हैं। मन्सा में सदा श्रेष्ठ स्मृति - आत्मिक स्वरूप अर्थात् भाई-भ्ई की रहती है - इस स्मृति के आधार पर मन्सा प्यूरिटी के मार्क्स मिलते हैं। वाचा में सदा सत्यता और मधुरता - विशेष इस आधार पर वाणी की मार्क्स मिलती हैं। कर्मणा में सदा नम्रता और सन्तुष्टता इसका प्रत्यक्ष फल सदा हर्षितमुखता होगी, इस विशेषता के आधार पर कर्मणा में मार्क्स मिलती हैं। अब तीनों को सामने रखते हुए अपने आपको चैक करो कि हमारा नम्बर कौनसा होगा। विदेशी आत्माओं का नम्बर कौनसा है?

आज विशेष मिलने के लिए आए हैं - कोई आत्माओं के कारण बाप को भी विदेशी से देशी बनना पड़ता है - सबसे दूर देश का विदेशी तो बाप है - विदेशी बाप इस लोक के विदेशियों से मिलने आये हैं। भारतवासी भी कम नहीं हैं - भारतवासी बच्चों का विदेशियों को चान्स देना भी भारत की महानता है - चान्स तो देने वाले भारतवासी सब चान्सलर हो गये। विदेशियों की विशेषता को जानते हो? जिस विशेषता के कारण नम्बर आगे ले रहे हैं - विशेष बात यह है कि कई विदेशी बच्चे आने से ही अपने को इसी परिवार के, इसी धर्म की बहुत पुरानी आत्मायें अनुभव करते हैं, इसी को कहा जाता है आने से ही अधिकारी आत्मायें अनुभव होते। मेहनत ज्यादा नहीं लेते - सहज ही कल्प पहले की स्मृति जागृत हो जाती है। इसलिए 'हमारा बाबा' यह बोल अनुभव के आधार से बहुत जल्दी कईयों के मुख से वा दिल से निकलता है। दूसरी बात गाडली

स्टडी की विशेष सबजेक्ट सहज राजयोग - इस सबजेक्ट में मेजोरिटी विदेशी आत्माओं को अनुभव भी बहुत अच्छे और सहज होने लगते हैं। इस मुख्य सबजेक्ट के तरफ विशेष आकर्षण होने के कारण निश्चय का फाउन्डेशन मजबूत हो जाता है। यह है दूसरी विशेषता। अंगद के समान मजबूत हो ना - माया हिलाती तो नहीं हैं - आज विशेष विदेशियों का टर्न है इसलिए भारत के बच्चे साक्षी हैं –

भारतवासी बच्चे अपने भाग्य को तो अच्छी रीति जानते हैं - विदेशियों को भी राज्य तो यहाँ ही करना है ना - अपने भाग्य को जानते हो। आगे चल सेवा के निमित्त बनन का अच्छा पार्ट है। भाग्य प्राप्त हुआ देख सभी को खुशी होती है। (दादाराम सावित्री का परिवार मधुबन आया है - उन्हों को देख बाबा कहे) किसी विशेष भाग्यशाली आत्माओं (राम सावित्री) के कारण परिवार का भी भाग्य है। जब कोई संकल्प सिद्ध होता है तो खुशी जरूर होती है। अच्छा –

ऐसे सदा खुशी में झूमने वाले, सदा अपने भाग्य के सितार को चमकता हुआ देख चढ़ती कला की ओर जाने वाले, सदा प्यूरिटी की परसानाल्टी वाले, प्यूरिटी की महानता के आधार पर विश्व को परिवर्तन करने वाले, विश्व कल्याणकारी बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

पार्टीयों से मुलाकात

लन्दन पार्टी :- सभी अपने को सदा बाप के साथी अनुभव करते हो? कम्बाइन्ड रूप अपना देखते हो ना - अकेले नहीं, जहाँ बच्चे हैं वहाँ बाप हर बच्चे के साथ है। सदैव बाप की याद के छत्रछाया के अन्दर हो। किसी भी प्रकार के माया के विघ्न छत्रछाया के अन्दर आ नहीं सकते। तो जहाँ भी रहते हो, जो भी कार्य करते हो - लेकिन सदा ऐसे अनुभव करो कि हम सेफ्टी के स्थान पर हैं, ऐसे अनुभव करते हो? खास विदेशियों के ऊपर बापदादा का विशेष स्नेह और सहयोग है। विदेशी आत्मायें सेवा के क्षेत्र में भी अपना अच्छा पार्ट आगे चल करके बजायेंगी। सेवा का भविष्य भी बहुत अच्छा है। सेवा का नया प्लैन क्या बनाया है? जनरल प्रोग्राम के साथ-साथ विशेष आत्माओं की सेवा करो - उसके लिए मेहनत जरूर लगेगी लेकिन सफलता आपका जन्मसिद्ध अधिकार है, यह नहीं सोचो बहुत किया है फल नहीं दिखाई देता। फल तैयार हो रहे हैं। कोई भी कर्म का फल निष्फल हो ही नहीं सकता, क्योंकि बाप की याद में करते हो ना। याद में किये हुए का फल सदा श्रेष्ठ रहता है। इसलिए कभी भी दिलशिकस्त

नहीं बनना। जैसे बाप को निश्चय है कि फल निकलना ही है वैसे स्वयं भी निश्चयबुद्धि रहो। कोई फल जल्दी निकलना कोई थोड़ा देरी से इसलिए इसका भी सोचो नहीं - करते चलो, अभी जल्दी ही ऐसा समय आयेगा जो स्वत: आपके पास इनक्वायरी करने आयेंगे कि यह सन्देश वा सूचना कहाँ से मिली थी। थोड़ा सा विनाश का ठका होने दो सिर्फ - तो फिर देखो कितनी लम्बी क्यू लग जाती है फिर आप लोग कहेंगे हमको समय नहीं है, अभी वह लोग कहते हैं हमें टाइम नहीं, फिर आप कहेंगे टू लेट। जिस बात में मुश्किल अनुभव करो वह मुश्किल की बात बाप पर छोड़ दो - स्वयं सदा सहजयोगी रहो। सहजयोगी रहना ही सदा सर्विस करना है। आपकी सूक्ष्म योग की शक्ति स्वत: ही आत्माओं को आपके तरफ आकर्षित करेगी तो यही सहज सेवा है, यह तो सभी करते हो ना। लण्डन निवासियों ने सेवा का विस्तार अच्छा किया है। हमजिन्स अच्छी तैयार की है? माला तैयार हो गई है? 108 रतन तैयार किये हैं? अब लण्डन वाले ऐसा ग्रुप तैयार करें जिसमें सब वैरायटी हों, वैज्ञानिक भी हों, धार्मिक भी हों, नेतायें भी हों, और जो भिन्न-भिन्न ऐसेसियेशनस हैं उनकी भी विशेष आत्मायें हों। जब तक स्थापना के लिए सब प्रकार की वैरायटी आत्मायें स्थापना के कार्य में बीज नहीं डालेगी तो विनाश कैसे होगा! क्योंकि सतयुग में सब प्रकार के कार्य वाले काम में आयेंगे। सेवाधारी बनकर आपकी सेवा करेंगे। अभी एक जन्म थोड़े समय की आप सेवा कर ऐसे सेवाधारी तैयार करो जो अनेक जन्म आपकी सेवा करें। साइन्स वालों का भी वहाँ पार्ट है, जो वहाँ के सुख के साधनों की विशेषता है वह यहाँ से सहज मार्ग का बीज डालकर जायेंगे, यही बीज वहाँ काम में आयेगा। तो विदेश में यह सेवा अभी तीव्रगति से होनी चाहिए। राजधानी तैयार करो, प्रजा भी तैयार करो, रायल फैमली भी तैयार करो, सेवाधारी भी तैयार करो। कोई भी ऐसा वर्ग न रह जाए जो उल्हना दे कि हमें सन्देश नहीं मिला है।

2. ईश्वरीय सेवा का श्रेष्ठ और नया तरीका:- संकल्पों द्वारा ईश्वरीय सेवा करना यह भी सेवा का श्रेष्ठ और नया तरीका है, जैसे जवाहरी होता है तो रोज सुबह को दुकान खोलते अपने हर रतन को चैक करता कि साफ हैं, चमक ठीक है, ठीक जगह पर रखे हुए हैं, वैसे रोज़ अमृतवेले अपने सम्पर्क में आने वाली आत्माओं पर संकल्प द्वारा नजर दौड़ाओ, जितना आप उन्हों को संकल्प से याद करेंगे उतना वह संकल्प उन्हों के पास पहुँचेगा और वह कहेंगे कि हमने भी बहुत वारी आपको याद किया था इस प्रकार सेवा

के नये-नये तरीके अपनाते आगे बढ़ते जाओ - हर मास सम्पर्क वाली आत्माओं का विशेष कोई प्रोग्राम रखो, स्नेह मिलन रखो, अनुभव की लेन-देन वा मनोरंजन का प्रोग्राम रखो, किसी न किसी तरह से बुलाकर सम्पर्क बढ़ाओ, यह नहीं सोचो दो निकले या तीन निकले, एक भी निकले तो भी अच्छा, एक ही दीपक दीपमाला तैयार कर देगा।

जर्मनी :- जर्मनी वालें ने अपने देश में बाप का परिचय देने का साधन अच्छा बनाया है, अभी जर्मनी के आस-पास हैन्डस तैयार करके सेवा के फील्ड को और बढ़ाओ जो भी आये हैं वह सब एक-एक सेवा केन्द्र सम्भालो क्योंकि समय कम है और राजधानी बनानी है। जर्मनी का ग्रुप फालो फादर करने वाला है ना! सर्विस करो लेकिन सम्पर्क के आधार से, इन्डिपिन्डेंट नहीं। जैसे हर डाली का तने से कनेक्शन होता है इसी रीति से विशेष निमित्त आत्माओं से सम्पर्क अच्छा हो फिर सफलता अच्छी मिलती हैं, ऐसा प्लैन बनाना। अच्छा।

विदाई के समय :- संगमयुग के यह दिन भी बहुत अमूल्य हैं, बापदादा भी बच्चों का मेला संगम पर ही साकार रूप में देखते हैं। संगमयुग अच्छा लगता हैं ना? विश्व परिवर्तन नहीं करेंगे? संगमयुग की विशेषता अपनी है और नई दुनिया की विशेषता अपनी है। जब नई दुनिया में जायेंगे तो बाप को भी भूल जायेंगे उस समय याद होगा? बाप को भी खुशी है कि बच्चे इतने श्रेष्ठ पद को प्राप्त कर लेते हैं। सदैव बाप यही चाहते हैं कि बच्चे बाप से भी आगे रहें। बच्चों का श्रेष्ठ भाग्य देख बाप खुश होते हैं। थोड़े ही टाइम में भाग्य कितना बना लेते हो? संगमयुग की यही विशेषता है - हर घड़ी हर संकल्प अपना भाग्य बना सकते हो! जितना चाहो उतना भाग्य ऊँचे से ऊंचा बना सकते हो, तो चैक करो कि कितना भाग्य बनाने का चान्स है उतना ही पूरा चान्स ले रहे हैं। प्राप्ति का समय अभी ज्यादा नहीं है इसलिए जितना चाहो उतना अभी कर लो नहीं तो यह प्राप्ति का समय याद आयेगा कि करना चाहिए था लेकिन किया नहीं! अपने याद की यात्रा को पावरफुल बनाते जाओ। संकल्प में सर्व शक्तियों का सार भरते जाओ। हर संकल्प में शक्ति भरते रहो। संकल्प की शक्ति से भी बहुत सेवा कर सकते हो। अच्छा - ओम् शान्ति।

12-12-1979 रूहानी अलंकार और उनसे सजी हुई मूरतें

बाप-दादा अपने सर्व बच्चों को आज विशेष अलंकारी स्वरूप में देख रहे हैं हरेक की सजी सजाई अलंकारधारी अति सुन्दर मूर्त देख रहे हैं। अपने-आप को देखा है! कौन-कौन से अलंकार धारण किये हुए हैं। अपने रूहानी अलंकारों की सजावट को सदा धारण कर चले रहे हो?

आज अमृतबेले हरेक बच्चे की सजी सजाई हुई मूरत देखी। क्या देखा? हरेक बच्चा अति सुन्दर छत्रछाया के नीचे बैठा हुआ है। जिस छत्रछाया के नीचे होने के कारण प्रकृति और माया के वार से बचे हुए थे। बहुत रूहानी सेफ्टी के साधन के अन्दर थे। जरा सा सूक्ष्म वायब्रेशन भी छत्रछाया के अन्दर पहुँच नहीं सकता। ऐसी छत्रछाया के अन्दर विश्व-कल्याण की सेवा के ज़िम्मेवारी के ताजधारी बैठे हुए थे। डबल ताज बहुत सुन्दर सज रहा था। एक सम्पूर्ण प्यूरिटी के हिसाब से लाइट का क्राउन, दूसरा सेवा का ताज। इसमें नम्बरवार थे। किसी-किसी बच्चे का प्यूरिटी की तीन स्टेजिज़ संकल्प, बोल और कर्म के लाइट का क्राउन एक तो फैला हुआ ज्यादा था। जितनी तीनों स्टेज की प्यूरिटी उसी अनुसार लाइट का क्राउन, चारों ओर अपना प्रकाश फैला रहा था। किसी का ज्यादा तो किसी का कम था। साथ-साथ सेवा की ज़िम्मेवारी के अनुसार लाइट की पावर में अन्तर था। अर्थात् परसेन्टेज में फर्क था। कोई 10 पावर के तो कोई हज़ार पावर के, परसेन्ट और फैलाव अनुसार भिन्न-भिन्न नम्बरवार ताज़धारी थे।

जितने ताज में नम्बर थे उसी अनुसार छत्रछाया में भी फर्क था, किसी की छत्रछाया इतनी बड़ी थी जो उसी छत्रछाया के अन्दर रह कार्य कर सकते थे। सारे विश्व का भ्रमण छत्रछाया के अन्दर कर सकते थे, इतनी बेहद की छत्रछाया थी और किसी-किसी की यथा-शक्ति नम्बरवार हद की थी। ऐसी हद की छत्रछाया के अन्दर बैठे हुए अर्थात् अपने पुरूषार्थ के अन्दर सदा याद के बजाए नियम प्रमाण, समय प्रमाण याद में रहने वाले। 4 घण्टे वाले, 8 घण्टे वाले अर्थात् याद को भी हद में लाने वाले। याद बेहद के बाप की है लेकिन याद करने वालों ने बेहद की याद को भी हद में ला दिया है। सम्बन्ध अविनाशी है लेकिन सम्बन्ध निभाने वालों ने समय निश्चित कर विनाशी

कर दिया है। कभी बाप से सम्बन्ध, कभी व्यक्ति से सम्बन्ध, कभी वैभवों से सम्बन्ध, कभी अपने ही पुराने संस्कार व स्वभाव के साथ सम्बन्ध। लेने के लिए तो अविनाशी अधिकार है, अविनाशी वर्सा है। लेकिन देने के समय विनाशी वर्से से भी किनारा कर देते हैं। लेने में फराखदिल हैं और देने में कहाँ-कहाँ इकॉनामी देने (म्दिंहदस्ब्) करते हैं। इकॉनामी कैसे करते हो, वह जानते हो? कई बच्चे बड़ी होशियारी से बाप से रूह-रूहान करते हैं। क्या कहते हैं? फलानी-फलानी बात में इतना तो परिवर्तन कर लिया है, बाकी थोड़ा-सा है, वह भी हो जायेगा। इतना थोड़ा तो होगा ही ना। लेने में ऐसे नहीं कहते कि थोड़ा-थोड़ा दे दो। अगर बाप कोई महारथी की स्पेशल खातिरी करें तो संकल्प उठेगा कि क्यों हम भी तो अधिकारी हैं। लेने में ज़रा भी नहीं छोड़ेंगे लेकिन देने में थोड़ा-थोड़ा कर खत्म कर देंगे। यह इकॉनामी करते हैं, चतुराई से बाप को भी दिलासे देते हैं। ज़रूर सम्पन्न बन जायेंगे, हो जायेगा। जब लेना - एक सेकेण्ड का अधिकार है तो देने में भी इतने फराखदिल बनो। परिवर्तन करने की शक्ति फुल परसेंन्टेज़ से यूज़ करो। तो निरन्तर याद को हद लाये हुए हैं इसलिए छत्रछाया में भी नम्बर देखे। नम्बरवार होने के कारण माया के वायब्रेशन वायुमण्डल, व्यक्ति-वैभव, स्वभाव-संस्कार वार करते हैं। नहीं तो छत्रछाया के अन्दर सदा सेफ रह सकते हैं।

ताजधारी भी देखे, छत्रधारी भी देखे। साथ-साथ सभी ताजधारी तख्तनशीन भी देखे। तख्त को तो जानते हो - बाप के दिलतख्तनशीन। लेकिन यह दिलतख्त इतना प्योर है जो इस तख्त पर सदा बैठ भी वही सकते जो सदा प्योर हैं। बाप तख्त से उतारते नहीं लेकिन स्वयं उतर आते हैं। बाप की सब बच्चों को सदाकाल के लिए ऑफर है कि सब बच्चे सदा तख्तनशीन रहो। लेकिन आटोमेटिक कर्म की गति के चक्र प्रमाण सदाकाल वही बैठ सकता है जो सदा फालो फादर करने वाले हैं। संकल्प में भी अपवित्रता वा अमर्यादा आ जाती है तो तख्तनशीन की बजाए गिरती कला में अर्थात् नीचे आ जाते हैं। जैसे-जैसे कर्म करते हैं उसी अनुसार उसी समय पश्चाताप करते हैं व महसूस करते हैं कि तख्तनशीन से गिरती कला में आ गये। अगर कोई ज्यादा उल्टा कर्म होता है तो पश्चाताप की स्थिति में आ जाते हैं। अगर कोई विकर्म नहीं लेकिन व्यर्थ कर्म हो जाता है तो पश्चाताप की स्थिति नहीं लेकिन महसूसता की स्टेज होती है। बारबार व्यर्थ संकल्प महसूसता की स्टेज पर लाता रहेगा कि यह करना नहीं चाहिए। यह रॉंग है, जैसे काँटे के समान चुभता रहेगा। जहाँ पश्चाताप की स्थिति व

महसूसता की स्टेज अनुभव होगी वहाँ तख्तनशीन के नशे की स्टेज नहीं होगी। फर्स्ट स्टेज है - तख्त नशीन। सेकेण्ड स्टेज है - करने के बाद महसूसता की स्टेज। इसमें भी नम्बर है। कोई करने के बाद महसूस करते हैं। कोई करते समय ही महसूस करते हैं और कोई कर्म होने के पहले ही कैच करते हैं कि कुछ होने वाला है। कोई तूफान आने वाला है। आने के पहले ही महसूस कर, कैच कर समाप्त कर देते हैं। तो सेकेण्ड स्टेज है महसूसता की। तीसरी स्टेज है - पश्चाताप की। इसमें भी नम्बर हैं - कोई पश्चाताप के साथ परिवर्तन कर लेते हैं और कई पश्चाताप करते हैं लेकिन परिवर्तन नहीं कर पाते। पश्चाताप है लेकिन परिवर्तन की शक्ति नहीं है तो उसके लिए क्या करेंगे।

ऐसे समय पर विशेष स्वयं के प्रति कोई-न-कोई व्रत और नियम बनाना चाहिए। जैसे भक्ति मार्ग में भी अल्पकाल के कार्य की सिद्धि के लिए विशेष नियम और व्रत धारण करते हैं। व्रत से वृत्ति परिवर्तन होगी। वृत्ति से भविष्य जीवन रूपी सृष्टि बदल जायेगी क्योंकि विशेष व्रत के कारण बार-बार वही शुद्ध संकल्प, जिसके लिए व्रत रखा है, वह स्वत: याद आता है। जैसे भक्त लोग विशेष किसी देवी या देवता का व्रत रखते हैं तो न चाहते भी सारा दिन उसी देवी या देवता की याद आती है और याद के कारण ही बाप उसी देवी या देवता द्वारा याद की रिटर्न में उनकी आशा पूर्ण कर देते हैं। तो जब भक्तों के व्रत का भी फल मिलता है तो ज्ञानी तू आत्मा अधिकारी बच्चों को शुद्ध संकल्प रूपी व्रत का व दृढ़ संकल्प रूपी व्रत का प्रत्यक्ष फल जरूर प्राप्त होगा। तो सुना, तख्तनशीन तो सब देखे लेकिन कोई सदा काल के, उतरते चढ़ते हुए देखे, अभी-अभी तख्तनशीन, अभी-अभी नीचे। चौथा अलंकार क्या देखा?

हरेक के पास स्वदर्शन चक्र देखा। स्वदर्शन चक्रधारी भी सब थे लेकिन कोई का चक्र स्वत: ही चल रहा था और कोई को चलाना पड़ता था और कोई फिर कभी-कभी राइट तरफ चलाने की बजाए रॉंग तरफ चला लेते थे। जो स्वदर्शन चक्र के बजाए माया की चकरी में आ जाते थे। क्योंकि लेफ्ट साइड हो गया ना। स्वदर्शन चक्र के बजाए पर-दर्शन चक्र चला लेते थे, यह है लेफ्ट साइड चलाना। मायाजीत बनने के बजाए पर के दर्शन के उलझन के चक्र में आ जाते थे जिससे 'क्यों'और 'क्या' के क्वेश्चन की जाल बन जाती, जो स्वयं ही रचते और फिर स्वयं ही फँस जाते, तो सुना क्या-क्या देखा?

चारों ही अलंकारों से सजे-सजाए ज़रूर थे लेकिन नम्बरवार थे। अब क्या करेंगे? बेहद की छत्रछाया के अन्दर आ जाओ अर्थात् कभी-कभी की याद का अन्तर मिटाकर निरन्तर याद की छत्रछाया में आ जाओ। प्यूरिटी और सेवा के डबल ताज को परसेन्टेज और प्रस्ताव में भी बेहद में करो अर्थात् बेहद फैली हुई लाइट के ताजधारी बनो। देने और लेने में सेकेण्ड के अभ्यासी बन सदा तख्तनशीन बनो। चढ़ने और उतरने में थक जायेंगे, सदा बेहद के रूहानी आराम में तख्तनशीन रहो। अर्थात् निर्बन्धन आत्मा के आराम की स्थिति में रहो, नॉलेजफुल मास्टर हो सदा और स्वत: स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। पर-दर्शन चक्र क्यों क्या के क्वेश्चन की जाल से सदा मुक्त हो जाओ तो क्या होगा। सदा योग-युक्त, जीवन मुक्त चक्रवर्ती बन बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा में चक्र लगाते रहेंगे। विश्व-सेवाधारी चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। ऐसे सदा अलंकारी, सदा स्वदर्शन चक्रधारी, माया के हर स्वरूप को मास्टर नॉलेज फुल स्टेज पर स्थित हो पहले ही परखने वाले, अनेक प्रकार के माया के वार को समाप्त कर माया को बलिहार बनाने वाले, बाप के गले के हार बनने वाले, अविनाशी सर्व सम्बन्धों की सदा प्रीति की रीति निभाने वाले, ऐसे बाप समान बच्चों को बाप-दादा का याद प्यार और नमस्ते।

यू.पी. निवासी आये हैं।

यू.पी. की विशेषता है जैसे भक्ति के तीर्थ स्थान यू.पी. में बहुत हैं, वैसे ज्ञान के सेवाकेन्द्रों का विस्तार भी अच्छा कर रहे हैं। यू.पी. में भक्त आत्माएं भी बहुत हैं तो मास्टर भगवान अब भक्तों की पुकार सुन और भी जल्दी-जल्दी भक्ति का फल उनको दो। दे रहे हैं, लेकिन और भी स्पीड को बढ़ाओ। यू.पी. की विशेषता - अनेक गरीबों को साहूकार बनाने का बहुत अच्छा चान्स ले रहे है। रहमदिल बन रहम की भावना अच्छी दिखा रहे हैं। यू.पी. का कौरव गवर्नमेन्ट के नक्शे में भी विस्तार है। एरिया बहुत लम्बी है ऐसे ही पाण्डव गवर्नमेन्ट के नक्शे में सेवा की एरिया सबसे नम्बरवन करके दिखाओ। विशेष इस वर्ष में रहे हुए गुप्त वारिसों को प्रत्यक्ष करो। अब तक जो किया है वह बहुत अच्छा किया है, अभी और भी चारों ओर की आत्मायें वन्स मोर (Once More) करें। वाह-वाह की ताली बजाएं। ऐसा विशेष कार्य भी यू.पी. वाले करेंगे। अभी और भी ज्यादा ज्ञान-स्थान बनाओ। तीर्थस्थानों से ज्ञानस्थान बनाते जाओ। अच्छा - बाकी जो भी सब आए हैं जैसे भी पुरूषार्थ में आगे बढ़ रहे हैं, आगे बढ़ने के लिए मुबारक हो। उससे भी अधिक हाई जम्प देने के लिए सदा स्मृति स्वरूप भव।

पार्टियों के साथ अव्यक्त बाप-दादा की पर्सनल मुलाकात

1. सहज यागी का चित्र है - विष्णु की शेष शैया:- आप सब सदा फाउण्डेशन के समान मज़बूत रहने वाले, सदा अचल हो ना? हिलने वाले तो नहीं हो? अंगद का जो अब तक गायन हो रहा है, वह किन का गायन है? अपना ही गायन फिर से सुन रहे हो। जो कल्प पहले विजय प्राप्त की है उस विजय का नगाड़ा अब भी सुन रहे हो। वह नक्शा अभी आपके सामने है कल्प-कल्प विजयी हो। अनेक बार वे विजयी हो, इसलिए सहजयोगी कहा जाता है। अनेक बार किया हुआ फिर करना तो सहज हो जाता है ना। नई बात नहीं कर रहे हो। बने हुए को बना रहे हो इसलिए कहा जाता है बनाबना या-बना रहे हैं, बना हुआ है लेकिन फिर रिपीट कर बनाया है। पहले भी पदमा पदम भाग्यशाली बने थे अब भी बन रहे हो। ऐसे सहयोगी हो। उनकी निशानी तथा रहन-सहन का चित्र कौन-सा दिखाया है? विष्णु की शेष शैया अर्थात् साँप को भी शैया बना दिया अर्थात् वह अधीन हो गए वह अधिकारी हो गए। नहीं तो साँप को कोई हाथ नहीं लगाता, साँपों को शैया बना दिया अर्थात् विजयी हो गये। विकारों रूपी साँप ही अधीन हो गये अर्थात् शैया बन गये तो निश्चिन्त हो गये ना। जो विजयी होते हैं वह सदा निश्चिन्त विष्णु के समान सदा हर्षित रहते हैं। हर्ष भी तब होगा जब ज्ञान का सुमिरण करते रहेंगे। तो यह चित्र आप का ही है ना। जो भी बाप के बच्चे बने और विजयी हो रहे हैं, उन सब का यह चित्र है। सदा सामने देखो कि विकारों को अधीन किया हुआ अधिकारी हूँ। आत्मा सदा आराम स्थिति में रहे। शरीर को सोने का आराम नहीं, वह तो सेवा में हि·याँ देनी हैं लेकिन आत्मा की निश्चिन्त स्थिति - यह है आराम? क्योंकि कि अब भटकने से बच गये।

मातायें सभी गोपिकायें, गोपी वल्लभ के साथ झूले में झूलने वाली हो ना? आधा कल्प जड़ चित्रों को बहुत प्यार से झुलाया अब झुलाना खत्म हुआ झूलना शुरू हो गया। कभी सुख के झूले में, कभी शान्ति के झूले में...अनेक झूले हैं, जिसमें चाहो झूलो, नीचे नहीं आओ। माताओं के झूला अच्छा लगता है। तब तो बच्चों को भी झूलाती रहती हैं। भक्ति में बहुत झुलाया अब भक्ति का फल तो लेंगी ना? भक्ति है झुलाना और फल है झूलना। तो अब जो फल मिल रहा है वह खा रही हो या देख-देख कर खुश हो रही हो। माताओं में यह भी आदत होती है - खायेंगी नहीं, रख देंगी। यह तो जितना खायेंगे उतना बढ़ेगा। 1 सेकेण्ड खायेंगी तो एक समय का अनुभव सदाकाल का

अनुभवी बना देगा। इसलिए खूब खाओ। माताओं को देख करके बाप को भी खुशी होती है। जिन्हें दुनिया ने ना उम्मीदवार बनाया, बाप ने उन्हें ही सिर का ताज बना दिया। उन्होंने पुरानी जुत्ती समझा और बाप ने सिर का ताज बनाया तो कितनी खुशी होनी चाहिए। पाण्डवों का भी सदा सहयोगी और सदा साथ रहने का गायन है। यादगार में देखो गोपी वल्लभ के साथ ग्वाल-बाल दिखाये हैं। हर कार्य में सहयोग और सदा साथ रहने वाले हो ना? सभी याद और सेवा दोनों में तत्पर रहो। सेवा से भविष्य प्रारब्ध बनेगी और याद से वर्तमान खुशी में रहेंगे। कोई अप्राप्त वस्तु ही नहीं। सदा तृप्त।

23-01-1980 "पवित्रता का महत्व"

बाप-दादा अपने सर्व महान आत्माओं, धर्म आत्माओं, पुण्य आत्माओं, महान पवित्र आत्माओं को देख हर्षित होते हैं। परमात्मा के बच्चे परम पवित्र बच्चे हैं। पवित्रता की ही महानता है। पवित्रता की मान्यता है। पवित्रता के कारण ही परम पूज्य और गायन योग्य बनते हैं। पवित्रता ही श्रेष्ठ धर्म अर्थात् धारणा है। इस ईश्वरीय सेवा का बड़े-से-बड़ा पुण्य है - पवित्रता का दान देना। पवित्र बनाना ही पुण्य आत्मा बनना है। क्योंकि किसी आत्मा को आत्म-घात महा पाप से छुड़ाते हो। अपवित्रता आत्म-घात है। पवित्रता जीय-दान है। पवित्र बनाना अर्थात् पुण्य आत्मा बनाना। गीता के ज्ञान का वह वर्तमान परमात्म-ज्ञान का जो सार रूप में स्लोगन बनाते हो, उसमें भी पवित्रता का महत्व बताते हो। ``पवित्र बनो - योगी बनो" यही स्लोगन महान आत्मा बनने का आधार है। ब्राह्मण जीवन के पुरुषार्थ के नम्बर भी पवित्रता के आधार पर हैं। भक्ति मार्ग में यादगार पवित्रता के आधार पर हैं। कोई भी भक्त आपके यादगार चित्र को पवित्रता के बिना टच नहीं कर सकते। जिस दिन विशेष देवी व देवताओं का दिवस मनाते हैं, उस दिन का महत्व भी पवित्रता है। भक्ति का अर्थ ही है - अल्पकाल। ज्ञान का अर्थ है - सदाकाल। तो भक्त अल्पकाल के नियम पालन करते हैं। जैसे नवरात्रि मनाते हैं, जन्माष्टमी अथवा दीपमाला या कोई विशेष उत्सव मनाते हैं तो पवित्रता का नियम अल्पकाल के लिए जरूर पालन करते हैं। चाहे शरीर की पवित्रता व आत्मा के नियम, दोनों प्रकार की शुद्धि जरूर रखते हैं।

आपकी यादगार `विजय माला' - उनका भी सुमिरण करेंगे तो पवित्रता की विधि पूर्वक करेंगे। आप सिद्धि स्वरूप बनते हो, सिद्धि स्वरूप आत्माओं की पूजा भी विधि पूर्वक होती है। पवित्रता के महत्व को जानते हो ना? इसलिए पहले मुख्य पेपर्स पवित्रता के चेक किये हैं, हरेक ने अपना पवित्रता का पेपर चेक किया? प्रोग्राम प्रमाण प्रोग्रेस तो की।

टोटल रिजल्ट सबसे ज्यादा मैजारिटी की कर्मणा में परसेन्टेज ठीक रही। वाचा में कर्मणा की रिजल्ट से 25% कम। मनसा में कर्मणा की रिजल्ट से 50% कम। मनसा संकल्प, और स्वप्न में थोड़ा-सा अन्तर रहा, उसमें भी जन्म की डेट से लेकर अब तक

की रिजल्ट में कइयों का पुरुषार्थ करने में उतरना चढना, दाग हुआ और मिटाया, कभी संकल्प आया और हटाया। कभी वाचा कर्मणा का दाग हुआ और मिटाया। हटाने और मिटाने वाले बहुत थे। लेकिन कई ऐसे तीव्र पुरुषार्थी भी देखे जिन्होंने ऐसे संस्कारों का दाग मिटाया है जो अब तक भी बिल्कुल साफ शुद्ध पेपर दिखाई दिया। ऐसा स्वप्न तक मिटाया हुआ था। पास विद आनर होने वाले महान पवित्र आत्माएँ भी देखी। उनकी विशेषता क्या देखी।

जब से ब्राह्मण जन्म हुआ तब से अभी तक पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं लेकिन ब्राह्मण जीवन का विशेष लक्षण है, ब्राह्मण आत्मा का वह अनादि आदि संस्कार है। ऐसे नैचुरल संस्कार से स्वप्न व संकल्प में भी अपवित्रता इमर्ज नहीं हुई है। संकल्प आवे और विजयी बनें, इनसे भी ऊपर नैचुरल संस्कार रूप में चले हैं। इस सबजेक्ट में पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं रही है। ऐसे परम पूज्य संस्कार वाले भी देखे। लेकिन माइनॉरटी। नॉलेजफुल होते हुए भी, औरों को पवित्र बनने की विधि बताते हुए भी, औरों की कमज़ोरियों को सुनते हुए भी, उनको बापकी श्रीमत देते हुए भी, स्वयं सदा सुनते हुए, जानते हुए भी सदा स्वच्छ रहे हैं अर्थात् पवित्रता की सबजेक्ट में सिद्धि स्वरूप रहे हैं। इसलिए ऐसे परम पवित्र आत्माओं का पूजन भी सदा विधि पूर्वक होता है। अष्ट देव के रूप में भी पूजन और भक्तों के इष्ट देव के रूप में भी पूजन। अष्ट शक्तियों का प्रैक्टिकल स्वरूप `अष्ट देव' प्रत्यक्ष होते हैं। तो सुना पेपर्स का रिजल्ट। तो मनसा परिवर्तन हो इसमें डबल अटेन्शन दो। यह नहीं सोचो सम्पन्न बनने तक संकल्प तो आयेंगे ही, लेकिन नहीं। संकल्प अर्थात् बीज को ही योगाग्नि में जला दो जो आधाकल्प तक बीज फल न दे सके। वाचा के दो मुख्य पत्ते भी निकल न सकें। कर्मणा का तना और टाल टालियाँ भी निकल न सकें। बहुत काल का भस्मीभूत बीज जन्म-जन्मान्तर के लिए फल नहीं देगा। अन्त में इस सबजेक्ट में सम्पूर्ण नहीं होना है लेकिन बहुत काल का अभ्यास ही अन्त में पास करायेगा। अन्त में सम्पूर्ण होंगे, इसी संकल्प को पहले खत्म करो। अभी बने तो अन्त में भी बनेंगे। अब नहीं तो अन्त में भी नहीं। इसलिए इस अलबेलेपन की नींद से भी जग जाओ। इसमें भी सोया तो खोया। फिर उलाहना नहीं देना कि हमने समझा था अन्त में सम्पूर्ण होना है। अन्त में सम्पूर्ण होने के अर्थ को भी समझो। कोई भी विशेष कमज़ोरी को अन्त में सम्पूर्ण करेंगे, यह कभी भी संकल्प में भी नहीं लाओ। पुरुषार्थ कर ब्राह्मण जीवन का जेवर भी अभी तैयार करना है। मर्यादायें और नियम पालन करने के नंग भी अभी से लगाने हैं। पॉलिश

भी अभी करनी है। अन्त में तो सिर्फ पॉलिश किये हुए को निमित्त मात्र हाथ लगाना है। बस उस समय पॉलिश भी नहीं कर सकेंगे। सिर्फ अन्य आत्माओं की श्रेष्ठ सेवा के प्रति समय मिलेगा। उस समय पुरुषार्थी स्वरूप नहीं होगा। मास्टर दाता का स्वरूप होगा। देना ही लेना होगा। सिर्फ लेना खत्म तो पॉलिश कैसे करेंगे। अगर अपने में नंग लगाने में ही रहेंगे त् विश्व-कल्याणकारी का पार्ट बजा नहीं सकेंगे। इस लिए अभी मास्टर रचयिता बनने के संस्कार धारण करो। बचपन के संस्कार समाप्त करो। मास्टर रचयिता बन प्राप्त हुई शक्तियों व प्राप्त हुआ ज्ञान, गुण, व सर्व खज़ानें औरों के प्रति वरदानी बन व महाज्ञानी बन व महादानी बनकर देते चलो। वरदानी अर्थात् अपनी शक्तियों द्वारा वायुमण्डल व वायब्रेशन के प्रभाव से आत्माओं को परिवर्तन करना। महाज्ञानी अर्थात् वाणी द्वारा व सेवा के साधनों द्वारा आत्माओं को परिवर्तन करना। महादानी अर्थात् बिल्कुल निर्बल, दिलशिकस्त असमर्थ आत्मा को एकस्ट्रा बल दे करके रूहानी रहमदिल बनना। माया का भी रहमदिल बनना होता है। कोई गलत काम कर रहा है और आप तरस कर रहे हो तो यह माया का रहमदिल बनना है। ऐसे समय पर लॉफुल बनना भी पड़ता है। होता लगाव है और समझते हैं रहम। इसको कहा जाता है, माया का रहम। ऐसा रहमदिल नहीं बनना है। इसलिए कहा - रूहानी रहमदिल। नहीं तो शब्द का भी एडवान्टेज (Advantage) लेते हैं। तो महादानी अर्थात् बिल्कुल होपलेस केस में होप (Hope) पैदा करना। अपनी शक्तियों के आधार से उनको सहयोग देना। अर्थात् महादान देना, यह प्रजा के प्रति है। वारिस क्वालिटी के प्रति महादानी नहीं। दान सदा बिल्कुल गरीब को दिया जाता है। बेसहारे को सहारा दिया जाता है। तो प्रजा के प्रति महादानी व अन्त में भक्त आत्माओं के प्रति महादानी। आपस में एक दूसरे के प्रति ब्राह्मण महादानी नहीं। वह तो आपस में सहयोगी साथी हो। भाई-भाई हो व हमशरीक पुरुषार्थी हो। सहयोग दो, दान नहीं देंगे। समझा। तो अब इस संकल्प को भी समाप्त कर लो। कभी हो जायेगा, यह `कब' शब्द भी खत्म। तीव्र पुरुषार्थी `कब' नहीं लेकिन `अब' कहते हैं। तो सदा तीव्र पुरुषार्थी बनो।

ऐसे सदा विश्व-कल्याणकारी, महान पवित्र आत्माएँ, संकल्प व स्वप्न में भी अपवित्रता से परे रहने वाले ऐसे परम पूज्य, अब भी माननीय गायन योग्य, कर्मयोगी, सदा स्व संकल्प और स्वरूप द्वारा सेवाधारी, ऐसे पुण्य आत्माओं को, वरदानी महादानी बच्चों को बाप-दादा का याद-प्यार और नमस्ते।

अमृत बेला और मनसा सेवा

अव्यक्त बाप-दादा के मधुर महावाक्य – पार्टीयों के साथ

सभी एवररेडी (Ever Ready)) और ऑलराउण्डर (All Rounder हो? एवररेडी माना ऑर्डर (Order) आया और चल पड़े अर्थात् ऑर्डर मिला और हाँ जी। क्या करें कैसे करें? - नहीं। क्या होगा, कैसे होगा, चल सकेंगे या नहीं चल सकेंगे? ऐसा संकल्प आया तो एवररेडी नहीं कहा जायेगा। तीव्र पुरुषार्थी की विशेषता है ही एवररेडी और ऑलराउण्डर। मनसा सेवा का चान्स मिले या वाचा सेवा का चान्स मिले या कर्मणा सेवा का चान्स मिले लेकिन हर सबजेक्ट (Subject) में नम्बर वन। ऐसे नहीं वाचा में नम्बरवन, कर्मणा में नम्बर टू और मनसा में नम्बर थ्री। जितना स्नेह से वाचा सेवा करते हो उतना ही मनसा सेवा भी कर सकें। मनसा सेवा का अभ्यास बढ़ाओ। वाचा सेवा तो 7 दिन के कोर्स वाले प्रवृत्ति वाले भी कर सकते हैं। आप का कार्य है - वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाना। अपने स्थान का, शहर का, भारत का व विश्व का वायुमण्डल पॉवरफुल बनाओ। चेक करो मनसा सेवा में सफलता मिलती है? अगर मनसा सेवा में सफलता होगी तो सदा स्वयं और सेवा केन्द्र निर्विघ्न और चढ़ती कला में होगा। चढ़ती कला यह नहीं कि संख्या वृद्धि को पाये। चढ़ती कला संख्या में भी, क्वालिटी भी और वायुमण्डल भी तथा स्वयं साथियों में भी चढ़ती कला। इसको कहा जाता है - `चढ़ती कला'। तो ऐसे अनुभव करते हो? अमृतबेला स्वयं का पॉवरफुल है? ऐसे तो नहीं अमृतवेला में अलबेलापन विघ्न बनता हो। ऐसा पॉवरफुल अमृतवेला है जो विश्व को लाईट और माईट का वरदान दो? अमृतवेला की याद से आप अपने-आप से सन्तुष्ट हो?

मुख्य सबजेक्ट है ही `याद' की। बाप-दादा अमृतवेले जब चक्र लगाते हैं तो थोड़ा पॉवरफुल वायब्रेशन की कमी दिखाई देती है। नेमीनाथ तो बन जाते हैं, लेकिन अनुभवी मूर्त बनो। नियम प्रमाण तो जबरदस्ती हो गया ना। अगर अनुभव हो गया तो अपनी लगन में बैठेंगे। जिस बात का अनुभव होता है तो न चाहते भी वह बात अपनी तरफ खींचती है। जैसे वाचा सर्विस से खुशी का अनुभव होता है तो न चाहते भी उस तरफ दौड़ते हो ना। ऐसे ही अमृतवेले को पॉवरफुल बनाओ। जिससे मनसा सेवा का अनुभव बढ़ा सकेंगे। लास्ट में वाचा सेवा का चान्स नहीं होगा। मनसा सेवा पर सर्टिफिकेट मिलेगा। क्योंकि इतनी लम्बी क्यू (Queue) होगी जो बोल नहीं सकेंगे। जैसे अभी भी मेला करते हो तो भीड़ के समय क्या करते हो? शान्ति से उनको शुभ

भावना और कामना से दृष्टि देते हो ना। तो अन्त में भी जब प्रभाव निकलेगा तो क्या होगा? अभी तो स्थूल लाईट के प्रभाव से आते हैं फिर उस समय आप आत्मा की लाईट का प्रभाव होगा, उस समय मनसा सेवा करनी पड़ेगी। नज़र से निहाल करना पड़ेगा। अपनी वृत्ति से उनकी वृत्ति बदलनी होगी। अपनी स्मृति से उनको समर्थ बनाना पड़ेगा। फिर उस समय भाषण करेंगे क्या? तो मनसा सेवा का अभ्यास जरूरी है। अनुभवी मूर्त बन जाओ। जो दूसरों को कहो, वह स्व अनुभव के आधार से कहो, समझा, मनसा सेवा को बढ़ाओ। अभी निर्विघ्न वायुमण्डल बनाओ जिसमें कोई भी आत्मा की हिम्मत न हो विघ्न रूप बनने की। विघ्न आया उसको हटाया, यह भी टाइम वेस्ट हुआ। तो अब किले को मजबूत बनाओ। आपस में स्नेही सहयोगी बनकर चलो तो सभी फॉलो करेंगे। स्वयं जो करेंगे वैसे सब फॉलो करेंगे।

2. सभी अंगद के समान अचल अडोल रहने वाले हो ना। रावण राज्य की कोई भी परिस्थिति व व्यक्ति जरा भी संकल्प रूप में भी हिला न सके, नाखुन को भी न हिला सके। संकल्प में हिलना अर्थात् नाखुन हिलना। तो संकल्प रूप में भी न व्यक्ति, न परिस्थिति हिला सके, कभी कोई सम्बन्धी या दैवी परिवार का भी ऐसा निमित्त बन जाता है जो विघ्न रूप बन जाता है। लेकिन अंगद के समान सदा अचल रहने वाला व्यक्ति हो, विघ्न को और परिस्थितियों को पार कर लेगा क्योंकि नॉलेजफुल है। वह जानता है कि यह विघ्न क्यों आया। ये विघ्न गिराने के लिए नहीं है लेकिन और ही मजबूत बनाने के लिए हैं। वह कन्फ्यूज (Confuse) नहीं होगा। जैसे इम्तिहान के हाल में जब पेपर आता है तो कमज़ोर स्टूडेन्ट कन्फ्यूज हो जाते हैं, अच्छे स्टूडेन्ट देखकर खुश होते हैं क्योंकि बुद्धि में रहता है कि यह पेपर देकर वह क्लास आगे बढ़ेगा। उन्हें मुश्किल नहीं लगता। कमज़ोर क्वेश्चन ही गिनती करते रहेंगे। ऐसा क्वेश्चन क्यों आया, ये किसने निकाला, क्यों निकाला तो यहाँ भी कोई निमित्त पेपर बनकर आता है तो यह क्वेश्चन नहीं उठना चाहिए कि यह क्यों करता है, ऐसा नहीं करना चाहिए। जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, अच्छी बात उठा लो। जैसे हँस मोती चुगता है ना, कंकड़ को अलग कर देता है। दूध और पानी को अलग कर देता है। दूध ले लेता है, पानी छोड़ देता है। ऐसे कोई भी बात सामने आये तो पानी समझकर छोड़ दो। किसने मिक्स किया, क्यों किया - यह नहीं, इसमें भी टाइम वेस्ट हो जाता है। अगर क्यों, क्या करते इम्तिहान की अन्तिम घड़ी हो गई तो फेल हो जायेंगे। वेस्ट किया माना फेल हुआ। क्यों-क्या में श्वास निकल जाए तो फेल। कोई भी बात फील करना

माना फेल होना। माया शेर के रूप में भी आये तो आप योग की अग्नि जलाकर रखो, अग्नि के सामने कोई भी भयानक शेर जैसी चीज़ भी वार नहीं कर सकती। सदा योगाग्नि जगती रहे तो माया किसी भी रूप में आ नहीं सकती। सब विघ्न समाप्त हो जायेंगे।

23-03-1981 "फर्स्ट या एयरकन्डीशन में जाने का सहज साधन"

आज बादादा सब बच्चों की सूरत में विशेष एक बात देख रहे हैं। वह कौन-सी है? हरेक के चेहरे पर प्यूरिटी की ब्यूटी कहाँ तक आई है। अर्थात् पवित्रता के महानता की चमक कहाँ तक दिखाई देती है। जैसे शरीर की ब्यूटी में मस्तक, नयन,मुख आदि सब देखते हैं वैसे प्युरिटी की ब्यूटी में बापदादा, मस्तक में संकल्प की रेखायें अर्थात् स्मृति शक्ति, नयनों में आत्मिक वृत्ति की दृष्टि, मुख पर महान आत्मा बनने की खुशी की मुस्कान, वाणी में सदा महान बन महान बनाने के बोल, सिर पर पवित्रता की निशानी लाइट का ताज - ऐसा चमकता हुआ चेहरा हरेक का बापदादा देख रहे थे। आज वतन में प्यूरिटी की काम्पीटीशन थी। आप सबका नम्बर कितना होगा। यह जानते हो? फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड प्राइज होती है। आप सबको कौन-सी प्राइज मिली?

फर्स्ट प्राइज के अधिकारी वह बच्चे बनते हैं जिन्हों की पाँचों ही बातें सम्पन्न होंगी। एक लाइट का ताज, उस ताज में भी जिसका ताज फुल सार्किल में है। जैसे चन्द्रमा का भी पूरा सार्किल होता है। कब अधूरा होता है, तो किन्हों का आधा था, किसका पूरा था। और किन्हों का तो लकीर मात्र था, जिसको कहेंगे नाम-मात्र। तो पहला नम्बर अर्थात् फर्स्ट प्राइज वाले फुल लाइट के ताजधारी।

दूसरा - जैसे मस्तक में तिलक चमकता है वैसे भाई-भाई की स्मृति अर्थात् आत्मिक स्मृति की निशानी मस्तक बीच बिन्दी चमक रही थी। तीसरा - नयनों में रूहानियत की चमक, रूहानी नजर। जिस्म को देखते हुए न देख रूहों को देखने के अभ्यास की चमक थी। रूहानी प्रेम की झलक थी। होंठों पर प्रभु प्राप्ति आत्मा और परमात्मा के महान मिलन की और सर्व प्राप्तियों की मुस्कान थी। चेहरे पर मात-पिता और श्रेष्ठ परिवार से बिछुड़े हुए कल्प बाद मिलने के सुख की लाली थी। बाप भी लाल, आत्मा भी लाल, घर भी लाल और बाप के भी बने तो लाल हो गये। कितने प्रकार की लाली हो गई? ऐसी पाँचों ही रेखायें सम्पूर्ण स्वरूप वाले फर्स्ट प्राइज में हैं। अब इसके आधार पर सोचो - फर्स्ट प्राइज 100 पाँचों ही रेखाओं में है? सेकेण्ड प्राइज वाले 70, थर्ड प्राइज वाले 30, अब बताओ आप कौन हो? सेकेण्ड प्राइज वाले -

उसमें भी नम्बरवार मैजारिटी थे। फर्स्ट और थर्ड में कम थे। 30 से 50 के अन्दर मैजारिटी थे। कहेंगे उसको भी सेकेण्ड में, लेकिन पीछे। फर्स्ट क्लास वालों में भी दो प्रकार थे - एक जन्म से ही प्यूरिटी के ब्यूटी की पाँचों ही निशानियाँ जन्म सिद्ध अधिकार के रूप में प्राप्त किये हुए थे। प्राप्त करना नहीं पड़ा लेकिन प्राप्त किया हुआ है। उन्हों के चेहरे पर अपवित्रता के नालेज की रेखायें नहीं हैं। निजी संस्कार नैचुरल लाइफ है। संस्कार परिवर्त्तन करने की मेहनत नहीं। स्वप्न में भी संकल्प मात्र अपवित्रता का वार नहीं। अर्थात् प्यूरिटी की ब्यूटी में जरा भी महीन दाग नहीं।
दूसरे जन्म से नालेज की लाइट और माइट के आधार पर सदा प्यूरिटी की ब्यूटी वाले। अन्तर यह रहा जो पहले वाले सुनाये उन्हों के लास्ट जन्म के पिछले संस्कार का भी दाग नहीं। इसलिए पिछले जन्म के संस्कारों को मिटाने के मेहनत की रेखा नहीं। नालेज है कि पिछले जन्म का बोझ आत्मा पर है लेकिन चौरासिवें जन्म के पास्ट का ड्रामा अनुसार अपवित्रता के संकल्प का अनुभव नहीं। इसलिए यह भी लिफ्ट की गिफ्ट मिली हुई है। इसलिए निजी संस्कार के रूप में सहज महान आत्मा हैं। जैसे सहज योगी वैसे सहज पवित्र आत्मा। बी होली नहीं, वह हैं ही होली। उन्हों के लिए यह स्लोगन नहीं है कि ‘‘बी होली"। वह बने बनाये हैं। फर्स्ट प्राइज में भी नम्बरवन। समझो एयरकन्डीशन ग्रुप हो गया। फिर फर्स्टक्लास, उन्हों का सिर्फ थोडा सा अन्तर है। निजी संस्कार नहीं, संस्कार बनाना पड़ता है। अर्थात् मर जीवे जन्म के आदि में निमित्त मात्र नालेज के आधार पर अटेन्शन रखना पड़ा। जरा-सी पुरूषार्थ की रेखायें जन्म के आदि में दिखाई देती हैं, अभी नहीं। पहले आदि काल की बात है। एयरकन्डीशन अर्थात् बना बनाया था। और फर्स्टक्लास वालों ने आदि में स्वयं को बनाया। उसमें भी पुरूषार्थ सहज किया है। सहज पुरूषार्थ, तीव्र पुरूषार्थ, समर्थ पुरूषार्थ। लेकिन फिर भी पुरूषार्थ की रेखा है। यह प्यूरिटी की बात चल रही है। प्यूरिटी की सब्जेक्ट में वह बने बनाये और वह पुरूषार्थ की रेखा वाले हैं। बाकी टोटल सब सब्जेक्ट कीबात अलग है। यह एक सब्जेक्ट की बात है। वह 8 रत्नों की माला और वह 100 में पहले नम्बर। थर्ड क्लास तो इण्डिया गवर्मेण्ट भी कैन्सिल प्रजा है, थर्ड क्लास वाले तो सतयुग की पहली नामीग्रामी प्रजा है, जो रायल फैमली के सम्बन्ध में सदा रहेगी। अन्दर की प्रजा होगी। बाहर की नहीं। अन्दर वाले कनेक्शन में बहुत नजदीक होंगे, लेकिन मर्त्तबे से पीछे होंगे। लक्ष्य तो एयरकन्डीशन का है ना। फर्स्टक्लास के अन्तर से सेकेण्ड क्लास को तो समझ गये होंगे। सेकेण्ड क्लास से

फर्स्ट वा एयरकन्डीशन में जाने का बहुत सहज साधन है। सिर्फ एक संकल्प का साधन है। वह एक संकल्प है - "मैं हूँ ही ओरीजनल पवित्र आत्मा।" ओरीजनल स्वरूप अपवित्र तो नहीं था ना! अनादि और आदि दोनों काल का ओरीजनल स्वरूप पवित्र था। अपवित्रता तो आर्टिफीशियल है। रीयल नहीं है। शूद्रों की देन है। शूद्रों की चीज़ ब्राह्मण कैसे यूज़ कर सकते? सिर्फ यह एक संकल्प रखो - अनादि आदि रीयल रूप पवित्र आत्मा हूँ। किसी को भी देखों तो उसका भी अनादि आदि रीयल रूप देखो, स्वयं का भी, औरों का भी। रीयल को रियलाइज करो। लाल चश्मा लगाओ। स्मृति का चश्मा । वह चश्मा नहीं। मैं भी लाल वह भी लाल, बाप भी लाल। तो लाल चश्मा हो गया ना। फिर लाल किले के ऊपर झण्डा लहरायेंगे। अभी मैदान तक कदम उठाया है। गवर्मेन्ट की नजर तक आये हो फिर नजर के बाद दिल पर आ जायेंगे। सबकी दिल से निकलेगा कि अगर हैं तो यही हैं। अभी यह आवाज फैला कि यह बडी संस्था है। बड़ा कार्य है। यह काई साधारण संस्था नहीं। नामीग्रामियों की लिस्ट में है। अभी आपके मेहनत की प्रशंसा कर रहे हैं। फिर आपके परमात्म-मुहब्बत की महिमा करेंगे। अभी 81 में यह किया है, 82 में क्या करेंगे? यह भी अच्छा किया। बापदादा खुश हैं। संगठन का स्वरूप विश्व के आगे एक वन्डरफुल चित्र में रखा है "हम सब एक है" इसका झण्डा लहराया। लोग समझते हैं कि हमने तो समझा यह ब्रह्माकुमारियाँ गई कि गई, कहाँ तक चलेंगी। लेकिन संगठन के नक्शे ने अनेक साधनों द्वारा जैसे रेडियो, टी.वी. अखबारें, नेतायें इन सबके सम्पर्क द्वारा अभी यह आवाज है कि ब्रह्माकुमारियाँ चढ़ती कला में अमर हैं, जाने वाली नहीं है, लेकिन सभी को ले जाने वाली हैं। जो सबने तन-मन-धन लगाया, विश्व के कोने-कोने के ब्राह्मण भावनाओं की मिट्टी देहली में पड़ गई। यह भी शुभ-भावनाओं की मिट्टी डालने की सेरीमनी हो गई। अपने राज्य की नींव को मजबूत किया। इसलिए कुछ फल निकला, कुछ निकलेगा। सब फल इकठ्ठा नहीं निकलता है। उल्हनों से बच गये। अब कोई उल्हना नहीं दे सकेगा कि बाहर की स्टेज पर कहाँ आते हो। लाल किले तक पहुँच गये तो उल्हना समाप्त हुआ। अपनी कमजोरी रही, आपका उल्हना नहीं रहा। इसलिए सफलतामूर्त हैं और सदा रहेंगे। आगे और नया प्लैन बनेगा। खर्चे का नहीं सोचों। खर्चा क्या किया - 10 पैसे ही तो दिये। लोग तो मनोरंजन संगठन के लिए, संगठित प्रोग्राम्स के लिए कितना खर्चा जमा करते हैं और खर्च करते हैं। आप सबका तो 10 पैसे या 10 रूपये में काम हो गया। इतना बड़ा परिवार देखना और

मिलना। यह भी स्नेह का सबूत देखा। युनिटी की खुशबू, सेवा के स्नेह की खुशबू, श्रीमत पर एवररेडी रहने की खुशबू, उमंग-उत्साह और इन्वेंशन की खुशबू चारों ओर अच्छी फैलाई। बापदादा के वतन तक पहुँची। अब सिर्फ एक खुशबू रह गई। कौन सी? भगवान के बच्चे हैं, यह खुशबू रह गई है। महान आत्मायें हैं, यहाँ तक पहुँचे हो। आत्मिक बाम्ब लगा है। लेकिन परमात्म बाम्ब नहीं लगा है। बाप आया है, बाप के यह बच्चे वा साथी हैं, अब यह लास्ट झण्डा लहराना है। भाषणों द्वारा, झाँकियों में माइक द्वारा तो सन्देश दिया। लेकिन अब सबके हृदय तक सन्देश पहुँच जाए। समझा अभी क्या करना है? यह भी दिन आ जायेगा। सुनाया ना विदेश से कोई ऐसे विशेष व्यक्ति लायेंगे तो यह भी हलचल मचेगी। सब फर्स्टक्लास प्यूरिटी की ब्यूटी में आ जायें, सेकेण्ड क्लास भी खत्म हो जाए तो यह भी दिन दूर नहीं होगा। सेकेण्ड क्लास वाले को ब्यूटीफुल बनने के लिए मेहनत का मेकप करना पड़ता। अभी यह भी छोड़ो। नैचुरल ब्यूटी में आ जाओ। जैसे देवताओं के संस्कारों में अपवित्रता की अविद्या है वही ओरीजनल संस्कार बनाओ तो विश्व के आगे प्यूरिटी की ब्यूटी का रूहानी आकर्षण स्वरूप हो जायेगा। समझा आज क्या काम्पीटीशन थी?

फारेन ग्रुप तो बहुत जाने वाला है। एक जाना अनेकों को लाना है। एक-एक स्टार अपनी दुनिया बनायेंगे। यह चैतन्य सितारों की दुनिया है इसलिए साइन्स वाले आपके यादगार सितारों में दुनिया ढूंढ रहे हैं। अभी उन्हों को भी अपनी दुनिया में ले आओ। तो मेहनत से बच जायें। उन्हों को अनुभव कराओ कि सितारों की दुनिया कौन सी है? जो आज भारत के बच्चों के साथ-साथ विदेशियों की भी विशेष ज्ञान के पिकनिक की खातिरी कर रहे हैं। जो जाने वाला होता है उनको पिकनिक देते हैं ना। तो बापदादा भी पार्टी दे रहे हैं। यह ज्ञान की पार्टी है।

ऐसे प्यूरिटी की ब्यूटी में नम्बरवन, इमप्युरिटी पर सदा विन करने वाले, प्युरिटी को निजी संस्कार बनाने वाले, सर्व सम्बन्ध का सुख एक बाप से सदा लेने वाले, एक में सारा संसार देखने वाले - ऐसे सदा आशिकों को माशुक बाप का याद प्यार और नमस्ते। महायज्ञ में सभी ने बहुत अच्छी मेहनत की है। मेहनत का फल मिल ही जाता है। आवाज बुलन्द करने में खर्चा तो करना ही पड़ता, कोई नई इन्वेंशन निकलने में खर्चा लगता है लेकिन उसकी सफलता पीछे भी फल देती रहती है। कहाँ नाम बाला होता, कहाँ आवाज निकलता, कहाँ ब्राह्मण परिवार में वृद्धि होती। महायज्ञ के कारण गवर्मेन्ट द्वारा जो सहयोग प्राप्त हुआ वह भी हमेशा के लिए उनके रिकार्ड में तो आ

गया ना। जैसे रेलवे कन्शेसन का हुआ, तो यह भी रिकार्ड में आ गया। ऐसे गुप्त कई कार्य होते हैं। प्रेजीडेन्ट तक भी आवाज तो गया कि इतने सेवाकेन्द्रों से इतने लगन से आये हैं। यह भी प्रत्यक्षफल है। जिन्होंने जो सेवा की, बापदादा रिजल्ट से सन्तुष्ट हैं। इसलिए मेहनत की मुबारक हो।

सेवाधारी भाई-बहनों से - हरेक अपने को कोटों में कोऊ, कोऊ मे कोऊ, ऐसी श्रेष्ठ आत्मा समझते हो? सेवा की लाटरी मिलना यह भी एक भाग्य की लकीर है। यह सेवा, सेवा नहीं है लेकिन प्रत्यक्ष मेवा है। एक होता है ताजा फ्रीट, एक होता है सूखा फ्रीट। यह कौन सा फल है? यह प्रत्यक्ष भाग्य का फल है। अभी अभी करो, अभी-अभी खाओ। भविष्य में जमा होता ही है लेकिन भविष्य से भी पहले प्रत्यक्ष फल होता है। वायुमण्डल के सहयोग की छत्रछाया कितना सहज श्रेष्ठ बनाती है। साथ-साथ पुरानी दुनिया के आवाज और नजर से दूर हो जाते हो। नौकरी के बजाय, यज्ञ-सेवा घर की सेवा हो जाती है। नौकरी की टोकरी भी तो उतर जाती है ना। सेवा का ताज धारण हो जाता है। नौकरी की टोकरी तो मजबूरी से उठा रहे हो, दिल से नहीं, डायरेक्शन है तो कर रहे हो। तो इस सेवा से कितने फायदे हो जाते? संग कितना श्रेष्ठ मिल जाता, सागर का कण्ठा और सदा ज्ञान की चर्चा, बाप और सेवा के सिवाए और कुछ नहीं। यह मदद है ना। तो कितना भाग्य है। मातायें क्या समझती हैं? बना बनाया भाग्य हथेली पर आ जाता है। जैसे कृष्ण के चित्र में स्वर्ग हथेली पर है तो संगम पर भाग्य का गोला हाथ में है। इतने भाग्यवान हो। यह सेवा अभी साधारण बात लगती लेकिन यह साधारण नहीं है। यह वन्डरफुल लकीर है। जितना समय यह लाटरी मिलती है, इसी लाटरी को अविनाशी बना सकते हो। ऐसे अभ्यासी बन जाओ जो कहाँ भी रहते यहाँ जैसी स्थिति बना सको। यहाँ सहज योगी की अनुभूति होती है ना! मेहनत समाप्त हो जाती, तोय ही सहजयोग का अनुभव परम्परा चलाते रहो। संगमयुग में परम्परा। मधुबन में यह अनुभव छोड़ के नहीं जाना लेकिन साथ ले जाना। ऐसे कई कहते हैं - मधुबन से नीचे उतरे तो मीटर भी नीचे उतर गया। ऐसे नहीं करना। इसी अभ्यास का लाभ लो। सेवा करते हुए भी सहजयोगी की स्थिति पर अटेन्शन रखो। ऐसे नहीं सिर्फ कर्मणा सेवा में बिजी हो जाओ। कर्मणा के साथ-साथ मंसा स्थिति भी सदा श्रेष्ठ रहे, तब सेवा का फायदा है। शक्तियाँ भी अच्छी स्नेही हैं, अथक हैं, बाहों में दर्द तो नहीं पड़ता, बापदादा स्नेह से पाँव और बाँहें दबा रहे हैं। स्नेह ही

पाँव दबाना है। अच्छा - मधुबन में सेवा का बीज डाला अर्थात् सदा के लिए श्रेष्ठ कर्मों का फल बोया।

मुरली का सार

1. फर्स्ट प्राइज के अधिकारी वे हैं जिनकी निम्नलिखित 5 बातें सम्पन्न होंगी -

अ- फुल लाइट के ताजधारी।

ब- जैसे मस्तक में तिलक चमकता है वैसे भाई-भाई की स्मृति, आत्मिक स्मृति की निशानी।

स- नयनों मे रूहानियत की चमक।

य- होठों पर परिवार प्राप्ति, आत्मा और परमात्मा के महान मिलन की और सर्व प्राप्तियों की मुस्कान।

र- चेहरे पर मात-पिता और श्रेष्ठ परिवार से कल्प बाद मिलने के सुख की लाली।

2. फर्स्ट वा एयरकन्डीशन में आने का सहज साधन है - सिर्फ यह सकंल्प रखो कि मैं अनादि, आदि रियल-रूप पवित्र आत्मा हूँ। किसको भी देखो उसका भी आदि अनादि पवित्र रूप देखो।

06-01-1982 "संगमयुगी ब्राह्मण जीवन में पवित्रता का महत्त्व"

पवित्रता के सागर, सदा पूज्य शिव बाबा बोले:-
‘‘बापदादा आज विशेष बच्चों के प्यूरिटी की रेखा देख रहे हैं। संगमयुग पर विशेष वरदाता बाप से दो वरदान सभी बच्चों को मिलते हैं। एक- ‘सहजयोगी भव'। दूसरा- ‘पवित्र भव'। इन दोनों वरदानों को हर ब्राह्मण आत्मा पुरुषार्थ प्रमाण जीवन में धारण कर रहे हैं। ऐसे धारणा स्वरूप आत्माओं को देख रहे हैं। हर एक बच्चे के मस्तक और नयनों द्वारा पवित्रता की झलक दिखाई दे रही है। पवित्रता संगमयुगी ब्राह्मणों के महान जीवन की महानता है। ‘पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है।' जैसे स्थूल शरीर में विशेष श्वास चलना आवश्यक है। श्वास नहीं तो जीवन नहीं। ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वास है - ‘पवित्रता'। 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार अर्थात् फाउण्डेशन पवित्रता है। आत्मा अर्थात् बच्चे और बाप से मिलन का आधार ‘पवित्र बुद्धि' है। सर्व संगमयुगी प्राप्तियों का आधार ‘पवित्रता' है। पवित्रता, पूज्य-पद पाने का आधार है। ऐसे महान वरदान को सहज प्राप्त कर लिया है? वरदान के रूप में अनुभव करते हो वा मेहनत से प्राप्त करते हो? वरदान में मेहनत नहीं होती। लेकिन वरदान को सदा जीवन में प्राप्त करने के लिए सिर्फ एक बात का अटेन्शन चाहिए कि ‘वरदाता और वरदानी' दोनों का सम्बन्ध समीप और स्नेह के आधार से निरन्तर चाहिए। वरदाता और वरदानी आत्मायें दोनों सदा कम्बाइन्ड रूप में रहें तो पवित्रता की छत्रछाया स्वत: रहेगी। जहाँ सर्वशिक्तवान बाप है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है। सदा बाप और आप युगल रूप में रहो। सिंगल नहीं, युगल। सिंगल हो जाते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है। नहीं तो पवित्रता का सुहाग और श्रेष्ठ भाग्य सदा आपके साथ है। तो बाप को साथ रखना अर्थात् अपना सुहाग, भाग्य साथ रखना। तो सभी, बाप को सदा साथ रखने में अभ्यासी हो ना?
विशेष डबल विदेशी बच्चों को अकेला जीवन पसन्द नहीं है ना? सदा कम्पैनियन चाहिए ना! तो बाप को कम्पैनियन बनाया अर्थात् पवित्रता को सदा के लिए अपनाया। ऐसे युगलमूर्त के लिए पवित्रता अति सहज है। पवित्रता ही नैचरल जीवन बन जायेगी।

पवित्र रहूँ, पवित्र बनूँ, यह क्वेश्चन ही नहीं। ब्राह्मणों की लाइफ ही 'पवित्रता' है। ब्राह्मण जीवन का जीय-दान ही पवित्रता है। आदि- अनादि स्वरूप ही पवित्रता है। जब स्मृति आ गई कि मैं आदि-अनादि पवित्र आत्मा हूँ। स्मृति आना अर्थात् पवित्रता की समर्था आना। तो स्मृति स्वरूप, समर्थ स्वरूप आत्मायें तो निजी पवित्र संस्कार वाली - निजी संस्कार पवित्र हैं। संगदोष के संस्कार अपवित्रता के हैं। तो निजी संस्कारों को इमर्ज करना सहज है वा संगदोष के संस्कार इमर्ज करना सहज है? ब्राह्मण जीवन अर्थात् सहजयोगी और सदा के लिए पावन। पवित्रता ब्राह्मण जीवन के विशेष जन्म की विशेषता है। पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आँखों की रोशनी है। पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है।

तो सोचो - कि ब्राह्मण जीवन की महानता क्या हुई? पवित्रता हुई ना! ऐसी महान चीज को अपनाने में मेहनत नहीं करो, हठ से नहीं अपनाओ। मेहनत और हठ निरन्तर नहीं हो सकता। लेकिन यह पवित्रता तो आपके जीवन का वरदान है, इसमें मेहनत और हठ क्यों? अपनी निजी वस्तु है। अपनी चीज को अपनाने में मेहनत क्यों? पराई चीज को अपनाने में मेहनत होती है। पराई चीज अपवित्रता है, न कि पवित्रता। रावण पराया है, अपना नहीं है। बाप अपना है, रावण पराया है। तो बाप का वरदान पवित्रता है रावण का श्राप अपवित्रता है। तो रावण पराये की चीज को क्यों अपनाते हो? पराई चीज अच्छी लगती है? अपनी चीज पर नशा होता है। तो सदा स्व-स्वरूप पवित्र है, स्वधर्म पवित्रता है अर्थात् आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है। स्वदेश पवित्र देश है। स्वराज्य पवित्र राज्य है। स्व का यादगार परम पवित्र पूज्य है। कर्मेन्द्रियों का अनादि स्वभाव सुकर्म है, बस यही सदा स्मृति में रखो तो मेहनत और हठयोग से छूट जायेंगे। बापदादा बच्चों को मेहनत करते हुए नहीं देख सकते, इसलिए हो ही सब पवित्र आत्मायें। स्वमान में स्थित हो जाओ। स्वमान क्या है? - "मैं परम पवित्र आत्मा हूँ।" सदा अपने इस स्वमान के आसन पर स्थित होकर हर कर्म करो। तो सहज वरदानी हो जायेंगे। यह सहज आसन है। तो सदा पवित्रता की झलक और फलक में रहो। स्वमान के आगे देह अभिमान आ नहीं सकता। समझा!

डबल विदेशी तो इसमें पास हो ना? हठयोगी तो नहीं हो? मेहनत वाले योगी तो नहीं हो? मुहब्बत में रहो तो मेहनत खत्म। लवलीन आत्मा बनो, सदा एक बाप दूसरा न

कोई, यही नैचरल प्युरिटी है। तो यह गीत गाना नहीं आता है? यही गीत गाना सहज पवित्र आत्मा बनना है। अच्छा –

ऐसे सदा स्व-आसन के अधिकारी आत्मायें, सदा ब्राह्मण जीवन की महानता वा विशेषता को जीवन में धारण करने वाली आदि अनादि पवित्र आत्मायें, स्व स्वरूप, स्वधर्म, सुकर्म में स्थित रहने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को वा परम पवित्र पूज्य आत्माओं को, पवित्रता के वरदान प्राप्त किये हुए महान आत्माओं को, बापदादा का याद प्यार और नमस्ते।"

फ्रांस, ब्राजील तथा अन्य कुछ स्थानों से आये हुए विदेशी बच्चों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात –

(1) सभी अपने को सदा मास्टर सर्वशक्तिवान समझते हुए हर कार्य करते हो? सदा सेवा के क्षेत्र में अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान समझकर सेवा करेंगे तो सेवा में सफलता हुई पड़ी है क्योंकि वर्तमान समय की सेवा में सफलता का विशेष साधन है - 'वृत्ति से वायुमण्डल बनाना'। आजकल की आत्माओं को अपनी मेहनत से आगे बढ़ना मुश्किल है इसलिए अपने वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल ऐसा पावरफुल बनाओ जो आत्मायें स्वत: आकर्षित होते आ जाएँ। तो सेवा की वृद्धि का फाउण्डेशन यह है - बाकी साथ-साथ जो सेवा के साधन हैं वह चारों ओर करने चाहिए। सिर्फ एक ही एरिया में ज्यादा मेहनत और समय नहीं लगाओ और चारों तरफ सेवा के साधनों द्वारा सेवा को फैलाओ तो सब तरफ निकले हुए चैतन्य फूलों का गुलदस्ता तैयार हो जायेगा।

(2) बापदादा खुशनसीब बच्चों को देख अति हर्षित होते हैं। हरेक रूहे गुलाब हैं। रूहे गुलाब ग्रुप अर्थात् रूहानी बाप की याद में लवलीन रहने वाला ग्रुप। सभी के चेहरे पर खुशी की झलक चमक रही है।

बापदादा एक-एक रत्न की वैल्यु को जानते हैं। एक-एक रत्न विश्व में अमूल्य रत्न है इसलिए बापदादा उसी विशेषता को देखते हुए हर रत्न की वैल्यु को देखते हैं। एक-एक रत्न अनेकों की सेवा के निमित्त बनने वाला है। सदा अपने को विजयी रत्न अनुभव करो। सदा अपने मस्तक पर विजय का तिलक लगा हुआ हो क्योंकि जब बाप के बन गये तो विजय तो आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। इसलिए यादगार भी 'विजय

माला' गाई और पूजी जाती है। सभी विजय माला के मणके हो ना? अभी फाइनल नहीं हुआ है इसलिए चांस है जो भी चाहे सीट ले सकते हैं।

(3) सदा अपने को हर गुण, हर शक्ति के अनुभवी मूर्त अनुभव करते हो? क्योंकि संगमयुग पर ही सर्व अनुभवी मूर्त बन सकते हो। जो संगम युग की विशेषता है उसको जरूर अनुभव करना चाहिए ना। तो सभी अपने को ऐसे अनुभवीमूर्त समझते हो? शक्तियाँ और गुण, दोनों ही बड़े खजाने हैं। तो कितने खजानों के मालिक बन गये हो? बापदादा तो सर्व खजाने बच्चों को देने के लिए ही आये हैं। जितना चाहो उतना ले सकते हो? सागर है ना! तो सागर अर्थात् अथाह। खुटने वाला नहीं। तो मास्टर सागर बने हो?

सबसे ज्यादा भाग्य विदेशियों का है। जो घर बैठे बाप का परिचय मिल गया है। इतना भाग्यवान अपने को समझते हो ना? बहुत लगन वाली आत्मायें हैं, स्नेही आत्मायें हैं। स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप बाप और बच्चों का मेला हो रहा है। हरेक अपने को सूर्यवंशी आत्मा समझते हो? पहले राज्य में आयेंगे वा दूसरे नम्बर के राज्य में आयेंगे? फर्स्ट राज्य में आने का एक ही पुरूषार्थ है, वह कौन सा? सदा एक की याद में रहकर एकरस अवस्था बनाओ तो वन-वन और वन में आ जायेंगे। अच्छा-

24-03-1982 “ब्राह्मण जीवन की विशेषता है - “पवित्रता”

परमपवित्र बापदादा बोले-

“आज बापदादा अपने पावन बच्चों को देख रहे हैं। हरेक ब्राह्मण आत्मा कहाँ तक पावन बनी है - यह सबका पोतामेल देख रहे हैं। ब्राह्मणों की विशेषता है ही ‘पवित्रता'। ब्राह्मण अर्थात् पावन आत्मा। पवित्रता को कहाँ तक अपनाया है, उसको परखने का यन्त्र क्या है? “पवित्र बनो", यह मन्त्र सभी को याद दिलाते हो लेकिन श्रीमत प्रमाण इस मन्त्र को कहाँ तक जीवन मे लाया है? जीवन अर्थात् सदाकाल। जीवन में सदा रहते हो ना! तो जीवन में लाना अर्थात् सदा पवित्रता को अपनाना। इसको परखने का यन्त्र जानते हो? सभी जानते हो और कहते भी हो कि ‘पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है'। अर्थात् जहाँ पवित्रता होगी वहाँ सुख-शांति की अनुभूति अवश्य होगी। इसी आधार पर स्वयं को चैक करो - मंसा संकल्प में पवित्रता है, उसकी निशानी - मन्सा में सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप की अनुभूति होगी। अगर कभी भी मंसा में व्यर्थ संकल्प आता है तो शांति के बजाय हलचल होती है। क्यों और क्या इन अनेक क्वेश्चन के कारण सुख स्वरूप की स्टेज अनुभव नहीं होगी। और सदैव समझने की आशा बढ़ती रहेगी - यह होना चाहिए, यह नहीं होना चाहिए, यह कैसे, यह ऐसे। इन बातों को सुलझाने में ही लगे रहेंगे। इसलिए जहाँ शांति नहीं वहाँ सुख नहीं। तो हर समय यह चेक करो कि किसी भी प्रकार की उलझन सुख और शांति की प्राप्ति में विघ्न रूप तो नहीं बनती है! अगर क्यों, क्या का क्वेश्चन भी है तो संकल्प शक्ति में एकाग्रता नहीं होगी। जहाँ एकाग्रता नहीं, वहाँ सुख- शांति की अनुभूति हो नहीं सकती। वर्तमान समय के प्रमाण फरिश्ते-पन की सम्पन्न स्टेज के वा बाप समान स्टेज के समीप आ रहे हो, उसी प्रमाण पवित्रता की परिभाषा भी अति सूक्ष्म समझो। सिर्फ ब्रह्मचारी बनना भविष्य पवित्रता नहीं लेकिन ब्रह्मचारी के साथ ‘ब्रह्मा आचार्य' भी चाहिए। शिव आचार्य भी चाहिए। अर्थात् ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाला। शिव बाप के उच्चारण किये हुए बोल पर चलनेवाला। फुट स्टैप अर्थात् ब्रह्मा बाप के हर कर्म रूपी कदम पर कदम रखने वाले। इसको कहा जाता है - ‘ब्रह्मा आचार्य'। तो ऐसी सूक्ष्म रूप से चैंकिग करो कि सदा पवित्रता की

प्राप्ति, सुख-शांति की अनुभूति हो रही है? सदा सुख की शैय्या पर आराम से अर्थात् शांति स्वरूप में विराजमान रहते हो? यह ब्रह्मा आचार्य का चित्र है।

सदा सुख की शैय्या पर सोई हुई आत्मा के लिए यह विकार भी छत्रछाया बन जाता हैं - दुश्मन बदल सेवाधारी बन जाते हैं। अपना चित्र देखा है ना! तो 'शेष शय्या' नहीं लेकिन 'सुख-शय्या'। सदा सुखी और शान्त की निशानी है - सदा हर्षित रहना। सुलझी हुई आत्मा का स्वरूप सदा हर्षित रहेगा। उलझी हुई आत्मा कभी हर्षित नहीं देखेंगे। उसका सदा खोया हुआ चेहरा दिखाई देगा और वह सब कुछ पाया हुआ चेहरा दिखाई देगा। जब कोई चीज खो जाती है तो उलझन की निशानी क्यों, क्या, कैसे ही होता है। तो रूहानी स्थिति में भी जो भी पवित्रता को खोता है, उसके अन्दर क्यों, क्या और कैसे की उलझन होती है। तो समझा कैसे चेक करना है? सुख-शांति के प्राप्ति स्वरूप के आधार पर मंसा पवित्रता को चेक करो।

दूसरी बात - अगर आपकी मंसा द्वारा अन्य आत्माओं को सुख और शांति की अनुभूति नहीं होती अर्थात् पवित्र संकल्प का प्रभाव अन्य आत्मा तक नहीं पहुँचता तो उसका भी कारण चेक करो। किसी भी आत्मा की जरा भी कमज़ोरी अर्थात् अशुद्धि अपने संकल्प में धारण हुई तो वह अशुद्धि अन्य आत्मा को सुख-शान्ति की अनुभूति करा नहीं सकेगी। या तो उस आत्मा के प्रति व्यर्थ वा अशुद्ध भाव है वा अपनी मंसा पवित्रता की शक्ति में परसेन्टेज की कमी है। जिस कारण औरों तक वह पवित्रता की प्राप्ति का प्रभाव नहीं पड़ सकता। स्वयं तक है, लेकिन दूसरों तक नहीं हो सकता। लाइट है, लेकिन सर्चलाइट नहीं है। तो पवित्रता के सम्पूर्णता की परिभाषा है - सदा स्वयं में भी सुख-शान्ति स्वरूप और दूसरों को भी सुख-शांति की प्राप्ति का अनुभव कराने वाले। ऐसी पवित्र आत्मा अपनी प्राप्ति के आधार पर औरों को भी सदा सुख और शान्ति, शीतलता की किरणें फैलाने वाली होगी। तो समझा सम्पूर्ण पवित्रता क्या है? पवित्रता की शक्ति इतनी महान है जो अपनी पवित्र मंसा अर्थात् शुद्ध वृत्ति द्वारा प्रकृति को भी परिवर्तन कर लेते। मंसा पवित्रता की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है - प्रकृति का भी परिवर्तन। स्व परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन। प्रकृति के पहले व्यक्ति। तो व्यक्ति परिवर्तन और प्रकृति परिवर्तन - इतना प्रभाव है मंसा पवित्रता की शक्ति का। आज मंसा पवित्रता को स्पष्ट सुनाया - फिर वाचा और कर्मणा अर्थात् सम्बन्ध और सम्पर्क में सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा क्या है वह आगे सुनायेंगे। अगर पवित्रता की परसेन्टेज में 16 कला से 14 कला हो गये तो क्या बनना पड़ेगा? जब 16 कला की

पवित्रता अर्थात् सम्पूर्णता नहीं तो सम्पूर्ण सुख-शांति के साधनों की भी प्राप्ति कैसे होगी! युग बदलने से महिमा ही बदल जाती है। उसको सतोप्रधान, उसको सतो कहते हैं। जैसे सूर्यवंशी अर्थात् सम्पूर्ण स्टेज है। 16 कला अर्थात् फुल स्टेज है वैसे हर धारणा में सम्पन्न अर्थात् फुल स्टेज प्राप्त करना 'सूर्यवंशी' की निशानी है। तो इसमें भी फुल बनना पड़े। कभी सुख की शय्या पर कभी उलझन की शय्या पर इसको सम्पन्न तो नहीं कहेंगे ना! कभी बिन्दी का तिलक लगाते, कभी क्यों, क्या का तिलक लगाते। तिलक का अर्थ ही है - 'स्मृति'। सदा तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। तीन बिन्दियों का तिलक ही सम्पन्न स्वरूप है। यह लगाने नहीं आता! लगाते हो लेकिन अटेन्शन रूपी हाथ हिल जाता है। अपने पर भी हंसी आती है ना! लक्ष्य पावरफुल है तो लक्षण सम्पूर्ण सहज हो जाते हैं। मेहनत से भी छूट जायेंगे। कमजोर होने के कारण मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है। शक्ति स्वरूप बनो तो मेहनत समाप्त। अच्छा –
सदा सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, यह अधिकार प्राप्त की हुई आत्मायें, सदा सम्पूर्ण पवित्रता द्वारा स्वयं और सर्व को सुख-शांति की अनुभूति कराने वाली, अनुभूति करने और कराने के यन्त्र द्वारा सदा पवित्र बनो - इस मंत्र को जीवन में लाने वाले, ऐसे सम्पूर्ण पवित्रता, सुख-शांति के अनुभवों में स्थित रहने वाले, बाप समान फरिश्ता स्वरूप आत्माओं को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते।"

पार्टियों के साथ

1. सदा रूहानियत की खुशबू फैलाने वाले सच्चे-सच्चे रूहानी गुलाब:- सभी बच्चे- सदा रूहानी नशे में रहने वाले सच्चे रूहानी गुलाब हो ना? जैसे रूहे गुलाब का नाम बहुत मशहूर है वैसे आप सभी आत्मायें रूहानी गुलाब हो। रूहानी गुलाब अर्थात् चारों ओर रूहानियत की खुशबू फैलाने वाले। ऐसे अपने को रूहानी गुलाब समझते हो? सदा रूह को देखते और रूहों के मालिक के साथ रूह-रूहान करते यही रूहानी गुलाब की विशेषता है। सदा शरीर को देखते रूह अर्थात् आत्मा को देखने का पाठ पक्का है ना! इसी रूह को देखने के अभ्यासी रूहानी गुलाब हो गये। बाप के बगीचे के विशेष पुष्प हो क्योंकि सबसे नम्बरवन रूहानी गुलाब हो। सदा एक की याद में रहने वाले अर्थात् एक नम्बर में आना है, यही सदा लक्ष्य रखो।
(दीदी जी- दिल्ली मेले की ओपानिंग पर जाने की छुट्टी ले रहीं हैं)

सभी को उड़ाने के लिए जा रही हो ना! याद में, स्नेह में, सहयोग में, सबमें उड़ाने के लिए जा रही हो। यह भी ड्रामा में बाइप्लाट्स रखे हुए हैं। तो अच्छा है अभी-अभी जाना, अभी-अभी आना। आत्मा ही प्लेन बन गई। जैसे प्लेन में आना, जाना मुश्किल नहीं वैसे आत्मा ही उड़ता पंछी हो गई है। इसलिए आने-जाने में सहज होता है। यह भी ड्रामा में हीरो पार्ट है, थोड़े समय में भासना अधिक देने का। तो यह हीरो पार्ट बजाने के लिए जा रही हो। अच्छा - सभी को याद देना और सदा सफलता स्वरूप का शुभ संकल्प रखते आगे बढ़ते चलो - यही स्मृति स्वरूप बनाकर आना। फिर भी दिल्ली है। दिल्ली को तो पवित्र स्थान बनाना ही है। आवाज फिर भी दिल्ली से ही निकलेगा। सबके माइक दिल्ली से ही पहुँचेगे। जब गवर्मेंट से आवाज निकलेगा तब समाप्ति हो जायेगी। तो भारत के नेतायें भी जागेंगे। उसकी तैयारी के लिए जा रही हो ना! अच्छा-

24-04-1983 रूहानी पर्सनेलिटी

कुमारों की भट्टी में प्राण अव्यक्त बापदादा के उच्चारे हुए मधुर महावाक्य:-
आज बापदादा विश्व की सर्व आत्माओं प्रति प्रत्यक्ष जीवन का प्रमाण देने वाले बच्चों से मिलने आये हैं। कुमार सो ब्रह्माकुमार, तपस्वी कुमार, राजऋषि कुमार, सर्व त्याग से भाग्य प्राप्त करने वाले कुमार ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं का आज विशेष संगठन है। कुमार जीवन शक्तिशाली जीवन गाई जाती है। लेकिन ब्रह्माकुमार डबल शक्तिशाली कुमार है। एक तो शारीरिक शक्ति दूसरी आत्मिक शक्ति। साधारण कुमार शारीरिक शक्ति वा विनाशी आक्यूपेशन की शक्ति वाले हैं। ब्रह्माकुमार अविनाशी ऊँचे ते ऊँचे मास्टर सर्वशक्तिवान के आक्यूपेशन के शक्तिशाली हैं। आत्मा पवित्रता की शक्ति से जो चाहे वह कर सकती है। ब्रह्माकुमारों का संगठन विश्व परिवर्तक संगठन है। सभी अपने को ऐसे शक्तिशाली समझते हो? अपने को पवित्रता का जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त किया हुआ अधिकारी आत्मा समझते हो? ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है - 'पवित्र कुमार'। ब्रह्मा बाप ने दिव्य जन्म देते ''पवित्र भव, योगी भव'' यही वरदान दिया। ब्रह्मा बाप ने जन्मते ही बड़ी माँ के रूप में पवित्रता के प्यार से पालना की। माँ के रूप से सदा पवित्र बनो, योगी बनो, श्रेष्ठ बनो बाप समान बनो, विशेष आत्मा बनो, सर्वगुण मूर्त बनो, ज्ञान मूर्त बनो, सुख शान्ति स्वरूप बनो, हर रोज यह लोरी दी। बाप के याद की गोदी में पालन किया। सदा खुशियों के झूले में झुलाया। ऐसे मात पिता के श्रेष्ठ बच्चे - ब्रह्माकुमार वा कुमारी हैं। ऐसा स्मृति का समर्थ नशा रहता है! ब्रह्माकुमार के विशेष जीवन के महत्व को सदा याद रखते हो? सिर्फ नामधारी ब्रह्माकुमार तो नहीं? अपने आपको श्रेष्ठ जीवनधारी ब्रह्माकुमार समझते हो? सदा यह याद रहता है कि विश्व की विशाल स्टेज पर पार्ट बजाने वाले विशेष पार्टधारी हैं। वा सिर्फ घर में वा सेवाकेन्द्र पर वा दफ्तर में पार्ट बजाने वाले हैं! हर कर्म करते विश्व की आत्मायें हमें देख रही हैं यह स्मृति में रहता है? विश्व की आत्मायें जिस नजर से आप सबको देखती हैं यही विशेष पार्टधारी अर्थात् हीरो पार्टधारी हैं, उसी प्रमाण हर कर्म करते रहते हो? वा यह याद रहता कि साधारण रूप से आपस में बोल रहे हैं, चल रहे हैं!

ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है सदा प्युरिटी की पर्सनेलिटी और रॉयल्टी में रहना। यही प्युरिटी की पर्सनैलिटी विश्व की आत्माओं को प्युरिटी की तरफ आकर्षित करेगी। और यही प्युरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी की रायल्टी देने से छुड़ायेगी। रायल्टी के दोनों ही अर्थ होते हैं। इसी रायल्टी के अनुसार भविष्य रायल फैमली में आ सकेंगे। तो चेक करो ऐसी रॉयल्टी और पर्सनेलिटी जीवन में अपनाई है? यूथ ग्रुप पर्सनेलिटी को ज्यादा बनाती है ना! तो अपनी रूहानी पर्सनेलिटी अविनाशी पर्सनेलिटी अपनाई है? जो भी देखे हरेक ब्रह्माकुमार और कुमारी से यह पर्सनेलिटी अनुभव करे। शरीर की पर्सनेलिटी वह तो आत्माओं को देहभान में लाती है और प्युरिटी की पर्सनेलिटी देही अभिमानी बनाए बाप के समीप लाती है। तो विशेष कुमार ग्रुप को अब क्या सेवा करनी है? एक तो अपने जीवन परिवर्तन द्वारा आत्माओं की सेवा, अपने जीवन के द्वारा आत्माओं को जीयदान देना। स्व-परिवर्तन द्वारा औरों को परिवर्तन करना। अनुभव कराओ कि ब्रह्माकुमार अर्थात् वृत्ति, दृष्टि, कृत्ति और वाणी परिवर्तन। साथ-साथ प्युरिटी की पर्सनेलिटी, रूहानी रायल्टी का अनुभव कराओ। आते ही, मिलते ही इस पर्सनेलिटी की ओर आकर्षित हों। सदा बाप का परिचय देने वाले वा बाप का साक्षात्कार कराने वाले रूहानी दर्पण बन जाओ। जिस चित्र और चरित्र से सर्व को बाप ही दिखाई दे। किसने बनाया? बनाने वाला सदा दिखाई दे। जब भी कोई वन्डरफुल वस्तु को देखते हैं वा वन्डरफुल परिवर्तन देखते हैं तो सबके मन से, मुख से यही आवाज़ निकलता है कि किसने बनाई वा यह परिवर्तन कैसे हुआ। किस द्वारा हुआ। यह तो जानते हो ना। इतना बड़ा परिवर्तन जो कौड़ी से हीरा बन जाए तो सबके मन में बनाने वाला स्वत: ही याद आयेगा। कुमार ग्रुप भागदौड़ बहुत करता है। सेवा में भी बहुत भाग दौड़ करते हो ना। लेकिन सेवा के क्षेत्र में भाग दौड़ करते 'बैलेन्स' रखते हो? स्व सेवा और सर्व की सेवा दोनों का बैलेन्स सदा रहता है। बैलेन्स नहीं होगा तो सेवा की भाग दौड़ में माया भी बुद्धि की भाग दौड़ करा देती है। बैलेन्स से कमाल होती है। बैलेन्स रखने वाले का परिणाम सेवा में भी कमाल होगी। नहीं तो बाहरमुखता के कारण कमाल के बजाए अपने वा दूसरों के भाव स्वभाव की धमाल में आ जाते हो। तो सदा सर्व की सेवा के साथ-साथ पहले स्व सेवा आवश्यक है। यह बैलेन्स सदा स्व में और सेवा में उन्नति को प्राप्त कराता रहेगा। कुमार तो बहुत कमाल कर सकते हैं। कुमार जीवन के परिवर्तन का प्रभाव जितना दुनिया पर पड़ेगा उतना बड़ों का नहीं। कुमार ग्रुप गवर्मेन्ट को भी अपने परिवर्तन द्वारा प्रभु परिचय दे

सकते हो। गवर्मेन्ट को भी जगा सकते हो। लेकिन वह परिक्षा लेंगे। ऐसे ही नहीं मानेंगे। तो ऐसे कुमार तैयार है! गुप्त सी.आई.डी. आपके पेपर लेंगे कि कहाँ तक विकारों पर विजयी बनें हैं। आप सबके नाम गवर्मेन्ट में भेजे? 500 कुमार भी कोई कम थोड़े ही हैं। सबने लेजर में अपना नाम और एड्रेस भरा है ना। तो आपकी लिस्ट भेजें? सभी सोच रहे हैं पता नहीं कौन से सी.आई.डी. आयेंगे! जान बूझ कर क्रोध दिलायेंगे। पेपर तो प्रैक्टिकल लेंगे ना। प्रैक्टिकल पेपर देने लिए तैयार हो? बापदादा के पास सबका हाँ और ना फिल्म की रीति से भर जाता है। यह लक्ष्य रखो कि ऐसा रूहानी आत्मिक शक्तिशाली यूथ ग्रुप बनावें जो विश्व को चैलेन्ज करे कि हम रूहानी यूथ ग्रुप विश्व शान्ति की स्थापना के कार्य में सदा सहयोगी हैं। और इसी सहयोग द्वारा विश्व परिवर्तन करके दिखायेंगे। समझा क्या करना है। ऐसा पक्का ग्रुप हो। ऐसे नहीं आज चैलेन्ज करे और कल स्वयं ही चेन्ज हो जाएं। तो ऐसा संगठन तैयार करो। मैजारिटी नये-नये कुमार हैं। लेकिन लास्ट सो फास्ट जाकर दिखाओ। बैलेन्स की कमाल से विश्व को कमाल दिखाओ। अच्छा –

ऐसे सदा स्व परिवर्तन द्वारा सर्व का परिवर्तन करने वाले, अपने जन्म-सिद्ध वरदान वा अधिकार, 'योगी भव, पवित्र भव' को सदा जीवन में अनुभव कराने वाले, सदा प्युरिटी की पर्सनैलिटी द्वारा अन्य आत्माओं को बाप तरफ आकर्षित कराने वाले, अविनाशी आक्यूपेशन के नशे में रहने वाले, मात पिता की श्रेष्ठ पालना का परिवर्तन द्वारा रिटर्न देने वाले ऐसे रूहानी रायल्टी वाली विशेष आत्माओं को बाप दादा का यादप्यार अौर नमस्ते।

पार्टियों के साथ

(1) सदा अपने को डबल लाइट अर्थात् सर्व बन्धनों से मुक्त हल्के समझते हो? हल्के-पन की निशानी क्या है? हल्का सदा उड़ता रहेगा। बोझ नीचे ले आता है। सदा स्वयं को बाप के हवाले करने वाले सदा हल्के रहेंगे। अपनी जिम्मेवारी बाप को दे दो अर्थात् अपना बोझ बाप को दे दो तो स्वयं हल्के हो जायेंगे। बुद्धि से सरेन्डर हो जाओ। अगर बुद्धि से सरेन्डर होंगे तो और कोई बात बुद्धि में नहीं आयेगी। बस सब कुछ बाप का है, सब कुछ बाप में है तो और कुछ रहा ही नहीं। जब रहा ही नहीं तो बुद्धि कहाँ जायेगी कोई पुरानी गली, पुराने रास्ते रह तो नहीं गये हैं! बस एक बाप, एक ही याद का रास्ता, इसी रास्ते से मंज़िल पर पहुँचो।

(2) सदा खुशी के झूले में झूलने वाले हो ना। कितना बढ़िया झूला बापदादा से प्राप्त हुआ है। यह झूला कभी टूट तो नहीं जाता? याद और सेवा की दोनों रस्सियाँ टाइट हैं तो झूला सदा ही एकरस रहता है। नहीं तो एक रस्सी ढीली, एक टाइट तो झूला हिलता रहेगा। झूला हिलेगा तो झूलने वाला गिरेगा। अगर दोनों रस्सियाँ मजबूत हैं तो झूलने में मनोरंजन होगा। अगर गिरे तो मनोरंजन के बजाए दु:ख हो जायेगा। तो याद और सेवा दोनों रस्सियाँ समान रहें, फिर देखो ब्राह्मण जीवन का कितना आनन्द अनुभव करते हो। सर्वशक्ति- वान बाप का साथ है, खुशियों का झूला है और चाहिए ही क्या!

09-05-1983 ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार स्मृति, वृत्ति, और दृष्टि की स्वच्छता

स्वच्छ, पवित्र, श्रेष्ठ तथा पूज्य बनाने वाले, परम पवित्र अव्यक्त बापदादा बोले:-
आज बापदादा सभी ब्राह्मण बच्चों के श्रेष्ठ कर्म की रेखा देख रहे हैं। जिस कर्म की रेखा द्वारा ही वर्तमान और भविष्य तकदीर की लकीर खींची जा रही है। सभी ब्राह्मणों की कर्म रेखा वा कर्म कहानी वा कर्मों का खाता देख रहे थे। वैसे भाग्य विधाता बाप के, कर्मों के गुह्य गति के ज्ञाता बाप के डायरेक्ट वर्से के अधिकारी बच्चे हैं। साथ-साथ स्वयं विधाता बापदादा ने सभी बच्चों को गोल्डन चांस दिया है कि विधाता के बच्चे हो इसलिए जो जितना भाग्य बनाना चाहे, जितना सर्व प्राप्ति स्वरूप बनना चाहे, हरेक को सम्पूर्ण अधिकार है। अधिकार देने में नम्बर नहीं है, फ्रीडम है अर्थात् सम्पूर्ण स्वतन्त्रता है। और साथ-साथ ड्रामा अनुसार वरदानी समय का भी सहयोग है। वह भी सभी को समान है। फिर भी इतना गोल्डन चांस मिलते, बेहद की प्राप्ति को भी नम्बरवार की हद में ला देते हैं। बाप भी बेहद का, वर्सा भी बेहद का, अधिकार भी बेहद का लेकिन लेने वाले नम्बरवार बन जाते हैं - ऐसा क्यों? इसके संक्षेप में दो कारण हैं। एक बुद्धि में स्वच्छता नहीं, क्लीयर नहीं। दूसरा हर कदम में सावधान नहीं अर्थात् केयरफुल नहीं। इन दो कारणों से नम्बरवार बन जाते हैं। मुख्य बात स्वच्छता की है। इसको ही पवित्रता वा पहले विकार पर जीत कहा जाता है। जब ब्राह्मण जीवन अपनाई तो ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार कहो, नवीनता कहो, अलौकिकता कहो, जीवन का श्रृंगार कहो, वह है ही श्रृंगार -'पवित्रता'। ब्राह्मण जीवन की चैलेन्ज ही है काम-जीत। यही असम्भव से सम्भव कर दिखाने की, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ ज्ञान दाता की निशानी है। जैसे नामधारी ब्राह्मणों की निशानी चोटी और जनेऊ है वैसे सच्चे ब्राह्मणों की निशानी 'पवित्रता और मर्यादायें' हैं। जन्म की वा जीवन की निशानी वह तो सदा कायम रखनी होती है ना। पवित्रता की पहली आधारमूर्त पाइंट है ''स्मृति की पवित्रता''। मैं सिर्फ आत्मा नहीं लेकिन मैं शुद्ध पवित्र आत्मा हूँ। आत्मा शब्द तो सभी कहते हैं लेकिन ब्राह्मण आत्मा सदा यही कहेंगे कि - मैं शुद्ध पवित्र आत्मा हूँ। श्रेष्ठ आत्मा हूँ। पूज्य आत्मा हूँ। विशेष आत्मा हूँ। यह स्मृति की ही पवित्रता आधार मूर्त है। तो पहला आधार मजबूत किया है? यह आक्यूपेशन सदा स्मृति में रहता है? जैसा

आक्यूपेशन वैसा कर्म स्वत: होता है। पहले स्मृति की स्वच्छता चाहिए। उसके बाद वृत्ति और दृष्टि। जब स्मृति में पवित्रता आ गई कि मैं पूज्य आत्मा हूँ तो पूज्य आत्मा का विशेष गायन क्या है? सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण। यही पूज्य आत्मा की क्वालिफिकेशन है। वह स्वत: ही स्वयं को और सर्व को किस दृष्टि से देखेंगे? चाहे अलौकिक परिवार में, चाहे लौकिक परिवार कहो वा लौकिक स्मृति में रहने वाली आत्मायें कहो, सभी के प्रति परम पूज्य आत्मायें हैं वा पूज्य बनाना है यही दृष्टि में रहे। पूज्य आत्माओं अर्थात् अलौकिक परिवार की आत्माओं के प्रति अगर कोई भी अपवित्र दृष्टि जाती है तो यह स्मृति का फाउन्डेशन कमज़ोर है। और यह महा-महा-महापाप है। किसी भी पूज्य आत्मा प्रति अपवित्रता अर्थात् दैहिक दृष्टि जाती है कि यह सेवाधारी बहुत अच्छे हैं, यह शिक्षक बहुत अच्छी है। लेकिन अच्छाई क्या है? अच्छाई है ऊँची स्मृति और ऊँची दृष्टि की। अगर वह ऊँचाई नहीं तो अच्छाई कौन सी है? यह भी सुनहरी मृगमाया का रूप है, यह सर्विस नहीं है, सहयोग नहीं है लेकिन स्वयं को और सर्व को वियोगी बनाने का आधार है। यह बात बार-बार अटेन्शन रखो।

बाप द्वारा निमित्त बने हुए शिक्षक वा सेवा के सहयोगी बनी हुई आत्मायें चाहे बहन हो या भाई हो, लेकिन सेवाधारी आत्माओं के सेवा के मुख्य लक्षण - 'त्याग और तपस्या' हैं, इसी लक्षण के आधार पर सदा त्यागी और तपस्वी की दृष्टि से देखो, न कि दैहिक दृष्टि से। श्रेष्ठ परिवार है तो सदा श्रेष्ठ दृष्टि रखो। क्योंकि यह महापाप कभी प्राप्ति स्वरूप का अनुभव करा नहीं सकता। सदा ही कोई न कोई कर्म में, संकल्प में, सम्बन्ध-सम्पर्क में डिफेक्ट वा इफेक्ट इसी उतराई और चढ़ाई में चलता रहेगा। कभी भी परफेक्ट स्थिति का अनुभव नहीं कर सकेगा। इसलिए सदा याद रखो पूज्य आत्मा के बदले पाप आत्मा तो नहीं बन गये! इसी एक विकार से और विकार स्वत: ही पैदा हो जाते हैं। कामना पूरी न हुई तो क्रोध साथी पहले आयेगा। इसलिए इस बात को हल्का नहीं समझो। इसमें अलबेले मत बनो। बाहर से शुभ सम्बन्ध है, सेवा का सम्बन्ध है इस रायल रूप के पाप को बढ़ाओ मत। चाहे कोई भी दोषी हो इस पाप के, लेकिन दूसरे को दोषी बनाए स्वयं को अलबेले मत बनाओ। "मैं दोषी हूँ", जब तक यह सावधानी नहीं रखेंगे तब तक महापाप से मुक्त नहीं हो सकेंगे। किसी भी प्रकार का, मन्सा संकल्प का वा बोल का वा सम्पर्क का विशेष झुकाव होना यह लगाव की निशानी है। और कुछ नहीं करते हैं, सिर्फ बात करते हैं, यह बातों

का झुकाव भी लगाव की परसेन्टेज है। चाहे सेवा के सहयोग की तरफ भी विशेष झुकाव है, यह भी लगाव है। और जब कोई भी इशारा मिलता है तो इशारे को इशारे से खत्म कर देना चाहिए। अगर जिद्ध करते हो और सिद्ध करते हो, स्पष्टीकरण देने की कोशिश करते हो, इससे समझो स्पष्टीकरण अपने पाप की करते हो। बात की नहीं करते हो, पाप की लकीर और लम्बी करते जाते हो। इसलिए जब हैं ही विश्व परिवर्तन के कार्य में तो स्व-परिवर्तन कर लेना यही समझदारी का काम है। अगर कुछ नहीं है तो नहीं कर दो ना। अर्थात् स्व परिवर्तन कर बात का नाम निशान खत्म कर दो। यह क्यों, ऐसा क्यों, यह तो चलता ही है। यह वायुमण्डल की अग्नि में तेल डालना है। आग को भड़काना है। बात को बढ़ाना है। इसीलिए फुल स्टाप लगाना चाहिए। है वा नहीं है कि बहस में नहीं जाओ। लेकिन संकल्प, बोल और सम्पर्क में परिवर्तन लाओ। यह है विधि - इस पाप से बचने की। समझा! ब्राह्मण परिवार में यह संस्कार नाम निशान मात्र न रहें। अच्छा फिर सुनायेंगे कि क्रोध महाभूत क्या है।

यही विशेष अटेन्शन देने की बातें हैं। जो भी आये हो विशेष बल भरने आये हो। किसी भी कमज़ोर संस्कार को सदा के लिए समाप्त करने आये हो तो 'कमज़ोर संस्कार समाप्ति समारोह' करके जाना। यह समारोह मनायेंगे ना। है भी विशेष पुरानों का ग्रुप। आप लोग जब समारोह मनायेंगे तब नये भी उमंग उत्साह में आयेंगे। ऐसे नहीं कि हर वर्ष यह समारोह मनाना पड़े। एक बार का यह समारोह और फिर 'सम्पन्न समारोह'! सदाकाल के लिए समाप्ति का समारोह मनायेंगे ना। इसमें मातायें भी आ जातीं, अधरकुमार भी आ जाते। ऐसे नहीं सिर्फ पाण्डव मनायेंगे। कुमारियाँ भी मनायेंगी, टीचर भी मनायेंगी। अधरकुमारियाँ भी मनायेंगी। सब मिलकर यह समारोह मनावें। ठीक है ना। कुमारियाँ शक्तियाँ है ना! तो शक्ति रूप का समारोह मनायेंगे ना। अच्छा –

सदा स्वयं प्रति शुभचिन्तक, सदा स्व-परिवर्तन के कार्य में 'पहले मैं', इस पाठ में नम्बरवन आने वाले, सदा संकल्प, बोल और सम्पर्क में सर्व प्रति बेहद के स्मृति स्वरूप, सदा स्वच्छता और सावधानी में रहने वाले, ऐसे पवित्र पूज्य आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।''

कुमारों से:- सदा अपने को हर कदम में साक्षी और सदा बाप के साथी - ऐसे अनुभव करते हो? जो सदा साक्षी होगा वह सदा ही हर कर्म करते हर कदम उठाते कर्म के बन्धन से न्यारे और बाप के प्यारे, तो ऐसे साक्षीपन अनुभव करते हो? कोई भी

कर्मन्द्रियाँ अपने बन्धन में नहीं बाँधे इसको कहा जाता है - 'साक्षी'। ऐसे साक्षी हो? कोई भी कर्म अपने बन्धन में बाँधता है तो उसको साक्षी नहीं कहेंगे। फँसने वाला कहेंगे। न्यारा नहीं कहेंगे। कभी आँख भी धोखा न दे। शारीरिक सम्बन्ध में आना अर्थात् आँख का धोखा खाना। तो कोई भी कर्मेन्द्रिय धोखा न दे। साक्षी रहें और सदा बाप के साथी रहें। हर बात में बाप याद आवे। महान आत्मायें भी नहीं, निमित्त आत्मायें भी नहीं लेकिन बाबा ही याद आये। कोई भी बात आती है तो पहले बाप याद आता या निमित्त आत्मायें याद आती? सदा एक बाप दूसरा न कोई, आत्मायें सहयोगी हैं लेकिन साथी नहीं है, साथी तो बाप है। सहयोगी को अपना साथी समझना यह रांग है। तो सदा सेवा के साथी लेकिन सेवा में साथी बाप है। निमित्त सहयोग देते हैं, ऐसा सदा स्मृति स्वरूप हो! किसी देहधारी को साथी बनाया तो उड़ती कला का अनुभव नहीं हो सकता। इसलिए हर बात में 'बाबा-बाबा' याद रहे। कुमार डबल लाइट हैं, संस्कार स्वभाव का भी बोझ नहीं। व्यर्थ संकल्प का भी बोझ नहीं। इसको कहा जाता है 'हल्का'। जितने हल्के होंगे उतना सहज उड़ती कला का अनुभव करेंगे। अगर जरा भी मेहनत करनी पड़ती है तो जरूर कोई बोझ है। तो 'बाबा-बाबा' का आधार ले उड़ते रहो। यही अविनाशी आधार है।

रूहानी यूथ ग्रुप शान्तिकारी, कल्याणकारी ग्रुप है। सदा विश्व में शान्ति स्थापना के कार्य में निमित्त हैं, वह अशान्ति फैलाने वाले और आप शान्ति फैलाने वाले। ऐसे अपने को समझते हो? यूथ ग्रुप में राजनीतिक लोगों की भी उम्मीदें हैं और बापदादा की भी उम्मीदें हैं। उम्मीदें पूरी करने वाले हो ना! बच्चे सदा बाप की उम्मीदें पूरी करने वाले होंगे। तो सफलता के सितारे बन गवर्मेन्ट तक यह आवाज़ बुलन्द करना कि हम विजयी रत्न हैं! अभी देखेंगे कि कौनसे ग्रुप और कहाँ यह पहले झण्डा लहराते हैं। कभी भी अपनी शक्तियों को मिसयूज नहीं करना। सदा यह याद रखो कि हमारे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। एक कमज़ोर तो एक के पीछे एक का सम्बन्ध है। हम जिम्मेवार हैं, यह स्मृति सदा रहे। जो कर्म आप करेंगे आपको देख सब करेंगे इसलिए साधारण कर्म नहीं, सदा श्रेष्ठ कर्म करने वाले, सदा अचल रहने वाले।

सभी कुमार फर्स्ट नम्बर में आने वाले हो ना। फर्स्ट नम्बर एक होता है या इतने होते हैं? अच्छा फर्स्ट डिवीजन में आने वाले हो? फर्स्ट आने वाले की विशेषता क्या होती है, वह जानते हो? फर्स्ट में आने वाले सदा बाप समान होंगे। समानता ही समीपता लाती है। समीप अर्थात् समान बनने वाले ही फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। तो बाप

समान कब तक बनेंगे? जब विजय माला के नम्बर आउट हो जायेंगे फिर क्या करेंगे? कोई डेट फिक्स है? डेट फिक्स कौनसी करनी है? डेट नहीं लेकिन अब की घड़ी। क्या इसमें मुश्किल है? कुमारों को कौन सी मुश्किल है? दो रोटी खाना है और बाप की सेवा में लगना है, यही काम है ना। दो रोटी के लिए निमित्त मात्र कोई कार्य करते हो ना। करते हो, लगाव से तो नहीं करते हो ना! निमित्त कहने से नहीं होता, कुमार कहने से नहीं करते, स्वतन्त्र हैं। तो सदा लक्ष्य रहे बाप समान बनना है। जैसे बाप लाइट है वैसे डबल लाइट। औरों को देखते हो तो कमज़ोर होते हो, सी फादर, फालो फादर करना है। यही सदा याद रखो। स्वयं को सदा बाप की छत्रछाया के अन्दर रखो। छत्रछाया में रहने वाले सदा मायाजीत बन ही जाते हैं। अगर छत्रछाया के अन्दर नहीं रहते, कभी अन्दर कभी बाहर तो हार होती है। छत्रछाया के अन्दर रहने वाले को मेहनत नहीं करनी पड़ती। स्वत: ही सर्व शक्तियों की किरणें उसे माया जीत बनाती हैं। एक बाप सर्व सम्बन्ध से मेरा है, यही स्मृति समर्थ आत्मा बना देती है। कुमार अब ऐसा जीवन का नक्शा तैयार करके दिखाओ जो सब कहें - 'निर्विघ्न आत्मायें हैं तो यहाँ हैं'। सब विघ्न विनाशक बनो। हलचल में आने वाले नहीं, वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाले। शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने वाले बनो। सदा विजय का झण्डा लहराता रहे। ऐसा विशेष नक्शा तैयार करो। जहाँ युनिटी है वहाँ सहज सफलता है। लेकिन गिराने में युनिटी नहीं करना, चढ़ाने में। सदा उड़ती कला में जाना है और सबको ले जाना है - यही लक्ष्य रहे। कुमार अर्थात् सदा आज्ञाकारी वफादार। हर कदम में फालो फादर करने वाले। जो बाप के गुण वह बच्चों के, जो बाप का कर्त्तव्य वह बच्चों का, जो बाप के संस्कार वह बच्चों के, इसको कहा जाता है फालो फादर। जो बाप ने किया है वही रिपीट करना है, कापी करना है। इस कापी करने से फुल मार्क्स मिल जायेंगी। वहाँ कापी करने से मार्क्स कट जाती और यहाँ फुल मार्क्स मिल जाती। तो जो भी संकल्प करो, पहले चेक करो कि बाप समान है? अगर नहीं है तो चेन्ज कर दो। अगर है तो प्रैक्टिकल में लाओ। कितना सहजमार्ग है! जो बाप ने किया वह आप करो। ऐसे सदा बाप को फालो करने वाले ही सदा मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति में स्थित रहते हैं। बाप का वर्सा ही है सर्वशक्तियाँ और सर्वगुण। तो बाप के वारिस अर्थात् सर्वशक्तियों के, सर्वगुणों के अधिकारी। अधिकारी से अधिकार जा कैसे सकते? अगर अलबेले बने तो माया चोरी कर लेगी। माया को भी सबसे अच्छे ग्राहक ब्राह्मण आत्मायें लगती हैं। इसलिए वह

भी अपना चांस लेती है। आधा कल्प उसके साथी रहे, तो अपने साथियों को ऐसे कैसे छोड़ेगी। माया का काम है आना, आपका काम है जीत प्राप्त करना, घबराना नहीं। शिकारी के आगे शिकार आता है तो घबरायेंगे क्या? माया आती है तो जीत प्राप्त करो, घबराओ नहीं। अच्छा!

अहमदाबाद, होस्टल में रहने वाली कुमारियों का ग्रुप :- कुमारी जीवन अर्थात् स्वतन्त्र जीवन, इस स्वतन्त्रता से क्या मिलता है और श्रेष्ठ भाग्य बनाने वाले से क्या मिलता है - यह सदा स्मृति में रहता है? या समझती हो कि हम तो कालेज में पढ़ने वाली लड़कियाँ हैं। सदा यह स्मृति में रखो - जैसा बाप वैसी मैं। बाप क्या है? सेवाधारी है। तो सभी सेवा करती हो ना! सभी कुमारियाँ बाप की माला के मणके हो? पक्का? और किसके गले की माला तो नहीं बनेंगी। जो बाप के गले की माला बन गई वह दूसरों के गले की माला नहीं बन सकती। क्या संकल्प किया है? और कहाँ स्वप्न में भी नहीं जा सकती। ऐसे पक्के? एक बाप के बने और सर्व खज़ानों के अधिकारी बन गये। सर्व अधिकार छोड़कर दो पैसों के पीछे जायेंगे क्या! वह दो पैसे भी तब मिलते जब दो चमाट लगाते हैं। पहले दु:ख की, अशान्ति की चमाट लगती फिर दो रोटी खाते। ऐसी जीवन तो पसन्द नहीं है ना? कुमारी जीवन वैसे भी भाग्यवान है और भी डबल भाग्यवान बन गई। अभी सर्व प्रैक्टिकल पेपर देंगी ना! वह कागज वाला पेपर नहीं। सदा शिव शक्ति है, कम्बाइन्ड हैं - यह स्मृति सदा रखना। कुमारियों का कहाँ-न-कहाँ जाना तो होता ही है। अगर ऐसा श्रेष्ठ घर मिल जाए तो और क्या चाहिए। कुमारियाँ सोचती हैं अच्छा घर, भरपूर घर मिले। यह कितना भरपूर घर है जहाँ कोई अप्राप्ति नहीं। ऐसा भाग्य तो सबको मिलना चाहिए। वाह मेरा भाग्य... यही गीत गाओ। जैसे चन्द्रमा की चाँदनी सबको प्रिय लगती है ऐसे ज्ञान की रोशनी देने वाली बनो। ज्ञान चन्द्रमा समान बनो। जैसे स्वयं के भाग्य का सितारा चमका है ऐसे ही सदा औरों के भाग्य का सितारा चमकाओ। तो सभी आपको बार बार आशीर्वाद देंगे। सभी कुमारियाँ स्कालरशिप लेंगी ना। स्कालरशिप लेना माना - विजयमाला में आना। ऐसा तीव्र पुरूषार्थ हो जो विजयमाला में आ जाओ। इतनी पालना जो ले रहे हो उसका रिटर्न तो देंगी ना। पालना का रिटर्न है - बाप समान बनना, स्कालरिशप लेना। तो सदा यह दृढ़ संकल्प रखो कि विजयी बन विजय माला के मणके बनने वाले हैं। सभी इस जीवन से सन्तुष्ट हो? कभी वह जीवन खाना, पीना, घूमना - यह याद तो नहीं आता? दूसरों को देखकर यह नहीं आता कि

हम भी थोड़ा टेस्ट तो करें। वह जीवन गिरने की जीवन है - यह जीवन चढ़ने की जीवन है। चढ़ने से गिरने की तरफ कौन जायेगा! सदा एवररेडी रहो। अपने रीति से सदा तैयार रहो। कोई पढ़ाई की रीति से शौक का बन्धन नहीं। जहाँ कुमारियों का सगंठन है वहाँ सेवा में वृद्धि है ही। जहाँ शुद्ध आत्मायें हैं वहाँ सदा ही शुभ कार्य है। सभी आपस में संस्कार मिलाने की सब्जेक्ट में पास हो ना। कोई खिटखिट नहीं, कहाँ भी दृष्टि वृत्ति नहीं! एक बाप दूसरा न कोई... विशेष कुमारियों को इस बात में सर्टीफिकेट लेना है। जैसे नाम है बाल ब्रह्मचारिणी... वैसे संकल्प भी ऐसा पवित्र हो - इसको कहा जाता है - स्कालरशिप लेना। फिर राइटहैण्ड हो। सदा एक बाप दूसरा न कोई - ऐसी शिव शक्तियाँ हैं। यही याद रखना तो किसी भी प्रकार की माया वार नहीं करेगी। अच्छा।

टीचर्स के साथ :- सभी निमित्त सेवाधारी, अपने को निमित्त समझकर चलते हो? निमित्त समझने वाले सदा हल्के और सदा सफलतामूर्त होते हैं। जितना हल्के होंगे उतना सफलता जरूर होगी। कभी सेवा कम होती कभी ज्यादा तो बोझ तो नहीं लगता है ना। भारी तो नहीं होते, क्या होगा, कैसे होगा। कराने वाला करा रहा है और मैं सिर्फ निमित्त बन कार्य कर रही हूँ - यही सेवाधारी की विशेषता है। सदा स्व के पुरुषार्थ से और सेवा से सन्तुष्ट रहो तब ही जिन्हों के निमित्त बनते हैं उन्हों में सन्तुष्टता होगी। सदा सन्तुष्ट रहना और दूसरों को रखना यही विशेषता है।

अच्छा - ओम शान्ति।

(विदाई के समय गुडमोर्निंग)

सर्व चारों ओर की श्रेष्ठ आत्माओं को वा विशेष आत्माओं को बापदादा मधुबन वरदान भूमि में सम्मुख देखते हुए याद प्यार दे रहे हैं। और सभी से गुडमोर्निंग कर रहे हैं। गुडमोर्निंग अर्थात् सारा दिन ऐसा ही शुभ और श्रेष्ठ रहे। सारा दिन इसी याद प्यार की पालना में रहें। यह याद प्यार ही श्रेष्ठ पालना है। इसी पालना में सदा रहो और यही ईश्वरीय याद और प्यार सभी आत्माओं को देते हुए उन्हों की भी श्रेष्ठ पालना करो। याद प्यार पालना का झूला है। जिस झूले में पालना होती है। और 'गुडमोर्निंग' को शक्तिशाली अमृत कहो, वा औषधि कहो, वा श्रेष्ठ भोजन कहो, जो भी कहो। ऐसे शक्तिशाली बनाने की गुडमोर्निंग है और पालना का याद प्यार झूला है। इसी झूले में सदा रहें और इसी शक्ति में सदा रहें। ऐसे सदा इसी स्वरूप में रहने की सर्व बच्चों को गुडमोर्निंग। अच्छा।

01-12-1983 सुख, शान्ति और पवित्रता के तीन अधिकार

सुख, शान्ति और पवित्रता का जन्म-सिद्ध अधिकार देने वाले शिवबाबा, तकदीरवान, अधिकारी बच्चों प्रति बोले:-

आज बापदादा अति स्नेही और सिकीलधे बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा अति स्नेह से मिलन मनाने अपने घर में पहुँच गये हैं। इसी भूमि को कहा जाता है - अपना घर, दाता का दर। यह महिमा इसी स्वीट होम की है। स्वीट होम में स्वीट बच्चों से स्वीटेस्ट बाप मिलन मना रहे हैं। बापदादा हर बच्चे के मस्तक पर आज विशेष अधिकार की तीन लकीरें देख रहे हैं। हर एक के मस्तक पर तीन लकीरें तो लगी हुई हैं, क्योंकि बच्चें तो सभी हैं। बच्चे होने के नाते अधिकारी तो सभी हैं लेकिन नम्बरवार हैं। किसी बच्चे की तकदीर, सुख के अधिकार की लकीर बहुत स्पष्ट और गहरी है। कितनी भी परिस्थितियाँ आवें, दु:ख की लहर भी उत्पत्ति दिलाने वाली लहर हो लेकिन दु:ख शब्द की अविद्या वाले हों। दुख की परिस्थिति को अपने सुख के सागर से प्राप्त हुए अधिकार द्वारा दुख की परिस्थितियों में भी, 'वाह मीठा ड्रामा, वाह हरेक पार्टधारी का पार्ट- इस नालेज की रोशनी द्वारा, अधिकार की खुशी द्वारा दुख को सुख में परिवर्तन कर देता। अधिकार से दुख के अंधकार को परिवर्तन कर, मास्टर सुखदाता बन स्वयं तो सुख के झूले में झूलते ही हैं लेकिन औरों को भी सुख के वायब्रेशन देने के निमित्त बनते हैं। ऐसे सुख के अधिकार की लकीर स्पष्ट और गहरी हैं, जिसको कोई मिटा न सके। मिटाने वाले बदल जाएँ लेकिन वह नहीं। मास्टर सुख दाता से सुख की अंचली ले लें। ऐसे लकीर वाले भी देखे। इसको कहा जाता है - नम्बर वन तकदीरवान! सुनाया था 'वन की निशानी है विन'।

दूसरी लकीर शान्ति। आप सब शान्ति को स्वधर्म मानते हो ना! यह सभी को बताते हो ना। धर्म के लिए क्या गाया हुआ है? - 'धरत परिये धर्म न छोड़िये'। सिर जावे लेकिन धर्म न जाये। तो सुख-शान्ति के वर्स के अधिकारी कभी शान्ति को छोड़ नहीं सकते। ऐसे अशान्त को शान्त बनाने वाले, सदा शान्ति की किरणें स्वयं द्वारा औरों को देने वाले, कुछ भी हो जाए लेकिन शान्तिका धर्म शान्ति का अधिकार छोड़ नहीं सकते। इसको कहते दूसरे अधिकार की लकीर में नम्बर वन। तीसरी है प्यूरिटी के

अधिकार की लकीर। पवित्र आत्मायें तो सभी बच्चे हैं। फिर भी नम्बरवन अधिकार के तकदीरवान बच्चा कौन है! जिसकी चलन से, चेहरे से प्युरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी अनुभव हो। लौकिक जीवन में लौकिकता वाली पर्सनैलिटी रॉयल्टी दिखाई देती है लेकिन अधिकार के तकदीरवान बच्चों में प्युरिटी की अलौकिक पर्सनैलिटी और रॉयल्टी दिखाई देंगी। इसको कहा जाता है - नम्बरवन पवित्रता के तकदीर की लकीर।

आज सर्व बच्चों के इस अधिकार की लकीरों को देख रहे थे। आप सब भी अपनी तीनों लकीरों को देख रहे हो ना। चेक करो तीनों अधिकार प्राप्त कर लिया है? पूरा अधिकार लिया है वा परसेन्टेज में लिया है! अगर संगम पर भी परसेन्टेज में रहे तो सारा कल्प परसेन्टेज में ही रह जायेंगे। पूज्य पद में भी परसेन्टेज होगी, फुल पूजा नहीं होगी। और प्रालब्ध में भी परसेन्टेज रह जायेगी। अच्छा-

आज मैजारिटी नये सो पुराने बच्चे आये हैं। नये बच्चे कहो वा कल्प-कल्प के अधिकारी बच्चे कहो, अपना अधिकार लेने के लिए फिर से अपने स्थान पर पहुँच गये। सबसे ज्यादा खुशी किसको है! हर एक समझेंगे मेरे को है। ऐसे समझते हो वा किसको कम किसको ज्यादा है! अधिकारी बच्चों को विशेष मिलन का अधिकार देने के लिए बापदादा को भी आना ही पड़ता है।

बाप को बच्चों से स्नेह ज्यादा है वा बच्चों को बाप से स्नेह ज्यादा है? अटूट स्नेह किसका है? बापदादा तो बच्चों को अपने से आगे रखते। पहले बच्चे! अगर बच्चे याद वा प्यार नहीं करते तो बाप रेसपाण्ड किनको देते। इसलिए आगे बच्चे पीछे बाप। सदैव बच्चों को आगे चलाना होता, बाप पीछे चलता है। इसलिए बापदादा भी ऐसे बच्चों को देख-देख हर्षित होते हैं। ऐसे बच्चे भी हैं जो अटूट स्नेह प्यार में समाए हुए हैं। ऐसे बच्चों की भी माला है। चाहे देश में चाहे विदेश में दोनों तरफ ऐसे बच्चे हैं जिन्हों को सिवाए बाप और सेवा के और कोई बात याद नहीं।

जगदीश भाई से:- आपने ऐसे बच्चे देखे ना! अच्छा चक्कर लगाया ना। साकार बाप का दिया हुआ विशेष वरदान, साकार में लाया। सफलता का जन्मसिद्ध अधिकार अनुभव किया न। सर्व सफलता में विशेष सफलता की निशानी कौन सी है? श्रेष्ठ सफलता है कि बापदादा दिखाई दे। आप में बाप दिखाई दे - यह है श्रेष्ठ सफलता। यही प्रत्यक्षता का साधन है। जो भी चक्कर पर निकले विशेष बाप समान अनुभूति कराना, यही सफलता की निशानी है। और आगे चल कर भी ज्यादा से ज्यादा यही

आवाज़ चारों ओर फैलता जायेगा। हिम्मते बच्चे मददे बाप है ही। करावनहार करा लेता है। अच्छा-

ऐसे सदा सम्पूर्ण तकदीरवान, सम्पन्न अधिकार को पाने वाले अधिकारी, सदा बाप और आप के कम्बाइन्ड रूप में रहने वाले, स्नेह के सागर में सदा समाये हुए, लकी और लवली बच्चों को, भाग्य विधाता, वरदाता का यादप्यार और नमस्ते।''

(जगदीश भाई ने विदेश यात्रा का समाचार बापदादा को बताया और नाम सहित सभी भाई-बहनों की याद दी)

''सभी के स्नेह का समाचार बापदादा के पास पहुँचता ही रहता है और अभी भी पहुँचा। बापदादा सर्व विदेश के चारों ओर रहने वाले बच्चों को विशेष एक बात की मुबारक भी देते हैं। किस बात की? संस्कार, भाषा, रहन-सहन सबका परिवर्तन करने में मैजारिटी बहुत तीव्र पुरुषार्थी निकले हैं। जैसे कोई नइ दुनिया में आ जाए। ऐसे नई रीति रसम, नया सम्बन्ध फिर भी अपने को सदा कल्प पहले वाले पुराने अधिकारी आत्माएं समझते चल रहे हैं। इसलिए स्वयं को परिवर्तन करने की विशेषता पर विशेष मुबारक। बापदादा को कितना प्यार से याद करते वह बापदादा के पास सदा ही पहुँचता है। स्वयं को भूल बाप को ही सदा हर बात में याद करते यह परिवर्तन विशेष है। और इसी प्यार के आधार पर चल रहे हैं। यह प्यार ही पालना कर रहा है। सूक्ष्म प्यार की पालना ही आगे बढ़ा रही है। अच्छा-

सभी को, जिन्होंने भी यादप्यार दिया है उन्हों को प्यार के सागर बाप का सदा प्यार की झोली भर-भरकर यादप्यार। भारतवासी बच्चे भी कम नहीं है, भारत का भाग्य तो विदेश वाले गा-गाकर खुश होते हैं। भारत वाले जगे तब विदेश को जगाया। जागने वाले तो भारत के हैं। अगर विदेश में भी यह सब नहीं होते तो इतने विदेश के सेन्टर भी कैसे होते। इसी के निमित्त चारो ओर, अफ्रीका.. सब तरफ फैले हुए हैं। सेन्टर खोलते भी कितने में हैं। पैदा हुए, थोड़ा सा बड़े हुए, सेन्टर खोला। वह भी अपने पांव पर खड़े होकर, किसी पर आधार नहीं। निमन्त्रण मिले यह आधार नहीं। स्थूल, सूक्ष्म दोनों लगार हिम्मत रख सेन्टर खोल देते हैं। बाकी उन्हों की पालना करना यह तो आप लोगों की जिम्मेवारी है। हिम्मत में पीछे नहीं हैं। मदद देना यह बाप के साथ-साथ आपका भी कार्य है।

ज्ञान की गहराई को सुनकर खुश हो गये। योग और प्यार के आधार पर चल रहे हैं, लेकिन अभी ज्ञान की गहराई को जाना यह और भी इन्हों को सेवा के निमित्त बनायेगी। माइन्ड तैयार हो जाए उसके लिए ज्ञान की गहराई चाहिए। ज्ञान और बाप यह दोनों की महसूसता दिलाना, यह रिजल्ट अच्छी है। कोई भी जाता है तो कितने खुश होते हैं, जैसे कोई आकाश से सितारा नीचे आ जाए, ऐसी अनुभूति करते हैं। अच्छा-''

दादी जी और जानकी दादी से:- दोनों में तीसरी मूर्त (दीदी) समाई हुई है। बाप समान हैं ही। बनना है नहीं। हैं ही! ऐसे अनुभव होता है! जैसे बाप ब्रह्मा का आधार ले सेवा करते हैं वैसे आप भी बापके माध्यम हो। वर्तमान समय बाप माध्यम द्वारा करावनहार अपना कार्य करा रहे हैं। विशेष माध्यम हो। ब्रह्मा के आकार द्वारा और आपके साकार द्वारा कार्य करा रहे हैं। बहुत-बहुत पद्म से भी ज्यादा बापदादा हर सेकण्ड याद और प्यार करते हैं। श्रृंगार हो। विशेष बाप का और मधुबन का श्रृंगार हो। बापदादा हर समय देख-देख हर्षित होते हैं। अच्छा –

15-03-1984 होली उत्सव पवित्र बनने, बनाने का यादगार

होली हंस आत्माओं प्रति अव्यक्त बापदादा बोले:-
होलीएस्ट बाप होलीहंसों से होली डे मनाने आये हैं। होली डे इस संगमयुग को कहा जाता है। संगमयुग है ही होली डे। तो होलीएस्ट बाप होली बच्चों से होली डे मनाने आये हैं। दुनिया की होली एक-दो दिन की है और आप होली हंस संगमयुग ही होली मनाते हो। वो रंग लगाते हैं और आप बाप के संग के रंग में बाप समान सदा के लिए होली बन जाते हो! हद से बेहद के हो जाने से सदाकाल के लिए होली अर्थात् पवित्र बन जाते हो। यह होली का उत्सव होली अर्थात् पवित्र बनाने का, बनने का उत्साह दिलाने वाला है। जो भी यादगार विधि मनाते हैं उन सब विधियों में पवित्र बनने का सार समाया हुआ है। पहले होली बनने वा होली मनाने के लिए अपवित्रता, बुराई को भस्म करना है, जलाना है। जब तक अपवित्रता को सम्पूर्ण समाप्त नहीं किया है तब तक पवित्रता का रंग चढ़ नहीं सकता। पवित्रता की दृष्टि से एक-दो में रंग रंगने का उत्सव मना नहीं सकते। भिन्न-भिन्न भाव भूलकर एक ही परिवार के हैं, एक ही समान हैं अर्थात् भाई-भाई के एक समान वृत्ति से मनाने का यादगार है। वे तो लौकिक रूप में मनाने लिए छोटा बड़ा, नर-नारी समान भाव में मनावें इस भाव से मनाते हैं। वास्तव में भाई-भाई के समान स्वरूप की स्मृति अविनाशी रंग का अनुभव कराती है। जब इस समान स्वरूप में स्थित हो जाते हैं तब ही अविनाशी खुशी की झलक अनुभव होती है और सदा के लिए उत्साह रहता है कि सर्व आत्माओं को ऐसा अविनाशी रंग लगावें। रंग पिचकारी द्वारा लगाते हैं। आपकी पिचकारी कौन-सी है? आपके दिव्य बुद्धि रूपी पिचकारी में अविनाशी रंग भरा हुआ है ना। संग के रंग से अनुभव करते हो, उन भिन्न-भिन्न अनुभवों के रंग से पिचकारी भरी हुई है ना। भरी हुई बुद्धि की पिचकारी से किसी भी आत्मा को दृष्टि द्वारा, वृत्ति द्वारा मुख द्वारा इस रंग में रंग सकते हो जो वह सदा के लिए होली बन जाए। वो होली मनाते हैं, आप होली बनाते हो। सब दिन होली डे के बना देते हो। वो अल्पकाल के लिए अपनी खुशी की मूड बनाते हैं मनाने के लिए लेकिन आप सभी सदा मनाने के लिए होली और हैपी मूड में रहते हो। मूड बनानी नहीं पड़ती है। सदा रहते हो होली मूड में और किसी प्रकार की मूड नहीं। होली मूड सदा

हल्की, सदा निश्चिन्त, सदा सर्व खज़ानों से सम्पन्न, बेहद के स्वराज्य अधिकारी। यह जो भिन्न-भिन्न मूड बदलते हैं, कब खुशी की, कब ज्यादा सोचने की, कभी हल्की, कभी भारी - यह सब मूड बदल कर सदा हैपी और होली मूड वाले बन जाते हो। ऐसा अविनाशी उत्सव बाप के साथ मनाते हो। मिटाना, मनाना और फिर मिलन मनाना। जिसका यादगार जलाते हैं, रंग लगाते हैं और फिर मिलन मनाते हैं। आप सभी भी जब बाप के रंग में रंग जाते हो, ज्ञान के रंग में, खुशी के रंग में, कितने रंगों की होली खेलते हो। जब इन सब रंग से रंग जाते हो तो बाप समान बन जाते हो। और जब समान आपस में मिलते हैं तो कैसे मिलेंगे? स्थूल में तो गले मिलते, लेकिन आप कैसे मिलते? जब समान बन जाते तो स्नेह में समा जाते हैं। समाना ही मिलना है। तो यह सारी विधि कहाँ से शुरू हुई? आप आविनाशी मनाते, वो विनाशी यादगार रूप मनाकर खुश हो जाते हैं। इससे सोचो कि आप सभी कितने अविनाशी उत्सव अर्थात् उत्साह में रहने के अनुभवी बने हो जो अब सिर्फ आपके यादगार दिन को भी मनाने से खुश हो जाते हैं। अन्त तक भी आपके उत्साह और खुशी का यादगार अनेक आत्माओं को खुशी का अनुभव कराता रहता है। तो ऐसे उत्साह भरे जीवन, खुशियों से भरी जीवन बना ली है ना!

ड्रामा के अन्दर यही संगमयुग का वण्डरफुल पार्ट है जो अविनाशी उत्सव मनाते हुए अपना यादगार उत्सव भी देख रहे हो। एक तरफ चैतन्य श्रेष्ठ आत्मायें हो। दूसरे तरफ अपने चित्र देख रहे हो। एक तरफ याद स्वरूप बने हो, दूसरे तरफ अपने हर श्रेष्ठ कर्म का यादगार देख रहे हो। महिमा योग्य बन गये हो और कल्प पहले की महिमा सुन रहे हो। यह वण्डर है ना। और स्मृति से देखो कि यह हमारा गायन है! वैसे तो हर आत्मा भिन्न नाम रूप से अपना श्रेष्ठ कर्म का यादगार चित्र देखते भी हैं लेकिन जानते नहीं है। अभी गाँधी जी भी भिन्न नाम रूप से अपनी फिल्म देखता तो होगा ना। लेकिन पहचान नहीं। आप पहचान से अपने चित्र देखते हो। जानते हो कि यह हमारे चित्र हैं! यह हमारे उत्साह भरे दिनों का यादगार उत्सव के रूप में मना रहे हैं। यह ज्ञान सारा आ गया है ना। डबल विदेशियों के चित्र मन्दिरों में है? यह देलवाड़ा मन्दिर में अपना चित्र देखा है? या सिर्फ भारत वालों के चित्र हैं? सभी ने अपने चित्र देखे? यह पहचाना कि हमारे चित्र हैं। जैसे हे अर्जुन! एक का मिसाल है, वैसे यादगार चित्र भी थोड़े दिखाते हैं। परन्तु हैं सभी के। ऐसे नहीं समझो कि यह तो बहुत थोड़े चित्र हैं। हम कैसे होंगे। यह तो सैम्पल दिखाया है। लेकिन है आप सबका यादगार। जो याद में रहते हैं

उनका यादगार जरूर बनता है। समझा। तो पिचकारी बड़ी सभी की भरी हुई है ना! छोटी-छोटी तो नहीं जो एक बार में ही समाप्त हो जाए। फिर बार-बार भरना पड़े। ऐसी मेहनत करने की भी दरकार नहीं। सभी को अविनाशी रंग से रंग लो। होली बनाने की होली मनाओ। आपकी तो होली हो गई है ना - कि मनानी है? होली हो गई अर्थात् होली मना ली। रंग लगा हुआ है ना। यह रंग साफ नहीं करना पड़ेगा। स्थूल रंग लगाते भी खुशी से हैं और फिर उनसे बचने भी चाहते हैं। और आपका यह रंग तो ऐसा है जो कहेंगे और भी लगाओ। इससे कोई डरेगा नहीं। उस रंग से तो डरते हैं - आँख में न लग जाए। यह तो कहेंगे जितना लगाओ उतना अच्छा। तो ऐसी होली मना ली है ना। होली बन गये! यह पवित्र बनने बनाने का यादगार है।

यहाँ भारत में तो अनेक कहानियाँ बना दी हैं क्योंकि कहानियाँ सुनने की रूचि रखते हैं। तो हर उत्सव की कहानियाँ बना दी हैं। आपकी जीवन कहानी से भिन्न-भिन्न छोटी-छोटी कहानियाँ बना दी हैं। कोई राखी की कहानी बना दी कोई होली की कहानी, कोई जन्म की कहानी बना दी। कोई राज्य दिवस की बना दी। लेकिन यह हैं सब आपके जीवन कहानियों की कहानियाँ। द्वापर में व्यवहार में भी इतना समय नहीं देना पड़ता था, फ्री थे। संख्या भी आज के हिसाब से कम थी। सम्पत्ति भी रजोप्रधान थी - स्थिति भी रजोप्रधान थी। इसलिए बिजी रहने के लिए यह कथा, कहानियाँ, कीर्तन यह साधन अपनाये हैं। कुछ तो साधन चाहिए ना। आप लोग तो फ्री होते हो तो सेवा करते हो या याद में बैठ जाते हो। वो उस समय क्या करें! प्रार्थना करेंगे या कथा कीर्तन करेंगे। इसलिए फ्री बुद्धि हो करके कहानियाँ बड़ी अच्छी-अच्छी बनाई हैं। फिर भी अच्छा है जो अपवित्रता में ज्यादा जाने से बच गये। आजकल के साधन तो ऐसे हैं जो 5 वर्ष के बच्चे को ही विकारी बना देते हैं। और उस समय फिर भी कुछ मर्यादायें भी थीं- लेकिन हैं सब आपका यादगार। इतना नशा और खुशी है ना कि हमारा यादगार मना रहे हैं। हमारे गीत गा रहे हैं। कितने प्यार से गीत गाते हैं। इतने प्यार स्वरूप आप बने हैं तब तो प्यार से गाते हैं। समझा- होली का यादगार क्या है! सदा खुश रहो, हल्के रहो - यही मनाना है। अच्छा - कभी मूड आफ नहीं करना। सदा होली मूड, लाइट मूड! हैपी मूड। अभी बहुत अच्छे समझदार बनते जाते हैं। पहले दिन जब मधुबन में आते हैं वह फोटो और फिर जब जाते हैं वह फोटो दोनों निकालने चाहिए। समझते ईशारे से हैं। फिर भी बापदादा के वा बापदादा के घर के श्रृंगार हो। आपके आने से देखो मधुबन की रौनक कितनी अच्छी हो जाती हैं।

जहाँ देखो वहाँ फरिश्ते आ-जा रहे हैं। रौनक है ना! बापदादा जानते हैं आप श्रृंगार हो। अच्छा-

सभी ज्ञान के रंग में रंगे हुए, सदा बाप के संग के रंग में रहने वाले, बाप समान सम्पन्न बन औरों को भी अविनाशी रंग में रंगने वाले, सदा होली डे मनाने वाले, होली हंस आत्माओं को बापदादा की सदा हैपी और होली रहने की मुबारक हो। सदा स्वयं को सम्पन्न बनाने की, उमंग उत्साह में रहने की मुबारक हो। साथ-साथ चारों ओर के लगन में मगन रहने वाले, सदा मिलन मनाने वाले, विशेष बच्चों को याद प्यार और नमस्ते!

12-04-1984 ब्राह्मण जीवन का फाण्डेशन - 'पवित्रता'

दु:खों से छुड़ाने वाले, धोखों से बचाने वाले, रहमदिल बापदादा बोले:-
आज बापदादा सभी होलीहंसों को देख रहे हैं। हर एक होलीहंस कहाँ तक होली बने हैं, कहाँ तक हंस बने हैं! पवित्रता अर्थात् होली बनने की शक्ति कहाँ तक जीवन में अर्थात् संकल्प, बोल और कर्म में, सम्बन्ध में, सम्पर्क में लाई है। हर संकल्प, होली अर्थात् पवित्रता की शक्ति सम्पन्न है! पवित्रता के संकल्प द्वारा किसी भी अपवित्र संकल्प वाली आत्मा को परख और परिवर्तन कर सकते हो? पवित्रता की शक्ति से किसी भी आत्मा की दृष्टि, वृत्ति और कृति तीनों ही बदल सकते हो। इस महान शक्ति के आगे अपवित्र संकल्प भी वार नहीं कर सकते। लेकिन जब स्वयं संकल्प, बोल वा कर्म में हार खाते हो तब दूसरे व्यक्ति वा वायब्रेशन से हार होती है। किसी के भी सम्बन्ध वा सम्पर्क से हार खाना यह सिद्ध करता है कि स्वयं बाप से सर्व सम्बन्ध जोड़ने में हार खाये हुए हैं। तब किसी सम्बन्ध वा सम्पर्क से हार खाते हैं। पवित्रता में हार खाना, इसका बीज है किसी भी व्यक्ति वा व्यक्ति के गुण, स्वभाव, व्यक्तित्व वा विशेषता से प्रभावित होना। यह व्यक्ति वा व्यक्त भाव में प्रभावित होना, प्रभावित होना नहीं लेकिन बरबाद होना है। व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषता वा गुण, स्वभाव बाप की दी हुई विशेषता है अर्थात् दाता की देन है। व्यक्ति पर प्रभावित होना यह धोखा खाना है। धोखा खाना अर्थात् दु:ख उठाना। अपवित्रता की शक्ति, मृगतृष्णा समान शक्ति है जो सम्पर्क वा सम्बन्ध से बड़ी अच्छी अनुभव होती है, आकर्षण करती है। समझते हैं कि मैं अच्छाई की तरफ प्रभावित हो रहा हूँ। इसलिए शब्द भी यही बोलते वा सोचते कि यह बहुत अच्छे लगते या अच्छी लगती है वा इसका गुण वा स्वभाव अच्छा लगता है। ज्ञान अच्छा लगता है। योग कराना अच्छा लगता है। इससे शक्ति मिलती है! सहयोग मिलता है, स्नेह मिलता है। अल्पकाल की प्राप्ति होती है लेकिन धोखा खाते हैं। देने वाले दाता अर्थात् बीज को, फाउण्डेशन को खत्म कर दिया और रंग-बिरंगी डाली को पकड़कर झूल रहे हैं तो क्या हाल होगा? सिवाए फाउण्डेशन के डाली झुलायेगी या गिरायेगी? जब तक बीज अर्थात् दाता, विधाता से सर्व सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति के रस का अनुभव नहीं तब तक कब व्यक्ति से, कब वैभव

से, कब वायब्रेशन- वायुमण्डल आदि भिन्न-भिन्न डालियों से अल्पकाल की प्राप्ति का मृगतृष्णा समान धोखा खाते रहेंगे। यह प्रभावित होना अर्थात् अविनाशी प्राप्ति से वंचित होना। पवित्रता की शक्ति जब चाहो जिस स्थिति को चाहे, जिस प्राप्ति को चाहो, जिस कार्य में सफलता चाहो, वह सब आपके आगे दासी के समान हाजर हो जायेगी। जब कलियुग के अन्त में भी रजोप्रधान पवित्रता की शक्ति धारण करने वाले नामधारी महात्माओं की अब अन्त तक भी प्रकृति दासी होने का प्रमाण देख रहे हो। अब तक भी नाम महात्मा चल रहा है, अब तक भी पूज्य हैं। अपवित्र आत्मायें झुकती हैं। तो सोचो - अन्त तक भी पवित्रता के शक्ति की कितनी महानता है। और परमात्मा द्वारा प्राप्त हुई सतोप्रधान पवित्रता कितनी शक्तिशाली होगी। इस श्रेष्ठ पवित्रता की शक्ति के आगे अपवित्रता झुकी हुई नहीं लेकिन आपके पांव के नीचे हैं। अपवित्रता रूपी आसुरी शक्ति, शक्ति स्वरूप के पांव के नीचे दिखाई हुई है। जो पांव के नीचे हारी हुई है, हार कैसे खिला सकती है।!

ब्राह्मण जीवन और हार खाना इसको कहेंगे नामधारी ब्राह्मण। इसमें अलबेले मत बनो। ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है - पवित्रता की शक्ति। अगर फाउण्डेशन कमज़ोर है तो प्राप्तियों की 21 मंज़िल वाली बिल्डिंग कैसे टिक सकेगी? यदि फाउण्डेशन हिल रहा है तो प्राप्ति का अनुभव सदा नहीं रह सकता अर्थात् अचल नहीं रह सकते। और वर्तमान युग को वा जन्म की महान प्राप्ति का अनुभव भी नहीं कर सकते। युग की, श्रेष्ठ जन्म की महिमा गाने वाले ज्ञानी-भक्त बन जायेंगे। अर्थात् समझ है लेकिन स्वयं नहीं हैं, इसको कहते हैं - ज्ञानी- भक्त। अगर ब्राह्मण बनकर सर्व प्राप्तियों का, सर्व शक्तियों का वरदान या वर्सा अनुभव नहीं किया तो उसको क्या कहेंगे? वंचित आत्मा वा ब्राह्मण आत्मा? इस पवित्रता के भिन्न-भिन्न रूपों को अच्छी तरह से जानों, स्वयं के प्रति कड़ी दृष्टि रखो। चलाओ नहीं। निमित्त बनी हुई आत्माओं को, बाप को भी चलाने की कोशिश करते हैं। यह तो होता ही है, ऐसा कौन बना है! वा कहते हैं - यह अपवित्रता नहीं है, महानता है, यह तो सेवा का साधन है। प्रभावित नहीं हैं, सहयोग लेते हैं। मददगार है इसीलिए प्रभावित हैं। बाप भूला और लगा माया का गोला। या फिर अपने को छुड़ाने के लिए कहते हैं - मैं नहीं करती, यह करते हैं। लेकिन बाप को भूले तो धर्मराज के रूप में ही बाप मिलेगा। बाप का सुख कभी पा नहीं सकेंगे। इसलिए छिपाओ नहीं, चलाओ नहीं। दूसरे को दोषी नहीं बनाओ। मृगतृष्णा के आकर्षण में धोखा नहीं खाओ। इस पवित्रता के फाउण्डेशन में

बापदादा धर्मराज द्वारा 100 गुणा, पद्मगुणा दण्ड दिलाता है। इसमें रियायत कभी नहीं हो सकती। इसमें रहमदिल नहीं बन सकते। क्योंकि बाप से नाता तोड़ा तब तो किसी के ऊपर प्रभावित हुए। परमात्म प्रभाव से निकल आत्माओं के प्रभाव में आना अर्थात् बाप को जाना नहीं, पहचाना नहीं। ऐसे के आगे बाप, बाप के रूप में नहीं धर्मराज के रूप में है। जहाँ पाप है वहाँ बाप नहीं। तो अलवेले नहीं बनो। इसको छोटी सी बात नहीं समझो। वह भी किसी के प्रति प्रभावित होना, कामना अर्थात् काम विकार का अंश है। बिना कामना के प्रभावित नहीं हो सकते। वह कामना भी काम विकार है। महाशत्रु है। यह दो रूप में आता है। कामना या तो प्रभावित करेगी या परेशान करेगी। इसलिए जैसे नारे लगाते हो - काम विकार नर्क का द्वार। ऐसे अब अपने जीवन के प्रति यह धारणा बनाओ कि किसी भी प्रकार की अल्पकाल की कामना मृगतृष्णा के समान धोखेबाज है। कामना अर्थात् धोखा खाना। ऐसी कड़ी दृष्टि वाले इस काम अर्थात् कामना पर काली रूप बनो। स्नेही रूप नहीं बनो, विचारा है, अच्छा है, थोड़ा-थोड़ा है ठीक हो जायेगा। नहीं! विकर्म के ऊपर विकराल रूप धारण करो। दूसरों के प्रति नहीं अपने प्रति। तब विकर्म विनाश कर फरिश्ता बन सकेंगे। योग नहीं लगता तो चेक करो - जरूर कोई छिपा हुआ विकर्म अपने तरफ खींचता है। ब्राह्मण आत्मा और योग नहीं लगे, यह हो नहीं सकता। ब्राह्मण माना ही एक के हैं, एक ही हैं। तो कहाँ जायेंगे? कुछ है ही नहीं तो कहाँ जायेंगे? अच्छा-
सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन और भी काम विकार के बाल बच्चे हैं। बापदादा को एक बात पर बहुत आश्चर्य लगता है - ब्राह्मण कहता है, ब्राह्मण आत्मा पर व्यर्थ वा विकारी दृष्टि, वृत्ति जाती है। यह कुल कलंकित की बात है। कहना बहन जी, वा भाई जी और करना क्या है! लौकिक बहन पर भी अगर कोई बुरी दृष्टि जाए, संकल्प भी आये, तो उसे कुल कलंकित कहा जाता है। तो यहाँ क्या कहेंगे? एक जन्म के नहीं लेकिन जन्म-जन्म का कलंक लगाने वाले। राज्य भाग्य को लात मारने वाले। ऐसे पद्मगुणा विकर्म कभी नहीं करना। यह विकर्म नहीं, महा विकर्म है। इसलिए सोचो, समझो, सम्भालो। यही पाप जमदूतों की तरह चिपक जायेंगे। अभी भले समझते हैं बहुत मजे में रह रहे हैं, कौन देखता है, कौन जानता है लेकिन पाप पर पाप चढ़ता जाता है और यही पाप खाने को आयेंगे। बापदादा जानते हैं कि इसकी रिजल्ट कितनी कड़ी है। जैसे शरीर से कोई तड़प-तड़प कर शरीर छोड़ता वैसे बुद्धि पापों में तड़प-तड़पकर शरीर छोड़ेगी। सदा सामने यह पाप के जमदूत रहते हैं। इतना कड़ा अन्त है। इसलिए वर्तमान में

गलती से भी ऐसा पाप नहीं करना। बापदादा सिर्फ सम्मुख बैठे हुए बच्चों को नहीं कर रहे हैं लेकिन चारों ओर के बच्चों को समर्थ बना रहे हैं। खबरदार, होशियार बना रहे हैं। समझा - अभी तक इस बात में कमज़ोरी काफी है। अच्छा –

सभी स्वयं प्रति इशारे से समझने वाले, सदा अपने विकल्प और विकर्म पर काली रूप धारण करने वाले, सदा भिन्न-भिन्न धोखों से बचने वाले, दु:खों से बचने वाले, शक्तिशाली आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

02-03-1985 वर्तमान ईश्वरीय जन्म - अमूल्य जन्म

रत्नागर बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले

आज रत्नागर बाप अपने अमूल्य रत्नों को देख रहे हैं। यह अलौकिक अमूल्य रत्नों की दरबार है। एक एक रत्न अमूल्य है। इस वर्तमान समय के विश्व की सारी प्रॉपर्टी वा विश्व के सारे खजाने इकट्ठे करो उसके अन्तर में एक एक ईश्वरीय रत्न कई गुणा अमूल्य हैं। आप एक रत्न के आगे विश्व के सारे खजाने कुछ भी नहीं है। इतने अमूल्य रत्न हो। यह अमूल्य रत्न सिवाए इस संगमयुग के सारे कल्प में नहीं मिल सकते। सतयुगी-देव-आत्मा का पार्ट इस संगमयुगी ईश्वरीय अमूल्य रत्न बनने के पार्ट के आगे सेकण्ड नम्बर हो जाता है। अभी तुम ईश्वरीय सन्तान हो, सतयुग में दैवी सन्तान होंगे। जैसे ईश्वर का सबसे श्रेष्ठ नाम है, महिमा है, जन्म है, वर्म है, वैसे ईश्वरीय रत्नों का वा ईश्वरीय सन्तान आत्माओं का मूल्य सर्वश्रेष्ठ है। इस श्रेष्ठ महिमा का वा श्रेष्ठ मूल्य का यादगार अभी भी 9 रत्नों के रूप में गाये और पूजे जाते हैं। 9 रत्नों को भिन्न-भिन्न विघ्न विनाशक रत्न गाया जाता है जैसा विघ्न वैसी विशेषता वाला रत्न रिंग बनाकर पहनते हैं वा लाकेट में डालते हैं। वा किसी भी रूप से उस रत्न को घर में रखते हैं। अभी लास्ट जन्म तक भी विघ्न-विनाशक रूप में अपना यादगार देख रहे हो। नम्बरवार जरूर हैं लेकिन नम्बरवार होते हुए भी अमूल्य और विघ्न विनाशक सभी हैं। आज भी श्रेष्ठ स्वरूप से आप रत्नों का आत्मायें स्वमान रखती हैं। बड़े प्यार से स्वच्छता से सम्भाल के रखती हैं। क्योंकि आप सभी जो भी हो चाहे अपने को इतना योग्य नहीं भी समझते हो लेकिन बाप ने आप आत्माओं को योग्य समझ अपना बनाया है। स्वीकार किया - 'तू मेरा मैं तेरा'। जिस आत्मा के ऊपर बाप की नजर पड़ी वह प्रभू नजर के कारण अमूल्य बन ही जाते हैं। परमात्म दृष्टि के कारण ईश्वरीय सृष्टि के, ईश्वरीय संसार के श्रेष्ठ आत्मा बन ही जाते हैं। पारसनाथ से सम्बन्ध में आये तो पारस का रंग लग ही जाता है। इसलिए परमात्म-प्यार की दृष्टि मिलने से सारा कल्प चाहे चैतन्य देवताओं के रूप में, चाहे आधा कल्प जड़ चित्रों के रूप में वा भिन्न-भिन्न यादगार के रूप में, जैसे रत्नों के रूप में भी आपका यादगार है, सितारों के रूप में भी आपका यादगार है। जिस भी रूप में यादगार है, सारा कल्प सर्व के प्यारे रहे हो।

क्योंकि अविनाशी प्यार के सागर के प्यार की नजर सारे कल्प के लिए प्यार के अधिकारी बना देती है। इसलिए भक्त लोग आधी घड़ी एक घड़ी की दृष्टि के लिए तड़पते हैं कि नजर से निहाल हो जावें। इसलिए इस समय के प्यार की नजर, अविनाशी प्यार के योग्य बना देती है। अविनाशी प्राप्ति स्वत: ही हो जाती है। प्यार से याद करते, प्यार से रखते। प्यार से देखते।

दूसरी बात- स्वच्छता अर्थात् पवित्रता। तुम इस समय बाप द्वारा पवित्रता का जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करते हो। पवित्रता वा स्वच्छता अपना स्वधर्म जानते हो - इसलिए पवित्रता को अपनाने के कारण जहाँ आपका यादगार होगा वहाँ पवित्रता वा स्वच्छता अभी भी यादगार रूप में चल रही है। और आधाकल्प तो है ही पवित्र पालना। पवित्र दुनिया। तो आधाकल्प पवित्रता से पैदा होते, पवित्रता से पलते और आधाकल्प पवित्रता से पूजे जाते हैं।

तीसरी बात- बहुत दिल से, श्रेष्ठ समझ, अमूल्य समझ सम्भालते हैं। क्योंकि इस समय स्वयं भगवान मात-पिता के रूप से आप बच्चों को सम्भालते हैं अर्थात् पालना करते हैं। तो अविनाशी पालना होने के कारण, अविनाशी स्नेह के साथ सम्भालने के कारण सारा कल्प बड़ी रायल्टी से, स्नेह से, रिगार्ड से सम्भाले जाते हो। ऐसे प्यार, स्वच्छता, पवित्रता और स्नेह से सम्भालने के अविनाशी पात्र बन जाते हो। तो समझा, कितने अमूल्य हो? हर एक रत्न का कितना मूल्य है! तो आज रत्नागर बाप हर एक रतन के मूल्य को देख रहे थे। सारे दुनिया की अक्षोणी आत्मायें एक तरफ हैं लेकिन आप 5 पाण्डव अक्षोणी से शक्तिशाली हो। अक्षोणी आपके आगे एक के बराबर भी नहीं हैं। इतने शक्तिशाली हो। तो कितने मूल्यवान हो गये! इतने मूल्य को जानते हो? कि कभी-कभी अपने आपको भूल जाते हो। जब अपने आपको भूलते हो तो हैरान होते हो। अपने आपको नहीं भूलो। सदा अपने को अमूल्य समझ करके चलो। लेकिन छोटी सी गलती नहीं करना। अमूल्य हो लेकिन बाप के साथ के कारण अमूल्य हो। बाप को भूलकर सिर्फ अपने को समझेंगे तो भी रांग हो जायेगा। बनाने वाले को नहीं भूलो। बन गये लेकिन बनाने वाले के साथ बने हैं, यह है समझने की विधि। अगर विधि को भूल जाते तो समझ, बेसमझ के रूप में बदल जाती। फिर मैं-पन आ जाता है। विधि को भूलने से सिद्धि का अनुभव नहीं होता। इसलिए विधि पूर्वक अपने को मूल्यवान जान विश्व के पूर्वज बन जाओ। हैरान भी नहीं हो कि - मैं तो कुछ नहीं। न यह सोचो कि मैं कुछ नहीं, न यह समझो कि मैं ही सब कुछ हूँ। दोनों

ही रांग हैं। मैं हूँ लेकिन बनाने वाले ने बनाया है। बाप को निकाल देते हो तो पाप हो जाता है। बाप है तो पाप नहीं है। जहाँ बाप का नाम है वहाँ पाप का नाम निशान नहीं। और जहाँ पाप है वहाँ बाप का नामनिशान नहीं है। तो समझा अपने मूल्य को।

भगवान की दृष्टि के पात्र बने हो, साधारण बात नहीं। पालना के पात्र बने हो। अविनाशी पवित्रता के जन्म-सिद्ध अधिकार के अधिकारी बने हो। इसलिए जन्म सिद्ध अधिकार कभी मुश्किल नहीं होता है। सहज प्राप्त होता है। ऐसे ही स्वयं अनुभवी हो कि जो अधिकारी बच्चे हैं उन्हों को पवित्रता मुश्किल नहीं लगती। जिन्हों को पवित्रता मुश्किल लगती वह डगमग ज्यादा होते हैं। पवित्रता स्वधर्म है, जन्म सिद्ध अधिकार है तो सदा सहज लगेगा। दुनिया वाले भी दूर भागते हैं वह किसलिए? पवित्रता मुश्किल लगती है। जो अधिकारी आत्मायें नहीं उन्हों को मुश्किल ही लगेगा। अधिकारी आत्मा आते ही दृढ़ संकल्प करती कि पवित्रता बाप का अधिकार है, इसलिए पवित्र बनना ही है। दिल को पवित्रता सदा आकर्षित करती रहेगी। अगर चलते-चलते कहाँ माया परीक्षा लेने आती भी है, संकल्प के रूप में, स्वप्न के रूप में तो अधिकारी आत्मा नॉलेजफुल होने के कारण घबरायेगी नहीं। लेकिन नॉलेज की शक्ति से संकल्प को परिवर्तित कर देगी। एक संकल्प के पीछे अनेक संकल्प पैदा नहीं करेगी। अंश को वंश के रूप में नहीं लायेगी। क्या हुआ, यह हुआ...यह है वंश। सुनाया था ना क्यों से क्यू लगा देते हैं। यह वंश पैदा कर देते हैं। आया और सदा के लिए गया। पेपर लेने के लिए आया, पास हो गये, समाप्त। माया क्यों आई, कहाँ से आई। यहाँ से आई वहाँ से आई। आनी नहीं चाहिए थी। क्यों आ गई। यह वंश नहीं होना चाहिए। अच्छा आ भी गई तो आप बिठाओ नहीं। भगाओ! आई क्यों...ऐसा सोचेंगे तो बैठ जायेगी। आई आगे बढ़ाने के लिए, पेपर लेने के लिए। क्लास को आगे बढ़ाने के लिए, अनुभवी बनाने के लिए आई! क्यों आई, ऐसे आई, वैसे आई यह नहीं सोचो। फिर सोचते हैं क्या माया का ऐसा रूप होता है? लाल है, हरा है, पीला है। इस विस्तार में चले जाते हैं। इसमें नहीं जाओ। घबराते क्यों हो। पार कर लो। पास विद् ऑनर बन जाओ। नॉलेज की शक्ति है, शस्त्र हैं। मास्टर सर्वशक्तिवान हो, त्रिकालदर्शी हो, त्रिवेणी हो। क्या कमी है! जल्दी में घबराओ नहीं। चींटी भी आ जाती तो घबरा जाते हैं। ज्यादा सोचते हो। सोचना अर्थात् माया को मेहमानी देना। फिर वह घर बना देगी। जैसे रास्ते चलते कोई गन्दी चीज़ दिखाई भी दे तो क्या करेंगे! खड़े होकर सोचेंगे कि यह किसने फेंकी, क्यों-क्या हुआ! होनी नहीं चाहिए, यह सोचेंगे वा किनारा कर चले जायेंगे।

ज्यादा व्यर्थ संकल्पों के वंश को पैदा होने न दो। अंश के रूप में ही समाप्त कर दो। पहले सेकण्ड की बात होती है फिर उसको घण्टों में, दिनों में, मास में बढ़ा देते हो। और अगर एक मास के बाद पूछेंगे कि क्या हुआ था तो बात सेकण्ड की होगी। इसलिए घबराओ नहीं। गहराई में जाओ - ज्ञान की गहराई में जाओ, बात की गहराई में नहीं जाओ। बापदादा इतने श्रेष्ठ मूल्यवान रत्नों को छोटे-छोटे मिट्टी के कणों से खेलते हुए देखते तो सोचते हैं यह रत्न, रत्नों से खेलने वाले, मिट्टी के कणों से खेल रहे हैं! रत्न हो रत्नों से खेलो!

बापदादा ने कितने लाडप्यार से पाला है फिर मिट्टी के कण कैसे देख सकेंगे। फिर मैले होकर कहते - अभी साफ करो, साफ करो। घबरा भी जाते हैं। अभी क्या करूँ, कैसे करूँ। मिट्टी से खेलते ही क्यों हो। वह भी कण जो धरनी में पड़े रहने वाले। तो सदा अपने मूल्य को जानो।

अच्छा - ऐसे सारे कल्प के मूल्यवान आत्माओं को, प्रभू प्यार की पात्र आत्माओं को, प्रभू पालना की पात्र आत्माओं को, पवित्रता के जन्म-सिद्ध अधिकार के अधिकारी आत्माओं को, सदा बाप और मैं इस विधि से सिद्धि को पाने वाली आत्माओं को, सदा अमूल्य रत्न बन रत्नों से खेलने वाले रायल बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते!

पार्टियों से - सदा बाप के नयनों में समाई हुई आत्मा स्वयं को अनुभव करते हो? नयनों में कौन समाता है? जो बहुत हल्का बिन्दु है। तो सदा हैं ही बिन्दु और बिन्दु बन बाप के नयनों में समाने वाले। बापदादा आपके नयनों में समाये हुए हैं और आप सब बापदादा के नयनों में समाये हुए हो। जब नयनों में है ही बापदादा तो और कुछ दिखाई नहीं देगा। तो सदा इस स्मृति से डबल लाइट रहो कि मैं हूँ ही बिन्दु। बिन्दु में कोई बोझ नहीं। यह स्मृति स्वरूप सदा आगे बढ़ाता रहेगा। आँखों में बीच में देखो तो बिन्दू ही है। बिन्दु ही देखता है। बिन्दू न हो तो आँख होते भी देख नहीं सकते। तो सदा इसी स्वरूप को स्मृति में रख उड़ती कला का अनुभव करो। बापदादा बच्चों के वर्तमान और भविष्य के भाग्य को देख हर्षित हैं, वर्तमान कलम है भविष्य के तकदीर बनाने की। वर्तमान को श्रेष्ठ बनाने का साधन है - बड़ों के ईशारों को सदा स्वीकार करते हुए स्वयं को परिवर्तन कर लेना। इसी विशेष गुण से वर्तमान और भविष्य तकदीर श्रेष्ठ बन जाती है। अच्छा – ओम शान्ति।

01-03-1986 होली हंस - बुद्धि, वृत्ति, दृष्टि और मुख

पतित पावन बाप अपने होली हँस बच्चों प्रति बोले-
आज बापदादा सर्व होली हँसों की सभा देख रहे हैं। यह साधारण सभा नहीं है। लेकिन रूहानी होली हँसों की सभा है। बापदादा हर एक होली हँस को देख रहे हैं कि सभी कहाँ तक होली हँस बने हैं। हँस की विशेषता अच्छी तरह से जानते हो। सबसे पहले 'हँस बुद्धि' अर्थात् सदा हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ और शुभ सोचने वाले। होली हँस अर्थात् कंकड़ और रत्न को अच्छी तरह परखने वाले और फिर रत्न धारण करने वाले। पहले हर आत्मा के भाव को परखने वाले और फिर धारण करने वाले। कभी भी बुद्धि में किसी भी आत्मा के प्रति अशुभ वा साधारण भाव धारण करने वाले न हो। सदा शुभ भाव और शुभ भावना धारण करना। भाव जानने से कभी भी किसी के साधारण स्वभाव या व्यर्थ स्वभाव का प्रभाव नहीं पड़ेगा। शुभ भाव शुभ भावना, जिसको भाव स्वभाव कहते हो। जो व्यर्थ है उनको बदलने का है। बापदादा देख रहे हैं - ऐसे 'हँस बुद्धि' कहाँ तक बने हैं। ऐसे ही 'हँस वृत्ति' अर्थात् सदा हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ कल्याण की वृत्ति। हर आत्मा के अकल्याण की बातें सुनते-देखते भी अकल्याण को कल्याण की वृत्ति से बदल लेना। इसको कहते हैं - होली हँस वृत्ति। अपने कल्याण की वृत्ति से औरों को भी बदल सकते हो। उनके अकल्याण की वृत्ति को अपने कल्याण की वृत्ति से बदल लेना यही होली हँस का कर्त्तव्य है। इसी प्रमाण दृष्टि में सदा हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ शुद्ध स्नेह की दृष्टि हो। कैसा भी हो लेकिन अपनी तरफ से सबके प्रति रूहानी आत्मिक स्नेह की दृष्टि धारण करना। इसको कहते - 'होली हंस दृष्टि'। इसी प्रकार बोल में भी पहले सुनाया है, बुरा बोल अलग चीज़ है। वह तो ब्राह्मणों का बदल गया है लेकिन व्यर्थ बोल को भी होली हँस मुख नहीं कहेंगे। मुख भी होली हँस मुख हो! जिसके मुख से कभी व्यर्थ न निकले। इसको कहेंगे 'हँस मुख स्थिति'। तो होली हंस बुद्धि, वृत्ति, दृष्टि और मुख। जब यह पवित्र अर्थात् श्रेष्ठ बन जाते हैं तो स्वत: ही होली हँस की स्थिति का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देता है। तो सभी अपने आपको देखो कि कहाँ तक सदा होली हँस बन चलते-फिरते

हैं। क्योंकि स्व-उन्नति का समय ज्यादा नही रहा है। इसलिए अपने आपको चेक करो और चेन्ज करो।

इस समय का परिवर्तन बहुत काल के परिवर्तन वाली गोल्डन दुनिया के अधिकारी बनायेगा। यह ईशारा बापदादा ने पहले भी दिया है। स्व की तरफ डबल अन्डर लाइन से अटेन्शन सभी का है! थोड़े समय का अटेन्शन है और बहुत काल के अटेन्शन के फलस्वरूप श्रेष्ठ प्राप्ति की प्रालब्ध है। इसलिए यह थोड़ा समय बहुत श्रेष्ठ सुहावना है। मेहनत भी नहीं है सिर्फ जो बाप ने कहा और धारण किया। और धारण करने से प्रैक्टिकल स्वत: ही होगा। होली हंस का काम ही है - धारण करना। तो ऐसे होली हंसो की यह सभा है ना। नॉलेजफुल बन गये। व्यर्थ वा साधारण को अच्छी तरह से समझ गये हो। तो समझने के बाद कर्म में स्वत: ही आता है। वैसे भी साधारण भाषा में यही कहते हो ना कि - अभी मेरे को समझ में आया। फिर करने के बिना रह नहीं सकते हो। तो पहले यह चेक करो कि साधारण अथवा व्यर्थ क्या है? कभी व्यर्थ या साधारण को ही श्रेष्ठ तो नहीं समझ लेते! इसलिए पहले-पहले मुख्य है - होली हंस बुद्धि। उसमें स्वत: ही परखने की शक्ति आ ही जाती है। क्योंकि व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय तब जाता जब उसकी परख नहीं रहती कि यह राइट है या रांग है। अपने व्यर्थ को, रांग को राइट समझ लेते हैं तब ही ज्यादा व्यर्थ समय जाता है। है व्यर्थ लेकिन समझते हैं कि मैं समर्थ, राइट सोच रही हूँ। जो मैंने कहा वही राइट है। इसी में परखने की शक्ति न होने के कारण मन की शक्ति, समय की शक्ति, वाणी की शक्ति सब चली जाती है। और दूसरे से मेहनत लेने का बोझ भी चढ़ता है। कारण? क्योंकि होली हंस बुद्धि नहीं बने हैं। तो बापदादा सभी होली हंसों को फिर से यही ईशारा दे रहे हैं कि उल्टे को उल्टा नहीं करो। यह है ही उल्टा यह नहीं सोचो लेकिन उल्टे को सुल्टा कैसे करूँ, यह सोचो। इसको कहा जाता है - कल्याण की भावना। श्रेष्ठ भाव, शुभ भावना से अपने व्यर्थ भाव-स्वभाव और दूसरे के भाव स्वभाव को परिवर्तन करने की विजय प्राप्त करेंगे! समझा। पहले स्व पर विजयी फिर सर्व पर विजयी, फिर प्रकृति पर विजयी बनेंगे। यह तीनों विजय आपको 'विजयी माला' का मणका बनायेगी। प्रकृति में वायुमण्डल, वायब्रशेन या स्थूल प्रकृति की समस्यायें सब आ जाती हैं। तो तीनों पर विजय हो? इसी आधार से विजय माला का नम्बर अपना देख सकते हो! इसलिए नाम ही 'वैजयन्ती माला' रखा है। तो सभी विजयी हो? अच्छा!

आज आस्ट्रलेया वालों का टर्न है। आस्ट्रेलिया वालों को मधुबन से भी गोल्डन चान्सलर बनने का चांस मिलता है। क्योंकि सभी को आगे रखने का चांस देते हो, यह विशेषता है। औरों को आगे रखना यह चांस देना अर्थात् चान्सलर बनना है। चांस लेने वाले को, चांस देने वाले को दोनों को चांसलर कहते हैं। बापदादा सदा हर बच्चे की विशेषता देखते हैं और वर्णन करते हैं। आस्ट्रेलिया में पाण्डवों को सेवा का चांस विशेष मिला हुआ है। ज्यादा सेन्टर्स भी पाण्डव सम्भालते हैं। शक्तियों ने पाण्डवों को चांस दिया है। आगे रखने वाले सदैव आगे रहते ही हैं। यह भी शक्तियों की विशालता है। लेकिन पाण्डव अपने को सदा निमित्त समझ सेवा में आगे बढ़ रहे हो ना! सेवा में निमित्त भाव ही सेवा की सफलता का आधार है। बापदादा तीन शब्द कहते हैं ना, जो साकार द्वारा भी लास्ट में उच्चारण किये। 'निराकारी, निर्विकारी और निरअहंकारी'। यह तीनों विशेषतायें निमित्त भाव से स्वत: ही आती हैं। निमित्त भाव नहीं तो इन तीनों विशेषताओं का अनुभव नहीं होता। निमित्त भाव अनेक प्रकार का मैं-पन मेरा-पन सहज ही खत्म कर देता है। न मैं, न मेरा। स्थिति में जो हलचल होती है वह इसी एक कमी के कारण। सेवा में भी मेहनत करनी पड़ती और अपनी उड़ती कला की स्थिति में भी मेहनत करनी पड़ती। निमित्त हैं अर्थात् निमित्त बनाने वाला सदा याद रहे। तो इसी विशेषता से सदा सेवा की वृद्धि करते हुए आगे बढ़ रहे हो ना। सेवा का विस्तार होना यह भी सेवा की सफलता की निशानी है। अभी अचल-अडोल स्थिति के अच्छे अनुभवी हो गये हो। समझा - आस्ट्रेलिया अर्थात् कुछ एकस्ट्रा है, जो औरों में नहीं है। आस्ट्रेलिया में और वैरायटी - गुजराती आदि नहीं हैं। 'चैरिटी बिगन्स एट होम' का काम ज्यादा किया है। हमजिन्स को जगाया है। कुमार-कुमारियों का अच्छा कल्याण हो रहा है। इस जीवन में अपने जीवन का श्रेष्ठ फैसला करना होता है। अपनी जीवन बना ली तो सदा के लिए श्रेष्ठ बन गये। उल्टी सीढ़ी चढ़ने से बच गये। बापदादा खुश होते हैं कि एक दो से अनेक दीपक जग 'दीपमाला' बना रहे हैं। उमंग-उत्साह अच्छा है। सेवा में बिजी रहने से उन्नति अच्छी कर रहे हैं।

एक तो निमित्त भाव की बात सुनाई दूसरा जो सेवा के निमित्त बनते उन्हों के लिए स्व-उन्नति वा सेवा की उन्नति प्रति एक विशेष स्लोगन सेफ्टी का साधन है। हम निमित्त बने हुए जो करेंगे हमें देख सब करेंगे। क्योंकि सेवा के निमित्त बनना अर्थात् स्टेज पर आना। जैसे कोई पार्टधारी जब स्टेज पर आता है तो कितना अटेन्शन रखता है। तो सेवा के निमित्त बनना अर्थात् स्टेज पर पार्ट बजाना। स्टेज तरफ सभी की नजर होती

है। और जो जितना हीरो एक्टर होता उस पर ज्यादा नजर होती है। तो यह स्लोगन सेफ्टी का साधन है। इससे स्वत: ही उड़ती कला का अनुभव करेंगे। वैसे तो चाहे सेन्टर पर रहते वा कहाँ भी रह कर सेवा करते। सेवाधारी तो सब हैं। कई अपने निमित्त स्थानों पर रहकर सेवा का चांस लेते वह भी सेवा की स्टेज पर हैं। सेवा के सिवाए अपने समय को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। सेवा का भी खाता बहुत जमा होता है। सच्ची दिल से सेवा करने वाले अपना खाता बहुत अच्छी तरह से जमा कर रहे हैं। बापदादा के पास हर एक बच्चे का आदि से अन्त तक सेवा का खाता है। और आटोमेटिकली उसमें जमा होता रहता है। एक-एक का एकाउन्ट नहीं रखना पड़ता हैं। एकाउन्ट रखने वालों के पास बहुत फाइल होती हैं। बाप के पास स्थूल फाइल कोई नहीं है। एक सेकण्ड में हर एक का आदि से अभी तक का रजिस्टर सेकण्ड में इमर्ज होता है। आटोमेटिक जमा होता रहता है। ऐसे कभी नहीं समझना हमको तो कोई देखता नहीं, समझता नहीं। बापदादा के पास तो जो जैसा है, जितना करता है, जिस स्टेज से करता है सब जमा होता है। फाइल नहीं है लेकिन फाइनल है। आस्ट्रेलिया में शक्तियों ने बाप का बनने की, बाप को पहचान बाप से स्नेह निभाने में हिम्मत बहुत अच्छी दिखाई है। हलचल की भूल होती है वह तो कई स्थान के, धरनी के या टोटल पिछले जीवन के संस्कार के कारण हलचल आती है। उनको भी पार कर स्नेह के बन्धन में आगे बढ़ते रहते हैं। इसलिए बापदादा शक्तियों की हिम्मत पर मुबारक देते हैं। एक बल एक भरोसा आगे बढ़ा रहा है। तो शक्तियों की हिम्मत और पाण्डवों का सेवा का उमंग दोनों पंख पक्के हो गये हैं। सेवा के क्षेत्र में पाण्डव भी महावीर बन आगे बढ़ रहे हैं। हलचल को पार करने में होशियार हैं। सभी का चित्र वही है। पाण्डव मोटे ताजे लम्बे-चौड़े दिखाते हैं। क्योंकि स्थिति ऐसी ऊँची और मजबूत है। इसलिए पाण्डव ऊँचे और बहादुर दिखाये हैं। आस्ट्रेलिया वाले रहमदिल भी ज्यादा हैं। भटकती हुई आत्माओं के ऊपर रहमदिल बन सेवा में आगे बढ़ रहे हैं। वे कभी सेवा के बिना रह नहीं सकते। बापदादा को बच्चों के आगे बढ़ने की विशेषता पर सदा खुशी है। विशेष खुशनसीब हो। हर बच्चे के उमंग उत्साह पर बापदादा को हर्ष होता है। कैसे हर एक श्रेष्ठ लक्ष्य से आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे। बापदादा सदैव विशेषता को ही देखते हैं। हर एक, एक दो से प्यारा लगता है। आप भी एक दो को इस विधि से देखते हो ना! जिसको भी देखो एक दो से प्रिय लगे। क्योंकि 5 हजार वर्ष के बाद बिछुड़े हुए आपस में मिले हैं तो कितने प्यारे लगते हैं। बाप से प्यार की निशानी यह है कि सभी

ब्राह्मण आत्मायें प्यारी लगेंगी। हर ब्राह्मण प्यारा लगना माना बाप से प्यार है। माला में एक दो के सम्बन्ध में तो ब्राह्मण ही आयेंगे। बाप तो रिटायर हो देखेंगे। इसलिए बाप से प्यार की निशानी को सदा अनुभव करो। सभी बाप के प्यारे हैं तो हमारे भी प्यारे हैं। अच्छा-

पार्टियों से

1. सभी अपने को विशेष आत्मायें समझते हो? विशेष आत्मा विशेष कार्य के निमित्त हैं और विशेषतायें दिखानी हैं - ऐसे सदा स्मृति में रहे। विशेष स्मृति साधारण स्मृति को भी शक्तिशाली बना देती है। व्यर्थ को भी समाप्त कर देती है। तो सदा यह 'विशेष' शब्द याद रखना। बोलना भी विशेष, देखना भी विशेष, करना भी विशेष, सोचना भी विशेष। हर बात में यह विशेष शब्द लाने से स्वत: ही बदल जायेंगे और इसी स्मृति से स्व-परिवर्तन तथा विश्व-परिवर्तन सहज हो जायेगा। हर बात में विशेष शब्द ऐड करते जाना। इसी से जो सम्पूर्णता को प्राप्त करने का लक्ष्य है, मंज़िल है उसको प्राप्त कर लेंगे।

2. सदा बाप और वर्से की स्मृति में रहते हो! श्रेष्ठ स्मृति द्वारा श्रेष्ठ स्थिति का अनुभव होता है। स्थिति का आधार है - 'स्मृति'। स्मृति कमज़ोर है तो स्थिति भी कमज़ोर हो जाती है। स्मृति सदा शक्तिशाली रहे। वह शक्तिशाली स्मृति है - 'मैं बाप का और बाप मेरा'। इसी स्मृति से स्थिति शक्तिशाली रहेगी और दूसरों को भी शक्तिशाली बनायेंगे। तो सदा स्मृति के ऊपर विशेष अटेन्शन रहे। समर्थ स्मृति, समर्थ स्थिति, समर्थ सेवा स्वत: होती रहे। स्मृति, स्थिति और सेवा तीनों ही समर्थ हों। जैसे स्विच आन करो तो रोशनी हो जाती, आफ करो तो अंधियारा हो जाता, ऐसे ही यह स्मृति भी एक 'स्विच' है। स्मृति का स्विच अगर कमज़ोर है तो स्थिति भी कमज़ोर है। सदा 'स्मृति रूपी स्विच का अटेन्शन'। इसी से ही स्वयं का और सर्व का कल्याण है। नया जन्म हुआ तो नई स्मृति हो। पुरानी स्मृतियाँ सब समाप्त। तो इसी विधि से सदा सिद्धि को प्राप्त करते चलो।

3. सभी अपने को भाग्यवान समझते हो? वरदान भूमि पर आना यह महान भाग्य है। एक भाग्य वरदान भूमि पर पहुँचने का मिल गया, इसी भाग्य को जितना चाहो श्रेष्ठ बना सकते हो। श्रेष्ठ मत ही भाग्य की रेखा खींचने की कलम है। इसमें जितना भी अपनी श्रेष्ठ रेखा बनाते जायेंगे उतना श्रेष्ठ बन जायेंगे। सारे कल्प के अन्दर यही श्रेष्ठ समय भाग्य की रेखा बनाने का है। ऐसे समय पर और ऐसे स्थान पर पहुँच गये। तो

थोड़े में खुश होने वाले नहीं। जब देने वाला दाता दे रहा है तो लेने वाला थके क्यों! बाप की याद ही श्रेष्ठ बनाती है। बाप को याद करना अर्थात् पावन बनना। जन्म-जन्म का सम्बन्ध है तो याद क्या मुश्किल है! सिर्फ स्नेह से और सम्बन्ध से याद करो। जहाँ स्नेह होता है वहाँ याद न आवे, यह हो नहीं सकता। भूलने की कोशिश करो तो भी याद आता। अच्छा

22-03-1986 सुख, शांति और खुशी का आधार- "पवित्रता"

पतित पावन शिव बाबा अपने होली, हैपी बच्चों के प्रति बोले
आज बापदादा अपने चारों ओर के सर्व होलीनेस और हैपीनेस बच्चों को देख रहे हैं। इतने बड़े संगठित रूप में ऐसे होली और हैपी दोनों विशेषता वाले, इस सारे ड्रामा के अन्दर और कोई इतनी बड़ी सभा व इतनी बड़ी संख्या हो ही नहीं सकती। आजकल किसी को भल 'हाइनेस वा होलीनेस' का टाइटिल देते भी हैं लेकिन प्रत्यक्ष प्रमाण रूप में देखो तो वह पवित्रता, महानता दिखाई नहीं देगी। बापदादा देख रहे थे - इतनी महान पवित्र आत्माओं का संगठन कहाँ हो सकता है। हर एक बच्चे के अन्दर यह दृढ़ संकल्प है कि न सिर्फ कर्म से लेकिन मन- वाणी-कर्म तीनों से पवित्र बनना ही है। तो यह पवित्र बनने का श्रेष्ठ दृढ़ संकल्प और कहाँ भी रह नहीं सकता। अविनाशी हो नहीं सकता, सहज हो नहीं सकता। और आप सभी पवित्रता को धारण करना कितना सहज समझते हो! क्योंकि बापदादा द्वारा नॉलेज मिली और नॉलेज की शक्ति से जान लिया कि मुझ आत्मा का अनादि और आदि स्वरूप है ही 'पवित्र'। जब आदि अनादि स्वरूप की स्मृति आ गई तो यह स्मृति समर्थ बनाए सहज अनुभव करा रही है। जान लिया कि हमारा वास्तविक स्वरूप 'पवित्र' है। यह संग-दोष का स्वरूप 'अपवित्र' है। तो वास्तविक को अपनाना सहज हो गया ना!
स्व-धर्म, स्व-देश, स्व का पिता और स्व-स्वरूप, स्व-कर्म सबकी नॉलेज मिली है। तो नॉलेज की शक्ति से मुश्किल अति सहज हो गया। जिस बात को आजकल की महान आत्मा कहलाने वाले भी असम्भव समझते हैं, अननेचुरल समझते हैं लेकिन आप पवित्र आत्माओं ने उस असम्भव को कितना सहज अनुभव कर लिया! पवित्रता को अपनाना सहज है वा मुश्किल है? सारे विश्व के आगे चैलेन्ज से कह सकते हो कि पवित्रता तो हमारा स्व-स्वरूप है। पवित्रता की शक्ति के कारण जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख और शान्ति स्वत: ही है। पवित्रता फाउण्डेशन है। पवित्रता को माता कहते हैं और सुख शान्ति उनके बच्चे हैं। तो जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख-शान्ति स्वत: ही है। इसलिए हैपी भी हो। कभी उदास हो नहीं सकते। सदा खुश रहने वाले। जहाँ होली है तो हैपी भी जरूर है। पवित्र आत्माओं की निशानी - 'सदा खुशी' है। तो बापदादा देख

रहे हैं कि कितने निश्चय बुद्धि पावन आत्मायें बैठी हैं। दुनिया वाले सुख शान्ति के पीछे भाग दौड़ करते हैं। लेकिन सुख शान्ति का फाउण्डेशन ही पवित्रता है। उस फाउण्डेशन को नहीं जानते हैं। इसलिए पवित्रता का फाउण्डेशन मजबूत न होने के कारण अल्पकाल के लिए सुख वा शान्ति प्राप्त होती भी है लेकिन अभी-अभी है, अभी-अभी नहीं है। सदाकाल की सुख शान्ति की प्राप्ति सिवाए पवित्रता के असम्भव है। आप लोगों ने फाउण्डेशन को अपना लिया है। इसलिए सुख-शान्ति के लिए भाग दौड़ नहीं करनी पड़ती है। सुख शान्ति, पवित्र-आत्माओं के पास स्वयं स्वत: ही आती है। जैसे बच्चे माँ के पास स्वत: ही जाते हैं ना। कितना भी अलग करो फिर भी माँ के पास जरूर जायेंगे। तो सुख-शान्ति की माता है - 'पवित्रता'। जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख-शान्ति, खुशी स्वत: ही आती है। तो क्या बन गये? 'बेगमपुर के बादशाह'। इस पुरानी दुनिया के बादशाह नहीं, लेकिन बेगमपुर के बादशाह। यह ब्राह्मण परिवार बेगमपुर अर्थात् सुख-संसार है। तो इस सुख के संसार बेगमपुर के बादशाह बन गये। हिज होलीनेस भी हो ना। ताज भी है, तख्त भी है। बाकी क्या कमी है! कितना बढ़िया ताज है। लाइट का ताज पवित्रता की निशानी है और बापदादा के दिलतख्तनशीन हो। तो बेगमपुर के बादशाहों का ताज भी न्यारा और तख्त भी न्यारा है। बादशाही भी न्यारी तो बादशाह भी न्यारे हो।

आजकल की मनुष्यात्माओं को इतनी भाग दौड़ करते हुए देख बापदादा को भी बच्चों पर तरस पड़ता है। कितना प्रयत्न करते रहते हैं। प्रयत्न अर्थात् भाग दौड़, मेहनत भी ज्यादा करते लेकिन प्राप्ति क्या? सुख भी होगा तो सुख के साथ कोई न कोई दुख भी मिला हुआ होगा। और कुछ नहीं तो अल्पकाल के सुख के साथ चिंता और भय यह दो चीज़े तो हैं ही है। तो जहाँ चिंता है वहाँ चैन नहीं हो सकता। जहाँ भय है वहाँ शान्ति नहीं हो सकती। तो सुख के साथ यह दु:ख-अशान्ति के कारण है ही है। और आप सबको दुख का कारण और निवारण मिल गया। अभी आप समस्याओं को समाधान करने वाले समाधान स्वरूप बन गये हो ना। समस्याएँ आप लोगों से खेलने के लिए खिलौने बन कर आती है। खेल करने के लिए आती हैं, न कि डराने के लिए। घबराने वाले तो नहीं हो ना? जहाँ सर्व शक्तियों का खज़ाना जन्म-सिद्ध अधिकार हो गया तो बाकी कमी क्या रही, भरपूर हो ना! मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे समस्या कोई नहीं। हाथी के पांव के नीचे अगर चींटी आ जाए तो दिखाई देगी? तो यह समस्याएँ भी आप महारथियों के आगे चींटी समान है। खेल समझने से खुशी रहती। कितनी भी बड़ी

बात भी छोटी हो जाती। जैसे आजकल बच्चों को कौन से खेल कराते हैं, बुद्धि के। वैसे बच्चों को हिसाब करने दो तो तंग हो जायेंगे। लेकिन खेल की रीति से हिसाब खुशी-खुशी करेंगे। तो आप सबके लिए भी समस्या चींटी समान है ना! जहाँ पवित्रता, सुख शान्ति की शक्ति है वहाँ स्वप्न में भी दुख अशान्ति की लहर आ नहीं सकती। शक्तिशाली आत्माओं के आगे यह दुख और अशान्ति हिम्मत नहीं रख सकती आगे आने की। पवित्र आत्मायें सदा हर्षित रहने वाली आत्मायें हैं, यह सदा स्मृति में रखो। अनेक प्रकार की उलझनों से भटकने से दुख अशान्ति की जाल से निकल आये। क्योंकि सिर्फ एक दुख नहीं आता है। लेकिन एक दुख भी वंशावली के साथ आता है। तो उस जाल से निकल आये। ऐसे अपने को भाग्यवान समझते हो ना! आज आस्ट्रेलिया वाले बैठे हैं। आस्ट्रेलिया वालों की बापदादा सदा ही तपस्या और महादानी-पन की विशेषता वर्णन करते हैं। सदा सेवा की लगन की तपस्या अनेक आत्माओं को और आप तपस्वी आत्माओं को फल दे रही है। धरनी के प्रमाण विधि और वृद्धि दोनों को देख बापदादा एक्सट्रा खुश हैं। आस्ट्रेलिया हैं ही एक्सट्रा आर्डनरी। त्याग की भावना, सेवा के लिए सभी में बहुत जल्दी आती है इसलिए तो इतने सेन्टर्स खोले हैं। जैसे हमको भाग्य मिला है ऐसे औरों का भाग्य बनाना है। दृढ़ संकल्प करना यह तपस्या है। तो त्याग और तपस्या की विधि से वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। सेवा-भाव अनेक हद के भाव समाप्त कर देता है। यही त्याग और तपस्या सफलता का आधार बना है, समझा। संगठन की शक्ति है। एक ने कहा और दूसरे ने किया। ऐसे नहीं एक ने कहा और दूसरा कहे यह तो हो नहीं सकता। इसमें संगठन टूटता है। एक ने कहा दूसरे ने उमंग से सहयोगी बन प्रैक्टिकल में लाया, यह है संगठन की शक्ति। पाण्डवों का भी संगठन है, कभी तू मैं नहीं। बस, 'बाबा-बाबा' कहा तो सब बातें समाप्त हो जाती है। खिटखिट होती ही है - तू मैं, मेरा तेरा में। बाप को सामने रखेंगे तो कोई भी समस्या आ नहीं सकती। और सदा निर्विघ्न आत्मायें तीव्र पुरूषार्थ से उड़ती-कला का अनुभव करती हैं। बहुत काल की निर्विघ्न स्थिति, मजबूत स्थिति होती है। बार-बार विघ्नों के वश जो होते उन्हों का फाउण्डेशन कच्चा हो जाता है और बहुत काल की निर्विघ्न आत्मायें फाउण्डेशन पक्का होने के कारण स्वयं भी शक्तिशाली, दूसरों को भी शक्तिशाली बनाती हैं। कोई भी चीज़ टूटी हुई चीज़ को जोड़ने से वह कमज़ोर हो जाती है। बहुतकाल की शक्तिशाली आत्मा,निर्विघ्न आत्मा अन्त में भी निर्विघ्न बन पास विद आनर बन जाती है या फर्स्ट डिवीजन में आ जाती

है। तो सदा यही लक्ष्य रखो कि बहुतकाल की निर्विघ्न स्थिति का अनुभव अवश्य करना है। ऐसे नहीं समझो - विघ्न आया, मिट तो गया ना। कोई हर्जा नहीं। लेकिन बार-बार विघ्न आना और मिटाना इसमें टाइम वेस्ट जाता है। एनर्जी वेस्ट जाती है। वह टाइम और एनर्जी सेवा में लगाओ ते एक का पदम जमा हो जायेगा। इसलिए बहुतकाल की निर्विघ्न आत्मायें, विघ्न विनाशक रूप से पूजी जाती हैं। 'विघ्न विनाशक' टाइटिल पूज्य आत्माओं का है। 'मैं विघ्न विनाशक पूज्य आत्मा हूँ' - इस स्मृति से सदा निर्विघ्न बन आगे उड़ती कला द्वारा उड़ते चलो और उड़ाते चलो। समझा। अपने विघ्न विनाश तो िकये लेकिन औरों के लिए विघ्न विनाशक बनना है। देखो आप लोगों को निमित्त आत्मा भी ऐसी मिली है (निर्मला डाक्टर) जो शुरू से लेकर किसी भी विघ्न में नहीं आये। सदा न्यारे और प्यारे रहे हैं। थोड़ा सा स्ट्रिक्ट रहती। यह भी जरूरी है। अगर ऐसी स्ट्रिक्ट टीचर नहीं मिलती तो इतनी वृद्धि नहीं होती। यह आवश्यक भी होता है। जैसे कड़वी दवाई बीमारी के लिए जरूरी होती है ना। तो ड्रामा अनुसार निमित्त आत्माओं का भी संग तो लगता ही है और जैसे स्वयं आने से ही सेवा के निमित्त बन गये तो आस्ट्रेलिया में आने से सेन्टर खोलने की सेवा में लग जाते। यह त्याग की भावना का वायब्रेशन सारी आस्ट्रेलिया और जो भी सम्पर्क वाले स्थान हैं उनमें उसी रूप से वृद्धि हो रही है। तपस्या और त्याग जिसमें है - वही श्रेष्ठ आत्मा है। तीव्र पुरुषार्थी तो सभी आत्मायें हैं लेकिन पुरुषार्थी होते हुए भी विशेषताएँ अपना प्रभाव जरूर डालती हैं। सम्पन्न तो अभी सब बन रहे हैं ना। सम्पन्न बन गये, यह सार्टिफिकेट किसको भी मिला नहीं है। लेकिन सम्पन्नता के समीप पहुँच गये हैं। इसमें नम्बरवार हैं। कोई बहुत समीप पहुँच गये हैं। कोई नम्बरवार आगे पीछे हैं। आस्ट्रेलिया वाले लकी है। त्याग का बीज भाग्य प्राप्त करा रहा है। शक्ति सेना भी बापदादा को अति प्रिय है। क्योंकि हिम्मत-वाली है। जहाँ हिम्मत है वहाँ बापदादा की मदद सदा ही साथ है। सदा सन्तुष्ट रहने वाले हो ना। सन्तुष्टता सफलता का आधार है। आप सब सन्तुष्ट आत्मायें हो तो सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। समझा। जो नियरेस्ट और डियरेस्ट होता है उनको अपना समझ, हमेशा पीछे, लेकिन आस्ट्रेलिया वालों के ऊपर एक्स्ट्रा हुज्जत है। अच्छा

25-03-86 होली का रहस्य

हाइएस्ट बापदादा अपने होली, हैपी हंसों प्रति बोले-

आज बापदादा सर्व स्वराज्य अधिकारी अलौकिक राज्य सभा देख रहे हैं। हर एक श्रेष्ठ आत्मा के ऊपर लाइट का ताज चमकता हुआ देख रहे हैं। यही राज्य सभा - होली सभा है। हर एक परम पावन पूज्य आत्मायें सिर्फ इस एक जन्म के लिए पावन अर्थात् होली नहीं बने हैं। लेकिन पावन अर्थात् होली बनने की रेखा अनेक जन्मों की लम्बी रेखा है। सारे कल्प के अन्दर और आत्मायें भी पावन होली बनती हैं। जैसे पावन आत्मायें धर्मपिता के रूप में धर्म स्थापन करने के निमित्त बनती हैं। साथ-साथ कई महान आत्मायें कहलाने वाले भी पावन बनते हैं लेकिन उन्हों के पावन बनने में और आप पावन आत्माओं में अन्तर है। आपके पावन बनने का साधन अति सहज है। कोई मेहनत नहीं। क्योंकि बाप से आप आत्माओं को सुख शान्ति पवित्रता का वर्सा सहज मिलता है। इस स्मृति से सहज और स्वत: ही अविनाशी बन जाते! दुनिया वाले पावन बनते हैं लेकिन मेहनत से। और उन्हें 21 जन्मों के वर्से के रूप में पवित्रता नहीं प्राप्त होती है। आज दुनिया के हिसाब से 'होली' का दिन कहते हैं। वह होली मनाते और आप स्वयं ही परमात्मा रंग में रंगने वाले होली आत्मायें बन जाते हो। मनाना थोड़े समय के लिए होता है, बनना जीवन के लिए होता है। वह दिन मनाते और आप होली जीवन बनाते हो। यह संगमयुग होली जीवन का युग है। तो रंग में रंग गये अर्थात् अविनाशी रंग लग गया। जो मिटाने की आवश्यकता नहीं। सदाकाल के लिए बाप समान बन गये। संगमयुग पर निराकार बाप समान कर्मातीत निराकारी स्थिति का अनुभव करते हो और 21 जन्म ब्रह्मा बाप समान सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी श्रेष्ठ जीवन का समान अनुभव करते हो। तो आपकी होली है 'संग के रंग' में बाप समान बनना। ऐसा पक्का रंग हो जो समान बना दे। ऐसी होली दुनिया में कोई खेलते हैं? बाप समान बनाने की होली खेलने आते हैं। कितने भिन्न-भिन्न रंग बाप द्वारा हर आत्मा पर अविनाशी चढ़ जाते हैं। ज्ञान का रंग, याद का रंग, अनेक शक्तियों के रंग, गुणों के रंग, श्रेष्ठ दृष्टि, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना स्वत: सदा बन जाए, यह रूहानी रंग कितना सहज चढ़ जाता है। होली बन गये अर्थात् होली हो गये।

वह होली मनाते हैं, जैसे गुण हैं वैसा रूप बन जाते हैं। उसी समय कोई उन्हों का फोटो निकाले तो कैसा लगेगा। वह होली मनाकर क्या बन जाते और आप होली मनाते हो तो फरिश्ता सो देवता बन जाते हो। है सब आपका ही यादगार लेकिन आध्यात्मिक शक्ति न होने के कारण आध्यात्मिक रूप से नहीं मना सकते हैं। बाहरमुखता होने कारण बाहरमुखी रूप से ही मनाते रहते हैं। आपका यथार्थ रूप से मंगल मिलन मनाना है।

होली की विशेषता है जलाना, फिर मनाना और फिर मंगल मिलन करना। इन तीन विशेषताओं से यादगार बना हुआ है। क्योंकि आप सभी ने होली बनने के लिए पहले पुराने संस्कार, पुरानी स्मृतियाँ सभी को योग अग्नि से जलाया तभी संग के रंग में होली मनाया अर्थात् बाप समान संग का रंग लगाया। जब बाप के संग का रंग लग जाता है तो हर आत्मा के प्रति विश्व की सर्व आत्मायें परमात्म परिवार बन जाते हैं। परमात्म परिवार होने के कारण हर आत्मा के प्रति शुभ कामना स्वत: ही नेचुरल संस्कार बन जाती है। इसलिए सदा एक दो में मंगल मिलन मनाते रहते हैं। चाहे कोई दुश्मन भी हो, आसुरी संस्कार वाले हों लेकिन इस रूहानी मंगल मि्ालन से उनको भी परमात्म रंग का छींटा जरूर डालते। कोई भी आपके पास आयेगा तो क्या करेगा? सबसे गले मिलना अर्थात् श्रेष्ठ आत्मा समझ गले मिलना। यह बाप के बच्चे हैं। यह प्यार का मिलन शुभ भावना का मिलन उन आत्माओं को भी पुरानी बातें भूला देती हैं। वह भी उत्साह में आ जाते। इसलिए उत्सव के रूप में यादगार बना लिया है। तो बाप से होली मनाना अर्थात् अविनाशी रूहानी रंग में बाप समान बनना। वह लोग तो उदास रहते हैं इसलिए खुशी मनाने के लिए यह दिन रखे हैं। और आप लोग तो सदा ही खुशी में नाचते-गाते, मौज मनाते रहते हो। जो ज्यादा मूँझते हैं - क्या हुआ, क्यों हुआ, कैसे हुआ, वह मौज में नहीं रह सकते। आप त्रिकालदर्शी बन गये तो फिर क्या, क्यों कैसे यह संकल्प उठ ही नहीं सकते। क्योंकि तीनों कालों को जानते हो। क्यों हुआ? जानते हैं पेपर है आगे बढ़ने लिए। क्यों हुआ? नथिंग न्यू। तो क्या हुआ का क्वेश्चन ही नहीं। कैसे हुआ? माया और मजबूत बनाने के लिए आई और चली गई। तो त्रिकालदर्शी स्थिति वाले इसमें मूँझते नहीं। क्वेश्चन के साथ-साथ रेसपाण्ड पहले आता। क्योंकि त्रिकालदर्शी हो। नाम त्रिकालदर्शी और वर्तमान को भी न जान सके - क्यों हुआ, कैसे हुआ तो उसको त्रिकालदर्शी कैसे कहेंगे! अनेक बार विजयी बने हैं और बनने वाले भी हैं। पास्ट और फ्युचर को भी जानते हैं कि हम ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता

बनने वाले हैं। आज और कल की बात है। क्वेश्चन समाप्त हो फुल स्टाप आ जाता है।

होली का अर्थ भी है - 'हो ली'। पास्ट इज पास्ट। ऐसे बिन्दी लगाने आती है ना! यह भी होली का अर्थ है। जलाने वाली होली भी आती। रंग में रंगने वाली होली भी आती और बिन्दी लगाने की होली भी आती। मंगल मिलन मनाने की होली भी आती। चारों ही प्रकार की होली आती है ना! अगर एक प्रकार भी कम होगी तो लाइट का ताज टिकेगा नहीं। गिरता रहेगा। ताज टाइट नहीं होता तो गिरता रहता है ना। चारों ही प्रकार की होली मनाने में पास हो? जब बाप समान बनना है तो बाप सम्पन्न भी है और सम्पूर्ण भी है। परसेन्टेज की स्टेज भी कब तक? जिससे स्नेह होता है तो स्नेही को समान बनने में मुश्किल नहीं होता। बाप के सदा स्नेही हो तो सदा समान क्यों नहीं! सहज है ना। अच्छा।

सभी सदा होली और हैपी रहने वाले होली हँसो को, हाइएस्ट ते हाइएस्ट बाप समान होली बनने की अविनाशी मुबारक दे रहें हैं। सदा बाप समान बनने की, सदा होली युग में मौज मनाने की मुबारक दे रहे हैं। सदा होली हंस बन ज्ञान रत्नों से सम्पन्न बनने की मुबारक दे रहे हैं। सर्व रंगों में रंगे हुए पूज्य आत्मा बनने की मुबारक दे रहे हैं। मुबारक भी है और यादप्यार भी सदा है। और सेवाधारी बाप की, मालिक बच्चों के प्रति नमस्ते भी सदा है। तो यादप्यार और नमस्ते।"

आज **मलेशिया ग्रुप** है! साउथ ईस्ट। सभी यह समझते हो कि हम कहाँ-कहाँ बिखर गये थे। परमात्म परिवार के स्टीमर से उतर कहाँ-कहाँ कोने में चले गये। संसार सागर में खो गये। क्योंकि द्वापर में आत्मिक बाम्ब के बजाए शरीर के भान का बाम्ब लगा। रावण ने बाम्ब लगा दिया तो स्टीमर टूट गया। परमात्म परिवार का स्टीमर टूट गया और कहाँ-कहाँ चले गये। जहाँ भी सहारा मिला। डूबने वाले को जहाँ भी सहारा मिलता है तो ले लेते हैं ना। आप सबको भी जिस धर्म, जिस देश का थोड़ा सा भी सहारा मिला, वहाँ पहुँच गये। लेकिन संस्कार तो वही हैं ना। इसलिए दूसरे धर्म में जाते भी अपने वास्तविक धर्म का परिचय मिलने से पहुँच गये। सारे विश्व में फैल गये थे। यह बिछुड़ना भी कल्याणकारी हुआ। जो अनेक आत्माओं को एक ने निकालने का कार्य किया। विश्व में परमात्म परिवार का परिचय देने के लिए कल्याणकारी बन गये। सब अगर भारत में ही होते तो विश्व में सेवा कैसे होती? इसलिए कोने-कोने में पहुँच गये हो। सभी मुख्य धर्मों में कोई न कोई पहुँच गये हैं। एक भी निकलता है तो

हमजिन्स को जगाते जरूर हैं। बापदादा को भी 5 हजार वर्ष के बाद बिछड़े हुए बच्चों को देख करके खुशी होती है। आप सबको भी खुशी होती हैं ना। पहुँच तो गये। मिल तो गये।

मलेशिया का कोई वी. आई. पी. अभी तक नहीं आया है। सेवा के लक्ष्य से उन्हों को भी निमित्त बनाया जाता है। सेवा की तीव्रगति के निमित्त बन जाते हैं इसलिए उन्हों को आगे रखना पड़ता है। बाप के लिए तो आप ही श्रेष्ठ आत्मायें हो। रूहानी नशे में तो आप श्रेंष्ठ हो ना। कहाँ आप पूज्य आत्मायें और कहाँ वह माया में फँसे हुए! अंजान आत्माओं को भी पहचान तो देनी है ना। सिंगापुर में भी अब वृद्धि हो रही है। जहाँ बाप के अनन्य रत्न पहुँचते हैं तो रत्न, रत्नों को ही निकालते हैं। हिम्मत रख सेवा में लगन से आगे बढ़ रहे हैं। तो मेहनत का फल श्रेष्ठ ही मिलेगा। अपने परिवार को इकट्ठे करना है। परिवार का बिछुड़ा हुआ परिवार में पहुँच जाता है तो कितना खुश होते और दिल से शुक्रिया गाते। तो यह भी परिवार में आकर कितना शुक्रिया गाते होंगे। निमित्त बन बाप का बना लिया। संगम पर शुक्रिया की मालायें बहुत पड़ती हैं। अच्छा।

20-02-1987 याद, पवित्रता और सच्चे सेवाधारी की तीन रेखाएं

हर एक बच्चे के वर्तमान रिजल्ट को देखते हुए विश्व-स्नेही बापदादा बोले
आज सर्व स्नेही, विश्व-सेवाधारी बाप अपने सदा सेवाधारी बच्चों से मिलने आये हैं। सेवाधारी बापदादा को समान सेवाधारी बच्चे सदा प्रिय हैं। आज विशेष, सर्व सेवाधारी बच्चों के मस्तक पर चमकती हुई विशेष तीन लकीरें देख रहे हैं। हर एक का मस्तक त्रिमूर्ति तिलक समान चमक रहा है। यह तीन लकीरें किसकी निशानी हैं? इन तीन प्रकार के तिलक द्वारा हर एक बच्चे के वर्तमान रिजल्ट को देख रहे हैं। एक है - सम्पूर्ण योगी जीवन की लकीर।
दूसरी है - पवित्रता की रेखा वा लकीर। तीसरी है - सच्चे सेवाधारी की लकीर। तीनों रेखाओं में हर बच्चे की रिजल्ट को देख रहे हैं। याद की लकीर सभी की चमक रही है लेकिन नम्बरवार है। किसी की लकीर वा रेखा आदि से अब तक अव्यभिचारी अर्थात् सदा एक की लग्न में मग्न रहने वाली है। दूसरी बात - सदा अटूट रही है? सदा सीधी लकीर अर्थात् डायरेक्ट बाप से सर्व सम्बन्ध की लग्न सदा से रही है वा किसी निमित्त आत्माओं के द्वारा बाप से सम्बन्ध जोड़ने के अनुभवी हैं? डायरेक्ट बाप का सहारा है वा किसी आत्मा के सहारे द्वारा बाप का सहारा है? एक हैं सीधी लकीर वाले, दूसरे हैं बीच-बीच में थोड़ी टेढ़ी लकीर वाले। यह हैं याद की लकीर की विशेषतायें। दूसरी है - सम्पूर्ण पवित्रता की लकीर वा रेखा। इसमें भी नम्बरवार हैं। एक हैं ब्राह्मण जीवन लेते ही ब्राह्मण जीवन का, विशेष बाप का वरदान प्राप्त कर सदा और सहज इस वरदान को जीवन में अनुभव करने वाले। उन्हों की लकीर आदि से अब तक सीधी है। दूसरे - ब्राह्मण जीवन के इस वरदान को अधिकार के रूप में अनुभव नहीं करते; कभी सहज, कभी मेहनत से, बहुत पुरूषार्थ से अपनाने वाले हैं। उन्हों की लकीर सदा सीधी और चमकती हुई नहीं रहती है। वास्तव में याद वा सेवा की सफलता का आधार है - पवित्रता। सिर्फ ब्रह्मचारी बनना - यह पवित्रता नहीं लेकिन पवित्रता का सम्पूर्ण रूप है - ब्रह्मचारी के साथ-साथ ब्रह्माचारी बनना। ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा के आचरण पर चलने वाले, जिसको फॉलो फादर कहा जाता है क्योंकि फॉलो ब्रह्मा बाप को करना

है। शिव बाप के समान स्थिति में बनना है लेकिन आचरण वा कर्म में ब्रह्मा बाप को फॉलो करना है। हर कदम में ब्रह्मचारी। ब्रह्मचर्य का व्रत सदा संकल्प और स्वप्न तक हो। पवित्रता का अर्थ है - सदा बाप को कम्पैनियन (साथी) बनाना और बाप की कम्पनी में सदा रहना। कम्पैनियन बना दिया, 'बाबा मेरा' - यह भी आवश्यक है लेकिन हर समय कम्पनी भी बाप की रहे। इसको कहते हैं - 'सम्पूर्ण पवित्रता।' संगठन की कम्पनी, परिवार के स्नेह की मर्यादा, वह अलग चीज़ है, वह भी आवश्यक है। लेकिन बाप के कारण ही यह संगठन के स्नेह की कम्पनी है - यह नहीं भूलना है। परिवार का प्यार है, लेकिन परिवार किसका? बाप का। बाप नहीं होता तो परिवार कहाँ से आता? परिवार का प्यार, परिवार का संगठन बहुत अच्छा है लेकिन परिवार का बीज नहीं भूल जाए। बाप को भूल परिवार को ही कम्पनी बना देते हैं। बीच-बीच में बाप को छोड़ा तो खाली जगह हो गई। वहाँ माया आ जायेगी। इसलिए स्नेह में रहते, स्नेह देते-लेते समूह को नहीं भूलें। इसको कहते हैं पवित्रता। समझने में तो होशियार हो ना!

कई बच्चों को सम्पूर्ण पवित्रता की स्थिति में आगे बढ़ने में मेहनत लगती है। इसलिए बीच-बीच में कोई को कम्पैनियन बनाने का भी संकल्प आता है और कम्पनी भी आवश्यक है - यह भी संकल्प आता है। संन्यासी तो नहीं बनना है लेकिन आत्माओं की कम्पनी में रहते बाप की कम्पनी को भूल नहीं जाओ। नहीं तो समय पर उस आत्मा की कम्पनी याद आयेगी और बाप भूल जायेगा। तो समय पर धोखा मिलना सम्भव है क्योंकि साकार शरीरधारी के सहारे की आदत होगी तो अव्यक्त बाप और निराकार बाप पीछे याद आयेगा, पहले शरीरधारी आयेगा। अगर किसी भी समय पहले साकार का सहारा याद आया तो नम्बरवन वह हो गया और दूसरा नम्बर बाप हो गया! जो बाप को दूसरे नम्बर में रखते तो उसको पद क्या मिलेगा - नम्बर वन (एक) वा टू (दो)? सिर्फ सहयोग लेना, स्नेही रहना वह अलग चीज़ है, लेकिन सहारा बनाना अलग चीज़ है। यह बहुत गुह्य बात है। इसको यथार्थ रीति से जानना पड़े। कोई-कोई संगठन में स्नेही बनने के बजाए न्यारे भी बन जाते हैं। डरते हैं - ना मालूम फँस जाएँ, इससे तो दूर रहना ठीक है। लेकिन नहीं। 21 जन्म भी प्रवृत्ति में, परिवार में रहना है ना। तो अगर डर के कारण किनारा कर लेते, न्यारे बन जाते तो वह कर्म-संन्यासी के संस्कार हो जाते हैं। कर्मयोगी बनना है, कर्म-संन्यासी नहीं। संगठन में रहना है, स्नेही बनना है

लेकिन बुद्धि का सहारा एक बाप हो, दूसरा न कोई। बुद्धि को कोई आत्मा का साथ वा गुण वा कोई विशेषता आकर्षित नहीं करे। इसको कहते हैं - 'पवित्रता'।

पवित्रता में मेहनत लगती - इससे सिद्ध है वरदाता बाप से जन्म का वरदान नहीं लिया है। वरदान में मेहनत नहीं होती। हर ब्राह्मण आत्मा को ब्राह्मण जन्म का पहला वरदान - 'पवित्र भव, योगी भव' का मिला हुआ है। तो अपने से पूछो - पवित्रता के वरदानी हो या मेहनत से पवित्रता को अपनाने वाले हो? यह याद रखो कि हमारा ब्राह्मण जन्म है। सिर्फ जीवन परिवर्तन नहीं लेकिन ब्राह्मण जन्म के आधार पर जीवन का परिवर्तन है। जन्म के संस्कार बहुत सहज और स्वत: होते हैं। आपस में भी कहते हो ना - मेरे जन्म से ही ऐसे संस्कार हैं। ब्राह्मण जन्म का संस्कार है ही 'योगी भव, पवित्र भव'। वरदान भी है, निजी संस्कार भी है। जीवन में दो चीज़ें ही आवश्यक हैं। एक - कम्पैनियन, दूसरी - कम्पनी। इसलिए त्रिकालदर्शी बाप सभी की आवश्यकताओं को जान कम्पैनियन भी बढ़िया, कम्पनी भी बढ़िया देते हैं। विशेष डबल विदेशी बच्चों को दोनों चाहिए। इसलिए बापदादा ने ब्राह्मण जन्म होते ही कम्पैनियन का अनुभव करा लिया, सुहागिन बना दिया। जन्मते ही कम्पैनियन मिल गया ना? कम्पैनियन मिल गया है वा ढूँढ़ रहे हो? तो पवित्रता निजी संस्कार के रूप में अनुभव करना, इसको कहते हैं - श्रेष्ठ लकीर अथवा श्रेष्ठ रेखा वाले। फाउण्डेशन पक्का है ना?

तीसरी लकीर है - सच्चे सेवाधारी की। यह सेवाधारी की लकीर भी सभी के मस्तक पर है। सेवा के बिना भी रह नहीं सकते। सेवा ब्राह्मण जीवन को सदा निर्विघ्न बनाने का साधन भी है और फिर सेवा में ही विघ्नों का पेपर भी ज्यादा आता है। निर्विघ्न सेवाधारी को सच्चे सेवाधारी कहा जाता है। विघ्न आना, यह भी ड्रामा की नूँध है। आने ही हैं और आते ही रहेंगे क्योंकि यह विघ्न या पेपर अनुभवी बनाते हैं। इसको विघ्न न समझ, अनुभव की उन्नति हो रही है - इस भाव से देखो तो उन्नति की सीढ़ी अनुभव होगी। इससे और आगे बढ़ना है। क्योंकि सेवा अर्थात् संगठन का, सर्व आत्माओं की दुआ का अनुभव करना। सेवा के कार्य में सर्व की दुआयें मिलने का साधन है। इस विधि से, इस वृत्ति से देखो तो सदा ऐसे अनुभव करेंगे कि अनुभव की अथॉर्टी और आगे बढ़ रही है। विघ्न को विघ्न नहीं समझो और विघ्न अर्थ निमित्त बनी हुई आत्मा को विघ्नकारी आत्मा नहीं समझो, अनुभवी बनाने वाले शिक्षक समझो। जब कहते हो निंदा करने वाले मित्र हैं, तो विघ्नों को पास कराके अनुभवी बनाने वाला शिक्षक हुआ ना! पाठ पढ़ाया ना! जैसे आजकल के जो बीमारियों को हटाने वाले

डॉक्टर्स हैं, वह एक्सरसाइज (व्यायाम) कराते हैं, और एक्सरसाइज में पहले दर्द होता है, लेकिन वह दर्द सदा के लिए बेदर्द बनाने के निमित्त होता है। जिसको यह समझ नहीं होती है, वह चिल्लाते हैं - इसने तो और ही दर्द कर लिया। लेकिन इस दर्द के अन्दर छिपी हुई दवा है। इस प्रकार रूप भल विघ्न का है, आपको विघ्नकारी आत्मा दिखाई पड़ती लेकिन सदा के लिए विघ्नों से पार कराने के निमित्त, अचल बनाने के निमित्त वही बनते। इसलिए, सदा निर्विघ्न सेवाधारी को कहते हैं - 'सच्चे सेवाधारी'। ऐसे श्रेष्ठ लकीर वाले सच्चे सेवाधारी कहे जाते हैं।

सेवा में सदैव स्वच्छ बुद्धि, स्वच्छ वृत्ति और स्वच्छ कर्म सफलता का सहज आधार है। कोई भी सेवा का कार्य जब आरम्भ करते हो तो पहले यह चेक करो कि बुद्धि में किसी आत्मा के प्रति भी स्वच्छता के बजाए अगर बीती हुई बातों की जरा भी स्मृति होगी तो उसी वृत्ति, दृष्टि से उनको देखना, उनसे बोलना होता। तो सेवा में जो स्वच्छता से सम्पूर्ण सफलता होनी चाहिए, वह नहीं होती। बीती हुई बातों को वा वृत्तियों आदि सबको समाप्त करना - यह है स्वच्छता। बीती का संकल्प भी करना कुछ परसेन्टेज में हल्का पाप है। संकल्प भी सृष्टि बना देता है। वर्णन करना तो और बड़ी बात है लेकिन संकल्प करने से भी पुराने संकल्प की स्मृति, सृष्टि अथवा वायुमण्डल भी वैसा बना देती है। फिर कह देते - 'मैंने जो कहा था ना, ऐसे ही हुआ ना'। लेकिन हुआ क्यों? आपके कमज़ोर, व्यर्थ संकल्प ने यह व्यर्थ वायुमण्डल की सृष्टि बनाई। इसलिए, सदा सच्चे सेवाधारी अर्थात् पुराने वायब्रेशन को समाप्त करने वाले। जैसे साइन्स वाले शस्त्र से शस्त्र को खत्म कर देते हैं, एक विमान से दूसरे विमान को गिरा देते हैं। युद्ध करते हैं तो समाप्त कर देते हैं ना! तो आपका शुद्ध वायब्रेशन, शुद्ध वायब्रेशन को इमर्ज कर सकता है और व्यर्थ वायब्रेशन को समाप्त कर सकता है। संकल्प, संकल्प को समाप्त कर सकता है। अगर आपका पावरफुल (शक्तिशाली) संकल्प है तो समर्थ संकल्प, व्यर्थ को खत्म जरूर करेगा। समझा? सेवा में पहले स्वच्छता अर्थात् पवित्रता की शक्ति चाहिए। यह तीन लकीरें चमकती हुई देख रहे हैं। सेवा के विशेषता की और अनेक बातें सुनी भी हैं। सब बातों का सार है - नि:स्वार्थ, निर्विकल्प स्थिति से सेवा करना सफलता का आधार है। इसी सेवा में ही स्वयं भी सन्तुष्ट और हर्षित रहते और दूसरे भी सन्तुष्ट रहते। सेवा के बिना संगठन नहीं होता। संगठन में भिन्न-भिन्न बातें, भिन्न-भिन्न विचार, भिन्न-भिन्न तरीके, साधन - यह होना ही है। लेकिन बातें आते भी, भिन्न-भिन्न साधन सुनते हुए भी स्वयं सदा

अनेक को एक बाप की याद में मिलाने वाले, एकरस स्थिति वाले रहो। कभी भी अनेकता में मूँझो नहीं - अब क्या करें, बहुत विचार हो गये हैं, किसका मानें, किसका न मानें? अगर नि:स्वार्थ, निर्विकल्प भाव से निर्णय करेंगे तो कभी किसी को कुछ व्यर्थ संकल्प नहीं आयेगा। क्योंकि सेवा के बिना भी रह नहीं सकते, याद के बिना भी रह नहीं सकते। इसलिए, सेवा को भी बढ़ाते चलो। स्वयं को भी स्नेह, सहयोग और नि:स्वार्थ भाव में बढ़ाते चलो। समझा?

बापदादा को खुशी है कि देश-विदेश में छोटे-बड़े सभी ने उमंग-उत्साह से सेवा का सबूत दिया। विदेश की सेवा का भी सफलतापूर्वक कार्य सम्पन्न हुआ और देश में भी सभी के सहयोग से सर्व कार्य सम्पन्न हुए, सफल हुए। बापदादा बच्चों के सेवा की लग्न को देख हर्षित होते हैं। सभी का लक्ष्य बाप को प्रत्यक्ष करने का अच्छा रहा और बाप के स्नेह में मेहनत को मुहब्बत में बदल कार्य का प्रत्यक्षफल दिखाया। सभी बच्चे विशेष सेवा के निमित्त आये हुए हैं। बापदादा भी 'वाह बच्चे! वाह!' के गीत गाते हैं। सभी ने बहुत अच्छा किया। किसी ने किया, किसी ने नहीं किया, यह है नहीं। चाहे छोटे स्थान हैं वा बड़े स्थान हैं, लेकिन छोटे स्थान वालों ने भी कम नहीं किया। इसलिए, सर्व की श्रेष्ठ भावनाओं और श्रेष्ठ कामनाओं से कार्य अच्छे रहे और सदा अच्छे रहेंगे। समय भी खूब लगाया, संकल्प भी खूब लगाया, प्लेन बनाया तो संकल्प किया ना। शरीर की शक्ति भी लगाई, धन की शक्ति भी लगाई, संगठन की शक्ति भी लगाई। सर्व शक्तियों की आहुतियों से सेवा का यज्ञ दोनों तरफ (देश और विदेश) सफल हुआ। बहुत अच्छा कार्य रहा। ठीक किया वा नहीं किया - यह क्वेश्चन ही नहीं। सदा ठीक रहा है और सदा ठीक रहेगा। चाहे मल्टी मिलियन पीस का कार्य किया, चाहे गोल्डन जुबली का कार्य किया - दोनों ही कार्य सुन्दर रहे। जिस विधि से किया, वह विधि भी ठीक है। कहाँ-कहाँ चीज़ की वैल्यू बढ़ाने के लिए पर्दे के अन्दर वह चीज़ रखी जाती है। पर्दा और ही वैल्यू को बढ़ा देता है और जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि देखें क्या है, पर्दे के अन्दर है तो जरूर कुछ होगा। लेकिन यही पर्दा प्रत्यक्षता का पर्दा बन जाएगा। अभी धरनी बना ली। धरनी में जब बीज डाला जाता है वो अन्दर छिपा हुआ डाला जाता है। बीज को बाहर नहीं रखते, अन्दर छिपाकर रखते हैं। और फल वा वृक्ष गुप्त बीज का ही स्वरूप प्रत्यक्ष होता। तो अब बीज डाला है, वृक्ष बाहर स्टेज पर स्वत: ही आता जाएगा।

खुशी में नाच रहे हो ना? 'वाह बाबा'! तो कहते हो लेकिन वाह सेवा! भी कहते हो। अच्छा। समाचार तो सब बापदादा ने सुन लिया।

इस सेवा से जो देश-विदेश के संगठन से वर्ग की सेवा हुई, यह चारों ओर एक ही समय एक ही आवाज बुलन्द होने या फैलने का साधन अच्छा है। आगे भी जो भी प्रोग्राम करो, लेकिन एक ही समय देश-विदेश में चारों ओर एक ही प्रकार की सेवा कर फिर सेवा का फलस्वरूप मधुबन में संगठित रूप में हो। चारों ओर एक लहर होने के कारण सब में उमंग-उत्साह भी होता है और चारों ओर रूहानी रेस होती (रीस नहीं) कि हम और ज्यादा-से-ज्यादा सेवा का सबूत दें। तो इस उमंग से चारों ओर नाम बुलन्द हो जाता है। इसलिए, किसी भी वर्ग का बनाओ लेकिन चारों ओर सारा वर्ष एक ही रूप-रेखा की सेवा की तरफ अटेन्शन हो। तो उन आत्माओं को भी चारों ओर का संगठन देख उमंग आता है, आगे बढ़ने का चांस मिलता है। इस विधि से प्लैन बनाते, बढ़ते चलो। पहले अपनी- अपनी एरिया (इलाका) में उन वर्ग की सेवा कर छोटे-छोटे संगठन के रूप में प्रोग्राम करते रहो और उन संगठन से फिर जो विशेष आत्मायें हों, उनको इस बड़े संगठन के लिए तैयार करो। लेकिन हर सेन्टर या आस-पास के मिलकर करो। क्योंकि कई यहाँ तक नहीं पहुँच सकते तो वहाँ पर भी संगठन का जो प्रोग्राम होता, उससे भी उन्हों को लाभ होता है। तो पहले छोटे-छोटे 'स्नेह मिलन' करो, फिर जोन को मिलाकर संगठन करो, फिर मधुबन का बड़ा संगठन हो। तो पहले से ही अनुभवी बन करके फिर यहाँ तक भी आयेंगे। लेकिन देशविदेश में एक ही टॉपिक हो और एक ही वर्ग के हों। ऐसे भी टॉपिक्स होते हैं जिसमें दो-चार वर्ग भी मिल सकते हैं। टॉपिक विशाल है तो दो-तीन वर्ग के भी उसी टॉपिक बीच आ सकते हैं। तो अभी देश-विदेश में धर्म सत्ता, राज्य सत्ता और साइन्स की सत्ता - तीनों के सैम्पल्स तैयार करो। अच्छा।

सर्व पवित्रता के वरदान के अधिकारी आत्माओं को, सदा एकरस, निरन्तर योगी जीवन के अनुभवी आत्माओं को, सदा हर संकल्प, हर समय सच्चे सेवाधारी बनने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को विश्व-स्नेही, विश्व-सेवाधारी बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

कांफ्रेंस में आये हुए सेवाधारी भाई-बहनों प्रति बापदादा बोले - सभी ने मेहमानों की स्थूल, सूक्ष्म सेवा की और सेवा से अनेक आत्माओं को बाप के स्नेह का अनुभव कराया। इसके लिए बापदादा बच्चों को गोल्डन मुबारक दे रहे हैं। सभी ने अपनी

ड्यूटी (कर्त्तव्य) वा कार्य प्रमाण बहुत अच्छा सहयोग दिया और सभी के सहयोग से कार्य सदा के लिए सफल रहा। तो सफलता प्राप्त करने वाले सफलता के सितारे बन गये। ऐसे सफलता के सितारों को देख बापदादा भी खुश होते हैं। आप भी खुश हुए ना। मैंने किया - यह खुशी नहीं लेकिन आत्माओं को परिचय मिला, आत्माओं को सन्देश मिला - यह खुशी है। भटकी हुई आत्माओं को ठिकाने का पता तो पड़ गया ना। तो बहुत अच्छी संगठन रूप में सेवा के निमित्त बने। तो बच्चे भी खुश हैं, बाप भी खुश हैं। बापदादा बच्चों की हिम्मत भी सदा देखते रहते हैं। हिम्मत से आगे बढ़ रहे हैं और सदा आगे बढ़ते रहेंगे।

सेवा का प्रत्यक्षफल - खुशी हुई, शक्ति मिली। सेवा करते आत्माओं को स्थूल, सूक्ष्म बाप के स्थान का अनुभव कराया। यह पुण्य का काम किया ना। तो स्थूल सेवा भी की और पुण्य भी किया। तो जो पुण्य करता है उसको, जिसका पुण्य करते हैं, उसकी आशीर्वाद मिलती है। तो सभी आत्माओं के दिल से जो खुशी के संकल्प पैदा हुए, वह शुभ संकल्प भी आपकी आशीर्वादें बन गये। तो सेवा किया अर्थात् पुण्य किया और पुण्य का फल सभी की शुभ कामनाओं की आशीर्वाद मिली और भविष्य भी जमा हो गया। तो कितने फायदे हुए। साधारण सेवा भी की होगी लेकिन कितनी श्रेष्ठ सेवा और उसकी श्रेष्ठ प्रालब्ध रही! तो सदा अपने को सेवाधारी समझ सेवा का अविनाशी फल - खुशी और शक्ति - सदा लेते रहो। सेवा से बुद्धि बिजी भी रहती है ना! तो बिजी रहने के कारण निर्विघ्न रहते हैं। यह भी मदद मिल जाती है। तो जो हुआ ड्रामा। लेकिन जो हुआ उससे अपना लाभ ले लेना चाहिए। तो जमा भी हुआ और प्रत्यक्ष में भी मिला, डबल हो गया। बापदादा ने मुबारक तो दे ही दी। अच्छा।

17-10-1987 ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार - 'पवित्रता'

पूजनीय बनाने वाले परम पूज्य शिवबाबा अपने होवनहार पूज्य बच्चों प्रति बोले
आज बापदादा अपने विश्व के चारों ओर के विशेष होवनहार पूज्य बच्चों को देख रहे हैं। सारे विश्व में से कितने थोड़े अमूल्य रतन पूजनीय बने हैं! पूजनीय आत्मायें ही विश्व के लिए विशेष जहान के नूर बन जाते हैं। जैसे इस शरीर में नूर नहीं तो जहान नहीं, ऐसे विश्व के अन्दर पूजनीय जहान के नूर आप श्रेष्ठ आत्मायें नहीं तो विश्व का भी महत्त्व नहीं। स्वर्ण-युग वा आदि-युग वा सतोप्रधान युग, नया संसार आप विशेष आत्माओं से आरम्भ होता है। नये विश्व के आधारमूर्त, पूजनीय आत्मायें आप हो। तो आप आत्माओं का कितना महत्व है! आप पूज्य आत्मायें संसार के लिए नई रोशनी हो। आपकी चढ़ती कला विश्व को श्रेष्ठ कला में लाने के निमित्त बनती है। आप गिरती कला में आते हो तो संसार की भी गिरती कला होती है। आप परिवर्तन होते हो तो विश्व भी परिवर्तन होता है। इतने महान और महत्त्व वाली आत्मायें हो!
आज बापदादा सर्व बच्चों को देख रहे थे। ब्राह्मण बनना अर्थात् पूज्य बनना क्योंकि ब्राह्मण सो देवता बनते हैं और देवतायें अर्थात् पूजनीय। सभी देवतायें पूजनीय तो हैं, फिर भी नम्बरवार जरूर हैं। किन देवताओं की पूजा विधिपूर्वक और नियमित रूप से होती है और किन्हीं की पूजा विधिपूर्वक नियमित रूप से नहीं होती। किन्हों के हर कर्म की पूजा होती है और किन्हों के हर कर्म की पूजा नहीं होती है। कोई का विधिपूर्वक हर रोज श्रृंगार होता है और कोई का श्रृंगार रोज नहीं होता है, ऊपर-ऊपर से थोड़ा-बहुत सजा लेते हैं लेकिन विधिपूर्वक नहीं। कोई के आगे सारा समय कीर्तन होता और कोई के आगे कभी-कभी कीर्तन होता है। इन सभी का कारण क्या है? ब्राह्मण तो सभी कहलाते हैं, ज्ञान-योग की पढ़ाई भी सभी करते हैं, फिर भी इतना अन्तर क्यों? धारणा करने में अन्तर है। फिर भी विशेष कौन-सी धारणाओं के आधार पर नम्बरवन होते हैं, जानते हो?
पूजनीय बनने का विशेष आधार पवित्रता के ऊपर है। जितना सर्व प्रकार की पवित्रता को अपनाते हैं, उतना ही सर्व प्रकार के पूजनीय बनते हैं और जो निरन्तर विधिपूर्वक

आदि, अनादि विशेष गुण के रूप से पवित्रता को सहज अपनाते हैं, वही विधिपूर्वक पूज्य बनते हैं। सर्व प्रकार की पवित्रता क्या है? जो आत्मायें सहज, स्वत: हर संकल्प में, बोल में, कर्म में सर्व अर्थात् ज्ञानी और अज्ञानी आत्मायें, सर्व के सम्पर्क में सदा पवित्र वृत्ति, दृष्टि, वायब्रेशन से यथार्थ सम्पर्क-सम्बन्ध निभाते हैं - इसको ही सर्व प्रकार की पवित्रता कहते हैं। स्वप्न में भी स्वयं के प्रति या अन्य कोई आत्मा के प्रति सर्व प्रकार की पवित्रता में से कोई कमी न हो। मानो स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य खण्डित होता है वा किसी आत्मा के प्रति किसी भी प्रकार की ईर्ष्या, आवेशता के वश कर्म होता या बोल निकलता है, क्रोध के अंश रूप में भी व्यवहार होता है तो इसको भी पवित्रता का खण्डन माना जायेगा। सोचो, जब स्वप्न का भी प्रभाव पड़ता है तो साकार में किये हुए कर्म का कितना प्रभाव पड़ता होगा! इसलिए खण्डित मूर्ति कभी पूजनीय नहीं होती। खण्डित मूर्तियाँ मन्दिरों में नहीं रहतीं, आजकल के म्यूजयम में रहती हैं। वहाँ भक्त नहीं आते। सिर्फ यही गायन होता है कि बहुत पुरानी मूर्त्तियाँ हैं, बस। उन्होंने स्थूल अंगों के खण्डित को खण्डित कह दिया है लेकिन वास्तव में किसी भी प्रकार की पवित्रता में खण्डन होता है तो वह पूज्य-पद से खण्डित हो जाते हैं। ऐसे, चारों प्रकार की पवित्रता में खण्डन होता है तो पह पूज्य-पद से खण्डित हो जाते हैं। ऐसे, चारों प्रकार की पवित्रता विधिपूर्वक है तो पूजा भी विधिपूर्वक होती है।

मन, वाणी, कर्म (कर्म में सम्बन्ध सम्पर्क आ जाता है) और स्वप्न में भी पवित्रता - इसको कहते हैं - 'सम्पूर्ण पवित्रता'। कई बच्चे अलबेलेपन में आने के कारण, चाहे बड़ों को, चाहे छोटों को, इस बात में चलाने की कोशिश करते हैं कि मेरा भाव बहुत अच्छा है लेकिन बोल निकल गया, वा मेरी एम (लक्ष्य) ऐसे नहीं थी लेकिन हो गया, या कहते हैं कि हंसी-मजाक में कह दिया अथवा कर लिया। यह भी चलाना है। इसलिए पूजा भी चलाने जैसी होती है। यह अलबेलापन सम्पूर्ण पूज्य स्थिति को नम्बरवार में ले आता है। यह भी अपवित्रता के खाते में जमा होता है। सुनाया ना - पूज्य, पवित्र आत्माओं की निशानी यही है - उन्हों की चारों प्रकार की पवित्रता स्वभाविक, सहज और सदा होगी। उनको सोचना नहीं पड़ेगा लेकिन पवित्रता की धारणा स्वत: ही यथार्थ संकल्प, बोल, कर्म और स्वप्न लाती है। यथार्थ अर्थात् एक तो युक्तियुक्त, दूसरा यथार्थ अर्थात् हर संकल्प में अर्थ होगा, बिना अर्थ नहीं होगा। ऐसे नहीं कि ऐसे में बोल दिया, निकल गया, कर लिया, हो गया। ऐसी पवित्र आत्मा सदा हर कर्म में अर्थात् दिनचर्या के हर कर्म में यथार्थ युक्तियुक्त रहती है। इसलिए

पूजा भी उनके हर कर्म की होती है अर्थात् पूरे दिनचर्या की होती है। उठने से लेकर सोने तक भिन्न-भिन्न कर्म के दर्शन होते हैं।

अगर ब्राह्मण जीवन की बनी हुई दिनचर्या प्रमाण कोई भी कर्म यथार्थ वा निरन्तर नहीं करते तो उसके अन्तर के कारण पूजा में भी अन्तर पड़ेगा। मानो कोई अमृतवेले उठने की दिनचर्या में विधिपूर्वक नहीं चलते, तो पूजा में भी उनके पुजारी भी उस विधि में नीचे-ऊपर करते अर्थात् पुजारी भी समय पर उठकर पूजा नहीं करेगा, जब आया तब कर लेगा। अथवा अमृतवेले जागृत स्थिति में अनुभव नहीं करते, मजबूरी से वा कभी सुस्ती, कभी चुस्ती के रूप में बैठते तो पुजारी भी मजबूरी से या सुस्ती से पूजा करेंगे, विधिपूर्वक पूजा नहीं करेंगे। ऐसे हर दिनचर्या के कर्म का प्रभाव पूजनीय बनने में पड़ता है। विधिपूर्वक न चलना, कोई भी दिनचर्या में ऊपर-नीचे होना - यह भी अपवित्रता के अंश में गिनती होता है। क्योंकि आलस्य और अलबेलापन भी विकार है। जो यथार्थ कर्म नहीं है, वह विकार है। तो अपवित्रता का अंश हो गया ना। इस कारण पूज्य पद में नम्बरवार हो जाते हैं। तो फाउण्डेशन क्या रहा? - पवित्रता।

पवित्रता की धारणा बहुत महीन है। पवित्रता के आधार पर ही कर्म की विधि और गति का आधार है। पवित्रता सिर्फ मोटी बात नहीं है। ब्रह्मचारी रहे या निर्मोही हो गये - सिर्फ इसको ही पवित्रता नहीं कहेंगे। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का शृंगार है। तो हर समय पवित्रता के शृंगार की अनुभूति चेहरे से, चलन से औरों को हो। दृष्टि में, मुख में, हाथों में, पाँवों में सदा पवित्रता का शृंगार प्रत्यक्ष हो। कोई भी चेहरे तरफ देखे तो फीचर्स से उन्हें पवित्रता अनुभव हो। जैसे और प्रकार के फीचर्स वर्णन करते हैं, वैसे यह वर्णन करें कि इनके फीचर्स से पवित्रता दिखाई देती है, नयनों में पवित्रता की झलक है, मुख पर पवित्रता की मुस्कराट है। और कोई बात उन्हें नजर न आये। इसको कहते हैं - पवित्रता के शृंगार से शृंगारी हुई मूर्त। समझा? पवित्रता की तो और भी बहुत गुह्यता है, वह फिर सुनाते रहेंगे। जैसे कर्मों की गति गहन है, पवित्रता की परिभाषा भी बड़ी गुह्य है और पवित्रता ही फाउण्डेशन है। अच्छा।

आज गुजरात आया है। गुजरात वाले सदा हल्के बन नाचते और गाते हैं। चाहे शरीर में कितने भी भारी हों लेकिन हल्के बन नाचते हैं। गुजरात की विशेषता है- सदा हल्का रहना, सदा खुशी में नाचते रहना और बाप के वा अपने प्राप्तियों के गीत गाते रहना। बचपन से ही नाचते-गाते, अच्छा हैं। ब्राह्मण जीवन में क्या करते हो? ब्राह्मण जीवन अर्थात् मौजों की जीवन। गर्भा रास करते हो तो मौज में आ जाते हो ना। अगर मौज

में न आये तो ज्यादा कर नहीं सकेंगे। मौज-मस्ती में थकावट नहीं होती है, अथक बन जाते हैं। तो ब्राह्मण जीवन अर्थात् सदा मौज में रहने की जीवन, यह है स्थूल मौज और ब्राह्मण जीवन की है - मन की मौज। सदा मन मौज में नाचता और गाता रहे। यह लोग हल्के बन नाचने-गाने के अभ्यासी हैं। तो इन्हों को ब्राह्मण जीवन में भी डबल लाइट (हल्का) बनने में मुश्किल नहीं होती। तो गुजरात अर्थात् सदा हल्के रहने के अभ्यासी कहो, वरदानी कहो। तो सारे गुजरात को वरदान मिल गया - डबल लाइट। मुरली द्वारा भी वरदान मिलते हैं ना।

सुनाया ना - आपकी इस दुनिया में यथा शक्ति, यथा समय होता है। यथा और तथा। और वतन में तो यथा-तथा की भाषा ही नहीं है। यहाँ दिन भी तो रात भी देखना पड़ता। वहाँ न दिन, न है रात; न सूर्य उदय होता, न चन्द्रमा। दोनों से परे है। आना तो वहाँ ना। बच्चों ने रूह-रूहान में कहा ना कि कब तक? बापदादा कहते हैं कि आप सभी कहो कि हम तैयार हैं तो 'अभी' कर लेंगे। फिर 'कब' का तो सवाल ही नहीं है। 'कब' तब तक है जब तक सारी माला तैयार नहीं हुई है। अभी नाम निकालने बैठते हो तो 108 में भी सोचते हो कि यह नाम डालें वा नहीं? अभी 108 की माला में भी सभी वही 108 नाम बोलें। नहीं, फर्क हो जायेगा। बापदादा तो अभी घड़ी ताली बजावे और ठकाठक शुरू हो जायेगी - एक तरफ प्रकृति, एक तरफ व्यक्तियों। क्या देरी लगती। लेकिन बाप का सभी बच्चों में स्नेह है। हाथ पकड़ेंगे, तब तो साथ चलेंगे। हाथ में हाथ मिलाना अर्थात् समान बनना। आप कहेंगे - सभी समान अथवा सभी तो नम्बरवन बनेंगे नहीं। लेकिन नम्बरवन के पीछे नम्बर टू होगा। अच्छा, बाप समान नहीं बनें लेकिन नम्बरवन दाना जो होगा वह समान होगा। तीसरा दो के समान बने। चौथा तीन के समान बने। ऐसे तो समान बनें, तो एक दो के समीप होते-होते माला तैयार हो। ऐसी स्टेज तक पहुँचना अर्थात् समान बनना। 108 तैयार हो जायेगी। नम्बरवार तो होना ही है। समझा? बाप तो कहते - अभी कोई है गैरन्टी करने वाला कि हाँ, सब तैयार हैं? बापदादा को तो सेकण्ड लगता। दृश्य दिखाते थे ना - ताली बजाई और परियाँ आ गई। अच्छा।

चारों ओर के परम पूज्य श्रेष्ठ आत्माओं को, सर्व सम्पूर्ण पवित्रता के लक्ष्य तक पहुँचने वाले तीव्र पुरूषार्थी आत्माओं को, सदा हर कर्म में विधिपूर्वक कर्म करने वाले सिद्धि-स्वरूप आत्माओं को, सदा हर समय पवित्रता के शृंगार में सजी हुई विशेष आत्माओं को बापदादा का स्नेह सम्पन्न यादप्यार स्वीकार हो।

पार्टियों से मुलाकात

(1) विश्व में सबसे ज्यादा श्रेष्ठ भाग्यवान अपने को समझते हो? सारा विश्व जिस श्रेष्ठ भाग्य के लिए पुकार रहा है कि हमारा भाग्य खुल जाए... आपका भाग्य तो खुल गया। इससे बड़ी खुशी की बात और क्या होगी! भाग्यविधाता ही हमारा बाप है - ऐसा नशा है ना! जिसका नाम ही भाग्यविधाता है उसका भाग्य क्या होगा! इससे बड़ा भाग्य कोई हो सकता है? तो सदा यह खुशी रहे कि भाग्य तो हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार हो गया। बाप के पास जो भी प्रापर्टी होती है, बच्चे उसके अधिकारी होते हैं। तो भाग्यविधाता के पास क्या है? भाग्य का खज़ाना। उस खज़ाने पर आपका अधिकार हो गया। तो सदैव 'वाह मेरा भाग्य और भाग्य-विधाता बाप'! - यही गीत गाते खुशी में उड़ते रहो। जिसका इतना श्रेष्ठ भाग्य हो गया उसको और क्या चाहिए? भाग्य में सब कुछ आ गया। भाग्यवान के पास तन-मन-धन-जन सब कुछ होता है। श्रेष्ठ भाग्य अर्थात् अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। कोई अप्राप्ति है? मकान अच्छा चाहिए, कार अच्छी चाहिए... नहीं। जिसको मन की खुशी मिल गई, उसे सर्व प्राप्तियाँ हो गई! कार तो क्या लेकिन कारून का खज़ाना मिल गया! कोई अप्राप्त वस्तु है ही नहीं। ऐसे भाग्यवान हो! विनाशी इच्छा क्या करेंगे। जो आज है, कल है ही नहीं - उसकी इच्छा क्या रखेंगे। इसलिए, सदा अविनाशी खज़ाने की खुशियों में रहो जो अब भी है और साथ में भी चलेगा। यह मकान, कार वा पैसे साथ नहीं चलेंगे लेकिन यह अविनाशी खज़ाना अनेक जन्म साथ रहेगा। कोई छीन नहीं सकता, कोई लूट नहीं सकता। स्वयं भी अमर बन गये और खज़ाने भी अविनाशी मिल गये! जन्मजन्म यह श्रेष्ठ प्रालब्ध साथ रहेगी। कितना बड़ा भाग्य है! जहाँ कोई इच्छा नहीं, इच्छा मात्रम् अविद्या है - ऐसा श्रेष्ठ भाग्य भाग्यविधाता बाप द्वारा प्राप्त हो गया।

(2) अपने को बाप के समीप रहने वाली श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? बाप के बन गये - यह खुशी सदा रहती है? दु:ख की दुनिया से निकल सुख के संसार में आ गये। दुनिया दु:ख में चिल्ला रही है और आप सुख के संसार में, सुख के झूले में झूल रहे हो। कितना अंतर है! दुनिया ढूँढ़ रही है और आप मिलन मना रहे हो। तो सदा अपनी सर्व प्राप्तियों को देख हर्षित रहो। क्या-क्या मिला है, उसकी लिस्ट निकालो तो बहुत लम्बी लिस्ट हो जायेगी। क्या-क्या मिला? तन में खुशी मिली, तो तन की खुशी तन्दरूस्ती है; मन में शान्ति मिली, तो शान्ति मन की विशेषता है और धन में इतनी शक्ति आई जो दाल-रोटी 36 प्रकार के समान अनुभव हो।

ईश्वरीय याद में दाल-रोटी भी कितनी श्रेष्ठ लगती है! दुनिया के 36 प्रकार हों और आप की दाल-रोटी हो तो श्रेष्ठ क्या लगेगा? दाल-रोटी अच्छी है ना। क्योंकि प्रसाद है ना। जब भोजन बनाते हो तो याद में बनाते हो, याद में खाते हो तो प्रसाद हो गया। प्रसाद का महत्त्व होता है। आप सभी रोज प्रसाद खाते हो। प्रसाद में कितनी शक्ति होती है! तो तन-मन-धन सभी में शक्ति आ गई। इसलिए कहते हैं - अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खज़ाने में। तो सदा इन प्राप्तियों को सामने रख खुश रहो, हर्षित रहो। अच्छा।

(3) अपने को संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? ब्राह्मणों को सदा ऊंचे ते ऊंची चोटी पर दिखाते हैं। चोटी का अर्थ ही है ऊंचा। तो संगमयुगी अर्थात् ऊंचे ते ऊंची आत्मायें। जैसे बाप ऊंचे ते ऊंचा गाया हुआ है, ऐसे बच्चे भी ऊंचे और संगमयुग भी ऊंचा है। सारे कल्प में संगमयुग जैसा ऊंचा कोई युग नहीं है क्योंकि इस युग में ही बाप और बच्चों का मिलना होता है। और कोई युग में आत्मा और परमात्मा का मेला नहीं होता है। तो जहाँ आत्मा और परमात्मा का मेला है, वही श्रेष्ठ युग हुआ ना। ऐसे श्रेष्ठ युग की श्रेष्ठ आत्मायें हो! आप श्रेष्ठ ब्राह्मणों का कार्य क्या है? ब्राह्मणों का काम है - पढ़ना और पढ़ाना। नामधारी ब्राह्मण भी शास्त्र पढ़ेंगे और दूसरों को सुनायेंगे। तो आप ब्राह्मणों का काम है ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ना और पढ़ाना जिससे ईश्वर के बन जाएं। तो ऐसे करते हो? पढ़ते भी हो और पढ़ाते अर्थात् सेवा भी करते हो। यह ईश्वरीय ज्ञान देना ही ईश्वरीय सेवा है। सेवा का सदा ही मेवा मिलता है। कहावत है ना - 'करो सेवा तो मिले मेवा'। तो ईश्वरीय सेवा करने से अतीन्द्रिय सुख का मेवा मिलता है, शक्तियों का मेवा मिलता है, खुशी का मेवा मिलता है। तो ऐसा मेवा मिला है ना? कितनी पात्र आत्मायें हो जो इस ईश्वरीय फल के अधिकारी बन गई! आप ब्राह्मणों के सिवाए और कोई भी इस फल के अधिकारी बन नहीं सकते। अधिकारी भी कौन बने हैं? जिनमें किसी की उम्मीद नहीं, वह उम्मीदवार बन गये! दुनिया वाले माताओं के लिए कहते - इनका कोई अधिकार नहीं है और बाप ने माताओं को विशेष अधिकारी बनाया है, माताओं को इस सेवा की विशेष जिम्मेवारी दी है। दुनिया वालों ने पाँव की जुत्ती बना दिया और बाप ने सिर का ताज बना दिया। तो साधारण मातायें नहीं हो, अभी तो बाप के सिर के ताज बन गई।

(4) सदा अपने को बेफिकर बादशाह अनुभव करते हो? प्रवृत्ति का या कोई भी कार्य का फिकर तो नहीं रहता है? बेफिकर रहते हो? बेफिकर कैसे बने? सब कुछ तेरा करने

से। मेरा कुछ नहीं, सब तेरा है। जब तेरा है तो फिकर किस बात का? जिन्होंने सब कुछ तेरा किया, वही बेफिकर बादशाह बनते हैं। ऐसे नहीं जो चीज़ मतलब की है वह मेरी है, जो चीज़ मतलब की नहीं वह तेरी। जीवन में हर एक बेफिकर रहना चाहता है। जहाँ फिकर नहीं, वहाँ सदा खुशी होगी। तो तेरा कहने से, बेफिकर बनने से खुशी के खज़ाने भरपूर हो जाते हैं। बादशाह के पास खज़ाना भरपूर होता है। तो आप बेफिकर बादशाहों के पास अनगिनत, अखुट, अविनाशी खज़ाने हैं जो सतयुग में नहीं होंगे। इस समय के खज़ाने श्रेष्ठ खज़ाने हैं। तो मातायें बेफिकर बादशाह बनीं? जब मेरा-मेरा है तो फिकर है। जब 'तेरा' कह दिया तो बाप जाने, बाप का काम जाने, आप निश्चिंत हो गये। 'तेरा' और 'मेरा' शब्द में थोड़ा-सा अन्तर है। 'तेरा' कहना - सब प्राप्त होना, 'मेरा' कहना - सब गँवाना। द्वापर से मेरा-मेरा कहा तो क्या हुआ? सब गँवा दिया ना। तन्दरूस्ती भी चली गई, मन की शान्ति भी चली गई और धन भी चला गया। कहाँ विश्व के राजन और कहाँ छोटे-मोटे दफ्तर के क्लर्क बन गये, बिजनेसमैन हो गये जो विश्व के महाराजा के आगे कुछ नहीं है। तो मेरा-मेरा कहने से गँवाया और तेरा-तेरा कहने से जमा हो जाता। तो जमा करने में होशियार हो? मातायें एक-एक पैसा इकट्ठा करके जमा करती हैं। जमा करने में मातायें होशियार होती हैं। तो यह जमा करना आता है? यहाँ खर्च करना भी खर्च नहीं है, जमा करना है। जितना खर्चा करते हो अर्थात् दूसरों को देते हो, उतना पद्मगुणा होता है। एक देना और पद्म लेना। अच्छा।

(5) सदा याद और सेवा के बैलेन्स से बाप की ब्लैसिंग अनुभव करते हो? जहाँ याद और सेवा का बैलेन्स है अर्थात् समानता है, वहाँ बाप की विशेष मदद अनुभव होती है। तो मदद ही आशीर्वाद है। क्योंकि बापदादा, और अन्य आत्माओं के माफिक आशीर्वाद नहीं देते हैं। बाप तो है ही अशरीरी, तो बापदादा की आशीर्वाद है - सहज, स्वत: मदद मिलना जिससे जो असम्भव बात हो वह सम्भव हो जाए। यही मदद अर्थात् आशीर्वाद है। लौकिक गुरूओं के पास भी आशीर्वाद के लिए जाते हैं। तो जो असम्भव बात होती, वह अगर सम्भव हो जाती तो समझते हैं यह गुरू की आशीर्वाद है। तो बाप भी असम्भव से सम्भव कर दिखाते हैं। दुनिया वाले जिन बातों को असम्भव समझते हैं, उन्हीं बातों को आप सहज समझते हो। तो यही आशीर्वाद है। एक कदम उठाते हो और पद्मों की कमाई जमा हो जाती है। तो यह आशीर्वाद हुई ना। तो ऐसे बाप की व सतगुरू की आशीर्वाद के पात्र आत्मायें हो। दुनिया वाले पुकारते रहते हैं और आप प्राप्तिस्वरूप बन गये। अच्छा

14-11-1987 पूज्य देव आत्मा बनने का साधन - 'पवित्रता की शक्ति'

'पवित्र भव' का वरदान देने वाले बापदादा अपने लाइट के ताजधारी बच्चों प्रति बोले आज रूहानी शमा अपने रूहानी परवानों को देख रहे हैं। हर एक रूहानी परवाना अपने उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते-उड़ते इस रूहानी महफिल में पहुँच गये हैं। यह रूहानी महफिल विचित्र अलौकिक महफिल है जिसको रूहानी बाप जाने और रूहानी बच्चे जानें। यह रूहानी आकर्षण के आगे माया की अनेक प्रकार की आकर्षण तुच्छ लगती है, असार अनुभव होती है। यह रूहानी आकर्षण सदा के लिए वर्तमान और भविष्य अनेक जन्मों के लिए हर्षित बनाने वाली है, अनेक प्रकार के दु:ख-अशान्ति की लहरों से किनारा कराने वाली है। इसलिए सभी रूहानी परवाने इस महफिल में पहुँच गये हैं।

बापदादा सभी परवानों को देख हर्षित होते हैं। सभी के मस्तक पर पवित्र स्नेह, पवित्र स्नेह के सम्बन्ध, पवित्र जीवन की पवित्र दृष्टि-वृत्ति की निशानियाँ झलक रही हैं। सभी के ऊपर इन सब पवित्र निशानियों के सिम्बल वा सूचक 'लाइट का ताज' चमक रहा है। सगंमयुगी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है - पवित्रता की निशानी। यह लाइट का ताज जो हर ब्राह्मण आत्मा को बाप द्वारा प्राप्त होता है। महान आत्मा, परमात्म-भाग्यवान आत्मा, ऊँचे ते ऊँची आत्मा की यह ताज निशानी है। तो आप सभी ऐसे ताजधारी बने हो? बापदादा वा मातपिता हर एक बच्चे को जन्म से 'पवित्र-भव' का वरदान देते हैं। पवित्रता नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। आदि स्थापना से लेकर अब तक पवित्रता पर ही विघ्न पड़ते आये हैं क्योंकि पवित्रता का फाउण्डेशन 21 जन्मों का फाउण्डेशन है। पवित्रता की प्राप्ति आप ब्राह्मण आत्माओं को उड़ती कला की तरफ सहज ले जाने का आधार है।

जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, तो पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। 'पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है।' किसी भी प्रकार की अपवित्रता दु:ख वा अशान्ति का अनुभव कराती है। तो सारे दिन में चेक करो - किसी भी समय दु:ख वा अशान्ति की लहर अनुभव होती है? उसका बीज अपवित्रता है। चाहे मुख्य विकारों के कारण हो वा

विकारों के सूक्ष्म रूप के कारण हो। पवित्र जीवन अर्थात् दु:ख-अशान्ति का नाम निशान नहीं। किसी भी कारण से दु:ख का जरा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है। पवित्र जीवन अर्थात् बापदादा द्वारा प्राप्त हुई वरदानी जीवन है। ब्राह्मणों के संकल्प में वा मुख में यह शब्द कभी नहीं होना चाहिए कि इस बात के कारण वा इस व्यक्ति के व्यवहार के कारण मुझे दु:ख होता है। कभी साधारण रीति में ऐसे बोल, बोल भी देते या अनुभव भी करते हैं। यह पवित्र ब्राह्मण जीवन के बोल नहीं हैं। ब्राह्मण जीवन अर्थात् हर सेकेण्ड सुखमय जीवन। चाहे दु:ख का नजारा भी हो लेकिन जहाँ पवित्रता की शक्ति है, वह कभी दु:ख के नजारे में दु:ख का अनुभव नहीं करेंगे लेकिन दु:ख-हर्त्ता सुख-कर्त्ता बाप समान दु:ख के वायुमण्डल में दु:खमय व्यक्तियों को सुख-शान्ति के वरदानी बन सुख-शान्ति की अंचली देंगे, मास्टर सुख-कर्त्ता बन दु:ख को रूहानी सुख के वायुमण्डल में परिवर्तन करेंगे। इसी को ही कहा जाता है - 'दु:ख-हर्त्ता सुख-कर्त्ता।'

जब साइन्स की शक्ति अल्पकाल के लिए किसी का दु:ख-दर्द समाप्त कर लेती है, तो पवित्रता की शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति दु:ख-दर्द समाप्त नहीं कर सकती? साइन्स की दवाई में अल्पकाल की शक्ति है तो पवित्रता की शक्ति में, पवित्रता की दुआ में कितनी बड़ी शक्ति है? समय प्रमाण जब आज के व्यक्ति दवाइयों से कारणे-अकारणे तंग होंगे, बीमारियाँ अति में जायेंगी तो समय पर आप पवित्र देव वा देवियों के पास दुआ लेने लिए आयेंगे कि हमें दु:ख, अशान्ति से सदा के लिए दूर करो। पवित्रता की दृष्टि-वृत्ति साधारण शक्ति नहीं है। यह थोड़े समय की शक्तिशाली दृष्टि वा वृत्ति सदाकाल की प्राप्ति कराने वाली है। जैसे अभी जिस्मानी डॉक्टर्स और जिस्मानी हॉस्पिटल्स समय प्रति समय बढ़ते भी जाते हैं, फिर भी डॉक्टर्स को फुर्सत नहीं, हॉस्पिटल्स में स्थान नहीं। रोगियों की सदा ही क्यू लगी हुई होती है। ऐसे आगे चल हॉस्पिटल्स वा डॉक्टर्स के पास जाने का, दवाई करने का, चाहते हुए भी जा नहीं सकेंगे। मैजारिटी निराश हो जायेंगे तो क्या करेंगे? जब दवा से निराश होंगे तो कहाँ जायेंगे? आप लोगों के पास भी क्यू लगेगी। जैसे अभी आपके वा बाप के जड़ चित्रों के सामने 'ओ दयालू, दया करो' कहकर दया वा दुआ मांगते रहते हैं, ऐसे आप चैतन्य, पवित्र, पूज्य आत्माओं के पास 'ओ पवित्र देवियों वा पवित्र देव! हमारे ऊपर दया करो' - यह मांगने के लिए आयेंगे। आज अल्पकाल की सिद्धि वालों के पास शफा लेने वा सुख-शान्ति की दया लेने के लिए कितने भटकते रहते हैं! समझते

हैं - दूर से भी दृष्टि पड़ जाए। तो आप परमात्म-विधि द्वारा सिद्धि-स्वरूप बने हो। जब अल्पकाल के सहारे समाप्त हो जायेंगे तो कहाँ जायेंगे?

यह जो भी अल्पकाल की सिद्धि वाले हैं, अल्पकाल की कुछ न कुछ पवित्रता की विधियों से अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त करते हैं। यह सदा नहीं चल सकती है। यह भी गोल्डन एजड आत्माओं को अर्थात् लास्ट में ऊपर से आई हुई आत्माओं को पवित्र मुक्तिधाम से आने के कारण और ड्रामा के नियम प्रमाण, सतोप्रधान स्टेज के प्रमाण पवित्रता के फलस्वरूप अल्पकाल की सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं लेकिन थोड़े समय में ही सतो, रजो, तमो - तीनों स्टेजस पास करने वाली आत्मायें हैं। इसलिए सदाकाल की सिद्धि नहीं रहती। परमात्म-विधि से सिद्धि नहीं है, इसलिए कहाँ न कहाँ स्वार्थ व अभिमान सिद्धि को समाप्त कर लेता है। लेकिन आप पवित्र आत्मायें सदा सिद्धि स्वरूप हैं, सदा की प्राप्ति कराने वाली हैं। सिर्फ चमत्कार दिखाने वाली नहीं हो लेकिन चमकती हुई ज्योतिस्वरूप बनाने वाले हो, अविनाशी भाग्य का चमकता हुआ सितारा बनाने वाले हो। इसलिए यह सब सहारे अब थोड़ा समय के लिए हैं और आखिर में आप पवित्र आत्माओं के पास ही अंचली लेने आयेंगे। तो इतनी सुख-शान्ति की जननी पवित्र आत्मायें बने हो? इतनी दुआ का स्टॉक जमा किया है वा अपने लिए भी अभी तक दुआ मांगते रहते हो?

कई बच्चे अभी भी समय प्रति समय बाप से मांगते रहते कि इस बात पर थोड़ी-सी दुआ कर लो, आशीर्वाद दे दो। तो मांगने वाले दाता कैसे बनेंगे? इसलिए पवित्रता की शक्ति की महानता को जान पवित्र अर्थात् पूज्य देव आत्मायें अभी से बनो। ऐसे नहीं कि अन्त में बन जायेंगे। यह बहुत समय की जमा की हुई शक्ति अन्त में काम में आयेगी। तो समझा, पवित्रता की गुह्य गति क्या है? सदा सुख-शान्ति की जननी आत्मा - यह है पवित्रता की गुह्यता! साधरण बात नहीं है! ब्रह्मचारी रहते हैं, पवित्र बन गये हैं। लेकिन पवित्रता जननी है, चाहे संकल्प से, चाहे वृति से, वायुमण्डल से, वाणी से, सम्पर्क से सुख- शान्ति की जननी बनना - इसको कहते हैं - 'पवित्र आत्मा'। तो कहाँ तक बने हो - यह अपने आपको चेक करो। अच्छा।

आज बहुत आ गये हैं। जैसे पानी का बाँध टूट जाता है तो यह कायदा का बांध तोड़ कर आ गये हैं। फिर भी कायदे में फायदा तो है ही। जो कायदे से आते, उन्हों को ज्यादा मिलता है और जो लहर में लहराकार आते हैं, तो समय प्रमाण फिर इतना ही मिलेगा ना। फिर भी देखो, बन्धनमुक्त बापदादा भी बन्धन में आता है! स्नेह का बन्धन

है। स्नेह के साथ समय का भी बन्धन है। शरीर का भी बन्धन है ना। लेकिन प्यारा बन्धन है, इसलिए बन्धन में होते भी आजाद हैं। बापदादा तो कहेंगे - भले पधारे, अपने घर पहुँच गये। अच्छा।

चारों ओर के सर्व परम पवित्र आत्माओं को, सदा सुख-शान्ति की जननी पावन आत्माओं को, सदा पवित्रता की शक्ति द्वारा अनेक आत्माओं को दु:ख-दर्द से दूर करने वाली देव आत्माओं को, सदा परमात्म-विधि द्वारा सिद्धि-स्वरूप आत्माओं को बापदादा का स्नेह सम्पन्न यादप्यार और नमस्ते।

हॉस्टल की कुमारियों से - (इन्दौर ग्रुप)

सभी पवित्र महान आत्मायें हो ना? आजकल के महात्मा कहलाने वालों से भी अनेक बार श्रेष्ठ हो। पवित्र कुमारियों का सदा पूजन होता है। तो आप सभी पावन, पूज्य सदा शुद्ध आत्मायें हो ना? कोई अशुद्धि तो नहीं है? सदा आपस में एकमत, स्नेही, सहयोगी रहने वाली आत्मायें हो ना? संस्कार मिलाने आता है ना। क्योंकि संस्कार मिलन करना - यही महानता है। संस्कारों का टक्कर न हो लेकिन सदा संस्कार मिलन की रास करते रहो। बहुत अच्छा भाग्य मिला है - छोटेपन में महान बन गई! सदा खुश रहती हो ना? कभी कोई मन से रोते तो नहीं? निर्मोही हो? कभी लौकिक परिवार याद आता है? दोनों पढ़ाई में होशियार हो? दोनों पढ़ाई में सदा नम्बरवन रहना है। जैसे बाप वन है, ऐसे बच्चे भी नम्बर वन में। सबसे नम्बर वन - ऐसे बच्चे सदा बाप के प्रिय हैं। समझा? अच्छा।

03 - 03 - 1988 होली कैसे मनायें तथा सदाकाल का परिवर्तन कैसे हो?

दो प्रकार के महारथी बच्चों को सदाकाल का परिवर्तन न होने का कारण और निवारण की युक्तियाँ बताते हुए हाइएस्ट होलीएस्ट शिवाबाबा बोले

आज सर्व के भाग्यविधाता बाप अपने होलीहंसों से ज्ञान रत्नों की होली मनाने आये हैं। मनाना अर्थात् मिलन मनाना। बापदादा हर एक अति स्नेही, सहजयोगी, सदा बाप के कार्य में सहयोगी, सदा पावन वृत्ति से, पावन दृष्टि से सृष्टि को परिवर्तन करने वाले सर्व होली बच्चों को देख सदा हर्षित होते हैं। पावन तो आजकल के गाये हुए महात्मायें भी बनते हैं लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें हाइएस्ट होली बनते हो अर्थात् संकल्प - मात्र, स्वप्न मात्र भी अपवित्रता वृत्ति को, दृष्टि को पावन स्थिति से नीचे नहीं ला सकती। हर संकल्प अर्थात् स्मृति पावन होने के कारण वृत्ति, दृष्टि स्वत: ही पावन हो जाती है। न सिर्फ आप पावन बनते हो लेकिन प्रकृति को भी पावन बना देते हो। इसलिए पावन प्रकृति के कारण भविष्य अनेक जन्म शरीर भी पावन मिलते हैं। ऐसे होलीहंस वा सदा पावन संकल्पधारी श्रेष्ठ आत्मायें बन जाती हो। ऊँचे - ते - ऊँचा बाप हर बात में श्रेष्ठ जीवन वाले बनाते हैं। पवित्रता भी ऊँचे - ते - ऊँची पवित्रता, साधारण नहीं। साधारण पवित्र आत्मायें आप महान पवित्र आत्माओं के आगे मन से मानने का नमस्कार करेंगे कि आपकी पवित्रता अति श्रेष्ठ है। आजकल के गृहस्थी अपने को अपवित्र समझने के कारण जिन पवित्र आत्माओं को महान समझकर सिर झुकाते हैं, वह महान आत्मायें कहलाने वाली आप श्रेष्ठ पावन आत्माओं के आगे मानेंगी कि आपकी पवित्रता और हमारी पवित्रता में महान अन्तर है।

यह होली का उत्सव आप पावन आत्माओं के पावन बनने की विधि का यादगार है। क्योंकि आप सभी नम्बरवार पावन आत्मायें बाप के याद की लग्न की अग्नि द्वारा सदा के लिए अपवित्रता को जला देते हो। इसलिए पहले जलाने की होली मनाते हैं, फिर रंग की होली वा मंगल - मिलन मनाते हैं। जलाना अर्थात् नाम - निशान समाप्त करना। वैसे किसको नाम - निशान से खत्म करना होता है तो क्या करते हो? जला देते हैं।

इसलिए रावण को भी मारने के बाद जला देते हैं। यह आप आत्माओं का यादगार है। अपवित्रता को जला दिया अर्थात् पावन 'होली' बन गये। बापदादा सदैव सुनाते ही हैं कि ब्राह्मणों का होली मनाना अर्थात् होली (पवित्र) बनाना। तो यह चेक करो कि अपवित्रता को सिर्फ मारा है या जलाया है? मरने वाले फिर भी जिन्दा हो जाते हैं, कहाँ - न - कहाँ श्वाँस छिपा रह जाता है। लेकिन जलना अर्थात् नाम - निशान समाप्त करना। कहाँ तक पहुँचे हैं, अपने आप को चेक करना पड़े। स्वप्न में भी अपवित्रता का छिपा हुआ श्वाँस फिर से जीवित नहीं होना चाहिए। इसको कहते हैं - श्रेष्ठ पावन आत्मा। संकल्प से स्वप्न भी परिवर्तित हो जाते हैं।

आज वतन में बापदादा बच्चों के समय - प्रति - समय संकल्प द्वारा वा लिखित द्वारा बाप से किये हुए वायदे देख रहे थे। चाहे स्थिति में महारथी, चाहे सेवा में महारथी - दोनों के समय - प्रति - समय के वायदे बहुत अच्छे - अच्छे किये हुए हैं। महारथी भी दो प्रकार के हैं। एक हैं अपने वरदान वा वर्से की प्राप्ति के पुरूषार्थ के आधार से महारथी और दूसरे हैं कोई न कोई सेवा की विशेषता के आधार से महारथी। कहलाते दोनों ही महारथी हैं लेकिन जो पहला नम्बर सुनाया - स्थिति के आधार वाले, वह सदा मन से अतीन्द्रिय सुख के, सन्तुष्टता के, सर्व के दिल के स्नेह के प्राप्ति स्वरूप के झूले में झूलते रहते हैं। और दूसरा नम्बर सेवा की विशेषता के आधार वाले तन से अर्थात् बाहर से सेवा की विशेषता के फलस्वरूप सन्तुष्ट दिखाई देंगे। सेवा की विशेषता के कारण सेवा के आधार पर मन की सन्तुष्टता है। सेवा की विशेषता - कारण सर्व का स्नेह भी होगा लेकिन मन से वा दिल से सदा नहीं होगा। कभी बाहर से, कभी दिल से। लेकिन सेवा की विशेषता महारथी बना देती है। गिनती में महारथी की लाइन में आता है।

तो आज बापदादा महारथी वा पुरूषार्थी - दोनों के वायदे देख रहे थे। अभी - अभी नजदीक में वायदे बहुत किये हैं। तो क्या देखा? वायदे से फायदा तो होता है क्योंकि दृढ़ता का फल 'अटेन्शन' रहता है। बार - बार वायदे की स्मृति समर्थी दिलाती है। इस कारण थोड़ा बहुत परिवर्तन भी होता है। लेकिन बीज दबा हुआ रहता है। इसलिए जब ऐसा समय वा समस्या आती है तो 'समस्या' वा 'कारण' का पानी मिलने से दबा हुआ बीज फिर से पत्ते निकलना शुरू कर देता है। सदा के लिए समाप्त नहीं होता है। बापदादा देख रहे थे - जलाने की होली किन्हों ने मनाई जब बीज को जलाया जाता है तो जला हुबा बीज कभी फल नहीं देता। वायदे तो सभी ने किये कि बीती को बीती

कर जो अब तक हुआ, चाहे अपने प्रति, चाहे औरों के प्रति - सर्व को समाप्त कर परिवर्तन करेंगे। सभी ने अभी - अभी वायदे किये हैं ना। रूह - रूहान में सभी वायदे करते हैं ना। हर एक का रिकार्ड बापदादा के पास है। बहुत अच्छे रूप से वायदे करते हैं। कोई गीतकविता द्वारा, कोई चित्रों द्वारा।

बापदादा देख रहे थे जितना चाहते हैं, उतना परिवर्तन क्यों नहीं होता? कारण क्या है, क्यों नहीं सदा के लिए समाप्त हो जाता है, तो क्या देखा? अपने प्रति वा दूसरों के प्रति संकल्प करते हो कि यह कमज़ोरी फिर आने नहीं देगें वा दूसरे के प्रति सोचते हो कि जो भी किसी आत्मा के प्रति संस्कार के कारण वा हिसाब - किताब चुक्तू होने के कारण जो भी संकल्प में वा बोल में वा कर्म में संस्कार टकराते हैं, उनका परिवर्तन करेंगे। लेकिन समय पर फिर से क्यों रिपीट होता है? उसका कारण? सोचते हो कि आगे से इस आत्मा के इस संस्कार को जानते हुए स्वयं को सेफ रख उस आत्मा को भी शुभ भावना - शुभ कामना देंगे लेकिन जैसे दूसरे की कमज़ोरी देखने, सुनने वा ग्रहण करने की आदत नैचरल और बहुतकाल की हो गई है, उसके बदले नहीं रखेंगे - यह तो बहुत अच्छा, लेकिन उसके स्थान पर क्या देखेंगे, क्या उस आत्मा से ग्रहण करेंगे - वह बारबार अटेन्शन में नहीं रखते। यह नहीं करना है - यह याद रहता है लेकिन ऐसी आत्माओं के प्रति क्या करना है, सोचना है, देखना - वह बातें नैचरल अटेन्शन में नहीं रहती। जैसे कोई स्थान खाली रहता, उसको अच्छे रूप से यूज नहीं करते तो खाली स्थान में फिर भी किचड़ा या मच्छर आदि स्वत: ही पैदा हो जाते। क्योंकि वायुमण्डल में मिट्टी - धूल, मच्छर है ही; तो वह फिर से थोड़ा - थोड़ा करके बढ़ जाता है। जगह भरनी चाहिए। जब भी आत्माओं के सम्पर्क में आते हो, पहले नैचरल परिवर्तन किया हुआ श्रेष्ठ संकल्प का स्वरूप स्मृति में आना चाहिए। क्योंकि नॉलेजफुल तो हो ही जाते हो। सभी के गुण, कर्त्तव्य, संस्कार, सेवा, स्वभाव परिवर्तन के शुभ संस्कार वा स्थान सदा भरपूर होगा तो अशुद्ध को स्वत: ही समाप्त कर देगा।

जैसे सुनाया था - कई बच्चे जब याद में बैठते हैं वा ब्राह्मण जीवन में चलते - फिरते याद का अभ्यास करते हैं तो याद में शान्ति का अनुभव करते हैं लेकिन खुशी का अनुभव नहीं करते। सिर्फ शान्ति की अनुभूति कभी माथा भारी कर देती है और कभी निद्रा के तरफ ले जाती है। शान्ति की स्थिति के साथ खुशी नहीं रहती। तो जहाँ खुशी नहीं, वहाँ उमंग - उत्साह नहीं होता और योग लगाते भी अपने से सन्तुष्ट नहीं होते, थके हुए रहते हैं। सदा सोच की मूड में रहते, सोचते ही रहते। खुशी क्यों नहीं आती, इसका

भी कारण है। क्योंकि सिर्फ यह सोचते हो कि मैं आत्मा हूँ, बिन्दु हूँ, ज्योतिस्वरूप हूँ, बाप भी ऐसा ही है। लेकिन मैं कौन - सी आत्मा हूँ! मुझ आत्मा की विशेषता क्या है? जैसे मैं पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा हूँ, मैं आदि रचना वाली आत्मा हूँ, मैं बाप के दिलतख्तनशीन होने वाली आत्मा हूँ। यह विशेषतायें जो खुशी दिलाती है, वह नहीं सोचते हो। सिर्फ बिन्दी हूँ, ज्योति हूँ, शान्तस्वरूप हूँ - तो निल में चले जाते हो। इसलिए माथा भारी हो जाता है। ऐसे ही जब स्वयं के प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति परिवर्तन का दृढ़ संकल्प करते हो तो स्वयं प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति शुभ, श्रेष्ठ संकल्प वा विशेषता का स्वरूप सदा इमर्ज रूप में रखो तो परिवर्तन हो जायेगा।

जैसे यह संकल्प आता है कि यह है ही ऐसा, यह होगा ही ऐसा, ये करता ही ऐसे है। इसको बजाये यह सोचो कि यह विशेषता प्रमाण विशेष ऐसा है। जैसे कमज़ोरी का 'ऐसा' और 'वैसा' आता है, वैसे श्रेष्ठता वा विशेषता का 'ऐसा''वैसा' है - यह सामने लाओ। स्मृति को, स्वरूप को, वृत्ति को, दृष्टि को परिवर्तन में लाओ। इस रूप से स्वयं को भी देखो और दूसरों को भी देखो। इसको कहते है स्थान भर दिया, खाली नहीं छोड़ा। इस विधि से जलाने की होली मनाओ। अपने प्रति वा दूसरों के प्रति ऐसे कभी नहीं सोचो कि 'देख हमने कहा था ना कि यह बदलने वाले हैं ही नहीं।' लेकिन उस समय अपने से पूछो कि 'मैं क्या बदला हूँ?' स्व परिवर्तन ही औरों का भी परिवर्तन सामने लायेगा। हर एक यह सोचो कि 'पहले मैं बदलने का एग्जाम्पल बनूँ।' इसको कहते हैं होली जलाना। जलाने के बिना मनाना नहीं होता, पहले जलाना ही होता है। क्योंकि जब जला दिया अर्थात् स्वच्छ हो गये, श्रेष्ठ पवित्र बन गये। तो ऐसी आत्मा को स्वत: ही बाप के संग का रंग सदा लगा हुआ ही रहता है। सदा ही ऐसी आत्मा बाप से वा सर्व आत्माओं से मंगल - मिलन अर्थात् कल्याणकारी श्रेष्ठ शुभ मिलन मनाती ही रहती है। समझा?

ऐसी होली मनानी है ना। जहाँ उमंग - उत्साह होता है, वहाँ हर घड़ी उत्सव है ही है। तो खुशी से खूब मनाओ, खेले - खाओ, मौज करो लेकिन सदा होली बन मिलन मनाते रहो। अच्छा!

सदा हर सेकण्ड बाप द्वारा वरदान की मुबारक लेने वाले, सदा हर ब्राह्मण आत्मा द्वारा शुभ भावना की मुबारक लेने वाले, सदा अति श्रेष्ठ पावन आत्माओं को, सदा संग के रंग में रंगी हुई आत्माओं को, सदा बाप से मिलन मनाने वाली आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पर्सनल मुलाकात के समय वरदान के रूप में उच्चारे हुए महावाक्य

1. सदा अपने को बाप की याद की छत्रछाया में रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा अनुभव करते हो? छत्रछाया ही सेफ्टी का साधन है। इस छत्रछाया से संकल्प में भी अगर पाँव बाहर निकलाते हो तो क्या होगा? रावण उठाकर ले जायेगा और शोक वाटिका में बिठा देगा। तो वहाँ तो जाना नहीं है। सदा बाप की छत्रछाया में रहने वाली, बाप की स्नेही आत्मा हूँ - इसी अनुभव में रहो। इसी अनुभव से सदा शक्तिशाली बन आगे बढ़ते रहेंगे।

2. सदा अपने को बापदादा की नजरों में समाई हुई आत्मा अनुभव करते हो? नयनों में समाई हुई आत्मा का स्वरूप क्या होगा? आँखों में क्या होता है? बिन्दी। देखने की सारी शक्ति बिन्दी में है ना। तो नयनों में समाई हुई अर्थात् सदा बिन्दी स्वरूप में स्थित रहने वाली - ऐसा अनुभव होता है ना! इसको ही कहते हैं - 'नूरे रत्न'। तो सदा अपने को इस स्मृति से आगे बढ़ाते रहो। सदा इसी नशे में रहो कि मैं 'नूरे रत्न' आत्मा हूँ।

25-03-1990 सर्व अनुभूतियों की प्राप्त का आधार पवित्रता

आज स्नेह के सागर बापदादा अपने चारों ओर के रूहानी बच्चों के रूहानी फीचर्स देख रहे हैं। हर एक ब्राह्मण बच्चे के फीचर्स में रूहानियत है लेकिन नंबरवार है। क्योंकि रूहानियत का आधार पवित्रता है। संकल्प, बोल और कर्म पवित्रता की जितनी-जितनी धारणा है उसी प्रमाण रूहानियत की झलक सूरत में दिखाई देती है। ब्राह्मण-जीवन की चमक पवित्रता है। निरंतर अतीन्द्रिय सुख और स्वीट साइलेन्स का विशेष आधार है - पवित्रता। तो पवित्रता नंबरवार है तो इन अनुभूतियों की प्राप्ति भी नंबरवार है। अगर पवित्रता नंबरवन है तो बाप द्वारा अनुभूतियों की प्राप्ति भी नंबरवन है। पवित्रता की चमक स्वत: ही निरंतर चेहरे पर दिखाई देती है। पवित्रता की रूहानियत के नयन सदा ही निर्मल दिखाई देंगे। सदा नयनों में रूहानी आत्मा और रूहानी बाप की झलक अनुभव होगी। आज बापदादा सभी बच्चों की विशेष यह चमक और झलक देख रहे हैं। आप भी अपने रूहानी पवित्रता के फीचर्स को नॉलेज के दर्पण में देख सकते हो। क्योंकि विशेष आधार पवित्रता है। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य को नहीं कहा जाता। लेकिन सदा ब्रह्मचारी और सदा ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के आचरण पर हर कदम में चलने वाले। उसका संकल्प, बोल और कर्म रूपी कदम नैचुरल ब्रह्मा बाप के कदम-ऊपर-कदम होगा। जिसको आप फुट स्टेप कहते हो। उनके हर कदम में ब्रह्मा बाप का आचरण दिखाई देगा। तो ब्रह्मचारी बनना मुश्किल नहीं है लेकिन यह मन-वाणी-कर्म के कदम ब्रह्माचारी हों - इस पर चेक करने की आवश्यकता है। और जो ब्रह्माचारी हैं उनका चेहरा और चलन सदा ही अर्न्तमुखी और अतीन्द्रिय सुखी अनुभव होगा। एक है साइंस के साधन और ब्राह्मण-जीवन में हैं ज्ञान के साधन। तो ब्रह्माचारी आत्मा साइंस के साधन वा ज्ञान के साधन के आधार पर सदा सुखी नहीं होते। लेकिन साधनों को भी अपनी साधना के स्वरूप में कार्य में लाते। साधनों को आधार नहीं बनाते लेकिन अपनी साधना के आधार से साधनों को कार्य लाते - जैसे कोई ब्राह्मण-आत्माएं कभी-कभी कहते हैं हमें यह चांस नहीं मिला, इस बात की मदद नहीं मिली। यह साथ नहीं मिला, इसलिए खुशी कम हो गई अथवा सेवा का, स्वं का उमंग-उत्साह कम हो गया। पहले-पहले तो बहुत अतीन्द्रिय सुख था, उमंग-उत्साह कम

हो गया। पहले-पहले तो बहुत अतीन्द्रिय सुख था, उमंग-उत्साह भी रहा। मैं और बाबा और कुछ दिखाई नहीं दिया। लेकिन मैजारिटी 5 वर्ष से 10 वर्ष के अन्दर अपने में कभी कैसे, कभी कैसे अनुभव करने लगते हैं। इसका कारण क्या है? पहले वर्ष से 10 वर्ष में उमंग-उत्साह 10 गुणा बढ़ना चाहिए ना। लेकिन कम क्यों हो गया? उसका कारण यही है कि साधना की स्थिति में रह साधनों को कार्य में नहीं लगाते। कोई-न-कोई आधार को अपनी उन्नति का आधार बना देते हैं और वह आधार हिलता है, उमंग-उत्साह भी हिल जाता है। वैसे आधार लेना कोई बुरी चीज नहीं। लेकिन आधार को ही फाउण्डेशन बना देते हैं। बाप बीच से निकल जाता है और आधार को फाउण्डेशन बना देते हैं। इसलिए हलचल क्या होती, यह होता तो ऐसा नहीं होता, यह होगा तो ऐसे होगा। यह तो बहुत अवश्यक है - ऐसे अनुभव होने लगता है। साधना और साधन का बैलेन्स नहीं रहता। साधनों की तरफ बुद्धि ज्यादा जाती है। साधना की तरफ बुद्धि कम हो जाती। इसलिए कोई भी कार्य में, सेवा में बाप की ब्लैसिंग अनुभव नहीं करते। और ब्लैसिंग का अनुभव न होने के कारण साधन द्वारा सफलता मिल जाती तो उमंग-उत्साह बहुत अच्छा रहता और सफलता कम होती तो उमंग-उत्साह भी कम हो जाता है। साधना अर्थात् शक्तिशाली याद। निरंतर बाप के साथ दिल का सम्बन्ध। साधना इसको नहीं कहते कि सिर्फ योग में बैठ गये लेकिन जैसे शरीर से बैठते हो वैसे दिल, मन, बुद्धि एक बाप की तरफ बाप के साथ-साथ बैठ जाएं। शरीर भल यहाँ बैठा है, और मन एक तरफ, बुद्धि दूसरे तरफ जा रही है, दिल में और कुछ आ रहा है तो इसको साधना नहीं कहते। मन, बुद्धि, दिल और शरीर चारें ही साथ-साथ बाप के साथ समान स्थिति में रहें - यह है यर्थाथ साधना। समझा? अगर यथार्थ साधना नहीं होती तो फिर आराधना चलती है। पहले भी सुनाया है कभी तो याद करते हैं लेकिन कभी फिर फरियाद करते हैं। याद में फरियाद की आवश्यकता नहीं। साधना वाले का आधार सदा बाप ही होता है। और जहाँ बाप है वहाँ सदा बच्चों की उड़ती कला है। कम नहीं होगा लेकिन अनेक गुणा बढ़ता जायेगा। कभी ऊपर, कभी नीचे इसमें थकावट होती है। आप कोई भी हलचल के स्थान पर बैठो तो क्या होगा? ट्रेन में बहुत हिलने से थकावट होती है ना। कभी बहुत उमंग-उत्साह में उड़ते हो, कभी बीच में रहते हो, कभी नीचे आ जाते हो तो हलचल हो गई ना। इसलिए या थक जाते हो या बोर हो जाते हो। फिर सोचते हैं क्या ऐसे ही चलना है! लेकिन जो साधना द्वारा बाप के साथ हैं, उसके लिए संगमयुग पर सब नया ही नया अनुभव

होता है। हर घड़ी में, हर संकल्प में नवीनता। क्योंकि हर कदम में उड़ती कला अर्थात् प्राप्ति में प्राप्ति होती रहेगी। हर समय प्राप्ति है। संगमयुग में हर समय, बाप वर्से और वरदान के रूप में प्राप्ति कराते हैं। तो प्राप्ति में खुशी होती है और खुशी में उमंग-उत्साह बढ़ता रहेगा। कम हो ही नहीं सकता। चाहे माया भी आये तो भी विजयी बनने की खुशी होगी। क्योंकि माया पर विजय प्राप्त करने के नॉलेजफुल बन गये हो। तो 10 साल वालों को 10 गुणा, 20 साल वालों का 20 गुणा हो रहा है? तो कहने में ऐसे आता लेकिन है तो अनेक गुणा।

अब इस वर्ष में क्या करेंगे? उमंग-उत्साह तो बाप द्वारा मिली हुई आपकी अपनी जायजाद है। बाप की प्रॉपर्टी को अपना बनाया है तो प्रॉपर्टी को बढ़ाया जाता है या कम किया जाता है? इस वर्ष विशेष 4 प्रकार की सेवा पर अटेन्शन अंडरलाइन करना। पहला- नम्बर है स्व की सेवा। दूसरा- विश्व की सेवा। तीसरा- मन्सा सेवा। एक है वाणी द्वारा सेवा दूसरी मन्सा सेवा भी विशेष है। चार- यज्ञ-सेवा। जहाँ भी हो, जिस भी सेवास्थान पर हो वह सब सेवास्थान यज्ञकुण्ड है। ऐसे नहीं कि सिर्फ मधुबन यज्ञ है। और आपके स्थान यज्ञ नहीं है। तो यज्ञ-सेवा अर्थात् कर्मणा द्वारा कुछ-न-कुछ सेवा जरूर करनी चाहिए। बापदादा के पास सेवा के तीन प्रकार के खाते सबके जमा होते हैं। मन्सा-वाचा और कर्मणा, तन-मन और धन। कई ब्राह्मण सोचते हैं हम तो धन से सहयोगी नहीं बन सकते, सेवा नहीं कर सकते क्योंकि हम तो समर्पण हैं। धन कमाते ही नहीं तो धन से सेवा कैसे करेंगे? लेकिन समर्पित आत्मा अगर यज्ञ के कार्य में एकॉनामी करती है अपने अटेन्शन से, तो जैसे धन की एकॉनामी की, वह एकॉनमी वाला धन अपने नाम से जमा होता है यह सूक्ष्म खाता है। अगर कोई नुकसान करता है तो खाते में बोझ जमा होता है और एकॉनामी करते तो उसका धन के खाते में जमा होता है। यज्ञ का एक-एक कण मुहर के समान है। अगर यज्ञ की दिल से (दिखावे से नहीं) एकॉनामी करते हैं तो उसकी मुहरें एकत्रित होती रहती हैं। दूसरी बात- अगर समर्पित आत्मा सेवा द्वारा दूसरों के धन को सफल कराती है तो उसमें से उसका भी शेयर जमा होता है। इसलिए सभी का 3 प्रकार का खाता है। तीनों खाते की परसेंटेज अच्छी होनी चाहिए। कोई समझते हैं हम तो वाचा सेवा में बहुत बिजी रहते हैं। हमारी ड्यूटी ही वाचा की है, मन्सा और कर्मणा में परसेन्टेज कम होती है लेकिन यह भी बहाना चलेगा नहीं। वाणी के समय अगर मन्सा और वाचा की इकùी सेवा करो तो क्या रिजल्ट होगी? मन्सा और वाचा इकùी सेवा हो सकती है? लेकिन

वाचा सहज है, मन्सा में अटेन्शन देने की बात है। इसलिए वाचा का तो जमा हो जाता लेकिन मन्सा का खाता खाली रह जाता है। और वाचा में तो बाप से भी सभी होशियार हो। देखो आजकल बड़ी दादियों से अच्छे भाषण छोटे-छोटे करते हैं।
क्योंकि न्यू ब्लड है ना। भले आगे जाओ, बापदादा खुश होते हैं। लेकिन मन्सा का खाता खाली रह जायेगा। क्योंकि हर खाते की 100 मार्क्स है। सिर्फ स्थूल सेवा को कर्मणा सेवा नहीं कहते। कर्मणा अर्थात् संगठन में सम्पर्क-सम्बन्ध में आना। यह कर्म के खाते में जमा हो जाता है। तो कईयों के तीनों खातें में बहुत फर्क है और वे खुश होते रहते हैं कह हम बहुत सेवा कर रहे हैं, बहुत अच्छे है। खुश भले रहो लेकिन खाता खाली भी नहीं रहना चाहिए क्योंकि बापदादा तो बच्चों के स्नेही हैं ना। फिर ऐसा उल्हना न दो कि हमको इशारा भी नहीं दिया गया कि यह भी होता है। उस समय बापदादा यह प्वाइंट याद करायेगा। टी.वी. में चित्र सामने आ जायेगा। इसलिए इस वर्ष सेवा भले बहुत करो लेकिन यह तीनों प्रकार के खाते और चारों प्रकार की सेवा साथ-साथ करो। वाचा का तरफ भारी हो जाए और मन्सा तथा कर्मणा हल्का हो जाए तो क्या होगा? बैलेन्स नहीं रहेगा ना। बैलेन्स न रहने के कारण उमंग-उत्साह भी नीचे-ऊपर होता है। एक तो अटेंशन रखना लेकिन बापदादा बार-बार कहते हैं अटेंशन को टेंशन में नहीं बदलना। कई बार अटेंशन को टेंशन बना देते हैं - यह नहीं करना। सहज और नैचुरल अटेंशन रहे। डबल लाइट स्थिति में नैचुरल अटेंशन होता ही है। अच्छा!
तीसरी बात- सेवा की विधि क्या अपनायेंगे? यह तो हो गई सिद्धि की बात। अभी विधि क्या करेंगे? एक तो जो आपका कार्य चल रहा है 2 वर्ष से सर्व के सहयोग का, इस कार्य को सम्पन्न करना है। समाप्त नहीं लेकिन सम्पन्न कहेंगे। इसलिए लिए चाहे फंक्शन रखने हैं, चाहे किताब तैयार कर फिर लोगों को संदेश देना है, यह भल करो। लेकिन एक बात जरूर ध्यान में रखना कि कम खर्चा बालानशीन। बापदादा हर कार्य के लिए आदि से अब तक यही विधि अपनाते रहे हैं कि न बहुत ऊंचा न बिल्कुल सादा बीच का हो। क्योंकि दो प्रकार की आत्माएं होती हैं। अगर ज्यादा मंहगा करते हो तो भी लोग कहते हैं, इन्हों के पास बहुत पैसे हैं और कम करते हो तो वैल्यु नहीं रहती। इसलिए सदैव बीच का रखना चाहिए। बुक भी अभी तक जो बनाया है, अच्छा है। सम्पन्न करना ही है लेकिन ज्यादा विस्तार नहीं करना। ज्यादा बड़ा नहीं बनाना। शार्ट भी हो और स्वीट भी हो, सार भी हो। विस्तार से कहाँ-कहाँ सार छिप जाता है। और सार होता है तो बुद्धि को टच होता है। कार्य ठीक कर रहे हो लेकिन

अपनी बुद्धि की एनर्जी में भी कम खर्चा बालानशीन। बाकी मेहनत करने वालों को मुबारक हो। चाहे प्रोग्राम दूसरे वर्ष में रखो लेकिन सम्पन्न तो करना ही है। कई बच्चे समझते हैं बहुत लम्बा चला है। टू मच बिजी रहे हैं, टू मच खर्चा भी हुआ... लेकिन जो हुआ वह अच्छा हुआ और जो होगा वह और अच्छा होगा। थकना नहीं है। अमंग-उत्साह और बढ़ाओ। जिस रूचि से इस कार्य को आरम्भ किया, उससे अनेक गुणा कम खर्चा बालानशीन कि विधि से सम्पन्न करो। समझा? समय निश्चित होना चाहिए काम करने का। कई समझते हैं रात को जागकर काम करते तो अच्छा काम होता। लेकिन बुद्धि थक जाती है और अमृतवेला शक्तिशाली न होने के कारण हो कार्य दो गुणा होना चाहिए वह एक गुणा होता है। इसलिए टाइम की भी लिमिट होनी चाहिए। फिर सवेरे उठकर फ्रेश बुद्धि से पढ़ाई पढ़नी है। काम करने की लिमिट होनी चाहिए। ऐसे तो बापदादा बच्चों का उमंग देख खुश भी होते हैं लेकिन फिर भी हद तो देनी पड़ेगी ना। सदा बुद्धि फ्रेश रहे और फ्रेश बुद्धि से जो काम होगा वह एक घंटे में दो घंटे का काम कर सकते हो। एक तो सेवा का यह कार्य है।

दूसरा:- वर्तमान समय धन और समय देश वा विदेश में इस बिजी प्रोग्राम में बहुत लगाया है। इसलिए अभी चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में अपने वाले हैं चाहे और नई आत्माओं को संदेश दे स्नेह-मिलन करो। छोटे-छोटे सेंटर्स पर 5 का भी अगर स्नेह-मिलन होता है तो कोई हर्जा नहीं। वह और ही रिफ्रेश हो जायेंगे, समीप होते जायेंगे। छोटे-छोटे स्नेह-मिलन करो। 5 से लेकर 50 तक 100 तक का सम्मेलन कर सकते हो। बड़ा फंक्शन नहीं, जितना स्थान है और कम खर्च बालानशीन में आपको स्थान भी सहज मिल सकता है। ज्यादा भाग-दौड़ नहीं करनी है। अगर आपके पास 100 आत्माएं आनी हैं तो ड्रामा अनुसार स्थान भी सहज मिल जायेगा। लेकिन यह नहीं कि छोटे सेंटर वाले भी समझे कि हमें 100 का प्रोग्राम करना है। यथा-शक्ति यथा-सहयोगी, यथा-स्नेह और धन की शक्ति 5 का करो - 50 का करो, 25 का करा, लेकिन करना जरूर है। बिजी जरूर रहना है और हम 3 मास के बाद वा यथा-शक्ति 3 करो वा 4 करो। लेकिन करना जरूर है और पहले 5 का स्नेह-मिलन करेंगे तो 5 आत्माएं और दो-तीन को लायेंगी तो दूसरी बार 10 का हो जायेगा फिर 15 का हो जायेगा। क्योंकि डबल लाइट से करेंगे। बर्डन से नहीं करना। अलबेले भी नहीं बनना कि सेवा तो बहुत कर ली है। नहीं सेवा बिजी रहने का साधन है। लेकिन बर्डन् से सेवा करते हो इसलिए थक जाते हो। सेवा तो खुशी बढ़ाती है। सेवा अनेक

आत्माओं की दुआयें प्राप्त कराती है। सेवा नहीं करेंगे तो 9 लाख तक कैसे पहुँचेंगे? सेवा करो लेकिन अंडरलाइन यह करना कि बर्डन वाली सेवा नहीं। चाहे बुद्धि का बड़न, चाहे धन का बर्डन और इजी होकर करेंगे तो सार्विस भी इजी रूप में बढ़ती जायेगी। तो जो विधियाँ अपनाते हो वह करनी जरूर हैं। अगर आपके कोई सहयोगी बन जाते और बनी-बनाई स्टेज आपको बड़े फंक्शन के लिए देते हैं तो बड़ा फंक्शन भी कर लेंगे और न बुद्धि का, न धन का बर्डन रहेगा। ऐसी कई संस्थाएं भी होती हैं, उन्हों को अपने सहयोगी बनाओ, यह ट्रॉयल करो। और अगर हिम्मत है तो एक बड़ा फंक्शन जरूर करो। हिम्मत नहीं है तो नहीं करना। बड़ा फंक्शन संस्था का बाला करता है। लेकिन डबल लाइट होकर करो। और यह लक्ष्य रखो कि अपनी एनर्जी लगाने के बजाए दूसरों की एनर्जी इस ईश्वरीय कार्य में लगावें। लक्ष्य रखो तो बहुत निमंत्रण मिलेंगे। किसी भी वर्ग के सहयोगी क्षेत्र हर छोटे-बड़े देश में मिल सकते हैं। वर्तमान समय ऐसी कई संस्थाएं हैं, जिनके पास एनर्जी है, लेकिन विधि नहीं आती यूज़ करने की। वह ऐसा सहयोग चाहती हैं। कोई ऐसा उन्हों को नजर नहीं आता। बड़े प्यार से आपको सहयोग देंगे, समीप आयेंगे। और आपकी 9 लाख प्रजा में भी वृद्धि हो जायेगी। कोई वारिस भी निकलेंगे, कोई प्रजा निकलेंगे। देखो, यहाँ भी पहले सहयोगी नब करके आये, ग्लोबल के कार्य के और अभी वारिस बन गये हैं। मेहमान बनकर आये और महान् बन गये तो ऐसी भी बहुत अच्छी-अच्छी समीप की आत्माए निकली हैं और आगे भी निकलेंगी। कुछ-न-कुछ करते रहो। लेकिन बापदादा बार-बार स्मृति दिला रहे हैं कि डबल लाइट होकर रहो। भारत में भी इसी विधि से स्नेह-मिलन करते-करते लास्ट में बड़ा फंक्शन ज़रूर करना। और भारत में तो प्रदर्शनी से भी अच्छी रिजल्ट निकलती है। छोटे-छोटे स्नेह-मिलन कर समीप लाओ और फिर बड़े फंक्शन में उन्हों को स्टेज पर लाओ। वह अपने अनुभव से कहें। आपको कहने की जरूरत नहीं पड़े। बड़े प्रोग्राम का प्रभाव अपना है।

स्नेह-मिलन का प्रभाव, सफलता अपनी है। स्नेह-मिलन है आत्मओं को धरनी को तैयार करना और बड़ा फंक्शन है – आवाज बुलंद करना। लेकिन यथा-शक्ति करो। ऐसे नहीं डॉयरेक्यान मिला है, कर तो नहीं सकते, मजबूरी से नहीं करो। समझा?

तीसरी बात:- स्व उन्नति के लिए पहले भी सुनाया - तीनों ही खाते अपने जमा करो। लेकिन उसके साथ-साथ बापदादा रिजल्ट में देख रहे हैं कि सेवा की वृद्धि के साथ-साथ जो निमित्त आत्माएं हैं, जिसको आप निमित्त सेवाधारी कहते हो, बापदादा टीचर

शब्द ज्यादा यूज़ नहीं करते। क्योंकि कहाँ-कहाँ टीचर समझने से नशा चढ़ जाता है। इसलिए निमित्त सेवाधारी कहते हैं। तो सेवा के साथ-साथ निमित्त सेवाधारियों के पुरूषार्थ की विधि में बहुत अच्छी प्रोग्रेस अर्थात् उन्नति होनी चाहिए। सेवा की जो स्पीड है उसमें समय के प्रमाण जो हो रहा है उसको तो बापदादा सदा अच्छा कहतो है लेकिन समय की गति और सेवा के संपूर्ण समाप्ति की स्टेज को देख बापदादा समझते हैं कि सेवाधारियों के पुरूषार्थ की विधि में अगर वृद्धि हो जाए तो सेवा की चार गुणा वृद्धि हो सकती है। इसलिए पहले वह सेवा भी बहुत आवश्यकता है। सेवा का समय अपना अलग निश्चित करो और पुरूषार्थ की वृद्धि का समय अलग निश्चित करो। सेवा के निमित्त आत्मओं में अभी विल पावर चाहिए। विल पावर बढ़ाने से औरों को भी बाप के आगे सहयोगी बनाए विल करा सकते हो। कई आत्माए आपके सहयोग के लिए चात्रक हैं। लेकिन अपनी शक्ति नहीं है। आपको अपनी शक्तियों की मदद विशेष देनी पड़ेगी। इसलिए निमित्त बने हुए सेवाधारियों में सर्वशक्तियों की पावर है लेकिन जितनी होनी चाहिए उतनी नहीं है। अपने प्रति यूज़ करने के कारण दूसरों को फुल शक्तियाँ नहीं दे सकते हैं। जैसे ब्रह्मा बाप ने लास्ट में शक्तियों की विल की, बच्चों को। उस विल से यह कार्य चल रहा है। आदि में धन की विल की जिससे यज्ञ स्थापन हुआ और अंत में शक्तियों की विल की जिससे यह सेवा वृद्धि को पा रही है। ब्रह्मा ने तो किया, फालों करने वाले तो बच्चे हैं ना। एक ब्रह्मा के विल से कितनी आत्माएं आई और आ रही है। अगर इतने सब निमित्त सेवाधारी भी ऐसे शक्तियों की विल आत्माओं प्रति करें तो क्या हो जाएगा, तो अभी यह आवश्यकता है। ऐसे नहीं कि अपने ही पुरूषार्थ में एनर्जी वेस्ट करें। चाहे अपनी उन्नति करनी भी पड़ती है लेकिन वेस्ट भी जाती है इसलिए समय की गति प्रमाण, सेवा की समाप्ति की गति प्रमाण सेवाधारियों की गति और अधिक चाहिए। अभी अपने को निमित्त बनाये। इसमें दूसरों को पहले आप नहीं करे। पहले अपने को पहले आप करे। और दिल से उमंग से समझें कि मुझे ``हे अर्जुन" बनना है। अर्जुन अर्थात् मास्टर ब्रह्मा। अवल अर्थात् अर्जुन। प्रोग्राम प्रमाण स्व-उन्नति के प्रोग्राम रखते आये हो लेकिन इस वर्ष बापदादा हर एक स्नेही आत्मा द्वारा स्नेह का प्रत्यक्षरूप दिल की प्रोग्रस चाहते हैं ना कि प्रोग्राम प्रमाण। जहाँ स्नेह होता है वहाँ कुर्बान करना मुहब्बत होता न कि मुश्किल होता है। सबकी दिल से यह उमंग हो तो सफलता होगी। अगर बाप से प्यार है तो बाप इस बार दिल के प्यार को देखेंगे। कुछ कुर्बान करना भी पड़ा तो क्या बड़ी

बात है। यह तो जानते हो सेवा में सफलता के लिए क्या कुर्बान करना चाहिए? इसके लिए भी समय तो चाहिए ना। सेवा भी जरूर करनी है। और स्व-उन्नति भी जरूर करनी है। इस बारी बापदादा अपने मिलने का समय देते हैं। रिजल्ट देखकर बापदादा प्रोग्राम बनायेंगे। ऐसे नहीं कि आयेंगे ही नहीं। जो इस वर्ष बापदादा से मिलने नहीं आ सकें हैं, चाहे देश वाहे, चाहे विदेश वाले उन्हें के प्रति आयेंगे। उसके लिए विधि क्या होगी वह भी सुनाते हैं। भारत वालें के लिए 5 दिन हर ग्रुप रिफ्रेश हो। बाकी एक दिल आना एक दिन जाना। इस विधि से भारतवासियों के 4 ग्रुप और विदेशियों के 3 ग्रुप होंगे। विदेशियों का तो 15 दिन का ही प्रोग्राम रहेगा। बापदादा हर ग्रुप में एक बार मिलेंगे। मुरली द्वारा और गुप से भी। बाकी जो समय बचेगा - उसमें विशेष सेवाधारियों का हो। चाहे विदेश वालों का भी एक ग्रुप हो लेकिन मधुबन में हो। बाकी 4 ग्रुप किस समय मधुबन की सैलवेशन प्रमाण हो सकते वह आप बनाओ। जैसे विदेशी दिसम्बर में फिर मार्च में आते हैं तो दो ग्रुप एक मास में, एक ग्रुप दूसरे मास में रख सकते हो। बाकी भारत का तो 18 जनवरी ही है। विदेशियों का शिव जयन्ति। सितंबर से नवंबर यह मास सेवा के बहुत अच्छे हैं। फुल फोर्स से सेवा करो। बाकी समय सेवाधारियों के ग्रुप बनाओ। लेकिन बापदादा की यही बात नहीं भूलना - प्रोग्रामा प्रामण प्रोग्रेस नहीं करना, दिल की प्रोग्रेस हो। दिल के उमंग से प्रोग्रेस की भटठी हो। स्वयं दृढ़ संकल्प करो। दृढ़ता रखो कि मुझे बदलना है। मुझे ``हे अर्जुन" बनना है। मास्टर ब्रह्मा बनना है।

चौथी बात:- सभी सेवास्थानों पर कम-से-कम 8 दिन अगर ज्यादा कर सकते हैं तो 15 दिन स्व-उन्नति की रिट्रीट वा स्नेह मिलन हर सेवाकेन्द्र चाहे अपना इंडिविजुअल करे, चाहे छोटे-छोटे स्थानों को मिलाकर करें। लेकिन हर गॉडली-स्टूडेंट को, हर ब्राह्मण आत्मा को यह स्व-उन्नति की रिट्रीट, स्नेह-मिलन या दिल से पुरूषार्थ की प्रगति का प्रोग्राम जरूर बनाना है। चारों ओर की ब्राह्मण-आत्माओं को यह चांस देना भी है और लेना भी है। बापदादा यह भी गुप्त राज सुना रहे हैं। जो विशेष दिल से प्रगति की भटठी करेंगे- उनको एक्स्ट्रा बापदादा की दुआओं की गिफ्ट मिलनी है। स्थूल गिफ्ट तो कोई बड़ी बात नहीं है - लेकिन विशेष उस आत्मा के प्रति, बापदादा के पास तो सेकण्ड-सेकण्ड की टी.वी. है ना। और एक ही समय पर सभी को देख सकते हैं। इसलिए जो दिल से प्रगति का संकल्प करेगा, प्रोग्रेस करेगा उसको विशेष दुआयें मिलेंगी। अनुभव करेंगे, वह दिन आप समझना विशेष दुआओं का है। मीटिंग

में भी यह नवीनता पहले करना। प्रोग्राम कुछ दिमाग के, कुछ सेवा के - लेकिन दिल के बनें। दिमाग की मात्रा ज्यादा है फिर रिजल्ट के बाद दूसरे वर्ष का नया प्रोग्राम बतायेंगे। पुरानों के लिए कोई नया प्लैन बाद में बनायेंगे अच्छा!

सदा अपने चेहरे और चलन में पवित्रता के रूहानियत की चमक वाले, सदा हर कदम में ब्रह्माचारी श्रेष्ठ आत्माएं, सदा अपने सेवा के सर्व खातों को भरपूर रखने वाले, सदा दिल से अपनी उन्नति का दृढ़ संकल्प करने वाले, सदा स्व-उन्नति प्रति स्वयं को नंबरवन आत्मा निमित्त बनाने वाले - ऐसे बाप के प्यारे और विशेष ब्रह्मा मां के प्यारे, आज मां का दिन मनाया है ना, तो ब्रह्मा मां के राजदुलारे बच्चों को ब्रह्मा मां की और विशेष और की भी दिल से याद-प्यार और नमस्ते।

मधुबन निवासियों से:-

मधुबन निवासियों को अच्छे और गोल्डन चांस मिलते हैं इसलिए ड्रामा अनुसार जिन्हें बार-बार गोल्डन चांस मिलते हैं उन्हें बापदादा बड़े-ते-बड़े चांसलर कहते हैं। सेवा का फल और बल दोनों ही प्राप्त होता है। बल भी मिल रहा है, वह बल सेवा कर रहा है, और फल सदा शक्तिशाली बनाए आगे बढ़ा रहा है। सबसे ज्यादा मुरलियाँ कौन सुनता है? मधुबन वाले। वो तो गिनती से मुरलियाँ सुनते हैं और आप सदा ही मुरलियाँ सुनते रहते हो। सुनने में भी नंबरवन हो और करने में? करने में भी वन नंबर हो या कभी टू हो जाता है? जो समीप होते हैं उन पर विशेष हुज्जत होती है तो बापदादा की भी विशेष हुज्जत है, करना ही है और नंबरवन करना है। किसी में भी नंबर पीछे नहीं। सब जमा के खाते नंबरवन फुल होने चाहिए। एक भी खाता जरा खाली नहीं होना चाहिए। जेसे मधुबन में सर्व प्राप्तियाँ - चाहे आत्मिक, चाहे शारीरिक सब नंबरवन मिलती है - ऐसे अब करने में सदा नंबरवन। वन की निशानी है हर बात में विन करना। अगर विन (विजयी) हैं तो वन जरूर हैं। विन कभी-कभी हैं तो नंबरवन नहीं। अच्छा- सेवा की मुबारकें सेवा के सर्टिफिकेट्स तो बहुत मिले हैं और कौन से सर्टिफिकेट लेने हैं? एक- अपने पुरुषार्थ में दिलपसंद हो, दूसरा- प्रभु पसंद हो और तीसरा- परिवार पसंद हो हो। यह तीनों सर्टिफिकेट हरेक को लेने हैं। ऐसे नहीं एक सर्टिफिकेट हो दिल-पसन्द का दूसरे न हों। तीनों ही चाहिए। तो बाप के पसंद कौन हैं? जो बाप ने कहा और किया। यह है प्रभु-पसंद का सर्टाफिकेट। और अपने पसंद अर्थात् जो आपकी दिल है वही बाप की दिल हो। अपने हद के दिल-पसंद नहीं लेकिन बाप की दिल सो मेरी दिल। जो बाप की दिल-पसंद वा मेरी दिल-पसंद इसको कहते हैं दिल-

पसंद का सर्टिफिकेट और परिवार की संतुष्टता का सर्टिफिकेट। तो यह तीनों सर्टिफिकेट लिए हैं? सर्टिफिकेट जो मिलता है उसमें वैरीफाय भी होता है। बड़ों से वैरीफाय भी करना पड़े बाप तो जल्दी राजी हो जाते लेकिन यह सबको रानी करना है। तो जो साथ रहते हैं उनसे सर्टिफिकेट को वैरीफाय करना पड़े। बाप तो ज्यादा रहमदिल है ना तो हाँ जी कह देंगे। अच्छा सभी की डिपार्टमेन्ट निर्विघ्न हैं स्वयं भी निर्विघ्न हैं? सेवा की खुशबू तो विश्व में भी है तो सूक्ष्म वतन तक भी है। अभी सिर्फ इन तीन सर्टिफिकेट को वैरीफाय करना। अच्छा!

2. भारतवासियों से:-

ऐसा अनुभव होता है कि सुखदाता बाप के साथ सुखी बच्चे बन गये हैं? बाप सुखदाता है तो बच्चे सुख स्वरूप होंगे ना? कभी दु:ख की लहर आती है? सुखदाता के बच्चों के पास दु:ख आ नहीं सकता। क्योंकि सुखदाता बाप का खज़ाना अपना खज़ाना हो गया है। सुख अपनी प्रॉपर्टी हो गई। सुख, शान्ति, शक्ति, खुशी - आपका खज़ाना है। बाप का खज़ाना सो आपका खाजाना हो गया। बालक सो मालिक हो ना! अच्छा। भारत भी कम नहीं है। हर ग्रुप में पहुँच जाते हैं। बाप भी खुश होते हैं। पांच हजार वर्ष खोये हुए फिर से मिल जाएं तो किनती खुशी होगी। अगर कोई 10-12 वर्ष भी खोया हुआ भी फिर से मिलता है तो कितनी खुशी होती है। और यह 5 हजार वर्ष बाप और बच्चे अलग हो गये और अब फिर से मिल गये। इसलिए बहुत खुशी है ना। सबसे ज्यादा खुशी किसके पास है? सभी के पास है। क्योंकि यह खुशी का खज़ाना इतना बड़ा है जो कितने भी लेवें, जितने भी लेंवे, अखुट है। इसीलिए हर एक अधिकारी आत्मा है। ऐसे हैं ना? संगमयुग को कौन-सा युग कहते हैं? संगमयुग खुशी का युग है। खज़ाने ही खज़ाने हैं, जितने खज़ाने चाहो उतना भर सकते हो। धनवान भव का, सर्व खज़ाने भव का वरदान मिला हुआ है। सर्व खज़ानों कार वरदान प्राप्त है। ब्राह्मण-जीवन में तो खुशियाँ-ही-खुशियाँ हैं। यह खुशी कभी गायब तो नहीं हो जाती है? माया चोरी तो नहीं करती है खज़ानों की? जो सावधान, होशियार होता है उकसा खज़ाना कभी कोई लूट नहीं सकता। जो थोड़ा-सा अलबेला होता है उसका खज़ाना लूट लेते हैं। आप तो सावधान हो ना या कभी-कभी सो जाते हो? कोई सो जाते हैं तो चोरी हो जाती है ना। अलबेले हो गये। सदा होशियार, सदा जागती ज्योति रहे तो माया की हिम्मत नहीं जो खज़ाना लूट कर ले जाऐ। अच्छा - जहाँ से भी आये हो सब पद्मापद्म भाग्यवान् हो! यही गीत गाते रहो - सब कुछ मिल गया। 21 जन्मों के लिए गारंटी है कि ये खज़ाने साथ रहेंगे। इतनी बड़ी गारंटी कोई दे नहीं सकता। तो यह गारंटी कार्ड ले लिया है ना! यह गारंटी कार्ड कोई रिवाजी आत्मा देने वाली नहीं है। दाता है, इसलिए कोई डर नहीं है, कोई शक नहीं है। अच्छा!

04-12-1991 सफल तपस्वी अर्थात् प्योरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी वाले

आज चारों ओर के तपस्वी बच्चों की याद बापदादा के पास पहुँच रही है। कोई साकार में सम्मुख याद का रिटर्न मिलन मना रहे हैं कोई बच्चे आकारी रूप में याद और मिलन का अनुभव कर रहे हैं। बापदादा दोनों ही रूप के बच्चों को देख रहे हैं। आज अमृतवेले बापदादा बच्चों की तपस्या का प्रत्यक्ष स्वरूप देख रहे थे। हर एक बच्चा अपने पुरूषार्थ प्रमाण तपस्या कर रहे हैं। लक्ष्य भी है और उमंग भी है। तपस्वी सभी हैं क्योंकि ब्राह्मण जीवन की विशेषता ही तपस्या है। तपस्या अर्थात् एक के लगन में मग्न रहना। सफल तपस्वी बहुत थोड़े हैं। पुरुषार्थी तपस्वी बहुत हैं। सफल तपस्वी की निशानी उनके सूरत और सीरत में प्योरिटी की पर्सनैलिटी और प्योरिटी की रॉयल्टी सदा स्पष्ट अनुभव होगी। तपस्या का अर्थ ही है मन-वचन-कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में अपवित्रता का अंश मात्र भी विनाश होना। नाम- निशान समाप्त होना। जब अपवित्रता समाप्त हो जाती है तो इस समाप्ति को ही सम्पन्न स्थिति कहा जाता है। सफल तपस्वी अर्थात् सदा-स्वत: पवित्रता की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी, हर बोल और कर्म से, दृष्टि और वृत्ति से अनुभव हो। प्योरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् संकल्प में भी कोई भी विकार टच न हो। जैसे ब्राह्मण जीवन में शारीरिक आकर्षण व शारीरिक टचिंग अपवित्रता मानते हो, ऐसे मन-बुद्धि में किसी विकार के संकल्प मात्र की आकर्षण व टचिंग, इसको भी अपवित्रता कहा जायेगा। पवित्रता की पर्सनैलिटी वाले, रॉयल्टी वाले मन-बुद्धि से भी इस बुराई को टच नहीं करते। क्योंकि सफल तपस्वी अर्थात् सम्पूर्ण वैष्णव। वैष्णव कभी बुरी चीज को टच नहीं करते हैं। तो उन्हों का है स्थूल, आप ब्राह्मण वैष्णव आत्माओं का है सूक्ष्म। बुराई को टच न करना यही तपस्या है। धारण करना अर्थात् ग्रहण करना। ये तो बहुत मोटी बात है। लेकिन संकल्प में भी टच नहीं करना। इसको ही कहा जाता है सच्चे वैष्णव।
सिर्फ याद के समय याद में रहना इसको तपस्या नहीं कहा जाता। तपस्या अर्थात् प्योरिटी के पर्सनैलिटी और रॉयल्टी का स्वयं भी अनुभव करना और औरों को भी

अनुभव कराना। सफल तपस्वी का अर्थ ही है विशेष महान आत्मा बनना। विशेष आत्माओं वा महान आत्माओं को देश की वा विश्व की पर्सनैलिटीज़ कहते हैं। पवित्रता की पर्सनैलिटी अर्थात् हर कर्म में महानता और विशेषता। पर्सनैलिटी अर्थात् सदा स्वयं की और औरों की सेवा में सदा बिज़ी रहना अर्थात् अपनी इनर्जा, समय, संकल्प वेस्ट नहीं गँवाना, सफल करना। इसको कहेंगे पर्सनैलिटी वाले। पर्सनैलिटी वाले कभी भी छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिज़ी नहीं रखते हैं। तो अपवित्रता की बातें आप श्रेष्ठ आत्माओं के आगे छोटी हैं या बड़ी हैं? इसलिए तपस्वी अर्थात् ऐसी बातों को सुनते हुए नहीं सुनें, देखते हुए नहीं देखें। ऐसा अभ्यास किया है? ऐसी तपस्या की है? वा यही सोचते हो चाहते तो नहीं हैं, लेकिन दिखाई दे देता है, सुनाई दे देता है? जैसे कोई चीज़ से आपका कनेक्शन ही नहीं हैं, उन चीजों को देखते हुए नहीं देखते हो ना। जैसे रास्ते पर जाते हो, कहीं कुछ दिखाई देता है परन्तु आपके मतलब की कोई बात नहीं है, तो देखते हुए नहीं देखेंगे ना। साइड सीन समझ कर पार कर लेंगे ना? ऐसे जो बातें सुनते हो, देखते हो, आपके काम की नहीं हैं, तो सुनते हुए नहीं सुनो, देखते हुए न देखो। अगर मन-बुद्धि में धारण किया, कि ये ऐसे हैं, ये वैसे हैं... इसको कहा जायेगा व्यर्थ बुराई को टच किया अर्थात् सच्चा वैष्णवपन सम्पूर्ण रूप से नहीं है। प्योरिटी के पर्सनैलिटी में परसेन्टेज कम अर्थात् तपस्या की परसेन्टेज कम। तो समझा तपस्या क्या है?

इसी विधि से अपने आपको चेक करो- तपस्या वर्ष में तपस्या का प्रत्यक्ष स्वरूप प्योरिटी की पर्सनैलिटी अनुभव करते हो? पर्स-नैलिटी कभी छिप नहीं सकती। प्रत्यक्ष दिखाई जरूर देती है। जैसे साकार ब्रह्मा बाप को देखा- प्योरिटी की पर्सनैलिटी कितनी स्पष्ट अनुभव करते थे। ये तपस्या के अनुभव की निशानी अब आप द्वारा औरों को अनुभव हो। सूरत और सीरत देनों द्वारा अनुभव करा सकते हो। अभी भी कई लोग अनुभव करते भी हैं। लेकिन इस अनुभव को और स्वयं द्वारा औरों में फैलाओ। आज पर्सनैलिटी का सुनाया। फिर रॉयल्टी का सुनायेंगे।

सभी मिलन मनाने आये हैं। तो बापदादा भी मिलन मनाने के लिए आप जैसे व्यक्त शरीर में आते हैं। समान बनना पड़ता है ना। आप साकार में हो तो बाप को भी साकार तन का आधार लेना पड़ता है। वैसे आपको व्यक्त से अव्यक्त बनना है या अव्यक्त को व्यक्त बनना है? कायदा क्या कहता है? अव्यक्त बनना है ना? तो फिर अव्यक्त को व्यक्त में क्यों लाते हो? जब आपको भी अव्यक्त ही बनना है तो अव्यक्त को तो

अव्यक्त ही रहने दो ना। अव्यक्त मिलन के अनुभव को बढ़ाते चलो। अव्यक्त भी ड्रामा अनुसार व्यक्त में आने के लिए बांधे हुए हैं लेकिन समय प्रमाण सरकमस्टांस प्रमाण अव्यक्त मिलन का अनुभव बहुत काम में आने वाला है। इसलिए इस अनुभव को इतना स्पष्ट और सहज करते जाओ, जो समय पर यह अव्यक्त मिलन साकार समान ही अनुभव हो। समझा - उस समय ऐसे नहीं कहना कि हमको तो अव्यक्त से व्यक्त में मिलने की आदत है । जैसा समय वैसे मिलन मना सकते हो। समझा!

जो भी जहाँ से भी आये हो इस समय सभी मधुबन निवासी हो। या अपने को महाराष्ट्र निवासी, उड़ीसा निवासी... समझते हो? ओरिजनल तो मधुबन निवासी हो। यह सेवा अर्थ भिन्न-भिन्न स्थान पर गये हो, ब्राह्मण अर्थात् मधुबन निवासी। सेवा स्थान पर गये हो इसीलिए सेवा स्थान को मेरा यही स्थान है - यह कभी भी नहीं समझना। कई बच्चे ऐसे कहते हैं, इसको चेंज करो तो कहते हैं नहीं, हमको पंजाब में वा उड़ीसा में ही भेजो। तो ओरिजनल पंजाब, उड़ीसा के हो वा मधुबन के हो । फिर क्यों कहते हो हम पंजाब के हैं तो पंजाब में ही भेजो, गुजरात के हैं तो गुजरात में ही भेजो? चेंज होने में तैयार हो? टीचर्स सभी तैयार हो? किसी को कहाँ भी चेंज करें, तैयार हैं? देखो, दादी सभी को सर्टिफिकेट ना का दे रही है। अच्छा यह भी अप्रैल में करेंगे। जो चेंज होने के लिए तैयार हों वही मिलने आवें। सेन्टर पर जाकर सोचेंगे यदि नहीं रहेंगे कि इसका क्या होगा, मेरा क्या होगा..? थोड़ा बहुत कुछ किनारा भी करेंगी। बापदादा से तपस्या की प्राइज़ लेने चाहते हो और बापदादा को तपस्या की प्राइज़ देने भी चाहते हो, या सिर्फ लेने चाहते हो? सभी सेन्टर से सरेन्डर होकर आना। नये मकान में आसक्ति है क्या? मेहनत करके बनाया है ना, जहाँ मेरापन है वहाँ तपस्या किसको कहा जायेगा? तपस्या अर्थात् तेरा और तपस्या भंग होना माना मेरा। समझा - ये तो सब छोटी-छोटी टीचर्स हैं कहेंगी हर्जा नहीं यहाँ से वहाँ हो जायेंगी। बड़ों को थोड़ा सोचना पड़ता। अच्छा - जो सेन्टर पर आने वाले हैं वो भी सोचते होंगे हमारी टीचर चली जायेगी, आप सभी भी एवररेडी हो? कोई भी कहाँ भी चली जाये। वा कहेंगे हमको तो यही टीचर चाहिए? जो समझते हैं कि कोई भी टीचर मिले उसमें राज़ी हैं वह हाथ उठावें। कोई भी टीचर मिले बापदादा जिम्मेवार है, दादी दीदी जिम्मेवार है, वह हाथ उठायें। अभी ये टी.वी. में तो निकाला है ना। सभी के फोटो टी.वी. में निकाल लो फिर देखेंगे। अन्तिम पेपर का क्वेश्चन ही यह आना है - नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। तो अन्तिम पेपर के लिए तो सभी तैयार होना ही है । रिहर्सल करेंगे ना, ज़ोन हेड को भी चेंज

करेंगे। पाण्डवों को भी चेंज करेंगे। आपका है ही क्या ? बापदादा ने दिया और बापदादा ने लिया। अच्छा- सभी एवररेडी हैं इसलिए अभी सिर्फ हाथ उठाने की मुबारक हो।

चारों ओर के सफल तपस्वी आत्माओं को, सदा प्योरिटी के पर्सनैलिटी में रहने वाली, सदा प्योरिटी के रॉयल्टी में रहने वाली, सदा सच्चे सम्पूर्ण वैष्णव आत्मायें, सदा समय प्रमाण स्वयं को परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक, ऐसे सदा योगी, सहज योगी, स्वत: योगी, महान आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से मुलाकात

1- सभी तपस्वी आत्माएं हैं - ऐसे अनुभव करते हो? तपस्या अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई। ऐसे है या दूसरा कोई है अभी भी कोई है? कोई व्यक्ति या कोई वैभव? एक के सिवाए और कोई नहीं या थोड़ा-थोड़ा लगाव है? निमित्त बनवर सेवा करना वह और बात है लेकिन लगाव जहाँ भी होगा, चाहे व्यक्ति में, चाहे वैभव में, तो लगाव की निशानी है, वहाँ बुद्धि जरूर जायेगी। मन भागेगा जरूर। तो चेक करो कि सारे दिन में मन और बुद्धि कहाँ-कहाँ भागती है? सिवाए बाप और सेवा के और कहाँ तो मन-बुद्धि नहीं जाती? अगर जाती है तो लगाव है। अगर व्यवहार भी करते हो, जो भी करते हो, वो भी ट्रस्टी बनकर। मेरा नहीं, तेरा। मेरा काम है, मुझे ही देखना पड़ता है.. मेरी जिम्मेवारी है.. ऐसे कहते हो कभी? क्या करें, मेरी जिम्मेवारी है ना, निभाना पड़ता है ना, करना पड़ता है ना, कहते हो कभी? या तेरा तेरे अर्पण, मेरा कहाँ से आया? तो यह बोल भी नहीं बोल सकते हो? मुझे ही देखना पड़ता है, मुझे ही करना पड़ता है, मेरा ही है, निभाना ही पड़ेगा...। मेरा कहा और बोझ हुआ। बाप का है, बाप करेगा, मैं निमित्त हूँ तो हल्के। बोझ उठाने की आदत तो नहीं है? 63 जन्म बोझ उठाया ना। कइयों की आदत होती है बोझ उठाने की। बोझ उठाने बिना रह नहीं सकते। आदत से मजबूर हो जाते हैं। मेरा मानना माना बोझ उठाना। समझा। थोड़ा सा किनारा करके रखा है, समय पर काम में आयेगा?। पाण्डवों ने थोड़ा बैंक बैलेन्स, थोड़ा जेब खर्च रखा है? जरा भी मेरापन नहीं। मेरा माना मैला। जहाँ मेरापन होगा ना वहाँ विकारों का मैलापन जरूर होगा। तेरा है तो क्या होगा? तैरते रहेंगे, डूबेंगे नहीं। तैरने में तो मजा आता है ना! तो तपस्या अर्थात् तेरा, मेरा नहीं। अच्छा- ये इस्टर्न ज़ोन है। सूर्य उदय होता है ना। तो इस्टर्न ज़ोन वालों के पास बाप के साथ का यादगार सूर्य सदा ही

चमकता है ना। सभी तपस्या में सफलता को प्राप्त कर रहे हो ना। तपस्या में सन्तुष्ट हो? अपने चार्ट से सन्तुष्ट हो? या अभी होना है? यह भी एक लिफ्ट की गिफ्ट है। गिफ्ट जो होती है उसमें खर्चा नहीं करना पड़ता, खरीदने की मेहनत नहीं करनी पड़ती। एक तो है अपना पुरूषार्थ और दूसरा है विशेष बाप द्वारा गिफ्ट मिलना। तो तपस्या वर्ष एक गिफ्ट है, सहज अनुभूति की गिफ्ट। जितना जो करना चाहे कर सकता है। मेहनत कम, निमित्त मात्र और प्राप्ति ज्यादा कर सकते हैं। अभी भी समय है, वर्ष पूरा नहीं हुआ है। अभी भी जो लेने चाहो ले सकते हो। इसलिए सफलता का सूर्य इस्ट में जगाओ। सदा सभी खुश हैं या कभी-कभी कुछ बातें होती तो नाखुश भी होते हो? खुशी बढ़ती जाती है, कम तो नहीं होती है? मायाजीत हो या माया रंग दिखा देती है? वह कितना भी रंग दिखाये, मैं मायापति हूँ। माया रचना है, मैं मास्टर रचयिता हूँ। तो खेल देखो लेकिन खेल में हार नहीं खाओ। कितना भी माया अनेक प्रकार का खेल दिखाये, आप देखने वाले मनोरंजन समझकर देखो। देखते-देखते हार नहीं जाओ। साक्षी होकर के, न्यारे होकर के देखते चलो। सभी तपस्या में आगे बढ़ने वाले, गिफ्ट लेने वाले हो? सेवा अच्छी हो रही है? स्वयं के पुरूषार्थ में उड़ रहे हैं और सेवा में भी उड़ रहे हैं। सभी फर्स्ट हैं। सदा फर्स्ट रहना, सेकेण्ड में नहीं आना। फर्स्ट रहेंगे तो सूर्यवंशी बनेंगे, सेकेण्ड बनें तो चन्द्रवंशी। फर्स्ट नम्बर मायाजीत होंगे। कोई समस्या नहीं, कोई प्रॉब्लम नहीं, कोई क्वेश्चन नहीं, कोई कम-जोरी नहीं। फर्स्ट नम्बर अर्थात् फास्ट पुरूषार्थ। जिसका फास्ट पुरूषार्थ है वो पीछे नहीं हो सकता। सदा साक्षी और सदा बाप के साथी - यही याद रखना।

2- सदा अपने को सहजयोगी, सहज ज्ञानी समझते हो? सहज है या मेहनत है? जब माया बड़े रूप में आती है तो मुश्किल नहीं लगता? मधुबन में बैठे हो तो सहज है, वहाँ प्रवृत्ति में रहते जब माया आती है फिर मुश्किल लगता है? कभी-कभी क्यों लगता है, उसका कारण? मार्ग कभी मुश्किल, कभी सहज है - ऐसे नहीं कहेंगे। मार्ग सदा सहज है, लेकिन आप कमज़ोर हो जाते हो इसी-लिए सहज भी मुश्किल लगता है। कमज़ोर के लिए कोई छोटा सा भी कार्य भी मुश्किल लगता है। अपनी कमज़ोरी मुश्किल बना देती है, बाकी मुश्किल है नहीं। कमज़ोर क्यों होते हैं? क्योंकि कोई न कोई विकारों के संग दोष में आ जाते हैं। सत का संग किनारे हो जाता है और दूसरा संग दोष लग जाता है। इसलिए भक्ति में भी कहते हैं कि सदा सतसंग में रहो। सतसंग अर्थात् सत बाप के संग में रहना। तो आप सदा सतसंग में रहते हो या और संग में भी

चक्कर लगाते हो? सतसंग की कितनी महिमा है! और आप सबके लिए सत बाप का संग अति सहज है। क्योंकि समीप का सम्बन्ध है। सबसे समीप सम्बन्ध है बाप और बच्चे का। यह सम्बन्ध सहज भी है और साथ-साथ प्राप्ति कराने वाला भी है। तो आप सभी सदा सतसंग में रहने वाले सहज योगी, सहज ज्ञानी है। सदैव यह सोचो कि हम औरों की भी मुश्किल को सहज करने वाले हैं। जो दूसरों की मुश्किल को सहज करने वाला होता वह स्वयं मुश्किल में नहीं आ सकता। अच्छा सेवा में क्वालिटी है या क्वान्टिटी है? क्वालिटी वालों की निशानी क्या होती है?

क्वालिटी वाली आत्मा की निशानी है - वह आते ही अपनापन महसूस करेगी। उसको ये स्मृति स्पष्ट होगी कि मैं इसी परिवार का था और पहुँच गया हूँ। अपनेपन से निश्चय में या पुरूषार्थ में देरी नहीं लगेगी। वह अपने परिवार को परख लेगा, अपने बाप को पह-चान लेगा। तो अपनेपन का अनुभव होना ये पुरूषार्थ में क्वालिटी की निशानी है। सिर्फ नाम या धन में क्वालिटी नहीं, उसको सिर्फ क्वालिटी नहीं कहा जाता है, लेकिन पुरूषार्थ की भी क्वालिटी उसमें हो और जिसका अटल निश्चय पक्का रहता है, उसका प्रभाव स्वत: ही औरों पर पड़ता है। अपनापन होने के कारण उसको सब सहज अनुभव होगा। इसलिए तीव्र अर्थात् फास्ट जायेगा। जहाँ अपनापन होता है वहाँ कोई भी काम मुश्किल नहीं लगता है। तो ऐसी क्वालिटी वाली आत्मायें और ज्यादा से ज्यादा निकालो। समझा। आप सब तो क्वालिटी वाली आत्माएं हो ना। वृद्धि को प्राप्त कर रहे हो और आगे भी करते रहेंगे। पहले स्व के पुरूषार्थ में वृद्धि, फिर सेवा में। तो देनों बातों में सदा ही वृद्धि को प्राप्त करते, उड़ते चलो। अच्छा। माताओं को बहुत खुशी है या कभी-कभी दु:ख की लहर भी आ जाती है? कुछ भी हो जाये, दु:ख की लहर तो नहीं आती है? संकल्प में भी दु:ख की महसूसता नहीं हो। सुखदाता के बच्चे हो ना। सुखदाता के बच्चों के पास दु:ख की लेशमात्र भी नहीं आ सकती। स्वप्न में भी नहीं आ सकती। ऐसे सुखदायी आत्मा हो? क्या भी हो जाये दु:ख नहीं हो सकता। सुख में रहने वाले और सुख देने वाले। दु:ख की दुनिया को छोड़ दिया।

3- डबल विदेशी बताओ - आपका इस आबू पर्वत पर कौन सा यादगार है? अच्छा भारतवासी सुनाओ आपका यादगार कौन सा है? अच्छा - भारतवासियों का यादगार अचलगढ़ है और डबल विदेशियों का यादगार दिलवाला है? या देनों ही यादगार देनों के हैं? अचलगढ़ कौन बन सकता है? जिसने दिलाराम को अपना बना लिया, वही अचल बन सकता है। इसलिए देनों ही यादगार बहुत कायदे प्रमाण बने हुए हैं। अगर

दिलवाला बाप को अपना नहीं बनाया तो अचल की बजाए हलचल होती है। कोई भी चीज में हलचल होती रहे तो वह टूट जायेगी और जो अचल होगी वो सदा कायम रहेगी। तो सदैव ये स्मृति में रखो कि हम दिलवाला बाप को दिल देने वाली अचल आत्मायें हैं। ये मेरा यादगार है - हरेक अनुभव करे। ऐसे नहीं - ये ब्रह्मा बाप का या महारथियों का है। नहीं, मेरा यादगार है। देखो ड्रामानुसार अपने यादगार स्थान पर ही पहुँच गये। नहीं तो पाकिस्तान से आबू में आना - यह तो स्वप्न में भी नहीं आ सकता था। लेकिन ड्रामा में यादगार यहीं था तो कैसे पहुँच गये हैं। अपने ही यादगार को देख हर्षित होते रहते हो। अचल रहना - कोई मुश्किल बात नहीं है। कोई भी चीज को हिलाते रहो तो मेहनत भी और मुश्किल भी। सीधा रख दो तो वह सहज है। ऐसे ही मन-बुद्धि द्वारा हलचल में आना कितना मुश्किल होता है और मन बुद्धि एकाग्र हो जाती है तो कितना सहज होता है। अभी हलचल में आना पसन्द ही नहीं करेंगे। अच्छा नहीं लगेगा। आधाकल्प हलचल में आते थक गये। तन की भी हलचल, मन की भी हलचल, धन की भी हलचल। तन से भी भटकते रहे। कभी किस मन्दिर में। कभी किस यात्रा पर, तो कभी किस यात्रा पर और मन परेशानियों में, हलचल में आते रहा और धन में तो देखो- कभी लखपति तो कभी कखपति। तो अनेक जन्मों की हलचल का अनुभव होने के कारण अभी अचल अवस्था अति प्रिय लगती है। इसीलिए दूसरों के ऊपर रहम आता है। शुभ भावना, शुभ कामना उत्पन्न होती है कि ये भी अचल हो जाये। अचल स्थिति वालों का विशेष गुण होगा - रहमदिल। सदा हर एक आत्मा के प्रति दातापन की भावना। ऐसे मास्टर दाता बने हो कि दूसरे को देखकर घृणा आती है? रहम आता है, दया भाव आता है, दातापन की स्मृति आती है? या क्यों क्या उत्पन्न है? आप सबका विशेष टाइटल है - विश्व कल्याणकारी। जो विश्व कल्याणकारी है उसको हर आत्मा के प्रति कल्याण की भावना होगी। उसके अन्दर स्वत: ही किसी आत्मा के प्रति भी घृणा भाव, द्वेष भाव, ईर्ष्या भाव या ग्लानि का भाव कभी उत्पन्न नहीं होगा। इसको कहा जाता है विश्व कल्याणकारी आत्मा। तो ऐसे हो? या कभी-कभी दूसरे भाव भी आ जाते हैं? बस, सदा कल्याण का भाव हो।

07-03-1993 होली मनाना अर्थात् हाइएस्ट और होलिएस्ट बनना

आज बापदादा अपने सर्व हाइएस्ट और होलीएस्ट बच्चों को देख रहे हैं। सभी बच्चे इस बेहद के ड्रामा के अन्दर वा सृष्टि-चक्र के अन्दर सबसे हाइएस्ट भी हो और सबसे ज्यादा होलीएस्ट भी हो। आदि से अब संगम समय तक देखो कि आप आत्माओं से कोई हाइएस्ट श्रेष्ठ बना है? जितना आप श्रेष्ठ स्थिति को, श्रेष्ठ पद को प्राप्त करते हो इतना और कोई भी आत्मायें, चाहे धर्म-पितायें हैं, चाहे महान आत्मायें हैं-कोई भी इतना श्रेष्ठ नहीं रहे। क्योंकि आप ऊंचे ते ऊंचे भगवान द्वारा डायरेक्ट पालना, पढ़ाई और श्रेष्ठ जीवन की श्रीमत लेने वाली आत्मायें हो। जानते हो ना अपने को? अपने अनादि काल को देखो-अनादि काल में भी परमधाम में बाप के समीप रहने वाली हो। अपना स्थान याद है ना? तो अनादि काल में भी हाइएस्ट हो, समीप, साथ हो और आदिकाल में भी सृष्टि-चक्र के सतयुग काल में देव-पद प्राप्त करने वाली आत्मायें हो। देव आत्माओं का समय 'आदिकाल' भी सर्वश्रेष्ठ है और साकार मनुष्य जीवन में सर्व प्राप्ति सम्पन्न, श्रेष्ठ हो। सृष्टि-चक्र के अन्दर ये देव पद अर्थात् देवता जीवन ही ऐसी जीवन है जहाँ तन, मन, धन, जन-चारों ही प्रकार की सर्व प्राप्तियां प्राप्त हैं। अपनी दैवी जीवन याद है? कि भूल गये हो? अनादि काल भी याद आ गया, आदि काल भी याद आ गया! अच्छी तरह से याद करो। तो दोनों समय में हाइएस्ट हो ना! उसके बाद मध्य काल में आओ। तो द्वापर में आप आत्माओं के जड़ चित्र बनते हैं अर्थात् पूज्य आत्मायें बनते हैं। पूज्य में भी देखो-सबसे विधिपूर्वक पूजा देव आत्माओं की होती है। आप सबके मन्दिर बने हैं। डबल विदेशियों के मन्दिर बने हुए हैं? कि सिर्फ भारतवासियों के बनते हैं? बने हुए हैं ना! जैसे देव आत्माओं की पूजा होती है ऐसे और किसी आत्माओं की पूजा नहीं होती। कोई महात्मा वगैरह को मन्दिर में बिठा भी देते हैं, लेकिन ऐसे भावना और विधिपूर्वक हर कर्म की पूजा हो-ऐसी पूजा नहीं होती। तो मध्य काल में भी पूज्य रूप में श्रेष्ठ हो, हाइएस्ट हो। अब अन्त में आओ-अब संगमयुग पर भी ऊंचे ते ऊंचे ब्राह्मण आत्मायें 'ब्राह्मण सो फरिश्ता' आत्मायें बनते हो। तो अनादि, आदि, मध्य और अन्त-हाइएस्ट हो गये ना। है इतना नशा? रूहानी

नशा है ना! अभिमान नहीं लेकिन स्वमान है, स्वमान का नशा है। स्व अर्थात् आत्मा का, श्रेष्ठ आत्मा का रूहानी नशा है। तो सारे चक्र में हाइएस्ट भी हो और साथ-साथ होलीएस्ट भी हो। चाहे और आत्मायें भी होली अर्थात् पवित्र बनती हैं लेकिन आपकी वर्तमान समय की पवित्रता और फिर देवता जीवन की पवित्रता सभी से श्रेष्ठ और न्यारी है। इस समय भी सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् होली बनते हो।

सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा बहुत श्रेष्ठ है और सहज भी है। सम्पूर्ण पवित्रता का अर्थ ही है-स्वप्न-मात्र भी अपवित्रता मन और बुद्धि को टच नहीं करे। इसी को ही कहा जाता है सच्चे वैष्णव। चाहे अभी नम्बरवार पुरुषार्थी हो लेकिन पुरूषार्थ का लक्ष्य सम्पूर्ण पवित्रता का ही है। और सहज पवित्रता को धारण करने वाली आत्मायें हो। सहज क्यों है? क्योंकि हिम्मत बच्चों की और मदद सर्वशक्तिवान बाप की। इसलिए मुश्किल वा असम्भव भी सम्भव हो गया है और नम्बरवार हो रहा है। तो होली अर्थात् पवित्रता की भी श्रेष्ठ स्थिति का अनुभव आप ब्राह्मण आत्माओं को है। सहज लगती है या मुश्किल लगती है? सम्पूर्ण पवित्रता मुश्किल है या सहज है? कभी मुश्किल, कभी सहज? सम्पूर्ण बनना ही है-ये लक्ष्य है ना। लक्ष्य तो हाइएस्ट है ना! कि लक्ष्य ही ढीला है कि-कोई बात नहीं, सब चलता है? नहीं। यह तो नहीं सोचते हो-थोड़ा-बहुत तो होता ही है? ये तो नहीं सोचते-''थोड़ा तो चलता ही है, चला लो, किसको क्या पता पड़ता है, कोई मन्सा तो देखता ही नहीं है, कर्म में तो आते ही नहीं हैं?'' लेकिन मन्सा के वाय-ब्रेशन्स भी छिप नहीं सकते। चलाने वाले को बापदादा अच्छी तरह से जानते हैं। ऐसे आउट नहीं करते, नहीं तो नाम भी आउट कर सकते हैं। लेकिन अभी नहीं करते। चलाने वाले स्वयं ही चलते-चलते, चलाते-चलाते त्रेता तक पहुँच जायेंगे। लेकिन लक्ष्य सभी का सम्पूर्ण पवित्रता का ही है।

सारे चक्र में देखो-सिर्फ देव आत्मायें हैं जिनका शरीर भी पवित्र है और आत्मा भी पवित्र है। और जो भी आये हैं-आत्मा पवित्र बन भी जाये लेकिन शरीर पवित्र नहीं होगा। आप आत्मायें ब्राह्मण जीवन में ऐसे पवित्र बनते हो जो शरीर भी, प्रकृति भी पवित्र बना देते हो। इसलिए शरीर भी पवित्र है तो आत्मा भी पवित्र है। लेकिन वो कौनसी आत्मायें हैं जो 'शरीर' और 'आत्मा'-दोनों से पवित्र बनती हैं? उन्हों को देखा है? कहाँ हैं वो आत्मायें? आप ही हो वो आत्मायें! आप सभी हो या थोड़े हैं? पक्का है ना कि हम ही थे, हम ही बन रहे हैं। तो हाइएस्ट भी हो और होलीएस्ट भी हो। दोनों ही

हो ना! कैसे बने? बहुत अलौकिक रूहानी होली मनाने से होली बने। कौनसी होली खेली है जिससे होलीएस्ट भी बने हो और हाइएस्ट भी बने हो?

सबसे अच्छे ते अच्छा श्रेष्ठ रंग कौनसा है? सबसे अविनाशी रंग है-बाप के संग का रंग। जैसा संग होता है ना, वैसा रंग लगता है। आपको किसका रंग लगा? बाप का ना! तो बाप के संग का रंग जितना पक्का लगता है उतना ही होली बन जाते हो, सम्पूर्ण पवित्र बन जाते हो। संग का रंग तो सहज है ना! संग में रहो, रंग आपेही लग जायेगा, मेहनत करने की भी आवश्यकता नहीं। संग में रहना आता है? कि डबल विदेशियों को अकेला रहना, अकेलापन महसूस करना जल्दी आता है? कभी-कभी कम्पलेन आती है ना कि मैं अपने को एलोन (अकेला) महसूस करती हूँ। क्यों अकेले रहते हो? क्यों अकेलापन महसूस करते हो? आदत है, इसलिए? ब्राह्मण आत्माए एक सेकेण्ड भी अकेले नहीं हो सकतीं। हो सकती हैं? (नहीं) होना नहीं है लेकिन हो जाते हो! बापदादा ने स्वयं अपना साथी बनाया, फिर अकेले कैसे हो सकते हो! कई बच्चे कहते हैं कि बाप को 'कम्पेनियन' (साथी) तो बनाया है लेकिन सदा कम्पनी (साथ) नहीं रहती। क्यों? कम्पेनियन बनाया है, इसमें तो ठीक हैं। सभी से पूछेंगे-आपका कम्पेनियन कौन है? तो बाबा ही कहेंगे ना।

बापदादा ने देखा कि जब कम्पेनियन बनाने से भी काम नहीं चलता, कभी-कभी फिर भी अकेले हो जाते हो। अभी और क्या युक्ति अपनायें? कम्पेनियन बनाया है लेकिन कम्बाइन्ड नहीं बने हो। कम्बाइन्ड-स्वरूप कभी अलग नहीं होता। कम्पेनियन से कभी-कभी फ्रेंडली क्वरल (Quarrel-झगड़ा) भी हो जाता है तो अलग हो जाते हो। कभी-कभी कोई ऐसी बात हो जाती है ना, तो बाप से अकेले बन जाते हो। तो कम्पेनियन तो बनाया है लेकिन कम्पेनियन को कम्बाइन्ड रूप में अनुभव करो। अलग हो ही नहीं सकते, किसकी ताकत नहीं जो मुझ कम्बाइन्ड रूप को अलग कर सके-ऐसा अनुभव बार-बार स्मृति में लाते-लाते स्मृतिस्वरूप बन जाओ। बार-बार चेक करो कि कम्बाइन्ड हूँ, किनारा तो नहीं कर लिया? जितना कम्बाइन्ड-रूप का अनुभव बढ़ाते जायेंगे उतना ब्राह्मण जीवन बहुत प्यारी, मनोरंजक जीवन अनुभव होगी। तो ऐसी होली मनाने आये हो ना। कि सिर्फ रंग की होली मनाकर कहेंगे कि होली हो गई? सदैव याद रखो-संग के रंग की होली से होलीएस्ट और हाइएस्ट सहज बनना है। मुश्किल नहीं, सहज। पर-मात्म-संग कभी मुश्किल का अनुभव नहीं कराता। बापदादा को भी बच्चों का मेहनत या मुश्किल अनुभव करना अच्छा नहीं लगता। मास्टर सर्वशक्तिवान

वा सर्वशक्तिवान के कम्बाइन्ड-रूप और फिर मुश्किल कैसे हो सकती! जरूर कोई अलबेलापन वा आलस्य वा पुरानी पास्ट लाइफ के संस्कार इमर्ज होते हैं तब मुश्किल अनुभव होता है। जब मरजीवा बन गये तो पुराने संस्कार की भी मृत्यु हो गयी, पुराने संस्कार इमर्ज हो नहीं सकते। बिल्कुल भूल जाओ-ये पुराने जन्म के हैं, ब्राह्मण जन्म के नहीं हैं। जब पुराना जन्म समाप्त हुआ, नया जन्म धारण किया तो नया जन्म, नये संस्कार।

अगर माया पुराने संस्कार इमर्ज कराती भी है तो सोचो-अगर कोई दूसरे की चीज आपको आकर के देवे तो आप क्या करेंगे? रख देंगे? स्वीकार करेंगे? सोचेंगे ना कि ये हमारी चीज नहीं है, ये दूसरे की चीज मैं कैसे ले सकता हूँ? अगर माया पुराने जन्म के संस्कार इमर्ज करने के रूप में आती भी है तो आपकी चीज तो आई नहीं। सोचो-ये मेरी चीज नहीं है, ये पराई है। पराई चीज को संकल्प में भी अपना नहीं मान सकते हो। मान सकते हैं? सोचो-पराई चीज जरूर धोखा देगी, दु:ख देगी। सोचकर के उसी सेकेण्ड पराई चीज को छोड़ दो, फेंक दो अर्थात् बुद्धि से निकाल दो। पराई चीज को अपनी बुद्धि में रख नहीं लो। नहीं तो परेशान करते रहेंगे। सदा ये सोचो कि-ब्राह्मण जीवन में बाप ने क्या-क्या दिया, ब्राह्मण जीवन का अर्थात् मेरा निजी स्वभाव, संस्कार, वृति, दृष्टि, स्मृति क्या है? ये निजी है, वो पराई है। पराया माल अच्छा लगता है कि अपना माल अच्छा लगता है? ये रावण का माल है और ये बाप का माल है-कौनसा अच्छा लगता है? कभी भी गलती से भी संकल्प में भी नहीं लाओ-''क्या करें, मेरा स्वभाव ऐसा है, मेरा संस्कार ऐसा है? क्या करें, संस्कार को मिटाना बहुत मुश्किल है।'' आपका है ही नहीं। मेरा क्यों कहते हो? मेरा है ही नहीं। रावण की चीज को मेरा कहते हो! मेरा बनाते हो ना, तब ही वो संस्कार भी समझते हैं कि इसने अपना तो बना लिया, तो अब अच्छी तरह से खातिरी करो। निजी संस्कार, निजी स्वभाव इमर्ज करो तो वह स्वत: ही मर्ज हो जायेंगे। समझा, क्या करना है?

तो ऐसी होली मनाने आये हो ना। वो एक दिन कहेंगे-होली है; दूसरे दिन कहेंगे-होली हो गई। और आप क्या कहेंगे? आप कहेंगे-हम सदा ही संग के रंग की होली मना रहे हैं और होली बन गये। होली मनाते-मनाते होली बन गये। होली मना ली या मनानी है? जबसे ब्राह्मण बने हो तब से होली मना रहे हो! क्योंकि संगमयुग का समय ही सदा उत्सव का समय है। दुनिया वाले तो एकस्ट्रा खर्च करके मौज मनाते हैं। लेकिन आप सदा ही हर सेकेण्ड मौज मनाने वाले हो, हर सेकेण्ड नाचते-गाते रहते हो। सदा खुशी

में नाचते हो या जब कल्चरल प्रोग्राम होता है तभी नाचते हो? सदा नाचते रहते हो ना। सदा बाप की महिमा और अपनी प्राप्तियों के गीत गाते रहो। सबको गाना आता है ना। सभी गा सकते हो, सभी नाच सकते हो। सदा नाचना-गाना मुश्किल है क्या? सहज है और सदा सहज अनुभव करते सम्पन्न बनना ही है। कभी भी ये नहीं सोचो-पता नहीं, हम सम्पन्न बनेंगे या नहीं बनेंगे। ये कमजोर संकल्प कभी आने नहीं दो। सदा यही सोचो कि अनेक बार मैं ही बनी हूँ और मुझे ही बनना ही है। अच्छा!

चारो ओर के सदा परमात्म-संग के रंग की होली मनाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें, सृष्टि-चक्र के अन्दर सदा हाइएस्ट पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें, सर्व आत्माओं से श्रेष्ठ होलीएस्ट आत्मायें, सदा कम्बाइन्ड रहने वाली पद्मापद्म भाग्यवान आत्मायें, सदा सर्व की मुश्किल को भी सहज बनाने वाली ब्राह्मण आत्मायें, सदा नये जन्म के नये स्वभाव-संस्कार, नये उमंग-उत्साह में रहने वाली उड़ती कला की अनुभवी आत्माओं को बापदादा का याद, प्यार और नमस्ते।

दादी जानकी से मुलाकात

अच्छा चल रहा है ना। रथ को चलाने का तरीका आ गया है। दादियों को ठीक देखकर के ही खुश हो जाते हैं। शरीर के भी नाले-जफुल, आत्मा के भी नॉलेजफुल। चाहे पिछला हिसाब-किताब चुक्तू करना ही पड़ता है लेकिन नॉलेजफुल होने से सहज चुक्तू हो जाता है। तरीका आ जाता है ना। चलने का और चलाने का-दोनों तरीके आ जाते हैं। फिर भी सेवा का बल दुआओं का काम कर रहा है। यह दुआयें दवाई का काम कर रही हैं। सेवा का उमंग आता है ना-जल्दी-जल्दी तैयार हो जाए तो सेवा करें। तो वह उमंग जो आता है ना, वह उमंग सूली से कांटा कर देता है। अच्छा है, फिर भी हिम्मत अच्छी है।

(सभा से) निमित्त आत्माओं को देखकर के खुश होते हो ना। अभी अव्यक्त वर्ष में हर एक कोई न कोई कमाल करके दिखाओ। सेवा में कमाल हो रही है, वह तो होनीहै। लेकिन पर्सनल पुरूषार्थ में ऐसी कमाल दिखाओ जो देखने वाले कहें कि-हाँ, कमाल है! दूसरे के मुख से निकले कि कमाल है। सिर्फ यह नहीं कि चल तो रहे हैं, बढ़ तो रहे हैं। लेकिन कमाल क्या की? कमाल उसको कहा जाता है जो असम्भव को कोई सम्भव करके दिखाये, मुश्किल को सहज करके दिखाये। जो कोई के स्वप्न में भी नहीं हो वह बात साकार में करके दिखाये-इसको कहा जाता है कमाल। समय प्रमाण कमाल होना-वह और बात है। वह तो होनी ही है, हुई पड़ी है। लेकिन स्व के अटेन्शन

से कोई ऐसी कमाल करके दिखाओ। ब्रह्मा बाप के 25 वर्ष पूरे हुए। जब कोई भी उत्सव मनाना होता है, तो जिसका मनाते हैं उसको कोई न कोई दिल-पसन्द गिफ्ट दी जाती है। ब्रह्मा बाप के दिल-पसन्द क्या है? वह तो जानते ही हो ना। जो स्वयं को भी मुश्किल लगता हो ना, वो ऐसा सहज हो जाए जो स्वयं भी आप अनुभव करो-तब कमाल है। ठीक है ना। क्या करेंगे? बाप के दिल-पसन्द करके दिखाओ। क्या-क्या दिल-पसन्द है-यह तो जानते हो ना। बाप को क्या पसन्द है, जानते हो ना। अच्छा! देखेंगे कौनसी-कौनसी गिफ्ट देते हैं? जैसे स्थूल गिफ्ट बड़े प्यार से ले आते हो ना। अच्छा है, डबल विदेशी अपना भाग्य अच्छी तरह से प्राप्त कर रहे हैं। वृद्धि कर रहे हो ना। वृद्धि करने वालों को पहले तपस्या के साथ त्याग करना ही पड़ता है। वृद्धि होती है तो खुश होते हो ना। या समझते हो-हमारे को कमी पड़ जायेगी? अच्छा है, वृद्धि अच्छी कर रहे हो। यह नहीं सोचो-हमारा कम हो रहा है। बढ़ रहा है। सारी मशीनरी सूक्ष्म वतन की ही चल रही है।

डबल विदेशी भाई-बहनों के अलग-अलग ग्रुप से अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात

ग्रुप नं. 1

स्थूल कर्म करते भी मंसा द्वारा वायबेशन्स फैलाने की सेवा करो

सभी अपने को सदा विश्व की सर्व आत्माओं के कल्याणकारी आत्मायें अनुभव करते हो? सारा दिन विश्व-कल्याण के कर्तव्य में बिजी रहते हो या दो-चार घण्टे? कितना भी स्थूल कार्य हो लेकिन स्थूल कार्य करते हुए भी मन्सा द्वारा वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा कर सकते हो। क्योंकि जिसका जो कार्य होता है ना, वो कहाँ भी होगा, अपना कार्य कभी भी नहीं भूलेगा। जैसे-कोई बिजनेसमेन है तो स्वप्न में भी अपना बिजनेस देखेगा। तो आपका काम ही है-विश्व-कल्याण करना। कोई भी पूछे-आपका ऑक्यूपेशन क्या है? तो क्या यह कहेंगे-टाइपिस्ट हैं या इन्जीनियर हैं या बिजनेसमेन हैं। यह तो हुआ निमित्त-मात्र, लेकिन सदा स्मृति विश्व-कल्याणकारी ऑक्यूपेशन की है। इतना बड़ा कार्य मिला है जो फुर्सत ही नहीं है और बातों में जाने की। ऐसे बिजी रहते हो? मन-बुद्धि बिजी रहती है? कभी खाली रहती है? अगर सदा मन-बुद्धि से बिजी हैं तो मायाजीत हो ही गये। क्योंकि माया को भी समय चाहिए ना। आपको समय ही

नहीं तो माया क्या करेगी? बिजी देखकर के आने वाला स्वत: ही वापस चला जाता है। तो मायाजीत हो गये? मन-बुद्धि को फ्री रखना माना माया का आह्वान करना।
वर्तमान समय की विशेष माया है-व्यर्थ सोचना, व्यर्थ बोलना, व्यर्थ समय गँवाना। तो यह माया कभी-कभी आ जाती है ना। तो इसका मतलब फ्री रहते हो। सबसे बड़े ते बड़े बिजनेसमेन या इन्डस्ट्रियलिस्ट आप हो। कोई का कितना भी बड़ा व्यापार हो, धन्धा हो, फैक्टरी हो लेकिन वो अगर कमाई करेगा तो कितनी करेगा? एक दिन में एक करोड़ भी कमा ले, लेकिन आपकी सारे दिन में कितनी कमाई है? (अनगिनत) तो इतने बड़े हो ना। जब कोई बिजी होता है तो और कहाँ बुद्धि जाने की फुर्सत ही नहीं होती। तो आपका मन या बुद्धि कहीं जा सकते हैं? नहीं! तो मायाजीत हो गये ना! माया आवे और उसको भगाओ-अभी वह समय गया। अभी सदा बिजी रहो। फिर कोई कम्प्लेन नहीं रहेगी। सबसे सहज साधन यह है कि बिजी रहो। इससे एक तो मायाजीत बन जायेंगे, दूसरा सदा खुशी में नाचते रहेंगे। क्योंकि प्राप्ति में खुशी होती है ना! तो और क्या चाहिए! खुशी चाहिए ना! तो बिजी रहने से कभी भी न माया आयेगी, न खुशी जायेगी।
बापदादा को बच्चों को देखकर के खुशी होती है-फास्ट जाकर के फर्स्ट नम्बर आयेंगे। 'फर्स्ट' एक होता है या बहुत होते हैं? फर्स्ट डिविजन में आयेंगे। हिम्मत अच्छी है॰ इसलिए एकस्ट्रा मदद भी मिल रही है। ऐसे अनुभव करते हैं ना! (गोली की स्पीड से भी तेज चल रहे हैं) आजकल तो गोली की स्पीड कुछ नहीं है। राकेट तेज चलता है। राकेट से भी तेज। सोल (आत्मा) रूप में स्थित होना अर्थात् तेज होना। फास्ट जाना ही है। सेवायें तो भिन्न-भिन्न रीति से कर ही रहे हो। लेकिन और भी थोड़ा छोटे-छोटे प्रोग्राम करके, जैसे योग-शिविर में अनुभव कराते हो, ऐसे रिट्रीट के प्रोग्राम करने चाहिए। सभी जगह अनुभव कराओ। सिर्फ सुन के नहीं जाये, अटेन्शन यह रखो-अनुभव करके जाये। अच्छा! सभी क्या याद रखेंगे? कौन हो? चलते-फिरते अपना यही ऑक्यूपेशन याद रखना कि मैं हर समय विश्व-कल्याणकारी आत्मा हूँ तो विश्व के कल्याण के निमित बनूँ। अच्छा!

ग्रुप नं. 2

शरीर भी चला लाये लेकिन खुशी नहीं जाये - यह दृढ़ प्रतिज्ञा करो
सदा अपने को पद्मापद्म भाग्यवान अनुभव करते हो? क्योंकि बाप द्वारा वर्सा मिला है। तो वर्से में कितने अविनाशी खज़ाने मिले हैं? जब खज़ाने अविनाशी हैं तो भाग्य की

स्मृति भी अविनाशी चाहिए। अविनाशी का अर्थ क्या है? सदा या कभी-कभी? सदा अपने को पद्मापद्म भाग्यवान आत्मायें हैं-यह स्मृति में रखो और खज़ानों को सदा सामने इमर्ज रूप में रखो। कितने खज़ाने मिले हैं? अगर सदा खज़ानों को सामने रखेंगे तो नशा वा खुशी भी सदा रहेगी और कभी भी कम-ज्यादा नहीं रहेगी, बेहद की रहेगी। तो खज़ाने को बढ़ाओ भी और इमर्ज रूप में भी रखो। बढ़ाने का साधन क्या है? जितना बांटेंगे उतना बढ़ेगा। सदा यह सोचो कि आज के दिन खज़ाने को बढ़ाया या जितना था उतना ही है? खज़ाना जितना बढ़ेगा, तो बढ़ने की निशानी है-खुशी बढ़ेगी। तो बढ़ते जाते हैं ना। क्योंकि यह खज़ाने सदा खुशी को बढ़ाने वाले हैं। इसलिए कभी भी खुशी कम नहीं होनी चाहिए। कितना भी बड़ा विघ्न आ जाये लेकिन विघ्न खुशी को कम ना करे। किसी भी प्रकार का विघ्न खुशी को कम तो नहीं करता है ? बापदादा ने पहले भी कहा है कि शरीर चला जाये लेकिन खुशी नहीं जाये। इतनी अपने आपसे दृढ़ प्रतिज्ञा की है? तो सदा यह दृढ़ संकल्प करो कि-खुशी नहीं जायेगी। ब्राह्मण जीवन का आधार ही है 'खुशी'। अगर खुशी नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। ब्राह्मण जीवन अर्थात् खुश रहना और दूसरों को भी खुशी बाँटना। वर्तमान समय में सभी को अविनाशी खुशी की आवश्यकता है, खुशी के भिखारी हैं। और आप दाता के बच्चे हो। दाता के बच्चों का काम है-देना। जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये-खुशी बांटते जाओ, देते जाओ। कोई खाली नहीं जाये। इतना भरपूर हो ना!

हर समय देखो कि मास्टर दाता बनकर के कुछ दे रहा हूँ या सिर्फ अपने में ही खुश हैं। जिस समय जिसको कोई भी चीज की आवश्यकता होती है और आवश्यकता के समय अगर कोई वही चीज उसको देता है, तो उसके दिल से दुआयें निकलती हैं। वो दुआयें भी आपको सहज पुरुषार्थी बनने में सहयोगी बन जायेंगी। तो आपका कर्तव्य है - दुआयें देना और दुआयें लेना। इसी में बिजी रहते हो ना! सारे विश्व को इसकी आवश्यकता है। तो कितना काम है! या समझते हो कि जहाँ रहते हैं उसी देश मे देना है? विश्व को देने वाले दाता हो। विश्व-महाराजन बनना है ना! कि स्टेट्स का राजा बनना है? तो विश्व को देंगे तभी तो विश्व का महाराजन बनेंगे ना! अपने देश में रहते विश्व को कैसे देंगे? मन्सा-सेवा करनी आती है? या व्यर्थ संकल्प मन में चलते हैं? जब व्यर्थ संकल्प मन में होंगे तो मन्सा-सेवा कर सकेंगे? तो सदा मन्सा-सेवा करते हो या कभी व्यर्थ संकल्प भी आ जाते हैं?

मन-बुद्धि को इतना बिजी रखो जो व्यर्थ संकल्प आवे ही नहीं। आवे और फिर भगाओ-तो टाइम जायेगा ना! वेस्ट थॉट (व्यर्थ संकल्प) आवे ही नहीं उसकी विधि है कि अपने मन को सदा मन्सा, वाचा और कर्मणा सेवा में बिजी रखो। हर रोज़ की मुरली साधन है मन को बिजी रखने का। हर रोज़ मुरली सुनते हो, पढ़ते हो। तो बिजी रखते हो ना। तो वेस्ट खत्म ! क्योंकि अभी से वेस्ट को खत्म करेंगे तो जब फाइनल समय आयेगा, तो पास हो सकेंगे। नहीं तो, अगर व्यर्थ संकल्प चलने का अभ्यास होगा तो समय पर पास नहीं हो सकेंगे। तो पास विद् ऑनर बनने वाले हो ना। या सिर्फ पास होने वाले हो? अच्छा है, सदा पास विद् आनर बनने का लक्ष्य सामने रखो और अभ्यास करो। अच्छा!

ग्रुप नं. 3

दिलतख्तनशीन बनने के लिये स्मृति के तिलकधारी बनो

सदा अपने को बाप के दिलतख्तनशीन आत्मायें अनुभव करते हो? ऐसा तख्त सारे कल्प में अब एक बार ही मिलता है और कोई समय नहीं मिलता। जो श्रेष्ठ बात हो और मिले भी एक ही बार-तो उस तख्त को कभी भी छोड़ना नहीं चाहिए। जो बाप के दिल तख्तनशीन होंगे, सदा होंगे-तो तख्तनशीन की निशानी क्या है? तख्त पर बैठने से क्या होता है? तख्त पर बैठने से अपने को बेफिक्र बादशाह अनुभव करेंगे। तो सदा बेफिक्र रहते हो या कभी थोड़ा-थोड़ा फिक्र आ जाता है-चाहे अपना, चाहे सेवा का, चाहे दूसरों का? तो सदा दिलतख्त पर बैठने वाली आत्मा नशे में भी रहती और नशा रहने के कारण स्वत: ही बेफिक्र रहती। क्योंकि इस तख्त में यह विशेषता है कि जब तक जो तख्तनशीन होगा वह सब बातों में बेफिक्र होगा। जैसे आजकल भी कोई-कोई स्थान को विशेष कोई न कोई नवीनता, विशेषता मिली हुई है। तो दिलतख्त की यह विशेषता है-फिक्र आ नहीं सकता। तो नीचे क्यों आते जो फिक्र हो? काम करने के लिए नीचे आना पड़ता है! दिलतख्त को यह भी वरदान मिला हुआ है कि कोई भी कार्य करते भी दिलतख्तनशीन बन सकते। फिर सदा क्यों नहीं रहते?

और कोई अट्रेक्शन (आकर्षण) है ? है नहीं लेकिन हो जाती है। कभी भी कोई भी बात सामने आये तो फौरन दिलतख्तनशीन बन जाओ तो कोई भी बात अपनी तरफ खींचेगी नहीं। बैठने की प्रैक्टिस है या कभी-कभी प्रैक्टिस भूल जाती है? तख्तनशीन बनने के लिए तिलकधारी भी बनना पड़े। तिलक कौनसा है? स्मृति का। तिलक है तो तख्तनशीन भी हैं, तिलक नहीं तो तख्त नहीं। अविनाशी तिलक लगा हुआ है? या कभी

मिटता है, कभी लगता है? अविनाशी तिलक है ना! स्मृति का तिलक लगा और तख्तनशीन हो सदा स्वयं भी नशे में रहेंगे और दूसरों को भी नशे की स्मृति दिलायेंगे। तिलक लगाना मुश्किल है कि सहज है? सदा इजी है ना! 'सदा' शब्द में मुस्कुराते हैं। अगर बापदादा पूछे कि 21 जन्मों में कभी राज्य-अधिकारी बनो कभी प्रजा बनो, राज्य-अधिकारी नहीं बनो-मंजूर है? नहीं! तो अभी चान्स है। क्योंकि भविष्य का आधार वर्तमान पर है। अगर अभी सदा तख्तनशीन हैं तो वहाँ भी सदा राज्य-अधिकारी बनेंगे। तो 'सदा' शब्द को अन्डरलाईन करो। बच्चों को कभी भी बाप का वर्सा भूलता है क्या! तो यह दिलतख्त भी बाप का वर्सा है, तो वर्सा तो सदा साथ रहेगा ना! क्या याद रखेंगे? कौन हो? बेफिक्र बादशाह। बार-बार स्मृति को इमर्ज करते रहना। सदा यह नशा रहे कि हम साधारण आत्मा नहीं हैं लेकिन विशेष आत्मायें हैं। आप जैसी विशेष आत्मायें सारे विश्व में बहुत थोड़ी हैं। थोड़ों में आप हो-इसी खुशी में सदा रहो। अच्छा!

ग्रुप नं. 4

मुश्किल का कारण अपनी कमजोरी है, इसलिये मास्टर सर्वशक्तिवान बनो

सभी अपने को सहजयोगी अनुभव करते हो? जो सहज बात होती है वो सदा सहज होती है। या कभी-कभी मुश्किल होती है? योग मुश्किल है या आप मुश्किल कर देते हो? तो मुश्किल क्यों करते हो? अच्छा लगता है मुश्किल? जब अपने में कोई न कोई कमजोरी लाते हो, तो मुश्किल हो जाता है। कमजोरी मुश्किल बनायेगी। तो कमजोरी आने क्यों देते हो? बच्चे किसके हो? तो बाप कमजोर है? तो आप क्यों कमजोर हो? आप अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान कहलाते हो या मास्टर कमजोर? मास्टर सर्व-शक्तिवान! फिर कमजोर क्यों? अगर कमजोरी आ जाती है, चाहते नहीं हो लेकिन आ जाती है-तो आने-जाने का कारण क्या है? चेकिंग ठीक नहीं है। चलते-चलते कहाँ न कहाँ किसी बात में अलबेलापन आ जाता है, तब कमजोरी आ जाती है। तो सदा अटेन्शन रखो कि कहाँ भी, कभी भी अलबेलापन नहीं हो। अलबेलापन अनेक प्रकार से आता है। सबसे रॉयल रूप अलबेलेपन का है पुरूषार्थ कर रहे हैं, हो जायेगा, समय पर जरूर करके ही दिखायेंगे। पुरूषार्थ करते हैं लेकिन समय पर आधार रखते हैं, 'स्वयं' पर आधार नहीं रखते तो-अलबेले हो जाते हैं। तो आप कौन हो? अलबेले हो या तीव्र पुरुषार्थी?

सदैव यह स्मृति में रहे कि हर समय एवररेडी रहना है। किसी भी समय कोई भी परिस्थिति आ जाये लेकिन हम सदा एवररेडी रहेंगे। कल भी विनाश हो जाये तो तैयार हो? सम्पन्न हुए हो? नहीं। तो एवररेडी कैसे? क्योंकि ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है सम्पूर्ण बनना। एवररेडी अर्थात् सम्पूर्ण। तो कितना टाइम चाहिए? तो एवररेडी तो हो ना। अगर एवररेडी होंगे तो टाइम-कान्सेस (Time-Conscious) नहीं होंगे। बाप के बन गये, तो सिवाए बाप के और कोई है क्या? तो क्या तैयार होना है? एक बाप, दूसरा न कोई-यह तो तैयारी है ना। वो तो हो ही। फिर क्यों कहते हो- एक साल चाहिए, दो साल चाहिए। जब एक ही है तो एक के तरफ मन्मनाभव हो गये ना। तो एवररेडी हो ना। कोई मेहनत नहीं।

अनेकों को याद करना मुश्किल होता है, एक को याद करना तो सहज है। जब एक बाप के तरफ बुद्धि लग गई तो बाकी क्या करना है! यही तो पुरूषार्थ है। क्या मुश्किल है! जब है ही बाप याद, तो बाप की याद में माया तो कुछ नहीं कर सकती। आ सकती है क्या माया? एवररेडी होकर के सेवा करेंगे तो सेवा में भी और सहयोग मिलेगा, सहज होती जायेगी, सफलता मिलेगी। तो सदा ये स्मृति में रखो कि-है ही एक बाप, दूसरा कुछ है ही नहीं। अगर वन बाप है तो विन जरूर है। सहज योगी हो ना। मास्टर सर्वश-क्तिवान के आगे माया की हिम्मत नहीं जो वार कर सके। और ही माया सरेन्डर होगी, वार नहीं करेगी। जब सर्वशक्तिवान बाप साथ है तो सदा ही जहाँ बाप है वहाँ विजय है ही है। कल्प-कल्प के विजयी हैं, अभी भी हैं और सदा रहेंगे। ये स्मृति है ना। कितनी बार विजयी बने हो? तो अनेक बार किया हुआ कार्य फिर से करना, उसमें क्या मुश्किल है! नई बात तो नहीं है ना। तो नशे से कहो कि हम सहज योगी नहीं होंगे तो कौन होगा! ऐसा नशा है?

सभी के मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर नूंधी हुई है। क्योंकि भाग्यविधाता के बच्चे हैं। तो जिसका बाप भाग्यविधाता है, उसका कितना बड़ा भाग्य है! तो सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य की लकीर को देख हर्षित रहते हो और सदा रहते रहना। ये भाग्य की लकीर सिर्फ एक जन्म के लिए नहीं है लेकिन अनेक जन्म ये भाग्य साथ रहेगा। भाग्य आपके साथ जायेगा ना। गारन्टी है ना। दुनिया वाले कहते हैं-हाथ खाली आये, हाथ खाली जायेंगे। लेकिन आप कहते हो- हम भाग्यविधाता के बच्चे भरकर जायेंगे, खाली नहीं जायेंगे। ये निश्चय है ना। भाग्य का अनुभव करते हो ना। सभी अनुभवी हैं। तो इसी अनुभव को सदा आगे बढ़ाते रहो। स्मृति रखना माना बढ़ाना। बापदादा हर एक बच्चे

के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। क्योंकि आप ब्राह्मण आत्माओं के श्रेष्ठ भाग्य से ऊंचा भाग्य किसका है ही नहीं। अभी क्या नवीनता करेंगे? नवीनता है कि कम समय में ज्यादा सेवा कर सफलता प्राप्त होना। उसके लिये क्या करेंगे? ऐसी आत्माओं को निमित्त बनाओ जो एक के आवाज से अनेक सहज बाप के समीप आ जायें। बापदादा ने कहा ना-अभी माइक तैयार करो जिनका आवाज बुलन्द हो। अच्छा!

ग्रुप नं. 5

'सम्पूर्ण पवित्रता' ही ब्राह्मण जीवन की पर्सनालिटी है

संगमयुग को कौनसा विशेष वरदान मिला हुआ है? संगमयुग को विशेष वरदान है सहज प्राप्ति का। मेहनत कम और सफलता ज्यादा। इसलिए आपके योग का नाम भी है सहजयोग। जितनी प्राप्ति कर रहे हो उसके अन्तर में मेहनत क्या की! बिना मेहनत के सदाकाल के लिए सर्व प्राप्ति करने के अधिकारी बन गये। सबसे बड़े ते बड़ी प्राप्ति-बाप मिला, सब-कुछ मिला! तो बाप सहज मिला या मुश्किल मिला? घर बैठे मिला ना! कोई खर्चा किया? खर्च करने की भी मेहनत नहीं करनी पड़ती। आप लोगों ने आधा कल्प मेहनत की लेकिन मेहनत से बाप नहीं मिला। बाप को ढूंढ़ने की कोशिश की लेकिन बिना परिचय ढूंढ़ नहीं सके और बाप ने सहज ही ढूंढ़ लिया ना। चाहे कितने भी दूर चले गये लेकिन बाप ने ढूंढ़ लिया।

संगमयुग को विशेष वरदान है ही सहज प्राप्ति का। याद करना मुश्किल लगता है या सहज लगता है? तो जो सहज होता है वो स्वत: ही निरन्तर होता है। तो निरन्तर सहजयोगी हो ना। जब बाप साथ है और बाप से प्यार है, तो जिससे प्यार होता है उसका साथ छोड़ा जाता है क्या? तो साथ क्यों छोड़ते हो? तो सदा साथ रहना है। सदा साथ रहने से मायाजीत भी सदा सहज होंगे। वायदा क्या करते हो कि-कभी आपको नहीं छोड़ेंगे, कभी नहीं भूलेंगे। तो फिर क्यों छोड़ते हो? तो जो वायदा किया है उसको सदा स्मृति में रखो। क्योंकि ड्रामानुसार समय भी वरदानी मिला है। तो समय भी सहयोगी है। बापदादा आते ही हैं सब सहज करने। तो जो भी कदम उठाते हो, हर कदम में सहज का अनुभव करना-यही ब्राह्मण जीवन है। क्योंकि बाप सर्व प्राप्तियों के भण्डारे भरपूर कर देते हैं। तो जहाँ प्राप्तियों का भण्डारा भरपूर है, वहाँ कोई बात मुश्किल नहीं है। सर्व शक्तियों का भण्डार भरपूर है? जो नॉलेजफुल है उसके सर्व खज़ानों से भण्डारे फुल हैं। अगर कोई कमी है-चाहे शक्तियों में, चाहे गुणों में, किसी

भी खज़ाने में कमी है तो नॉलेज की कमी है। तो बाप समान बनना है ना। तो चेक करो कि किस खज़ाने की कमी है और उसको भरते जाओ। अच्छा!

सभी ने होली मनाई कि अभी मनानी है? होली मनाना अर्थात् होली बनना। ब्राह्मण जीवन की विशेषता ही है होली अर्थात् पवित्र। पवित्रता की विशेषता से ही अभी भी महान हो और सदा ही महान रहेंगे। प्योरिटी सहज लगती है या मुश्किल लगती है? तो पवित्रता धारणा कर ली या पवित्रता धारण करने में अभी टाइम चाहिए? सब विकार चले गये? या थोड़ा अंश रह गया है? पाण्डवों को कभी क्रोध आता है? माताओं को मोह आता है? सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् अपवित्रता का अंश-मात्र भी न हो। क्योंकि जितनी पवित्रता है उतनी ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी है। अगर पवित्रता कम तो पर्सनैलिटी कम। ये प्योरिटी की पर्सनैलिटी सेवा में भी सहज सफलता दिलायेगी। कोई भी पर्सनैलिटी का प्रभाव पड़ता है ना। तो सबसे बड़े ते बड़ी पर्सनैलिटी है प्योरिटी की। अगर एक विकार भी अंश-मात्र है तो दूसरे साथी भी उसके साथ जरूर होंगे। जैसे आप लोग दूसरों को कहते हो कि-जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख-शान्ति है, अगर पवित्रता नहीं तो सुख-शान्ति नहीं। जैसे पवित्रता का सुख-शान्ति से गहरा सम्बन्ध है, ऐसे अपवित्रता का भी पांच विकारों से गहरा सम्बन्ध है। इसलिए कोई भी विकार का अंश-मात्र भी न रहे। इसको कहा जाता है पवित्रता। तो ऐसा ही लक्ष्य है ना। या थोड़ा-थोड़ा रह गया हो तो कोई बात नहीं? तो सदा लक्ष्य को सामने रख लक्ष्य प्रमाण लक्षण धारण करते उड़ते चलो। जब सभी कहते हो- नम्बरवन आना है; कोई टू नम्बर नहीं कहते। तो किस आधार से नम्बरवन बनेंगे? पवित्रता के आधार से ना। तो नम्बर-वन प्योर बनो। अच्छा!

बापदादा ने सभी बच्चों को विदाई के समय होली की मुबारक दी

चारों ओर के होली हंसों को होली के उत्सव की उमंग-उत्साह भरी याद; प्यार। सभी बच्चों के रूहानी होली मनाने की, खुशी के उमंग-उत्साह की संकल्पों द्वारा, पत्रों द्वारा, कार्ड द्वारा, खिलौनों द्वारा याद; प्यार मिली। रूहानी बच्चों की संगमयुग पर सदा होली रहने की होली है। फिर भी, संगम है ही सुहेज (मौज) मनाने का युग। इसलिए विशेष सदा बाप के संग रहने की, सदा सम्पूर्ण होली बनने की और सदा बीती को बीती करने वाली होली की सभी को बहुत-बहुत मुबारक हो! मुबारक हो!! मुबारक हो!!!

23-12-1993 पवित्रता के दृढ़ व्रत द्वारा वृत्ति का परिवर्तन

पवित्रता के फाउन्डेशन को मजबूत करने की प्रेरणा देने वाले परम पवित्र बापदादा बोले-

आज ऊंचे से ऊंचा बाप अपने सर्व महान बच्चों को देख रहे हैं। महान आ आत्मा तो सभी बच्चे बने हैं क्योंकि सबसे महान बनने का मुख्य आधार 'पवित्रता' को धारण किया है। पवित्रता का व्रत सभी ने प्रतिज्ञा के रूप में धारण किया है। किसी भी प्रकार का दृढ़ संकल्प रूपी व्रत लेना अर्थात् अपनी वृत्ति को परिवर्तन करना। दृढ़ व्रत वृत्ति को बदल देता है। इसलिये ही भक्ति में व्रत लेते भी हैं और व्रत रखते भी हैं। व्रत लेना अर्थात् मन में संकल्प करना और व्रत रखना अर्थात् स्थूल रीति से परहेज करना। चाहे खान-पान की, चाहे चाल-चलन की, लेकिन दोनों का लक्ष्य व्रत द्वारा वृत्ति को बदलने का है। आप सभी ने भी पवित्रता का व्रत लिया और वृत्ति श्रेष्ठ बनाई। सर्व आत्माओं के प्रति क्या वृत्ति बनाई? आत्मा भाई-भाई हैं, ब्रदरहुड-इस वृत्ति से ही ब्राह्मण महान आत्मा बने। यह व्रत तो सभी का पक्का है ना?

ब्राह्मण जीवन का अर्थ ही है पवित्र आत्मा, और ये पवित्रता ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है। फाउण्डेशन पक्का है ना कि हिलता है? ये फाउण्डेशन सदा अचल-अडोल रहना ही ब्राह्मण जीवन का सुख प्राप्त करना है। कभी-कभी बच्चे जब बाप से रूहरिहान करते अपना सच्चा चार्ट देते हैं तो क्या कहते हैं? कि जितना अतीन्द्रिय सुख, जितनी शक्तियाँ अनुभव होनी चाहियें, उतनी नहीं हैं या दूसरे शब्दों में कहते हैं कि हैं, लेकिन सदा नहीं हैं। इसका कारण क्या? कहने में तो मास्टर सर्वशक्तिमान कहते हैं, अगर पूछेंगे कि मास्टर सर्वशक्तिमान हो, तो क्या कहेंगे? 'ना' तो नहीं कहेंगे ना। कहते तो 'हाँ' हैं। मास्टर सर्वशक्तिमान हैं तो फिर शक्तियां कहाँ चली जाती हैं? और हैं ही ब्राह्मण जीवनधारी। नामधारी नहीं हैं, जीवनधारी हैं। ब्राह्मणों के जीवन में सम्पूर्ण सुख-शान्ति की अनुभूति न हो वा ब्राह्मण सर्व प्राप्तियों से सदा सम्पन्न न हों तो सिवाए ब्राह्मणों के और कौन होगा? और कोई हो सकता है? ब्राह्मण ही हो सकते हैं ना। आप सभी अपना साइन क्या करते हो? बी.के. फलानी, बी.के. फलाना कहते हो ना। पक्का है ना? बी.के. का अर्थ क्या है? 'ब्राह्मण'। तो ब्राह्मण की परिभाषा यह है।

‘जितना’ और ‘उतना’ शब्द क्यों निकलता है? कहते हो सुख-शान्ति की जननी पवित्रता है। जब भी अतीन्द्रिय सुख वा स्वीट साइलेन्स का अनुभव कम होता है, इसका कारण पवित्रता का फाउण्डेशन कमज़ोर है। पहले भी सुनाया है कि पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं, ये व्रत भी महान है क्योंकि इस ब्रह्मचर्य के व्रत को आज की महान आत्मा कहलाने वाले भी मुश्किल तो क्या लेकिन असम्भव समझते हैं। तो असम्भव को अपने दृढ़ संकल्प द्वारा सम्भव किया है और सहज पालन किया है इसलिये ये व्रत भी धारण करना कम बात नहीं है। बापदादा इस व्रत को पालन करने वाली आत्माओं को दिल से दुआओं सहित मुबारक देते हैं। लेकिन बापदादा हर एक ब्राह्मण बच्चे को सम्पूर्ण और सम्पन्न देखना चाहते हैं। तो जैसे इस मुख्य बात को जीवन में अपनाया है, असम्भव को सम्भव सहज किया है तो और सर्व प्रकार की पवित्रता को धारण करना क्या बड़ी बात है! पवित्रता की परिभाषा सभी बहुत अच्छी तरह से जानते हो। अगर आप सबको कहें ‘‘पवित्रता क्या है’’ इस टॉपिक पर भाषण करो तो अच्छी तरह से कर सकते हो ना? जब जानते भी हो और मानते भी हो फिर ‘उतना’, ‘जितना’ ये शब्द क्यों? कौन-सी पवित्रता कमज़ोर होती है, जो सुख, शान्ति और शक्ति की अनुभूति कम हो जाती है? पवित्रता किसी न किसी स्टेज में अचल नहीं रहती, तो किस रूप की पवित्रता की हलचल है उसको चेक करो। बापदादा पवित्रता के सर्व रूपों को स्पष्ट नहीं करते क्योंकि आप जानते हो, कई बार सुन चुके हो, सुनाते भी रहते हो, अपने आपसे भी बात करते रहते हो कि हाँ, ये है, ये है.। मैजारिटी की रिजल्ट देखते हुए क्या दिखाई देता है? कि ज्ञान बहुत है, योग की विधि के भी विधाता बन गये, धारणा के विषय पर वर्णन करने में भी बहुत होशियार हैं और सेवा में एक-दो से आगे हैं, बाकी क्या है? ज्ञाता तो नम्बरवन हो गये हैं, सिर्फ एक बात में अलबेले बन जाते हो, वो है -’’स्व को सेकण्ड में व्यर्थ सोचने, देखने, बोलने और करने में फुलस्टॉप लगाकर परिवर्तन करना।’’ समझते भी हो कि यही कमज़ोरी सुख की अनुभूति में अन्तर लाती है, शक्ति स्वरूप बनने में वा बाप समान बनने में विघ्न स्वरूप बनती है फिर भी क्या होता है? स्वयं को परिवर्तन नहीं कर सकते, फुलस्टॉप नहीं दे सकते। ठीक है, समझते हैं-का कॉमा (,) लगा देते हैं, वा दूसरों को देख आश्चर्य की निशानी (!) लगा देते हो कि ऐसा होता है क्या! ऐसे होना चाहिये! वा क्वेश्चन मार्क की क्यू (लाइन) लगा देते हो, क्यों की क्यू लगा देते हो। फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दु (.)। तो फुल स्टॉप तब लग सकता है जब बिन्दु स्वरूप बाप और बिन्दु स्वरूप आत्मा-

दोनों की स्मृति हो। यह स्मृति फुल स्टॉप अर्थात् बिन्दु लगाने में समर्थ बना देती है। उस समय कोई-कोई अन्दर सोचते भी हैं कि मुझे आत्मिक स्थिति में स्थित होना है लेकिन माया अपनी स्क्रीन द्वारा आत्मा के बजाय व्यक्ति वा बातें बार-बार सामने लाती है, जिससे आत्मा छिप जाती है और बार-बार व्यक्ति और बातें सामने स्पष्ट आती हैं। तो मूल कारण स्व के ऊपर कन्ट्रोल करने की कन्ट्रोलिंग पॉवर कम है। दूसरों को कन्ट्रोल करना बहुत आता है लेकिन स्व पर कन्ट्रोल अर्थात् परिवर्तन शक्ति को कार्य में लगाना कम आता है।

बापदादा कोई-कोई बच्चों के शब्द पर मुस्कराते रहते हैं। जब स्व के परिवर्तन का समय आता है वा सहन करने का समय आता है वा समाने का समय आता है तो क्या कहते हो? बहुत करके क्या कहते कि 'मुझे ही मरना है', 'मुझे ही बदलना है', 'मुझे ही सहन करना है' लेकिन जैसे लोग कहते हैं ना कि 'मरा और स्वर्ग गया' उस मरने में तो स्वर्ग में कोई जाते नहीं हैं लेकिन इस मरने में तो स्वर्ग में श्रेष्ठ सीट मिल जाती है। तो यह मरना नहीं है लेकिन स्वर्ग में स्वराज्य लेना है। तो मरना अच्छा है ना? क्या मुश्किल है? उस समय मुश्किल लगता है। मैं गलत हूँ ही नहीं, वो गलत है, लेकिन गलत को मैं राइट कैसे करूँ, यह नहीं आता। रांग वाले को बदलना चाहिये या राइट वाले को बदलना चाहिये? किसको बदलना है? दोनों को बदलना पड़े। 'बदलने' शब्द को आध्यात्मिक भाषा में आगे बढ़ना मानो, 'बदलना' नहीं मानो, 'बढ़ना'। उल्टे रूप का बदलना नहीं, सुल्टे रूप का बदलना। अपने को बदलने की शक्ति है? कि कभी तो बदलेंगे ही।

पवित्रता का अर्थ ही है - सदा संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध और सम्पर्क में तीन बिन्दु का महत्व हर समय धारण करना। कोई भी ऐसी परिस्थिति आये तो सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने में स्वयं को सदा पहले ऑफर करो-''मुझे करना है''। ऐसी ऑफर करने वाले को तीन प्रकार की दुआएं मिलती हैं - (1) स्वयं को स्वयं की भी दुआएं मिलती हैं, खुशी मिलती है, (2) बाप द्वारा, (3) जो भी श्रेष्ठ आत्मायें ब्राह्मण परिवार की हैं उन्हों के द्वारा भी दुआएं मिलती हैं। तो मरना हुआ या पाना हुआ, क्या कहेंगे? पाया ना। तो फुल स्टॉप लगाने के पुरूषार्थ को वा कन्ट्रोलिंग पॉवर द्वारा परिवर्तन शक्ति को तीव्र गति से बढ़ाओ। अलबेलापन नहीं लाओ-ये तो होता ही है, ये तो चलना ही है. . . ये अलबेलेपन के संकल्प हैं। अलबेलापन परिवर्तन कर अलर्ट बन जाओ। अच्छा!

चारों ओर के महान आत्माओं को, सर्वश्रेष्ठ पवित्रता के व्रत को धारण करने वाली आत्माओं को, सदा स्व को सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाए श्रेष्ठ परिवर्तक आत्माओं को, सदा स्वयं को श्रेष्ठ कार्य में निमित्त बनाने की ऑफर करने वाली आत्माओं को, सदा तीन बिन्दु का महत्व प्रैक्टिकल में धारण कर दिखाने वाली बाप समान आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दादियों से मुलाकात: -

सभी आप लोगों को देखकर खुश होते हैं। क्यों खुश होते हैं? (बापदादा सभी से पूछ रहे हैं) दादियों को देख खुश होते हो ना? क्यों खुश होते हो? क्योंकि अपने वायब्रेशन वा कर्म द्वारा खुशी देते हैं इसलिये खुश होते हो। जब भी ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं से मिलते हो तो खुशी अनुभव करते हो ना। (टीचर्स से) फॉलो भी करती हो ना। कई सोचते हैं बाप तो बाप है, कैसे समान बन सकते हैं? लेकिन जो निमित्त आत्मायें हैं वो तो आपके हमजिन्स हैं ना? तो जब वो बन सकती हैं तो आप नहीं बन सकते? तो लक्ष्य सभी का सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने का है। अगर हाथ उठवायेंगे कि 16 कला बनना है या 14 कला तो किसमें उठायेंगे? 16 कला। तो 16 कला का अर्थ क्या है? सम्पूर्ण ना। जब लक्ष्य ही ऐसा है तो बनना ही है। मुश्किल है नहीं, बनना ही है। छोटी-छोटी बातों में घबराओ नहीं। मूर्ति बन रहे हो तो कुछ तो हेमर लगेंगे ना, नहीं तो ऐसे कैसे मूर्ति बनेंगे! जो जितना आगे होता है उसको तूफान भी सबसे ज्यादा क्रॉस करने होते हैं लेकिन वो तूफान उन्हों को तूफान नहीं लगता, तोहफा लगता है। ये तूफान भी गिफ्ट बन जाती है अनुभवी बनने की, तो तोहफा बन गया ना। तो गिफ्ट लेना अच्छा लगता है या मुश्किल लगता है? तो ये भी लेना है, देना नहीं है। देना मुश्किल होता है, लेना तो सहज होता है।

ये नहीं सोचो-मेरा ही पार्ट है क्या, सब विघ्नों के अनुभव मेरे पास ही आने है क्या! वेलकम करो-आओ। ये गिफ्ट है। ज्यादा में ज्यादा गिफ्ट मिलती है, इसमें क्या? ज्यादा एक्यूरेट मूर्ति बनना अर्थात् हेमर लगना। हेमर से ही तो उसे ठोक-ठोक करके ठीक करते हैं। आप लोग तो अनुभवी हो गये हो, नथिंग न्यु। खेल लगता है। देखते रहते हो और मुस्कराते रहते हो, दुआयें देते रहते हो। टीचर्स बहादुर हो या कभी-कभी घबराती हो? ये तो सोचा ही नहीं था, ऐसे होगा, पहले पता होता तो सोच लेते....। डबल फॉरेनर्स समझते हो इतना तो सोचा ही नहीं था कि ब्राह्मण बनने में भी ऐसा होता है? सोच-समझकर आये हो ना या अभी सोचना पड़ रहा है? अच्छा!

कितना भी कोई कैसा भी हो लेकिन बापदादा अच्छाई को ही देखते हैं। इसलिये बापदादा सभी को अच्छा ही कहेंगे, बुरा नहीं कहेंगे। चाहे 9 बुराई हों और एक अच्छाई हो तो भी बाप क्या कहेगा? अच्छे हैं या कहेंगे कि ये तो बहुत खराब है, ये तो बड़ा कमज़ोर है? अच्छा। ये बड़ा ग्रुप हो गया है। (21 देशों के लोग आये हैं) अच्छा है, हाउसफुल हो तब तो दूसरा बनें। अगर फुल नहीं होगा तो बनने की मार्जिन नहीं होगी। आवश्यकता ही साधन को सामने लाती है।

पवित्रता ब्राह्मण जीवन वा फाउण्डेशन है। फाउण्डेशन हमेशा पक्का होना चाहिये। क्योंकि फाउण्डेशन सदा अचल-अडोल रहना ही ब्राह्मण जीवन का सुख प्राप्त करना है। ब्राह्मण का अर्थ ही है 'पवित्र आत्मा'।

अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात

ग्रुप नं. 1

प्रकृति और मनुष्यात्माओं को परिवर्तन करने के लिए अपने वायब्रेशन और वृत्ति को शक्तिशाली बनाओ

दिल्ली ग्रुप से:- दिल्ली को परिस्तान कब बनायेंगे? कितना समय चाहिये? समय चाहिये या एवररेडी हो? (एवररेडी हैं) तो कल दिल्ली में परिस्तान हो जायेगा? (बाबा चाहें तो) लेकिन निमित्त तो आप हो ना। निमित्त बच्चों को बनाया है। बच्चों को आगे रखकरके बाप बैकबोन रहता है। तो कब परिस्तान बनायेंगे? बनाना तो है ना, बनना ही है। तो सभी इन्तजार कर रहे हैं कि दिल्ली परिस्तान बने और जायें। निमित्त तो दिल्ली वाले हैं ना। चाहे सर्व के सहयोग से हो, होना ही है। फिर भी जो दिल्ली में बैठे हो उन्हों का तो विशेष पार्ट है ना। तो इतनी तैयारी कर रहे हो, कि पहले कब्रिस्तान बने, फिर परिस्तान बनायेंगे? क्या करेंगे? (समय करायेगा) समय नहीं करायेगा, समय को लायेंगे। क्योंकि अनेक बार ये निमित्त बनने का पार्ट बजाया है, अभी तो सिर्फ रिपीट करना है। तो अपने श्रेष्ठ वायब्रेशन्स द्वारा, शुभ भावना, शुभ कामनाओं द्वारा परिवर्तन कर रहे हो? जितना-जितना शक्तिशाली सतोप्रधान वायब्रेशन होंगे तो यह प्रकृति और मनुष्यात्माओं की वृत्ति दोनों ही चेंज हो जायेगी। मनुष्यात्माओं को वृत्ति से चेंज करना है और प्रकृति को वायब्रेशन द्वारा परिवर्तन करना है। तो परिवर्तन करने वालों की वृत्ति सदा ही शक्तिशाली चाहिए, साधारण नहीं। साधारण वृत्ति या साधारण वायब्रेशन से परिवर्तन होना मुश्किल है। तो दिल्ली वालों की बड़ी जिम्मेवारी

है। अपनी जिम्मेवारी समझते हो या समझते हो कि हो जायेगा? नहीं। निमित्त बनना है। ड्रामा में मालूम है, ब्रह्मा को भी मालूम है और था कि नारायण बनना ही है, फिर भी क्या किया? निमित्त बने ना। जगदम्बा को पता था कि लक्ष्मी बनना ही है फिर भी निमित्त बनकर दिखाया। तो सदा अपनी जिम्मेवारी को स्मृति में रखो तो जिम्मेवारी क्या करती है? कभी भी कोई कार्य की जिम्मेवारी होती है तो अलर्ट हो जाते हैं। तो सदा अलर्ट रहना पड़े। कभी-कभी नहीं, सदा। कितनी बड़ी जिम्मेवारी है। हर आत्मा को बाप द्वारा कोई न कोई वर्सा दिलाना ही है। चाहे मुक्ति का दिलाओ, चाहे जीवनमुक्ति का दिलाओ, लेकिन वर्से के अधिकारी तो बनेंगे ना। तो दिल्ली वालों को कितना काम है? तो अलबेले नहीं बनो। यह सभी की जिम्मेवारी है या समझते हो यह तो बड़ों की जिम्मेवारी है, हम तो छोटे हैं!इसमें छोटे शुभान अल्लाह। बड़े तो बड़े हैं, छोटे शुभान अल्लाह। सभी को सदैव यह शुभ संकल्प इमर्ज हो कि दाता के बच्चे बन सभी आत्माओं को वर्सा दिलाने के निमित्त बनें, कोई वंचित नहीं रहे। फिर भी ब्रदर्स तो हैं ना। तो ब्रदर्स होने के कारण रहम तो आयेगा ना। चाहे कैसा भी है लेकिन बाप का तो है ना। आप भी कहेंगे भाई-भाई तो हैं ना या कहेंगे अज्ञानी भाई नहीं हैं, ज्ञानी भाई हैं। सबको कहेंगे ना भाई-भाई। तो चलो और कुछ नहीं, जो सबकी इच्छा है जन्म-मरण से मुक्त हो जायें, वो तो अनुभव करायेंगे ना। वो आशा तो पूर्ण करायेंगे ना।

आपकी क्या आशा है? मुक्ति में रहना है? मुक्ति में रहेंगे तो बहुत आराम मिलेगा। एक युग रहकर पीछे आओ? सतयुग के बाद त्रेता में आ जाओ, नहीं? मुक्ति में नहीं रहना है? जीवनमुक्ति में आना है? अच्छा, पाण्डवों को मुक्ति चाहिये? जीवनमुक्ति चाहिये? डबल चाहिये, सिंगल नहीं चाहिये। जीवन भी हो और मुक्ति भी हो। लेने में होशियार हैं। तो सदैव यही गीत गाते रहते हो ना कि वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! भगवान भी मिला और भाग्य भी मिला। कोई पूछे या सोचे कि मेरा भाग्य क्या है? अज्ञानी लोग तो सोचते हैं ना कि पता नहीं मेरा भाग्य क्या है? आप सोचते हो कि मेरा भाग्य क्या है? कभी संकल्प आता है या नहीं आता है? अपने भाग्य पर निश्चय है? जब भाग्य विधाता अपना बन गया तो भाग्य कहाँ जायेगा? जहाँ भाग्य विधाता है वहीं भाग्य है। तो सोचने की भी आवश्यकता नहीं है - क्या होगा! तो इतनी खुशी है कि कम-ज्यादा होती है? अभी कम नहीं होना चाहिये। ज्यादा से ज्यादा हो, लेकिन कम नहीं हो।

(दिल्ली को परिस्तान बनाने के लिये विशेष क्या करना चाहिये?)

विशेष तो माइक तैयार करना चाहिये। जिसमें मेहनत कम और सफलता सहज हो। एक द्वारा अनेकों को सन्देश मिल जाये और कार्य में भी सहयोगी बनें। जितना-जितना निमित्त बनते हैं उतना कार्य में भी सहज सहयोगी हो जाते हैं। तो अभी यही लक्ष्य रखो कि भिन्न-भिन्न वर्ग के ऐसे माइक तैयार करें जो वह स्वयं ही अपने-अपने वर्ग के निमित्त बन जायें। तो ऐसे कोई आत्मायें निमित्त बनने वाली तैयार करो।

(माइक तैयार करने के लिये क्या करना है?)

उसके लिये एक ही समय पर तीन प्रकार की सेवा चाहिये। जैसे कोई भी बहुत होशियार, चाहे योद्धा हो, चाहे आतंकवादी हो, कोई बड़े को पकड़ने के लिये क्या किया जाता है? चारों ओर से उसको पकड़ने की कोशिश की जाती है, तब पकड़ा जाता है। तो यह भी एक ही समय पर मंसा में, वाणी में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क से भी, वायुमण्डल में-ये चारों ओर का घेराव हो तभी ये विशेष निमित्त बनने वाली आत्मायें समीप आयेंगी। तो श्रेष्ठ वायब्रेशन्स से उन्हों को समीप लाते रहो। क्योंकि वाणी से समीप जाने का समय तो कम ही मिलता है ना। लेकिन वायब्रेशन, वायुमण्डल बनाने की सेवा सदैव होनी चाहिये। चारों ओर वायब्रेशन द्वारा उन आत्माओं को पकड़ना चाहिये। सिर्फ एक-दो नहीं, लेकिन संगठित रूप में चाहिये। तो देहली वालों को तो बहुत काम करना है। अगर देहली में आवाज बुलन्द हो जाये तो विश्व में तो बहुत जल्दी हो जाये। देहली में एक कोई बड़ा माइक निकल जाये तो चारों ओर आपेही वायब्रेशन फैलेगा। तो दिल्ली वाले अब वायब्रेशन से सेवा करके माइक तैयार करो। और कोई वायब्रेशन में नहीं चले जाना। बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। जिम्मेवारी के समय कभी भी कोई व्यर्थ टाइम, व्यर्थ इनर्जा नहीं गंवाता। तो अभी कोई नया जलवा दिखाओ। जैसे देहली में नम्बरवन सेवा का केन्द्र खुला तो देहली से माइक निकलेगा। सेवा की स्थापना तो दिल्ली से हुई ना। और देहली ने कई अच्छी-अच्छी सेवाओं को प्रैक्टिकल में भी लाया है। समय प्रति समय सेवा में सहयोगी बनते रहे हो। अब इसमें नम्बर लो। विदेश वाले भी प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन पहले चैरिटी बिगिन्स एट होम होना चाहिये ना। अच्छा है, लक्ष्य तो सभी का अच्छा है और सेवा से प्यार भी है। अभी सिर्फ जो बीच-बीच में व्यर्थ आ जाता है, उसको समाप्त कर समर्थ वायब्रेशन से समीप लाओ। समझा, क्या करना है? देखेंगे कितने समय में करते हो? जल्दी करना है या समय आयेगा तभी करेंगे। (हुआ ही पड़ा है) लेकिन कितने टाइम में हुआ पड़ा है? (जब गेट खुलेगा) गेट किसको खोलना है? ब्राह्मण फरिश्ते बनेंगे तो गेट खुलेगा। तो कमाल

दिखायेंगे या वहाँ जाकर अपने कामों में बिजी हो जायेंगे? चाहे कोई भी निमित्त सेवा मिली हुई है लेकिन बेहद की हो, हद की नहीं। तो बेहद परिवर्तन की सेवा में तीव्र गति लाओ। ऐसे नहीं, कर तो रहे हैं ना, इतने बिजी होते हैं जो टाइम ही नहीं मिलता..। इसके लिये टाइम की भी आवश्यकता नहीं है। निमित्त सेवा करते हुए भी बेहद के सहयोगी बन सकते हो। मातायें बन सकती हैं कि फुर्सत ही नहीं मिलती? फुर्सत है कि बच्चे ही नहीं सुनते, क्या करें? जितना बेहद में बिजी रहेंगे, तो जो ड्युटी मिली है वह और ही सहज हो जायेगी। तो समझा क्या करना है? सदा अपने को बेहद के सेवाधारी और सदा के सेवाधारी, हर संकल्प में, हर सेकण्ड में सेवाधारी बनाओ। इसको कहा जाता है बेहद के सेवाधारी। ऐसे नहीं चार घण्टा तो सेवा कर ली। नहीं, सदा सेवाधारी। छोटे-छोटे बच्चे भी सेवा करेंगे ना? अच्छा!

ग्रुप नं. 2

सब कुछ बाप हवाले करना अर्थात् डबल लाइट बनना

सदा अपने को कमल पुष्प समान न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करते हो? क्योंकि जितना न्यारापन होगा उतना ही बाप का प्यारा होगा। चाहे कैसी भी परिस्थितियां हो, समस्यायें हों लेकिन समस्याओं के अधीन नहीं, अधिकारी बन समस्याओं को ऐसे पार करें, जैसे खेल-खेल में पार कर रहे हैं। खेल में सदा खुशी रहती है। चाहे कैसा भी खेल हो, लेकिन खेल है तो कैसा भी पार्ट बजाते हुए अन्दर खुशी में रहते हो? चाहे बाहर से रोने का भी पार्ट हो लेकिन अन्दर हो कि यह सब खेल है। तो ऐसे ही जो भी बातें सामने आती हैं-ये बेहद का खेल है, जिसको कहते हो ड्रामा और ड्रामा के आप सभी हीरो एक्टर हो, साधारण एक्टर तो नहीं हो ना। तो हीरो एक्टर अर्थात् एक्यूरेट पार्ट बजाने वाले। तब तो उसको हीरो कहा जाता है। तो सदा ये बेहद का खेल है-ऐसे अनुभव करते हो? कि कभी-कभी खेल भूल जाता है और समस्या, समस्या लगती है। कैसी भी कड़ी परिस्थिति हो लेकिन खेल समझने से कड़ी समस्या भी हल्की बन जाती है। तो जो न्यारा और प्यारा होगा वो सदा हल्का अनुभव करने के कारण डबल लाइट होगा। कोई बोझ नहीं। क्योंकि बाप का बनना अर्थात् सब बोझ बाप को दे दिया। तो सब बोझ दे दिया है या थोड़ा-थोड़ा अपने पास रख लिया है? थोड़ा बोझ उठाना अच्छा लगता है। सब कुछ बाप के हवाले कर दिया या थोड़ा-थोड़ा जेबखर्च रख लिया है? छोटे बच्चे जेबखर्च नहीं रखते हैं। रोज उनको जेब खर्च देते हैं, खाओ, पीयो, मौज करो। कोई भी चीज़ रखी होती है तो डाकू आता है। जब पता होता है कि ये मालदार

है, कुछ मिलेगा तब डाका लगाते हैं। यदि पता हो कि कुछ नहीं मिलेगा तो डाका लगाकर क्या करेंगे। अगर थोड़ा भी रखते हैं तो डाकू माया जरूर आती है और वह अपनी चीज़ तो ले ही जाती है लेकिन जो बाप द्वारा शक्तियां मिली हैं वो भी साथ में ले जाती है। इसीलिये कुछ भी रखना नहीं है। सब दे दिया। डबल लाइट का अर्थ ही है सब-कुछ बाप-हवाले करना। तन भी मेरा नहीं। ये तन तो सेवा अर्थ बाप ने दिया है। आप सबने तो वायदा कर लिया ना कि तन भी तेरा, मन भी तेरा, धन भी तेरा। ये वायदा किया है कि तन तेरा है बाकी आपका है? जब तन ही नहीं तो बाकी क्या। तो सदा कमल पुष्प का दृष्टान्त स्मृति में रहे कि मैं कमल पुष्प समान न्यारी और प्यारी हूँ। जब आपकी रचना 'कमल' न्यारा रह सकता है तो आप मास्टर रचता उससे भी ज्यादा रह सकते हो। तो सभी कमल पुष्प समान न्यारे और प्यारे हो ना और चाहिये ही क्या, जब परमात्मा के प्यारे हो गये तो और क्या चाहिये! दुनिया में जो भी मेहनत करते हैं, जो भी कुछ प्रयत्न वरते हैं, किसलिये? प्यारा बनने के लिये। प्यार मिले और प्यार दें। और आपको परमात्म प्यार का अधिकार मिला है। तो जहाँ प्यार है वहाँ सब-कुछ है, और जहाँ सब-कुछ है और प्यार नहीं है वहाँ कुछ नहीं है। तो आप कितने लक्की हो परमात्म प्यार के पात्र बन गये! और कितना सहज! कोई मुश्किल हुआ क्या?

मातायें प्यार का अनुभव करती हो कि बाल बच्चों के प्यार का अनुभव करती हो? परमात्म प्यार में सब प्यार समाया हुआ है। पोत्रे का प्यार, धोत्रे का प्यार सब समाया हुआ है क्योंकि रचता है ना। तो रचता में रचना आ ही जाती है। जो भी स्नेह चाहिये उस रूप से स्नेह का अनुभव कर सकते हो। लेकिन आत्माओं का प्यार नहीं, परमात्म प्यार। तो ऐसे अधिकारी हो ना? पूरा अधिकार लिया है? थोड़े में खुश होने वाले तो नहीं हो ना। जब दाता फुल दे रहा है तो थोड़ा क्यों लें? अच्छा!

मोदी नगर होस्टेल की कुमारियों से -

हॉस्टल की कुमारियां क्या कमाल कर रही हो? स्कूल या कॉलेज में जहाँ पढ़ती हो, वो समझते हैं कि ये न्यारी कुमारियां हैं? कि जैसे वो वैसे आप? क्योंकि ब्रह्माकुमारियां अर्थात् न्यारी कुमारी। कुमारियां तो सभी हैं लेकिन आप ब्रह्माकुमारियां हो। ब्रह्माकुमारियां कमाल करने वाली हो। जहाँ भी जाये, वहाँ विशेष आत्मा अनुभव हो। तो बाप से पूरा ही प्यार है ना? पक्का, कोई व्यक्ति के तरफ नहीं, वैभव के तरफ नहीं? जब एक बाप से प्यार होगा तो सेफ रहेंगे। बाप से कम होगा तो फिर कहीं न कहीं

फंस जायेंगे। तो कहाँ फंसने वाली तो नहीं हो? देखना, सर्टीफिकेट मिलेगा! अच्छा, हिम्मत रखी है तो हिम्मत और मदद से आगे बढ़ते रहो।

ग्रुप नं. 3

सर्वशक्तिमान बाप के साथ सदा कम्बाइन्ड रहो तो सफलता आगे पीछे घूमती रहेगी सदा अपने को चमकता हुआ सितारा अनुभव करते हो? जैसे आकाश के सितारे सभी को रोशनी देते हैं ऐसे आप दिव्य सितारे विश्व को रोशनी देने वाले हो ना! सितारे कितने प्यारे लगते हैं! तो आप दिव्य सितारे भी कितने प्यारे हो! सितारों में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के सितारे गाये जाते हैं। एक हैं साधारण सितारे और दूसरे हैं लक्की सितारे और तीसरे हैं सफलता के सितारे। तो आप कौन-से सितारे हो? सभी सफलता के सितारे हो! सफलता मिलती है कि मेहनत करनी पड़ती है? कम्बाइन्ड कम रहते हो इसलिए सफलता भी कम मिलती है। क्योंकि जब सर्वशक्तिमान कम्बाइण्ड है तो शक्तियां कहाँ जायेंगी? साथ ही होगी ना। और जहाँ सर्व शक्तियां हैं वहाँ सफलता न हो, यह असम्भव है। तो सदा बाप से कम्बाइन्ड रहने में कमी है इस कारण सफलता कम होती है या मेहनत करने के बाद सफलता होती है। क्योंकि जब बाप मिला तो बाप मिलना अर्थात् सफलता जन्म सिद्ध अधिकार है। नाम ही अधिकार है तो अधिकार कम मिले, यह हो नहीं सकता। तो सफलता के सितारे, विश्व को ज्ञान की रोशनी देने वाले हैं। मास्टर सर्वशक्तिमान के आगे सफलता तो आगे-पीछे घूमती है। तो कम्बाइन्ड रहते हो या कभी कम्बाइन्ड रहते हो, कभी माया अलग कर देती है। जब बाप कम्बाइन्ड बन गये तो ऐसे कम्बाइन्ड रूप को छोड़ना हो सकता है क्या? कोई अच्छा साथी लौकिक में भी मिल जाता है तो उसको छोड़ सकते हैं? ये तो अविनाशी साथी है। कभी धोखा देने वाला साथी नहीं है। सदा ही साथ निभाने वाला साथी है। तो ये नशा, खुशी है ना, जितना नशा होगा कि स्वयं बाप मेरा साथी है उतनी खुशी रहेगी। तो खुशी रहती है? (बहुत रहती है) बढ़ती रहती है या कम और ज्यादा होती रहती है? कोई बात आती है तो कम होती है? थोड़ा तो कम होती है! फिर सोचते हैं क्या करें, वैसे तो ठीक है, लेकिन बात ही ऐसी हो गई ना। कितनी भी बड़ी बात हो लेकिन आप तो मास्टर रचता हो, बात तो रचना हैं। तो रचता बड़ा होता है या रचना बड़ी होती है?

कभी कोई बात में घबराने वाले तो नहीं हो? वहाँ जाकर कोई बात आ जाये तो घबरायेंगे नहीं? देखना, वहाँ जायेंगे तो माया आयेगी। फिर ऐसे तो नहीं कहेंगे कि मैंने

तो समझा नहीं था, ऐसे भी हो सकता है! नये-नये रूप में आयेगी, पुराने रूप में नहीं आयेगी। फिर भी बहादुर हो। निश्चय है कि अनेक बार बने हैं, अब भी हैं और आगे भी बनते रहेंगे। निश्चय की विजय है ही। मास्टर सर्वशक्तिमान की स्मृति में रहने वाले कभी घबरा नहीं सकते।

सभी एवररेडी हो गये हो या थोड़ा-थोड़ा अभी तैयार होना है? कल विनाश आ जाये तो तैयार हो? कि सोचेंगे कि अभी ये करना था एवररेडी हो, सम्पूर्ण हो गये हो? (सम्पूर्ण बनना है) तो एवररेडी कैसे हुए? बनना है तो देरी है ना। ऐसे नहीं सोचना कि उस समय हो जायेंगे। इसके लिए बहुत समय का अभ्यास चाहिये। अगर उस समय कोशिश करेंगे तो मुश्किल है, हो नहीं सकेंगे, टिक नहीं सकेंगे। इसीलिये अभी से एवररेडी के संस्कार इमर्ज करो।

माताओं को विशेष खुशी है ना कि क्या से क्या बन गये! दुनिया वालों ने जितना गिराया, बाप ने उतना ही चढ़ा दिया। माताओं को कभी दु:ख की लहर आती है? अच्छा-पाण्डवों को कभी दु:ख की लहर आती है? बिजनेस में, नौकरी में नुकसान हो जाये तो! देवाला निकल जाए तो? इतने पक्के हो? क्योंकि निश्चय है अगर बाप के सच्चे बच्चे बने, तो बाप दाल रोटी खिलाते रहेंगे। ज्यादा नहीं देगा लेकिन दाल रोटी देगा। चाहिये भी क्या? दाल-रोटी ही चाहिये ना। रोटी नहीं तो चावल ही मिल जायेगा। इतना पक्का निश्चय है ना। बस ऐसे ही निश्चय में अटल, अखण्ड, अटल उड़ते रहो।

ग्रुप नं. 4

श्रेष्ठ कर्म का आधार - श्रेष्ठ स्मृति

अपने को सदा संगमयुगी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा अनुभव करते हो? श्रेष्ठ ब्राह्मण अर्थात् जिन्हों का हर संकल्प, हर सेकण्ड श्रेष्ठ हो। ऐसे श्रेष्ठ बने हो कि कभी साधारण, कभी श्रेष्ठ? अभी साधारण और श्रेष्ठ दोनों चलते हैं या सिर्फ श्रेष्ठ चलते हैं? क्या होता है? थोड़ा-थोड़ा चलता है? तो सदैव मैं ऊंचे से ऊंची श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ - यह स्मृति इमर्ज रखो। देखो, जो आजकल के नामधारी ब्राह्मण हैं, उन ब्राह्मणों से भी कौन-सा कार्य कराते हैं? जहाँ कोई श्रेष्ठ कार्य होगा तो ब्राह्मणों को बुलाते हैं। तो यह आप लोगों के यादगार हैं ना। क्योंकि आप श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने सदा श्रेष्ठ कार्य किया है, तभी अब तक भी यादगार में ब्राह्मण श्रेष्ठ कार्य के निमित्त हैं। अगर कोई ब्राह्मण ऐसा कोई काम कर लेता है तो उसको कहते हैं यह ब्राह्मण नहीं है। तो ब्राह्मण अर्थात् श्रेष्ठ कार्य करने वाले, श्रेष्ठ सोचने वाले, श्रेष्ठ बोलने वाले। तो जैसा कुल होता है वैसे

कुल के प्रमाण कर्तव्य होता है। अगर कोई श्रेष्ठ कुल वाला ऐसा-वैसा काम करे तो उसको शर्मवाते हैं कि ये क्या करते हो! तो अपने आपसे पूछो कि मैं ब्राह्मण ऊंचे से ऊंची आत्मा हूँ, श्रेष्ठ आत्मा हूँ तो कोई भी ऐसा कार्य कर कैसे सकते। क्योंकि श्रेष्ठ कर्म का आधार है श्रेष्ठ स्मृति। स्मृति श्रेष्ठ है तो कर्म स्वत: ही श्रेष्ठ होंगे। तो सदा यह श्रेष्ठ स्मृति रखो कि हम श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं। यह तो सदा याद रहता है या याद करना पड़ता है? कभी शरीर को याद करते हो कि मैं फलाना हूँ, मैं फलानी हूँ? क्योंकि याद तब किया जाता है जब भूलते हैं। अगर कोई बात भूली नहीं तो याद करनी पड़ेगी। तो मैं ब्राह्मण आत्मा हूँ यह भी स्वत: याद रहे, न कि करना पड़े। तो स्वत: और सदा याद रहे कि "मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ"। जब तक ब्राह्मण जीवन है तब तक ये स्वत: याद रहे।

अच्छा, महाराष्ट्र अथवा आंध्रा वाले अब कोई नई बात करके दिखाओ तभी तो कहेंगे कमाल किया है। कोई नई इन्वेन्शन करके, कोई नवीनता करके दिखाओ, जो सब कहें कि यह तो हम भी करेंगे। कमाल उसको कहा जाता है जो किसी ने किया नहीं हो और आप करके दिखाओ। जो सब कर रहे हैं वो करेंगे तो कमाल नहीं कहेंगे। ऐसा कोई प्लैन बनाओ जिसमें कम खर्चा, कम समय और रिजल्ट सौ गुना से भी ज्यादा। कम समय में रिजल्ट सौ गुना निकलना - इसको कहा जाता है कमाल। तो अगले वर्ष जब आयेंगे तो नया कार्य करके ही आयेंगे ना कि फिर कहेंगे करेंगे! 'करेंगे, करेंगे' तो नहीं कहेंगे ना।

ग्रुप नं. 5

हर कदम में पदमों की कमाई जमा करने का युग-संगमयुग

(डबल विदेशी भाई बहिनों से)

पने को पदमापदम भाग्यवान समझते हो? हर कदम में पदमों की कमाई जमा हो रही है? तो कितने पदम जमा किये हैं? अनगिनत हैं? क्योंकि जानते हैं कि जमा करने का समय अब है। सतयुग में जमा नहीं होगा। कर्म वहाँ भी होंगे लेकिन अकर्म होंगे। क्योंकि वहाँ के कर्म का सम्बन्ध भी यहाँ के कर्मों के फल के हिसाब में है। तो यहाँ है करने का समय और वहाँ है खाने का समय। तो इतना अटेन्शन रहता है? कितने जन्मों के लिये जमा करना है? (84) जमा करने में खुशी होती है ना? मेहनत तो नहीं लगती? क्यों नहीं मेहनत महसूस होती है? क्योंकि प्रत्यक्षफल भी मिलता है। प्रत्यक्षफल मिलता है कि भविष्य के आधार पर चल रहे हो? भविष्य से भी प्रत्यक्षफल अति श्रेष्ठ

है। सदा ही श्रेष्ठ कर्म और श्रेष्ठ प्रत्यक्षफल मिलने का साधन है कि सदा ये याद रखो कि " अब नहीं तो कब नहीं। " जैसे नाम है डबल फॉरेनर्स, तो डबल का टाइटिल बहुत अच्छा है। तो सबमें डबल-खुशी में, नशे में, पुरूषार्थ में, सबमें डबल। सेवा में भी डबल। और रहते भी सदा डबल हो, कम्बाइन्ड, सिंगल नहीं। कभी डबल होने का संकल्प तो नहीं आता? कम्पनी चाहिये या कम्पैनियन चाहिये? चाहिये तो बता दो। ऐसे नहीं करना कि वहाँ जाकर कहो कम्पैनियन चाहिये। कितने भी कम्पैनियन करो लेकिन ऐसा कम्पैनियन नहीं मिल सकता। कितने भी अच्छे कम्पैनियन हो लेकिन सब लेने वाले होंगे, देने वाले नहीं। इस वर्ल्ड में ऐसा कम्पैनियन कोई है? अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका आदि में थोड़ा ढूंढ कर आओ, मिलता है! क्योंकि मनुष्यात्मायें कितने भी देने वाले बनें फिर भी देते-देते लेंगे जरूर। तो जब दाता कम्पैनियन मिले तो क्या करना चाहिये? कहाँ भी जाओ, फिर आना ही पड़ेगा। ये सब जाने वाले नहीं हैं। कोई कमज़ोर तो नहीं हैं? फोटो निकल रहा है। फिर आपको फोटो भेजेंगे कि आपने कहा था। कहो यह होना ही नहीं है। बापदादा भी आप सबके बिना अकेला नहीं रह सकता।

क्रिसमस वा बड़े दिन की मुबारक: -

क्रिसमस मना लिया कि अभी मनायेंगे? क्रिसमस का अर्थ ही है फादर द्वारा गिफ्ट लेना। वो क्रिसमस फादर है और यह गॉड फादर है। तो क्रिसमस फादर क्या देता है? छोटी-छोटी गिफ्ट देंगे। और गॉड फादर क्या गिफ्ट देता है? जन्म-जन्म के लिये सर्वश्रेष्ठ प्राप्तियों के अधिकारी बना देते हैं। स्वर्ग हाथ में दे देते हैं। स्वर्ग आपके हाथ में है? यह आपका चित्र है या सिर्फ ब्रह्मा बाप का है ? क्योंकि चित्र में तो एक ही दिखाया जाता है? लेकिन अधिकारी सभी बनते हैं। ये नशा है?

ये बड़ा दिन कहकर मनाते हैं लेकिन आपका हर घड़ी बड़ी घड़ी हो गई। क्योंकि एक सेकण्ड में कितनी कमाई करते हो तो बड़ी हो गई ना! और क्रिसमस की निशानी क्या दिखाते हैं? (क्रिसमस ट्री) तो संगम पर आपको भी ट्री का नॉलेज मिला है ना। आपकी ट्री कितनी बड़ी है! तो आप कहाँ बैठे हो? कल्प ट्री के अन्दर बैठे हो। यह संगमयुग की यादगार एक दिन करके मनाते हैं। तो क्रिसमस की मुबारक मिली? ये मिलना ही मुबारक है। अच्छा!

06-04-1995 प्योरिटी की रूहानी पर्सनालिटी की स्मृति स्वरूप द्वारा मायाजीत बनो

आज स्नेह के सागर बापदादा चारों ओर के सर्व स्नेही बच्चों को देख रहे आ हैं। हर एक स्नेही बच्चों के मूरत में रूहानी पर्सनालिटी की झलक देख रहे हैं। बाहर के रूप में तो साधारण पर्सनालिटी वाले हैं लेकिन रूहानी पर्सनालिटी में सबसे नम्बरवन हैं। दुनिया में अनेक प्रकार की पर्सनालिटीज गाई जाती हैं। शरीर की भी पर्सनालिटी, कोई विशेषता की भी पर्सनालिटी और कोई विशेष पोजीशन की भी पर्सनालिटी, लेकिन आप सबके चेहरे पर, चलन में कौनसी पर्सनालिटी है? प्योरिटी की पर्सनालिटी। प्योरिटी ही पर्सनालिटी है। जितना जितना जो प्योर हैं उतनी उनकी पर्सनालिटी न सिर्फ दिखाई देती है लेकिन अनुभव होती है। सभी अपने रूहानी पर्सनालिटी को अनुभव करते हो? आप जैसी पर्सनालिटी सतयुग से अब तक कोई की है? सारे कल्प में चक्कर लगाओ तो आप जैसी पर्सनालिटी है? नहीं है ना! तो आपको अपने रूहानी पर्सनालिटी का नशा है! अनादि काल में तो परमधाम में भी आप विशेष आत्माओं की पर्सनालिटी सबसे ऊंची है। चाहे आत्मायें सब चमकती हुई ज्योति हैं लेकिन आप रूहानी पर्सनालिटी वाली आत्माओं की चमक अन्य सब आत्माओं से न्यारी और प्यारी है। अपने अनादि काल की पर्सनालिटी को स्मृति में लाओ। आई स्मृति में? देख रहे हो? बापदादा के साथसाथ कैसे रूहानी पर्सनालिटी में दिखाई दे रहे हैं। अपने आपको देख सकते हो? तो चले जाओ अनादि काल में। कितने टाइम में जा सकते हो? जाने में कितना टाइम लगेगा? सेकण्ड से कम ना! कि एक दिन, एक घण्टा चाहिये? सेकण्ड से भी कम जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। तो अनादि काल की अपनी पर्सनालिटी देख ली? अभी अनादि काल से आदि काल में आ जाओ। आ गये या अभी चल रहे हो? पहुँच गये? तो अनादि काल से आदि काल में अपनी रूहानी पर्सनालिटी देखो-कितनी श्रेष्ठ पर्सनालिटी है! तन की भी तो मन की भी तो धन की भी और सम्बन्ध की भी। सब प्रकार की पर्सनालिटी कितनी श्रेष्ठ है! तो आदि काल की पर्सनालिटी देख रहे हो? कितने सुन्दर लगते हो, कितने सजे हुए हो, कितने सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द स्वरूप हो तो आदि काल में भी अपनी

पर्सनालिटी को देखो। स्पष्ट दिखाई देती है वा 5 हजार वर्ष हो गये तो थोड़ा स्पष्ट नहीं है? सभी को स्पष्ट है? होशियार हो सभी। तो आदि काल भी अपना देख लिया। अभी आओ मध्य काल में तो मध्य काल में भी आपकी पर्सनालिटी क्या रही? आपके जड़ चित्र कितने विधिपूर्वक पूजे और गाये जाते हैं। चाहे कितने भी धर्मात्मा, महात्मा, नेतायें पर्सनालिटी वाले गाये जाते हैं लेकिन आपके जड़ चित्रों की पर्सनालिटी के आगे उनकी पर्सनालिटी कुछ भी नहीं है। जैसे आप सबकी पूजा होती है वैसे कोई महात्मा या नेता की, धर्म आत्मा की विधिपूर्वक पूजा होती है? कभी देखी है? आपके जड़ चित्रों जैसे श्रृंगार किसका होता है? तो मध्य काल में भी आप आत्माओं के प्योरिटी की पर्सनालिटी की विशेषता कितनी श्रेष्ठ है! अपना चित्र देखा? आपकी पूजा होती है कि नहीं? सिर्फ बड़ेबड़ों की होती है, हमारी नहीं! डबल विदेशियों के मन्दिर हैं? देखा है, उसमें आपका चित्र है? कि सुना है तो कहते हो कि हाँ होंगे! स्मृति में है? तो मध्य काल भी आपका अति श्रेष्ठ है और अब लास्ट जन्म में जो मरजीवा ब्राह्मण जन्म है उसकी पर्सनालिटी देखो कितनी बड़ी है! गायन कितना है-कोई भी श्रेष्ठ कार्य अब तक भी आपके नामधारी ब्राह्मण ही करते हैं। चाहे ब्राह्मण अभी ब्राह्मण रहे नहीं हैं लेकिन नाम के तो ब्राह्मण है ना! आपके नाम से आपकी पर्सनालिटी के कारण वो भी श्रेष्ठ गाये जाते हैं। तो ब्राह्मण जन्म की पर्सनालिटी कितनी श्रेष्ठ है! आदि काल, अनादि काल, मध्य काल और अब अन्त काल-सारे कल्प में आपकी पर्सनालिटी सदा ही महान रही है।

लौकिक पर्सनालिटी वालों का अगर नाम भी आता है तो कोई विशेष बुक में उन्हों का नाम आता है-फलानेफलाने हैं। लेकिन आपका नाम किसमें आता है? साधारण बुक में नहीं आता है, शास्त्र में आता है। जो भी आदि काल से शास्त्र बने उसमें किसके चरित्र हैं? किसका गायन है? किसकी कहानियाँ हैं? तो लौकिक पर्सनालिटी वालों का गायन विशेष बुक में होता है और आपका गायन शास्त्र में होता है और शास्त्र को कितना रिगार्ड देते हैं। बड़े विधिपूर्वक शास्त्र को सम्भालते हैं, उसको भी बड़े पूज्य के रूप में देखते हैं। जो सच्चे भक्त हैं वो शास्त्र को विधिपूर्वक रखते भी हैं और पढ़ते भी हैं। ऐसे रिवाजी किताबों के माफिक नहीं रखते। तो अपनी पवित्रता की पर्सनालिटी को सदा ही इमर्ज रूप में स्मृति में रखो। जानते हैं.... या हैं तो हम ही.... ऐसे मर्ज नहीं। स्मृति स्वरूप में रखो। जिसके बुद्धि में ये इमर्ज रूप में स्मृति रहती है तो स्मृति ही समर्थी का आधार है। और जहाँ समर्थी है वहाँ माया आ सकती है? समर्थ आत्मा

के पास माया का आना असम्भव है। मेहनत करने की आवश्यकता ही नहीं है। माया का काम है आना लेकिन आपका काम अभी समय प्रमाण भगाना नहीं है। माया आई और भगाया। नहीं, आपका काम है सदा मायाजीत रहना। तो मायाजीत हो वा माया को बारबार भगाने वाले हो? अभी भगाना पड़ता है, थोड़ाथोड़ा वो दर्शन देने के लिये आ जाती है! नहीं ना! डबल फारेनर्स ने माया को सदा के लिए भगा दिया? या भगाते ही रहते हैं? क्या हाल है? माया सदा के लिए भाग गई? अभी नहीं आयेगी ना? कि थोड़ाथोड़ा आये, कोई हर्जा नहीं? फिर भी आधा कल्प की दोस्ती है, फ्रेंड है ना! उसको ऐसे ही छोड़ देंगे, आवे ही नहीं! सुनाया ना कि समय समाप्त होने के पहले बहुत काल का मायाजीत बनने का अभ्यास चाहिये। अन्त में नहीं हो सकेगा। अगर अन्त में मायाजीत बनने का पुरूषार्थ भी करेंगे तो क्या हाल होगा? बापदादा तोते की कहानी सुनाते हैं ना कि तोते को कहा नलके पर नहीं बैठना, पर नलके पर बैठकर ही बोल रहा था। ऐसे ही अन्त काल में अगर बहुत काल का अभ्यास नहीं होगा तो मन में सोचते रहेंगे कि मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, लेकिन माया का प्रभाव भी होता रहेगा, और कोशिश भी करेंगे मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ लेकिन होगा ही नहीं। इसीलिये क्या करना है? अभी से मायाजीत बनने का अभ्यास करो। और उसका सहज साधन है अपने रूहानी पर्सनालिटी को स्मृति स्वरूप में रखो। पर्सनालिटी वाले की निशानी क्या होती है? जो ऊंची पर्सनालिटी वाले होते हैं उसकी कहाँ भी, किसी में भी आंख नहीं जायेगी। ये ऐसा है, ये ऐसा है, ये ऐसा करता, ये ऐसे करती, मैं क्यों नहीं करूँ, मैं क्यों नहीं कर सकती हूँ/कर सकता हूँ..... दूसरे के प्राप्ति में आंख नहीं जायेगी। क्यों? रूहानी पर्सनालिटी वाला सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न है। स्वभाव में भी सम्पन्न, संस्कार में भी सम्पन्न और सम्बन्धसम्पर्क में भी सम्पन्न, भरपूर। वो कभी अपने प्राप्तियों के भण्डार में कोई अप्राप्ति अनुभव ही नहीं करेगा। क्यों? रूहानी पर्सनालिटी के कारण वो सदा ही मन से भरपूर होने के कारण सन्तुष्ट रहता है। आंख दूसरे की प्राप्ति में तब जाती है जब अपने में अप्राप्ति अनुभव करते हो। तो कोई अप्राप्ति है क्या? गीत क्या गाते हो-अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खज़ाने में। ये गीत मुख से नहीं, मन से गाते हो ना? जो गाते हैं वो हाथ उठाओ। अच्छा, डबल विदेशी भी गीत गाते हो? अच्छा!

बापदादा आज चारों ओर के बच्चों की प्योरिटी की पर्सनालिटी चेक कर रहे थे। प्योरिटी की परिभाषा को भी अच्छी तरह से जानते हो। प्योरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत नहीं, ब्रह्मचर्य व्रत में तो आजकल के सरकमस्टांस अनुसार कई अज्ञानी भी रहते हैं।

ज्ञान से नहीं लेकिन हालातों को देखकर। कई भक्त भी रहते हैं। वो कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन प्योरिटी को सारे दिन में चेक करो-पवित्रता की निशानी है स्वच्छता, सत्यता। अगर सारे दिन में चाहे उठने में, चाहे बैठने में, चाहे बोलने में, चाहे सेवा करने में, चाहे स्थूल सेवा की वा सूक्ष्म सेवा की लेकिन अगर विधिपूर्वक नहीं की, विधि में भी अगर जरासा अन्तर रह गया तो वो भी स्वच्छता अर्थात् पवित्रता नहीं। व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता है। क्यों? आप सोचेंगे कि हमने पाप तो किया ही नहीं, किसको दु:ख तो दिया ही नहीं लेकिन अगर व्यर्थ चला, समय गया, संकल्प गया, सन्तुष्टता गई तो आपके पवित्रता की फाइनल स्टेज के डिग्री में फर्क पड़ जायेगा। 16 कला नहीं बन सकेंगे। 15 कला, 14 कला, साढ़े पन्द्रह कला..... नम्बरवार हो जायेगा। तो अपवित्रता सिर्फ किसको दु:ख देना या पाप कर्म करना नहीं है लेकिन स्वयं में सत्यता, स्वच्छता विधिपूर्वक अगर अनुभव करते हो तो पवित्र हो। निकल गया, बोलना नहीं था लेकिन बोल लिया, तो इसको क्या कहेंगे? मालिक हैं? इसीलिये अमृतवेले से लेकर रात तक अपने संकल्प, बोल, कर्म, सेवा-सबको चेक करो। मोटे रूप से नहीं चेक करो। अगर मोटे रूप से चेक करेंगे तो देखो चन्द्रवंशी को मोटी निशानी तीरकमान दिया है और सूर्यवंशी को कितनी छोटीसी मुरली दे दी है। मुरली कितनी हल्की है! और तीर कमान कितना मेहनत का है। पहले तो निशाना लगाते रहो, दूसरा बोझ उठाते रहो! और मुरली देखो-नाचो, गाओ, हंसो, खेलो। तो इसीलिये मोटेमोटे रूप न पुरूषार्थ का रखो, न चेकिंग का रखो। अभी महीन बुद्धि बनो। क्योंकि समय समाप्त अचानक होना है, बताकर नहीं होना है। बापदादा ने तो पहले ही कह दिया है कि कोई उलहना नहीं देना-बाबा, आपने बताया क्यों नहीं? बाप कभी भी टाइम कॉन्सेस नहीं बनायेगा। अभी पूरा डायमण्ड बनना है ना! ये वायदा किया है ना? डायमण्ड जुबली मनानी है या डायमण्ड बनना है? क्या करना है? बनना भी है और मनाना भी है। दोनों साथसाथ करना है। तो बापदादा अगले वर्ष में चेक करेंगे-वायदा निभाया या सिर्फ मुख मीठा किया? तो कौन हो? सिर्फ बोलने वाले हो या निभाने वाले हो? अच्छा! देखो, टी.वी. में आप सबका फोटो आ रहा है, फिर बदल नहीं जाना-मैं था ही नहीं, मैंने नहीं कहा था! बनना तो अच्छा है ना, तो जो अच्छी बात है उसको जल्दी करना चाहिये या देरी से? जल्दी करना चाहिये ना!

सेकण्ड में एवररेडी बन सकते हो? सेकण्ड में अशरीरी बन सकते हो? कि युद्ध करनी पड़ेगी कि नहीं, मैं शरीर नहीं हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ..... ऐसे तो नहीं ना! सोचा और हुआ।

सोचना और स्थित होना। (बापदादा ने कुछ मिनटों तक ड्रिल कराई) अच्छा लगता है ना! तो सारे दिन में बीचबीच में ये अभ्यास करो। कितने भी बिजी हो लेकिन बीचबीच में एक सेकण्ड भी अशरीरी होने का अभ्यास अवश्य करो। इसके लिये कोई नहीं कह सकता-मैं बिजी हूँ। एक सेकण्ड निकालना ही है, अभ्यास करना ही है। अगर किसी से बातें भी कर रहे हो, किसके साथ कार्य कर रहे हो, तो उन्हों को भी एक सेकण्ड ये ड्रिल कराओ, क्योंकि समय प्रमाण ये अशरीरीपन का अनुभव, यह अभ्यास जिसको ज्यादा होगा वो नम्बर आगे ले लेगा। क्योंकि सुनाया कि समय समाप्त अचानक होना है। अशरीरी होने का अभ्यास होगा तो फौरन ही समय की समाप्ति का वायब्रेशन आयेगा। इसलिये अभी से अभ्यास बढ़ाओ। ऐसे नहीं, अगले साल में डायमण्ड जुबली है तो अब नहीं करना है, पीछे करना है। जितना बहुत काल एड करेंगे उतना राज्यभाग्य के प्राप्ति में भी नम्बर आगे लेंगे। अगर बीचबीच में यह अभ्यास करेंगे तो स्वत: ही शक्तिशाली स्थिति सहज अनुभव करेंगे। ये छोटीछोटी बातों में जो पुरूषार्थ करना पड़ता है वो सब सहज समाप्त हो जायेगा।

अच्छा सभी खुशराजी हैं ही या पूछना पड़ेगा? मातायें खुश हो? बहुत अच्छा। देखो, कहाँकहाँ से मेले में पहुँच गये हो। अच्छा चांस मिला ना, नहीं तो डेट का इन्तजार करते रहते हैं-हमारा नम्बर कब आयेगा, हमारा नम्बर कब आयेगा? अभी तो खुला निमन्त्रण था ना! सब ठीक अच्छी तरह से रह रहे हो? बेहद अनुभव हो रहा है ना? कि थोड़ीथोड़ी तकलीफ है? बुजुर्ग माताओं को तकलीफ नहीं हुई है? लाइन में लगो तब ही खाना मिलेगा! लाइन में लगने में थकावट नहीं होती? मजा आता है? इतना बड़ा परिवार कब मिलेगा! तो परिवार को देखकर हर्षित होते हैं ना! भक्ति मार्ग के मेले से तो अच्छा मेला है ना? और दो दिन बढ़ा दें कि बस का खर्चा होगा? घर नहीं याद आयेगा? नौकरी नहीं याद आयेगी? ये भी कुछ नवीनता होनी चाहिये ना तो ये मेला भी एक नवीनता हुई। नवीनता का अनुभव कर लिया। अभी फिर पुरानी बातें थोड़ेही होगी, नई बातें होगी ना! नई बात पसन्द आती है या पुरानी? नई बात अच्छी लगती है ना! अच्छा।

कुमारियों से- कुमारियाँ क्या कमाल करेंगी! कुमारियाँ टीचर बनेंगी? कुमारियाँ सभी अपने चेहरे से, चलन से, पवित्रता की परिभाषा का भाषण करेंगी। मुख से भाषण तो सभी करते हैं लेकिन आपके सम्बन्ध में जो भी सामने आये वो चेहरे और चलन से अनुभव करे कि पवित्रता की श्रेष्ठता क्या है? कभी भी कोई कुमारी किसके भी सामने

जाये तो साधारण कुमारी नहीं दिखाई दे। पवित्रता की देवी अनुभव हो। देखो शुरूशुरू में जब तपस्या के बाद सेवा पर निकले तो आप सबको किस रूप में देखते थे? देवियाँ समझते थे ना! उन्हों को साधारण स्वरूप नहीं दिखाई देता था, देवी रूप दिखाई देता था। देवियाँ आई हैं, कुमारियाँ नहीं। तो हर कुमारी अपने को देवी स्वरूप अनुभव करे और दूसरों को भी अनुभव कराये। देवी रूप के ऊपर कभी भी कोई की व्यर्थ नजर नहीं जा सकती। औरों को भी बचा लेंगे और स्वयं भी बच जायेंगे। ऐसे नहीं कह सकते कि इसकी बुरी दृष्टि थी ना, मैं तो पवित्र हूँ लेकिन दूसरे की बुरी दृष्टि थी। अगर आपकी पॉवरफुल पवित्र दृष्टि है तो जैसे सूर्य अन्धकार को रहने नहीं देता, समाप्त हो जाता है, अन्धकार रोशनी में बदल जाता है, वैसे ही आपकी पवित्रदृष्टि, देवी स्वरूप आसुरी संस्कार को समाप्त कर देगी। तो कुमारियाँ क्या हैं? पवित्र देवियाँ। तो कुमारियाँ ऐसे समझती हैं? हाँ कहते हो तो हाथ उठाओ, अगर ना तो हाथ नहीं उठाओ। पवित्र कुमारियाँ हैं।

कुमार: कुमार भी पवित्र देव हैं। ऐसे नहीं, ये तो पवित्र देवियाँ हो गई! कुमार भी पवित्र देव हैं। किसी भी तरफ, अपवित्र दृष्टि की बात तो छोड़ो लेकिन स्वप्न मात्र भी अपवित्र वृत्ति नहीं जा सकती। कुमार हाथ उठाओ। कुमार भी बहुत हैं। तो कुमार कौन हो? पवित्र देव। देव आत्मा हूँ। मैं फलाना हूँ, नहीं। देव आत्मा हूँ, पवित्र आत्मा हूँ।

माताओं से - मातायें बहुत हैं। मातायें क्या कमाल करेंगी? कमाल करना है ना? तो मातायें सदा ईश्वरीय स्नेह से सभी को अज्ञान की नींद से जगाओ। जैसे छोटे बच्चों को उठाती हो ना-उठो, तैयार हो, स्कूल में जाओ, तो ऐसे जगत मातायें बन अज्ञान के नींद में सोये हुए बच्चों को उठाओ। आत्माओं को जगाओ, क्योंकि जगत माता हो। जैसे अपने को हद की माता समझने से जिम्मेवारी समझती हो ना। जो भी बच्चें होंगे, 8 हो कि 6, लेकिन जिम्मेवारी समझती हो ना ऐसे बेहद की जगत मातायें बन बच्चों (आत्माओं) पर रहम करो। बच्चा माना बाप का बच्चा। कई ऐसे भी कहानियाँ सुनते हैं, कहते हैं बुरीदृष्टि नहीं है लेकिन इसको माँ समझते हैं। लेकिन माँ सिवाए ब्रह्मा बाप के और कोई आत्मा हो नहीं सकती। तो अपना बच्चा नहीं बनाना, बाप का बच्चा बनाना। तो मातायें तैयार हैं? करनी है सेवा? अच्छा, हाथ हिला रही हैं। कई बच्चे खेल बहुत करते हैं, सारे दिन में कहाँ न कहाँ, कोई न कोई नया खेल जरूर होता है। और बातें भी बड़ी अच्छी बनाते हैं। ऐसी नईनई अच्छी बातें बनाते हैं जो न शास्त्र में हैं न मुरली में हैं, तो अभी ये बचपन के खेल कब तक करेंगे? ये बचपन के खेल हैं। जैसे

गुड़िया बनाते भी हैं, उनको बड़ा भी करते हैं, परिवार वाले भी बना देते हैं, फिर खत्म कर देते हैं। तो बातें बनाने वाले भी ऐसे करते हैं-बात को पहले जन्म देते हैं, फिर उसको विस्तार करते हैं, फिर उसमें नमक-मिर्ची डालकर, मसाला डालकर बहुत टेस्टी करते हैं, फिर एकदो को खिलाते हैं। अभी आप सबका बचपन है या वानप्रस्थ है? वानप्रस्थ तक पहुँच गये हो ना? अभी तो वाणी से परे जाने का समय है। तो वानप्रस्थ स्थिति वाले बचपन के खेल नहीं करते लेकिन कमाल करते हैं। जब खेल में लग जाते हैं ना तो ये खेल क्या कर रहा हूँ-ये महसूस भी कम करते हैं। खेल में इतने मस्त हो जाते हैं। तो अभी वानप्रस्थ स्थिति का अनुभव करो और कराओ। बचपन के खेल खेल लिये, बहुत खेले।

अच्छा, अभी इस वर्ष के सीजन का समय समाप्त हो रहा है। तो बापदादा को एक संकल्प है। ब्रह्मचर्य व्रत तो सभी ने बहुत सहज धारण किया लेकिन अगले वर्ष सीजन में वही आयें जो क्रोध नहीं करे। ये हो सकता है कि फेल हो जायेंगे? बोलेंगे तो सच ना। तो ऑटोमेटिकली सीजन कम हो जायेगी। ऐसा करें? फॉर्म में सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत का नहीं लिखना, कि 6 मास से या 6 वर्ष से ब्रह्मचर्य में रहे, लेकिन क्रोध कितने समय से नहीं किया? क्रोध पर कड़ी नजर रखना। क्या समझते हैं? पसन्द है? पाण्डवों को पसन्द है? देखो नाम तो आउट हो जायेगा-क्यों नहीं सीजन में आये! तो मातायें बोलो, टीचर्स बोलो-करें? हाँ जी बोलो। टीचर्स को भी आने को नहीं मिलेगा! कोई भी होगा, चाहे महारथी हो, चाहे प्यादा हो, चाहे घोड़े सवार हो-मधुबन वाले कहेंगे हम तो मधुबन में होंगे, लेकिन उन्हों को सामने नहीं बिठायेंगे। टी.वी. में जाकर देखें, सुने। ये इन्सल्ट तो है ना। किसलिये सामने नहीं आये! तो मधुबन वालों को पक्का कंगन बांधना पड़ेगा। पहले मधुबन वाले हाँ करते हैं? पहले मधुबन करेगा। ऐसे नहीं, दूसरे कहें कि पहले मधुबन को तो देखो, ये अच्छा नहीं। अच्छा, सभी तैयार हो? जो सोचे कि नहीं, बहुत मुश्किल है तो वो खड़े हो जाओ। क्योंकि पीछे वालों का हाथ दिखाई नहीं देता। कहेंगे कि हमने तो हाथ उठाया ही नहीं था। तो दादियाँ बताओ-करें? अच्छा! देखो, सभी हाँहाँ कर रहे हो फिर कल से सोचना शुरू नहीं करना कि ये क्या हो गया! अन्तर्मुखता से मुख को बन्द कर देना। मुख खुलेगा तब तो क्रोध होगा ना। तो इस सीजन में क्रोधमुक्त आत्माओं का मेला होगा। पसन्द है ना? अच्छा फिर भी बापदादा समझते हैं कि कइयों के संस्कार बहुत पक्के हैं, रिवाजी बोल भी बोलेंगे तो लगता ऐसे है जैसे क्रोध करते हैं। बोल ऐसा है, आदत पड़ गई है। इसीलिये अभी जब तक

सीजन शुरू हो तब तक के लिये अगर कभी गलती से क्रोध हो भी गया ना तो तीन बारी माफ करेंगे। तीन बार छुट्टी है। (सभी ने तालियां बजाई) अच्छा तीन बार छुट्टियाँ चाहिये तभी तालियाँ बजाई। बापदादा ने तो ट्रायल की, फेल हो गये। कहो, हम करके दिखायेंगे, विजय प्राप्त करके दिखायेंगे, ये बोलो। कुछ तो नवीनता होनी चाहिये ना! वही फॉर्म आते हैं-खाना खाया, नहीं खाया? ब्रह्मचर्य में रहे, नहीं रहे? अभी फॉर्म चेंज करेंगे। नवीनता पसन्द है ना? टीचर्स को भी नियम में रहना पड़ेगा। टीचर्स को रियायत नहीं करेंगे। स्टूडेन्ट्स को तीन बार तो टीचर्स को दो बार।

पाण्डवों से - पाण्डव क्या कमाल करके दिखायेंगे? पाण्डव गाये जाते हैं - विजयी पाण्डव। कोई भी पाण्डव नाम लेंगे तो पाण्डवों की दो बातें सामने आती हैं एक बाप के साथी और दूसरा पाण्डव अर्थात् विजयी, तो जो भी पाण्डव हैं वो सभी ये संकल्प करो कि किसी भी बात में हार नहीं खानी है। सदा विजयी। और निश्चय रखो विजयी माला में मुझ पाण्डव का ही पार्ट है। विजयी रत्न हूँ। सदा अमृतवेले अपने मस्तक पर विजय का तिलक रोज रिफ्रेश करो और अमृतवेले से लेकर अपने मस्तक पर विजय का तिलक इमर्ज रूप में देखो। ऐसे नहीं, मैं तो हूँ ही। नहीं...। अगर हूँ तो सारे दिन में विजय प्राप्त की या नहीं की-ये चेक करो। तो पाण्डव अर्थात् विजयी।

टीचर्स से - टीचर्स क्या करेंगी? टीचर्स ने मेहनत तो की, बसें भरभर कर लाई। तो टीचर्स क्या कमाल करेंगी? टीचर्स को विशेष ये लक्ष्य रखना है कि सदा हर परिस्थिति में, परिस्थिति बदले लेकिन स्थिति नहीं बदले। स्थिति सदा खज़ानों से सम्पन्न हो और सन्तुष्ट रहे। परिस्थिति आयेगी और चली जायेगी। लेकिन परिस्थिति की क्या शक्ति है जो आपकी सन्तुष्टता को ले जाये। तो परिस्थिति का खेल भले देखो लेकिन साक्षीपन, सन्तुष्टता की सीट पर बैठकर देखो। तो टीचर्स अर्थात् सदा सम्पन्न और सन्तुष्ट। टीचर्स का टाइटल है सन्तुष्टमणियाँ। ऐसे हैं ना? सदा सन्तुष्टमणि।

मधुबन निवासियों से - मधुबन वाले क्या करेंगे? मधुबन वालों को बापदादा सेवा की मुबारक सदा दिल से पदमगुणा देते हैं, अब भी दे रहे हैं। अब मधुबन वालों को आगे क्या करना है? विशेष ये पाठ पक्का करना है कि मधुबन निवासी हर कर्म में, हर संकल्प में विशेष हीरो पार्टधारी हैं। मधुबन की स्टेज पर नहीं, लेकिन विश्व की स्टेज पर संकल्प, बोल और कर्म में हीरो पार्टधारी। तो हीरो एक्टर के ऊपर न चाहते भी सबकी नजर होती है और हीरो एक्टर थोड़ा भी नीचे ऊपर करता है तो हाहाकार हो जाता है। और अच्छा करता है तो वाहवाह हो जाती है। तो मधुबन वाले जीरो के साथ

रहने वाले सदा हीरो पार्ट बजाने वाले। मधुबन में सब आ गये, हॉस्पिटल भी आ गई तो ज्ञान सरोकर भी आ गया, तलहटी भी आ गई, सब आ गये, जो भी आठ भुजायें हैं सब आ गये। समझा? मधुबन निवासी नाम सुनकर सब कितना आपको प्यार करते हैं, कहाँ भी चले जाओ, कहाँ से आये हैं? मधुबन वाले हैं। जैसे मधुबन वाला बाबा मशहूर है ऐसे मधुबन वाले भी मशहूर हैं। ऐसे समझते हो ना! अच्छा है, नशा तो है मधुबन वालों को।

अच्छा, मेला निर्विघ्न हो गया? कल तो चलाचली का मेला शुरू होगा। मिलन का मेला समाप्त हो गया, अभी चलाचली का मेला होगा। देखो, क्या नहीं आप कर सकते हो! जो चाहे वो कर सकते हो! देख लिया ना! जो सुन करके समझते थे पता नहीं क्या होगा, कैसे होगा....? और अभी क्या कहते हैं? ये तो कुछ भी नहीं है। अभी ये कॉमन हो गया ना! कि गुजरात वालों को बहुत मेहनत लगी? मेहनत करनी पड़ी? नहीं, अच्छा लगा। प्राइज मिलने योग्य कार्य किया है। बापदादा दिल के यादप्यार की प्राइज गुजरात को दे रहे हैं। अच्छा, इसमें जो मातायें सवेरे से लेकर रोटी बनाती हैं, हाथ थक जाते होंगे, तो बापदादा दोनों ऐसे सेवाधारी माताओं के बाहों की मसाज कर रहे हैं। रोटी बनाने वाले खड़े हो जाओ। हाँ, बहुत ताली बजाओ। सब्जी काटने वाले भी हैं। सब्जी काटने वाले उठो। सबसे मुश्किल काम जो है वो है गर्मी में इतना समय गैस के आगे ठहरकर रोटी पकाना। तो मुबारक हो, मुबारक। खाने वाले नहीं होते तो ये क्या करते! देखो खाने वालों से ही तो रौनक है। जैसे मन्दिरों में घण्टे बजते हैं ना, जो जाता है घण्टे बजाता है तो इस मेले में बर्तनों के घण्टे बजते रहते हैं। अच्छी सीन होती है, जब बर्तन धुलाई करते हैं ना तो बहुत घण्टे बजते हैं बर्तनों के। तो कमाल तो खाने वालों की है ना!

मधुबन वालों ने भी बहुत मेहनत की। गुजरात को भी सहयोग देने वाले तो मधुबन वाले हैं। बहुत सहयोग दिया है ना। मेला निर्विघ्न समाप्त हो जाये - इस दृढ़ संकल्प से बहुत किया है। मधुबन वालों ने सहयोग दिया है ना या तंग किया है? मधुबन वाले तंग नहीं करते, सबको खुश करते हैं।

बापदादा तो टी. वी. में देखते हैं ना, तो ये देखा कि कोई की शक्ल के पोज इस बारी ज्यादा बदली नहीं हुए हैं। मैजारिटी ठीक रहे हैं, खुशी खुशी से सेवा की है। अगर थोड़ा बहुत हुआ भी है तो सहन शक्ति, समाने की शक्ति अच्छी यूज की है इसलिये मुबारक है। अच्छा, गर्मी लगी? कि पता ही नहीं पड़ा, आप बापदादा के याद की लहरों

में लहरा रहे थे। टेन्ट में सोते हो या बापदादा की गोदी में सोते हो? टेन्ट में तो नहीं ना! टेन्ट उड़ जाये तो भी कोई हर्जा नहीं, गोदी तो है ना! लेकिन पहले थोड़ा डराया अभी प्रकृति भी समझ गई ये हटने वाले नहीं हैं। अगर छत उड़ जायेगी तो दूसरी छत आ जायेगी।

अच्छा, डबल विदेशी क्या करेंगे? अभी थोड़े हो, सिकीलधे हो। तो डबल विदेशी सदा अपने चेहरे को, सूरत को चलता फिरता म्युजयम बनायेंगे। आपके नयनों को कोई देखे तो नयनों द्वारा हर्षित रूहानी आकर्षित मूर्त का चित्र देखे। साधारण नयन नहीं देखे। दिव्य नयन। जिन दिव्य नयनों में सदा बाप बिन्दु दिखाई दे। तो आपके नयन चलताफिरता म्युजियम बन जायें। आपका मस्तक आत्म साक्षात्कार कराये। आपके ओंठ सर्व को मुस्कराना सिखा दें। ऐसे चारों ओर चैतन्य म्युजियम अपनी सेवा करते रहें। करने वाले हो ना? अच्छा है। उमंगउत्साह तो अच्छा है ही और सदा उमंगउत्साह में आगे बढ़ते रहेंगे।

डबल विदेशियों को मेले में मिलने में मजा आया? सिर्फ विदेश की सीजन तो देखते ही रहते हो लेकिन इतना परिवार तो देखते नहीं हो तो डबल फायदा हो गया। बापदादा से मिलना हो गया और परिवार से भी मिलना हो गया। तो लक्की हो। अच्छा, फॉरेन के कोई भी सेन्टर्स पर रहने वाले टीचर्स हाथ उठाओ। जो भी चारों ओर सेवा में निमित्त रहते हैं उन सबको बापदादा श्रेष्ठ सेवा के भाग्यवान समझते हैं। सेवा का भाग्य प्राप्त होना ये बहुत बड़ा भाग्य है। सेवा में प्रत्यक्षफल प्राप्त होने का अनुभव बहुत सहज होता है। अभीअभी सेवा की और अभीअभी स्थिति में आगे बढ़ते रहे। अगर नि:स्वार्थ सेवा की तो सेवा का फल मिलता है। स्वार्थ का फल नहीं मिलता है। लेकिन आप सभी सेवाधारी हो। इसलिये सेवा का फल अवश्य मिलता है। भविष्य तो कुछ नहीं है, अभी का प्रत्यक्षफल आत्मा को उड़ती कला का बल देता है। इसलिये बापदादा निमित्त सेवाधारियों को देख खुश होते हैं। तो श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मायें हैं और सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य द्वारा अनेकों के भाग्य को जगाते रहेंगे। अच्छे हैं, अथक सेवा करते हैं। बापदादा के पास सबका रिकॉर्ड है। ऐसे नहीं, बापदादा के पास तो हम जाते ही नहीं, आते ही नहीं, पता ही नहीं.... ये तो नहीं सोचते। जो गुप्त हैं वो सदा नयनों में हैं। गुप्त नहीं रह सकते हो, बाप के आगे प्रत्यक्ष हो। चाहे नाम हो, नहीं हो, सामने आओ, नहीं आओ, लेकिन सामने के बजाय नयनो में समाये हो। समझा?

चारों ओर के सर्व रूहानी प्योरिटी की पर्सनालिटी वाले विशेष आत्माओं को, सदा आदि से अन्त तक पर्सनालिटी की झलक दिखाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें, सदा पवित्रता, स्वच्छता, सत्यता के शक्ति से स्व को और विश्व को परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक आत्मायें, सदा निमित्त भाव से सेवाधारी बन प्रत्यक्षफल अनुभव करने वाले अनुभवी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से - अच्छा रहा मेला? कोई तकलीफ तो नहीं हुई ना? सबके शुभ संकल्प और उमंगउत्साह के संकल्प से सफलता है ही है। यह संगठन का संकल्प ऐसे होता है जो असफलता को मिटा देता है। जैसे किला होता है ना तो किला कमज़ोर तब होता है जब एक भी ईट हिलती है। और सब ईटे मजबूत हैं तो किला कभी हिल नहीं सकता। विजय है। तो ये भी संगठन से उमंगउत्साह और श्रेष्ठ संकल्प से, सहयोग से सफलता हुई पड़ी है। अच्छा लगा और समय प्रति समय और अनुभव करते जाते हैं। पहले क्वेश्चन उठता था होगा? लेकिन जो सोचो उसमें सफलता है ही। तो सफलता मूर्त का वरदान संगठन की शक्ति को मिलता है। बापदादा सदा गुडमॉर्निंग, गुडनाइट करते हैं। अच्छा डबल विदेश उड़ रहा है ना। अच्छा है।

07-11-1995 "बापदादा की विशेष पसन्दगी और ज्ञान का फाउण्डेशन - पवित्रता"

आज प्यार के सागर बापदादा अपने प्यार के स्वरूप बच्चों से मिलने आये हैं। सभी बच्चों के अन्दर बाप का प्यार समाया हुआ है। प्यार सभी बच्चों को दूर से समीप ले आता है। भक्त आत्मा थे तो बाप से कितना दूर थे। इसलिए चारों ओर ढूंढते रहते थे और अभी इतना समीप हो जो हर एक बच्चा निश्चय और फ़लक से कहते हैं कि मेरा बाबा मेरे साथ है। साथ है या ढूँढना पड़ता है - इस तरफ है, उस तरफ है? तो कितना समीप हो गया! कोई भी पूछे परमात्मा कहाँ है? तो क्या कहेंगे? मेरे साथ है। फ़लक से कहेंगे कि अब तो बाप भी मेरे बिना रह नहीं सकता। तो इतने समीप, साथी बन गये हो। आप भी एक सेकण्ड भी बाप के बिना नहीं रह सकते हो। लेकिन जब माया आती है तब कौन साथ होता है? उस समय बाप अगर साथ है तो माया आ सकती है? लेकिन न चाहते भी बीच-बीच में बच्चे बाप से आंख मिचौली का खेल कर देते हैं। बापदादा बच्चों का यह खेल भी देखते रहते हैं कि बच्चे एक तरफ कह रहे हैं मेरा बाबा, मेरा बाबा और दूसरे तरफ किनारा भी कर लेते हैं। अगर अभी यहाँ ऐसे किनारा करेंगे तो आपको देख नहीं सकेंगे ना। तो आप भी माया की तरफ़ ऐसे कर लेते हो। बाप को देखने की दृष्टि बन्द हो जाती है और माया को देखने की दृष्टि खुल जाती है। तो आंख मिचौली खेल कभी-कभी खेलते हो? बाप फिर भी बच्चों के ऊपर रहमदिल बन माया से किसी भी ढंग से किनारा करा लेता है। वो बेहोश करती और बाप होश में लाता है कि तुम मेरे हो। बन्द आंख याद के जादू से खोल देते हैं।

बापदादा पूछते हैं कि सभी का प्यार कितने परसेन्ट में है? तो सभी कहते हैं - 100 परसेन्ट से भी ज्यादा है। पद्मगुणा प्यार है। ऐसा कहते हो ना? अच्छा जिसका पद्मगुणा से कम है, करोड़ है, लाख है, हज़ार है, सौ है, वो हाथ उठाओ। (कोई ने नहीं उठाया) अच्छा, सभी पक्के हैं! बापदादा फिर दूसरा क्वेश्चन करेंगे, फिर नहीं बदलना। अच्छा, ये तो बहुत खुशखबरी सुनाई कि पद्मगुणा प्यार है।

अभी बाप पूछते हैं कि प्यार का सबूत क्या होता है? (समान बनना) तो समान बने हो? (नहीं) फिर पद्मगुणा से तो कम हो गया। आप सभी कहेंगे कि अभी सम्पूर्ण बनने में

थोड़ा-सा टाइम पड़ा है इसलिए हो जायेंगे - ऐसे? लेकिन अगर प्यार वाला कहता है कि तुम प्यार के पीछे जान कुर्बान कर लो तो वो जान देने के लिए भी तैयार होते हैं। बापदादा जान तो लेते नहीं हैं क्योंकि जान से तो सेवा करनी है। लेकिन एक बात पर बापदादा को थोड़े समय के लिए आश्चर्य करना पड़ता है। आश्चर्य करना नहीं चाहिए, वो तो आपको भी कहते हैं, लेकिन बापदादा को आश्चर्य करना पड़ता है, पार्ट बजाते हैं। जान कुर्बान छोड़ो लेकिन प्यार की निशानी है न्योछावर होना, जो कहे वो करना। तो बाप सिर्फ एक बात में न्योछावर होना देखना चाहते हैं। बातें अनेक हैं, लेकिन बाप अनेक को नहीं लेते सिर्फ एक बात में न्योछावर होना है। उसके लिए हाथ उठा लेते हैं, प्रतिज्ञा भी कर लेते हैं लेकिन प्रतिज्ञा करने के बाद भी करते रहते हैं वो क्या? हर एक स्वयं समझते हैं कि मेरा बार-बार बाप से किनारा होने का मूल संस्कार या मूल कमज़ोरी क्या है। हर एक अपनी मूल कमज़ोरी को जानते हो ना? तो वो कमज़ोरी जानते हुए भी न्योछावर क्यों नहीं करते हो? 63 जन्म की साथी है इसीलिए उससे प्यार है?

प्यार का अर्थ ही है जो प्यार वाला पसन्द करे वो करना। अगर मानो प्यार करने वाला एक बात कहता है और वो दूसरा कुछ करते हैं तो क्या हो जाता है? प्यार होता है या झगड़ा होता है? उस समय प्यार कहेंगे कि अच्छी तरह से लाठी उठाकर एक-दो को लगायेंगे? तो बाप को क्या पसन्द है? बापदादा कहते हैं कि समान बनने में तो कई बातें हैं। ब्रह्मा बाप की विशेषताएं देखो और ब्रह्मा बाप समान ही बनना है तो कितनी बड़ी लिस्ट है! उसके लिए भी बापदादा कहते हैं चलो कोई बात नहीं। एक-दो बात कम है तो भी हर्जा नहीं। लेकिन जो मूल फाउण्डेशन है, जो ब्रह्मा बाप वा ज्ञान का आधार है वो क्या है? ब्रह्मा बाबा शिव बाप की विशेष पसन्दगी क्या है? (पवित्रता, अन्तर्मुखता, निश्चयबुद्धि, सच्चाई-सफाई)। वास्तव में फाउण्डेशन है - पवित्रता। लेकिन पवित्रता की परिभाषा बहुत गुह्य है। पवित्रता जहाँ होगी वहाँ निश्चय, सच्चाई-सफ़ाई, ये सब आ जाता है। लेकिन बापदादा देखते हैं कि पवित्रता की गुह्य भाषा, पवित्रता का गुह्य रहस्य अभी बुद्धि में पूरा स्पष्ट नहीं है। व्यर्थ संकल्प चलना या चलाना, अपने अन्दर भी चलता है और दूसरों को भी चलाने के निमित्त बनते हैं। तो व्यर्थ संकल्प - क्या ये पवित्रता है? तो फिर संकल्प की पवित्रता का रहस्य सभी को प्रैक्टिकल में लाना चाहिए ना। वैसे देखा जाये तो पांचों ही विकार, चाहे काम हो, चाहे मोह हो, सबसे नम्बरवन है काम और लास्ट में है मोह। लेकिन कोई भी

विकार जब आता है तो पहले संकल्प में आता है। व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा करता है तो काम अर्थात् व्यर्थ दृष्टि, किसी आत्मा के प्रति अगर व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी। तो यह व्यर्थ संकल्प बाप के प्यार के पीछे न्योछावर क्यों नहीं करते? कर सकते हो? (हाँ जी) हाँ जी कहना बहुत सहज है। लेकिन बापदादा के पास तो सबका चार्ट रहता है ना। अभी तक पांच ही विकारों के व्यर्थ संकल्प मैजारिटी के चलते हैं। फिर चाहे कोई भी विकार हो। ये क्यों, ये क्या, ऐसा होना नहीं चाहिए, ऐसा होना चाहिए..... या कॉमन बात बापदादा सुनाते हैं कि ज्ञानी आत्माओं में या तो अपने गुण का, अपनी विशेषता का अभिमान आता है या तो जितना आगे बढ़ते हैं उतना अपनी किसी भी बात में कमी को देख करके, कमी अपने पुरूषार्थ की नहीं लेकिन नाम में, मान में, शान में, पूछने में, आगे आने में, सेन्टर इन्चार्ज बनाने में, सेवा में, विशेष पार्ट देने में - ये कमी, ये व्यर्थ संकल्प भी विशेष ज्ञानी आत्माओं के लिए बहुत नुकसान करता है। और आजकल ये दो ही विशेष व्यर्थ संकल्प का आधार है। तो आप जब सेवा पर जाओ तो एक दिन की दिनचर्या नोट करना और चेक करना कि एक दिन में इन दोनों में से चाहे अभिमान या दूसरे शब्दों में कहो अपमान - मेरे को कम क्यों, मेरा भी ये पद होना चाहिए, मेरे को भी आगे करना चाहिए, तो ये अपमान समझते हो ना। तो ये दो बातें अभिमान और अपमान - यही दो आजकल व्यर्थ संकल्पो का कारण है। इन दोनों को अगर न्योछावर कर दिया तो बाप समान बनना कोई मुश्किल नहीं है। तो क्या न्योछावर करने की शक्ति है? अच्छा, कितने समय में? अभी आज नवम्बर है ना, नया साल आयेगा तो दो मास हो जायेगा ना! नये साल में वैसे भी नया खाता रखा जाता है, तो हर एक चाहे टीचर, चाहे विद्यार्थी हैं, चाहे महारथी हैं, चाहे प्यादा हैं। ऐसे नहीं कि ये तो महारथियों के लिए है, हम तो हैं ही छोटे! राज्य-भाग्य लेने के टाइम तो कोई नहीं कहेगा कि मैं छोटा हूँ, उस समय तो कहेंगे कि सेकण्ड नारायण मुझे ही बना दो। तो हर एक को सिर्फ दो शब्द अपना समाचार देना है और उस पोस्ट के ऊपर विशेष ये लिखना- "अवस्था का पोतामेल"। तो वो पोस्ट अलग हो जायेगी। और अन्दर लिखना कि व्यर्थ संकल्प किस परसेन्टेज में न्योछावर हुए? 50 परसेन्ट या 100 परसेन्ट न्योछावर हुए? बस एक लाइन लिखना, लम्बा-चौड़ा नहीं लिखना। जो लम्बा-चौड़ा लिखेंगे उसको पहले ही फाड़ देंगे। तो तैयार हो? ज़ोर से बोलो - हाँ जी या ना जी? जो समझते हैं कि इसमें हिम्मत चाहिए, टाइम भी चाहिए, तो अभी से

हाथ उठा लो तो आपको पहले से ही छुट्टी है। कोई है या पीछे लिखेंगे - पुरूषार्थ तो बहुत किया लेकिन हुआ नहीं। ऐसे तो नहीं लिखेंगे? पक्के हैं? अच्छा।

बापदादा ने देखा कि प्यार मधुबन तक तो ले आता है। लेकिन इसी प्यार से पहुँचना कहाँ है? बाप समान बनना है ना! तो जैसे मधुबन में भागते-भागते आते हो ना, मेरा नाम ज़रूर लिखो, मेरा नाम ज़रूर लिखो। और नहीं लिखते तो टीचर को थोड़ी आंख भी दिखा देते हो। तो जैसे मधुबन के लिए प्यार में भागते हो, आते हो ऐसे ही पुरूषार्थ करो कि मेरा नाम बाप समान बनने में पहले हो। तो ये पवित्रता का फाउण्डेशन पक्का करो। ब्रह्मा बाप ने पवित्रता के कारण, एक नवीनता के कारण गालियाँ भी खाईं। तो पवित्रता फाउण्डेशन है और फाउण्डेशन का ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना ये तो एक कॉमन बात है लेकिन अभी आगे बढ़े हो तो बचपन की स्टेज नहीं है, अभी तो वानप्रस्थ स्थिति में जाना है। मैं ब्रह्मचारी तो रहता हूँ, पवित्रता तो है ही, सिर्फ इसमें खुश नहीं हो जाओ। वैसे तो अभी दृष्टि-वृत्ति में पवित्रता को और भी अण्डरलाइन करो लेकिन मूल फाउण्डेशन है अपने संकल्प को शुद्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ। संकल्प में कमज़ोरी बहुत है। क्या करें, कर नहीं सकते हैं, पता नहीं क्या हो गया..... क्या ये पवित्रता की शक्ति है? पवित्र आत्मा कहेगी - क्या करें, हो गया, हो जाता है, चाहते तो नहीं हैं लेकिन.....? ये कौन-सी आत्मा है? पवित्र आत्मा बोलती है कि कमज़ोर आत्मा बोलती है? त्रिकालदर्शी आत्मायें हो। जब क्यों, क्या कहते हो, तो बापदादा कहते हैं इन्हों को जिज्ञासु के आगे ले जाओ, उनको चित्र समझाते हैं कि 84 जन्मों को हम जानते हैं। समझाते हो 84 जन्म और करते हो अभी क्या और क्यों? जब जानते हो तो जानने वाला क्या, क्यों करेगा? वो जानता है कि ये इसलिए होता है। क्या का जवाब स्वयं ही बुद्धि में आयेगा कि माया के प्रभाव के परवश है। चाहे महारथी हो, चाहे प्यादा हो। अगर महारथी से भी ग़लती होती है तो उस समय वो महारथी नहीं है, परवश है। तो परवश वाला कहाँ भी लहर में लहरा जाता है लेकिन आप उस रूप में देखते हो कि ये महारथी होकर कर रहा है! उस समय महारथी नहीं, परवश है। समझा, नये साल में क्या करना है? व्यर्थ के समाप्ति का नया खाता। ठीक है? पक्का? कि कोई न कोई कारण बतायेंगे। अगर कारण होगा तो कोई नया प्लैन बतायेंगे। अभी नहीं बतायेंगे। अभी बतायेंगे तो आप कोई रीज़न निकाल लेंगे। कारण नहीं निवारण। समस्या स्वरूप नहीं, समाधान स्वरूप।

अभी प्रकृति भी थक गई है। प्रकृति की भी ताकत सारी खत्म हो गई है। तो प्रकृति भी आप प्रकृतिपति आत्माओं को अर्जा कर रही है कि अभी जल्दी करो। अभी देरी नहीं करो। अच्छा!

बापदादा को भी तन को चलाना पड़ता है। चले, नहीं चले, लेकिन चलाना तो पड़ता है। क्योंकि बाप का बच्चों से प्यार है। तो इतने प्यार वाली आत्मायें आवें और बाप रूहरिहान नहीं करे तो कैसे होगा! तो जबरदस्ती भी चलाना ही पड़ता है। अच्छा, सभी खुश हैं? बाप मिला - सन्तुष्ट हैं ना?

इस्टर्न

कितना अन्दाज़ आये हैं? (550) तो साढ़े पांच सौ आये हो ना तो साढ़े को निकाल देना बाकी रहा पांच, तो पांचों पर विजय पहला नम्बर इस्टर्न ज़ोन होना चाहिए। (सभी ने तालियां बजाई) लिखने के टाइम भी ताली बजाना। नम्बरवन। वैसे तो इस्टर्न ब्रह्मा बाबा का प्रवेशता का भी पहला नम्बर है। तो बाप समान बनने में, बाप के प्यार के पीछे न्योछावर करने में भी इस्टर्न को पहला नम्बर लेना है। सभी टीचर्स हाँ कर रही हैं तो स्टूडेण्ट को भी करना पड़ेगा। इस्टर्न की टीचर्स उठो। सभी टीचर्स वायदा करते हो कि समझते हो कि पता नहीं क्या होगा! देखना टी.वी. में आ रहा है। इस्टर्न तो नम्बरवन होना ही है।

बम्बई, महाराष्ट्र

बाम्बे क्या करेगा? महाराष्ट्र क्या करेगा? सोलापुर भी है, जलगांव भी है। कोई भी पुर हो लेकिन बापदादा कहते हैं कि सोलापुर नहीं, सोला सम्पूर्ण। कोल्हापुर है, सोलापुर है, कई पुर हैं तो उन्हों को तो याद आना चाहिए कि हम पूर तो हैं सिर्फ सम्पूर्ण आगे एड करना। ठीक है सोलापुर। सोलापुर वाली टीचर्स हाथ उठाओ। अभी क्या होगा? सोलापुर या सोला सम्पूर्ण? हिम्मत है कि कहेंगे कि हम तो छोटी टीचर्स हैं। छोटी सुभान अल्लाह। समझा? अच्छा जलगांव और उदगीर। तो जलगांव क्या करेगा? अपने व्यर्थ विकल्पों को जल में खत्म कर देगा। एकदम खत्म। जल में हो गया खत्म। तो क्या करेंगे? विकल्पों को जलमय करना। कोई विकल्प रहे नहीं। जैसे कहाँ-कहाँ जलमय होता है ना तो एक भी निशानी नहीं रहती। ऐसे आप समाप्त कर लेना। ठीक है? अच्छा, बाम्बे वाले क्या करेंगे? आजकल बहुत बड़े-बड़े बॉम्ब निकाले हैं। दीपावली में देखा होगा ना, इतने बॉम्ब इकट्ठे जलाते हैं जो लाइन की लाइन खत्म।

तो बाम्बे वाले अनेक विकल्पों की लाइन को एक तीली लगाना और सारे के सारे खत्म हो जायें। बॉम्बे वाली टीचर्स उठो। अच्छा! तीली तो है ना? अच्छी पॉवरफुल तीली है? कि तीली लगी फिर बुझ जायेगा। दृढ़ संकल्प की तीली से फटाफट। एक के पीछे एक, एक के पीछे एक खत्म। सभी खुश हो जायेंगे। अच्छा।

तामिलनाडु

तामिलनाडु क्या करेगा? तामिलनाडु में डांस बहुत अच्छी करते हैं। कोई भी दादियाँ जाती हैं तो अच्छी-अच्छी डांस दिखाते हैं। जैसे शास्त्रों में शंकर के लिए दिखाते हैं, नृत्य करते-करते सारा विनाश कर दिया। तो डांस करते-करते क्या करेंगे? भिन्न-भिन्न प्रकार से सभी विघ्नों का विनाश। जैसे डांस वे भिन्न-भिन्न पोज़ रखते हो ना ऐसे एक-एक विकल्प को अच्छी तरह से, ऐसे खत्म करना जो नाम-निशान भी नहीं रहे। ठीक है? तामिलनाडु, तामिलनाडु की टीचर्स उठो। अच्छा। तामिलनाडु की टीचर्स बहुत आई हैं। टीचर्स को भी मिलने का चांस मिलता है। बापदादा को टीचर्स वैसे बहुत प्यारी लगती हैं। इसमें तो ताली बजा दी लेकिन वैसे के पीछे ऐसे भी है। वैसे तो टीचर्स को बापदादा एकदम समान दृष्टि से देखते हैं कि ये बाप समान हैं, निमित्त हैं लेकिन जब ऐसी-वैसी उल्टी डांस कर देती हैं, जो मन को नहीं भाती है, कभीकभी ऐसी डांस करते हैं तो सब कहते हैं बन्द करो, बन्द करो। तो जब टीचर्स ऐसा कुछ करती हैं तो बापदादा की, खास ब्रह्मा बाबा की आंखे नीचे हो जाती हैं। इतना टीचर्स को अटेन्शन रखना चाहिए। टाइटल तो टीचर्स को बहुत अच्छा है, बैज भी बहुत जल्दी पहन लेते हो। लेकिन टीचर का अर्थ ही है बाप समान। विशेष ब्रह्मा बाबा टीचर्स को दिल से प्यार करते हैं लेकिन कभी-कभी दृष्टि नीचे भी करनी पड़ती है। तो ऐसे नहीं करना। बाकी अच्छा है, तामिलनाडु ने विस्तार अच्छा किया है और एक विशेषता ये भी है कि हैण्ड्स भी अपने निकालते जाते और सेवा भी बढ़ाते जाते। तो ये भी अच्छी बात है। हैण्ड्स तैयार भी करना और सेवा भी बढ़ाना - दोनों ही करना।

आन्ध्र प्रदेश

आन्ध्र प्रदेश में एक विशेषता ब्राह्मण परिवार की है जो वहाँ से एक लाडला बच्चा निकला राजु, तो उस एक ने एक एग्ज़ाम्पल बन अनेक वी.आई.पी., आई.पी. की सर्विस कर सैम्पल बनाया। सेवा बहुत होती है लेकिन इसने हिम्मत रख करके एक

एग्ज़ाम्पल स्थापन किया और वैसे भी आन्ध्र में वी.आई.पी., आई.पी. ज्यादा ही हैं। चाहे वो किसी भी देश में चले जाते हैं लेकिन आन्ध्र के आई.पी., वी.आई.पी. चारों ओर बहुत होते हैं। तो आन्ध्र ने जैसे एक एग्ज़ाम्पल तैयार किया, ऐसे ये विकल्प विनाश का एग्ज़ाम्पल भी आन्ध्र को दिखाना है। तैयार हैं? आन्ध्रा वाली टीचर्स उठो। अच्छा, टीचर्स तो बहुत हैं। अभी ये भी एग्ज़ाम्पल दिखायेंगे। देखो कितना अच्छा रत्न निकला और एडवांस पार्टी में भी अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। तो करेंगे ना! खिटखिट नहीं होनी चाहिए। खिटखिट खत्म। विजय का झण्डा हर सेवाकेन्द्र पर लहराये। ये नहीं बापदादा सुने कि फलाने सेन्टर पर खिटखिट है इसलिए फलानी दादी को भेजो। ये नहीं होना चाहिए। ऐसे थोड़ा-थोड़ा बीचबी च में खेल करते है। अभी खत्म। पहले टीचर्स खत्म करेंगी तभी वायब्रेशन्स फैलेगा। ये सूक्ष्म वायब्रेशन्स है। आप समझेंगे एक ने किया ना, सभी को क्या पता? लेकिन वायब्रेशन ऐसी चीज़ है जो न पता होते भी...। मैंने सिर्फ किया, नहीं। मैंने सभी बाबा के सेवाकेन्द्रों का वायब्रेशन खराब किया। इतनी ज़िम्मेवारी हर एक टीचर के ऊपर है। बैज पहनना तो बहुत अच्छा है। अच्छा भी लगता है। सभी एक जैसा बैज पहन कर बैठती हैं तो अच्छा लगता है लेकिन बैज की लाज रखना। अच्छा!

कर्नाटक

बैंगलोर आया है। बैंगलोर की विशेषता है कि जगदम्बा सरस्वती माँ ने बैंगलोर में बहुत-बहुत सेवा कर बीज डाला है। बाम्बे और बैंगलोर में किया है। तो बाम्बे को और बैंगलोर को जगदम्बा माँ के बीज का सदा फल देना है। और देखा जाये तो बैंगलोर के जो विशेष सेवाधारी हैं वो हैं भी जगदम्बा के पालना के फल। तो बैंगलोर वालों को, जैसे जगदम्बा सम्पूर्ण बन भिन्न नाम-रूप में सेवा के निमित्त है, ऐसे जगदम्बा का नाम बाला करना है। वैसे बैंगलोर का वायुमण्डल दुनिया के हिसाब से भी औरों से कुछ अच्छा है। सेवा भी है बहुत। अभी सेवा को निरव्यर्थ संकल्प बनाना-ये बैंगलोर का काम है। समझा? बैंगलोर की टीचर्स उठो। अच्छा है, निर्विघ्न बनाना है ना? कि थोड़ी-थोड़ी खिटखिट अच्छी लगती है? तो नम्बरवन जगदम्बा की पालना का फल बैंगलोर को अवश्य देना है। समझा?

राजस्थान

राजस्थान क्या करेगा? राजस्थान की एक सेवा बहुत काल से बापदादा ने कही है लेकिन हुई नहीं। राजस्थान की मिनिस्ट्री को बहुत समीप लाना चाहिए। चाहे मिनिस्टर

हो, चाहे सेक्रेटरी, लेकिन एक बार राजस्थान को कमाल करके दिखानी चाहिए। चाहे किसकी भी मदद लो। सभी मदद देंगे। लेकिन राजस्थान की गवर्नमेंट के विशेष ऑफिसर्स का एक कम से कम 20-25 का ग्रुप लाना चाहिए। क्योंकि राजस्थान का प्रभाव सारे इण्डिया पर पड़ता है। जैसे दिल्ली की सेवा वर्ल्ड में नाम बाला करती है। चाहे जिज्ञासु बने, नहीं बने, लेकिन राजस्थान के इतने लोग यहाँ इकट्ठे होकर आये, तो यहाँ के जो छोटे-मोटे ऑफिसर्स हैं उनका भी कुछ दिमाग खुले। अभी मॉरीशियस का आ गया, और राजस्थान? तो राजस्थान को यह सेवा किसी भी रीति से करनी चाहिए। चाहे किसी से भी मदद लो, ग्रुप बनाओ। जहाँ से कहेंगे वहाँ से मदद मिलेगी। लेकिन एक बारी आबू वालों की आँख खुलनी चाहिए और वो ही ऑफिसर्स यहाँ भाषण करें, अनुभव सुनायें तो आबू वाले देखो पीछे-पीछे.....। नहीं तो एक तरफ सेवा होती और दूसरे तरफ आबू वाले मज़ाक करते रहते हैं। तो राजस्थान को बापदादा की ये एक आशा पूर्ण करनी है। मुश्किल है क्या? फिर यहाँ लड्डु बांटेंगे। जो भी होंगे ना उनके मुख में लड्डु पड़ेगा। चाहे उदयपुर हो, चाहे जोधपुर, .. जहाँ कार्य बढ़ता है वहाँ के लोग बहुत सहयोगी होने चाहिए। अभी देखो दिल्ली के ऑफिसर राजस्थान के ऑफिसर को हिम्मत देकर ठीक कर रहे हैं और वहाँ के बिल्कुल हिलते नहीं हैं। तो करो कमाल। आबू वाले भी प्लैन बनाओ। बापदादा समझते हैं कि जब तक आबू वाले अच्छा नहीं कहते, चाहे अखबार में, चाहे मुख से नहीं बोलते तब तक सेवा की रिज़ल्ट पर्दे के अन्दर है। प्रत्यक्ष नहीं होती। तो राजस्थान के बड़े लोग छोटों को भी ठीक कर देंगे। परमात्म कार्य और इतने छोटे ऑफिसर परमात्म कार्य के बीच में विघ्न रूप बनें तो ये हैं तो चींटी ना। तो अभी कुछ हिलें। कमाल करके दिखाओ। प्लैन बनाओ। एक बार इन तीन-चार मुख्य स्थानों की सेवा लगकर करनी चाहिए। ऐसे नहीं, जब काम पड़ा तो काम के टाइम भागते हैं और काम पूरा हुआ तो खत्म। वैसे तो राजस्थान के ब्राह्मणों को बहुत नशा है ना कि राजस्थान में ही मुख्य केन्द्र है। ये राजस्थान का लक है लेकिन अभी इसी नशे से यह करके दिखाना। चारों ओर फैल जाये कि राजस्थान का सम्मेलन है। राजस्थान का योग शिविर है। फिर देखो आपके ये व्यापारी वगैरह सब आपेही कहेंगे हम भी बैठें। अच्छा, तो राजस्थान यह कमाल करेगा। क्यों, हेड क्वार्टर की ज़िम्मेवारी राजस्थान पर है। बहुत बड़ा ताज पड़ा है। अच्छा! पाण्डव भी कुछ हिम्मत करेंगे ना, हिम्मत करके दिखाओ। अच्छा। राजस्थान की टीचर्स सामने बैठी हैं, ये तो बहुत टीचर्स हैं। ये एक-एक टीचर एक-एक आई.पीज़.

को ला सकती हैं। एक-एक को तो लाओ तो भी 20-25 का ग्रुप बन जायेगा। बहुत अच्छी-अच्छी टीचर्स हैं। अच्छा।

आगरा

आगरा वाले क्या कर रहे हैं? आगरा वालों ने भी कोई नई कमाल करके दिखाई नहीं है। होनी तो है ना! सारे विश्व में बाप का नाम बाला तो होना ही है। लेकिन जो निमित्त बनता है उसको एक्स्ट्रा मार्क मिल जाती हैं। उसका पद, जितनी सेवा की उस अनुसार एड होकर मार्कस जमा होती जाती हैं। समझो साधारण है लेकिन सेवा निर्विघ्न है, तो सेवा की मार्क्स एडीशन होने से साधारण राजा से आगे नम्बर में आ जाते हैं। और आगे-आगे जाते आखिर विश्व महाराजा के रॉयल फैमिली में आ जाते हैं। तो ये करना है ना! आगरा भी कमाल करेगा। बापदादा को तो सदा ही सभी बच्चों में आशायें रहती हैं और वो भी आशाओं के दीपक जगे हुए। हर एक बच्चा जगे हुए आशाओं के दीपक हैं। तो कमाल करके दिखाना। देखेंगे, ये कितने समय में कमाल करते हैं। ठीक है ना? अच्छा।

डबल विदेशी

डबल विदेशी क्या करेंगे? डबल कमाल करेंगे। डबल विदेशियों की ये विशेषता अच्छी है कि सेवा के बिना उन्हों को चैन नहीं आता, मज़ा नहीं आता। उनको सेवा बहुत चाहिए। और उमंग-उत्साह से चाहे टाइम कम मिलता है, थक भी जाते हैं, स्थूल काम करते हैं, लेकिन फिर भी सेवा के लिए एवररेडी रहते हैं, सेवा के लिए बुलावा हो तो बैठेंगे या भागेंगे? भागेंगे। तो सेवा का उमंग-उत्साह यही आप डबल विदेशी आत्माओं की सेफ्टी का साधन है। सेवा में लगे हुए हो तो माया से भी बचे हुए हो। माया भी देखती है कि इन्हों को फुरसत नहीं है इसलिए वो भी वापस चली जाती है। और दूसरी बात अपने पुरूषार्थ में सच्चाई से अपनी चेकिंग अच्छी करते हैं, वो सच्चाई बापदादा के पास पहुँचती है। और सच्चाई बापदादा को प्रिय है। इसलिए सच्चाई के फलस्वरूप बापदादा द्वारा विशेष मदद भी मिलती है। चाहे कोई कमज़ोरी आ भी जाती है लेकिन बाप और सेवा से प्यार होने के कारण वो भी एक्स्ट्रा हिम्मत की मदद दिलाते हैं। समझा? अच्छा! सभी तरफ के हैं। मौरिशियस ने तो कमाल की। क्योंकि कोई भी विदेशी वी.आई.पी. या आई.पी. इण्डिया में आकर अपने देश से यहाँ का प्रोग्राम सेट करे और कराये-ये एक एक्जैम्पुल मॉरिशियस ने दिखाया। दरवाजा खोल दिया, वी.आई.पी., आई.पी. का। तो मॉरिशियस वालों को मुबारक। कहते हैं, बड़े तो

बड़े छोटे शुभान अल्लाह। तो मॉरिशियस ने शुभान अल्लाह करके दिखाया। बहुत अच्छा, मुबारक। अच्छा!

मधुबन, ज्ञान सरोवर, हॉस्पिटल, तलहटी

हर एक अपना नाम समझे। बापदादा अभी मधुबन में तो आते ही रहेंगे। तो हर एक चाहे मधुबन हो, चाहे डबल मधुबन, चाहे उपसेवाकेन्द्र हैं, चाहे गीता पाठशालायें हैं, सभी को बापदादा की याद-प्यार मिल रही है और मिलती रहेगी।

नेपाल

(नेपाल का नाम भूल गये) तो नेपाल भूलने का अर्थ है कि आप गुप्त महारथी हो। छिपे हुए रूस्तम हो। नेपाल तो बापदादा को सदा प्यारा है। क्योंकि नेपाल में गवर्नमेंट की सेवा सहज और अच्छी है भी और होती भी रहेगी। आखिर नेपाल का राजा भी आना ही है। अच्छा, सेवा अच्छी है। हिम्मत वाली टीचर्स हैं। इसने (राज बहन ने) नया जन्म लेकर सेवा का सबूत दिया। शीला को भी खास याद देना। अच्छा।

चारों ओर के पद्मगुणा प्रेम स्वरूप आत्माओं को, सदा स्वयं को निर्विकल्प बनाने वाले विशेष आत्माओं को, सदा बाप और निर्विघ्न सेवा वे लगन में मग्न रहने वाली आत्माओं को, सदा बाप के स्नेह में न्योछावर होने वाले सभी आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

अच्छा! सब खुश! कोई नाराज़ तो नहीं हुआ - मैं नहीं मिला? राज़ को जानने वाले कभी नाराज़ नहीं होते।

दादियों से

देखो आप आदि रत्नों में सभी का प्यार के साथ-साथ शुद्ध मोह बढ़ता जाता है। सभी देखते हैं कि आदि रत्न ठीक हैं तो सब ठीक हैं। तो आप लोगों में सबका शुद्ध मोह बढ़ गया है। बापदादा इन दोनों (चन्द्रमणी दादी, रतनमोहनी दादी) के ऊपर भी खुश हैं। ज्ञान सरोवर की जिम्मेवारी सभांली है। जिम्मेवारी तो क्या, खेल है। भारीपन है क्या? खेल हल्का होता है ना? तो जिम्मेवारी क्या है? खेल है। तो बापदादा खुश है कि समय पर सहयोगी बने हैं और आदि से सहयोगी रहे हैं। आदि से हाँ जी करने वाले हैं - यही साकार बाप का आप सबको विशेष वरदान है। ब्रह्मा बाबा को 'ना' शब्द कभी अच्छा नहीं लगता। ये तो मालूम है, अनुभवी हैं।

(ईशू बहन से) इसने आदि से अब तक बहुत अच्छा पार्ट बजाया है। और आपकी (दादी की) तो विशेष सहयोगी है। कोई भी बात में सुनने-सुनाने वाली बहुत अच्छी है

क्योंकि गम्भीर रहती है। ये गम्भीरता का गुण बहुत आगे बढ़ाता है। कोई भी बात बोल दी ना, समझो अच्छा किया और बोल दिया तो आधा खत्म हो जाता है, आधा फल खत्म हो गया, आधा जमा हो गया। और जो गम्भीर होता है उसका फुल जमा होता है। कहते हैं ना-देखो जगदम्बा गम्भीर रही, चाहे सेवा स्थूल में आप लोगों से कम की, आप लोग ज्यादा कर रहे हो लेकिन ये गम्भीरता के गुण ने फुल खाता जमा किया है। कट नहीं हुआ है। कई करते बहुत हैं लेकिन आधा, पौना कट हो जाता है। करते हैं, कोई बात हुई तो पूरा कट हो जाता है या थोड़ी बात भी हुई तो पौना कट हो जाता है। ऐसे ही अपना वर्णन किया तो आधा कट हो जाता है। बाकी बचा क्या? तो जब जगदम्बा की विशेषता - जमा का खाता ज्यादा है। गम्भीरता की देवी है। ऐसे और सभी को गम्भीर होना चाहिए, चाहे मधुबन में रहते हैं, चाहे सेवाकेन्द्र में रहते हैं लेकिन बापदादा सभी को कहते हैं कि गम्भीरता से अपनी मार्क्स इकट्ठी करो, वर्णन करने से खत्म हो जाती हैं। चाहे अच्छा वर्णन करते हो, चाहे बुरा। अच्छा अपना अभिमान और बुरा किसका अपमान कराता है। तो हर एक गम्भीरता की देवी और गम्भीरता का देवता दिखाई दे। अभी गम्भीरता की बहुत-बहुत आवश्यकता है। अभी बोलने की आदत बहुत हो गई है क्योंकि भाषण करते हैं ना तो जो भी आयेगा वो बोल देंगे। लेकिन प्रभाव जितना गम्भीरता का पड़ता है इतना वाणी का नहीं पड़ता। अच्छा।

(बापदादा को गुलदस्ते भेंट किये) –

ये गुलदस्ते तो क्या हैं, आप एक-एक रूहानी गुलाब सबसे प्यारे हो।

(प्रसिद्ध गायक ओमव्यास जी ने नये गीतों की कैसेट का विमोचन बाबा से कराया) - अच्छा है, ड्रामा ने निमित्त बनाया है और निमित्त बनना ही भाग्य की निशानी है। तो भाग्य बना रहे हो और बनाते ही रहेंगे। अच्छा-ओम् शान्ति।

04-12-1995 "यथार्थ निश्चय के फाउण्डेशन द्वारा सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करो"

आज बापदादा देश-विदेश चारों ओर के नये-नये बच्चों को देख रहे थे। चाहे मधुबन में साकार रूप में आये हैं, चाहे आकार रूप में अपने- अपने सेवा-स्थान में आये हुए हैं, तो नयों-नयों को देख बापदादा सभी के निश्चय को देख रहे थे। क्योंकि निश्चय इस ब्राह्मण जीवन के सम्पन्नता का फाउण्डेशन है और फाउण्डेशन मज़बूत है तो सहज और तीव्र गति से सम्पूर्णता तक पहुँचना निश्चित है। तो बापदादा देख रहे थे कि निश्चय भी भिन्नभिन्न प्रकार का है। जो यथार्थ निश्चय है कि मैं परमात्मा बाप का बन गया, स्वयं को भी आत्म-स्वरूप में जानना, मानना, चलना और बाप को भी जो है वैसे जानना - ये है यथार्थ निश्चय।

दूसरा निश्चय है -योग द्वारा थोड़े समय के लिए अशान्ति से शान्ति का अनुभव करते हैं और स्थान का शक्तिशाली शान्त वायुमण्डल आकर्षित करता है वा ब्राह्मण परिवार, ब्राह्मण आत्माओं का आत्मिक प्यार और पवित्रता की जीवन का प्रभाव पड़ता है, कम्पनी अच्छी लगती है, दुनिया के वायुमण्डल के कान्ट्रास्ट में ये संग अच्छा लगता है, ज्ञान भी अच्छा, परिवार भी अच्छा, वायुमण्डल भी अच्छा ..... तो वो अच्छा लगना, उस फाउण्डेशन के आधार पर चलते रहते हैं। ये है दूसरा नम्बर। पहला नम्बर सुनाया 'यथार्थ निश्चय' और दूसरा नम्बर 'अच्छा लगता है' और तीसरा नम्बर - दुनिया के सम्बन्धियों के दु:खमय वातावरण से बचकर जितना समय भी सेवाकेन्द्र पर आते हैं उतना समय दु:ख से किनारा होकर शान्ति का अनुभव करते हैं। ज्ञान की गुह्यता में नहीं जायेंगे लेकिन शान्ति की प्राप्ति के कारण कभी आते हैं और कभी नहीं भी आते हैं। लेकिन यथार्थ निश्चय बुद्धि विजयी होते हैं। और देखा जाता है कि जब शुरू- शुरू में आते हैं तो अशान्ति से तंग होते हैं, शान्ति के इच्छुक होते हैं। तो जैसे प्यासे को एक बूंद भी अगर पानी की मिल जाये तो वो बहुत बड़ी बात अनुभव करता है। तो अप्राप्ति से प्राप्ति होती है, परिवार में, ज्ञान में, योग में, वायुमण्डल में अन्तर दिखाई देता है। तो पहला समय बहुत अच्छे उमंग- उत्साह से चलते हैं, बहुत नशा

रहता है, खुशी भी होती है। लेकिन अगर पहले नम्बर के यथार्थ निश्चय का फाउण्डेशन पक्का नहीं है, दूसरे या तीसरे नम्बर का निश्चय है तो धीरे-धीरे जो शुरू की खुशी, शुरू का जोश है, उसमें फर्क आ जाता है।

इस सीज़न में नये-नये बहुत आये हैं और चांस भी मिला है, यह तो बहुत अच्छा है। बापदादा को भी नये-नये बच्चों को देख खुशी होती है कि ये फिर से अपने परिवार में पहुँच गये। लेकिन ये चेक करो कि निश्चय का फाउण्डेशन पक्का है? हमारा निश्चय नम्बरवन है वा नम्बर टू है? अगर नम्बरवन निश्चय है तो चलते-चलते मुख्य पवित्रता धारण करने में मुश्किल नहीं लगेगा। अगर पवित्रता स्वप्न मात्र भी हिलाती है, हलचल में आती है, तो समझो नम्बरवन फाउण्डेशन कच्चा है। क्योंकि आत्मा का स्वधर्म पवित्रता है। अपवित्रता परधर्म है और पवित्रता स्वधर्म है। तो जब स्वधर्म का निश्चय हो गया तो परधर्म हिला नहीं सकता। कई बच्चे कहते हैं कि पहले तो बहुत अच्छे आते थे, अभी पता नहीं क्या हो गया? तो क्या हो जाता है कि बाप जो है, जैसा है, वैसे अनुभव में नहीं लाते। अगर पूछेंगे कि बाप साथ है? तो हाथ सब उठायेंगे। हाथ उठाना तो बहुत सहज है। लेकिन बाप साथ है तो बाप की पहली-पहली जो महिमा करते हो कि वो सर्वशक्तिमान है - ये मानते हो या सिर्फ जानते हो? तो जब सर्वशक्तिमान बाप साथ है तो सर्वशक्तिमान के आगे अपवित्रता आ सकती है? नहीं आ सकती। लेकिन आती तो है, तो आती फिर कहाँ से है? कोई और जगह है? चोर लोग जो होते हैं वो अपना स्पेशल गेट बना लेते हैं। चोर गेट होता है। तो आपके पास भी छिपा हुआ चोर गेट तो नहीं है? चेक करो। नहीं तो माया आई कहाँ से? ऊपर से आ गई? अगर ऊपर से भी आ गई तो ऊपर ही खत्म हो जानी चाहिये। कोई छिपे हुए गेट से आती है जो आपको पता नहीं पड़ता है तो चेक करो कि माया ने कोई चोर गेट तो नहीं बनाकर रखा है? और गेट बनाती भी कैसे है, मालूम है? आपके जो विशेष स्वभाव या संस्कार कमज़ोर होंगे तो वहीं माया अपना गेट बना देती है। क्योंकि जब कोई भी स्वभाव या संस्कार कमज़ोर है तो आप कितना भी गेट बन्द करो, लेकिन कमज़ोर गेट है, तो माया तो जानीजाननहार है, उसको पता पड़ जाता है कि ये गेट कमज़ोर है, इससे रास्ता मिल सकता है और मिलता भी है। चलते- चलते अपवित्रता के संकल्प भी आते हैं, बोल भी होता, कर्म भी हो जाता है। तो गेट खुला हुआ है ना, तभी तो माया आई। फिर साथ कैसे हुआ? कहने में तो कहते हो कि सर्वशक्तिमान साथ है तो ये कमज़ोरी फिर कहाँ से आई? कमज़ोरी रह सकती है? नहीं ना? तो क्यों रह जाती है? चाहे

पवित्रता में कोई भी विकार हो, मानो लोभ है, लोभ सिर्फ खाने-पीने का नहीं होता। कई समझते हैं हमारे में पहनने, खाने या रहने का ऐसा तो कोई आकर्षण नहीं है, जो मिलता है, जो बनता है, उसमें चलते हैं। लेकिन जैसे आगे बढ़ते हैं तो माया लोभ भी रॉयल और सूक्ष्म रूप में लाती है। वो रॉयल लोभ क्या है? चाहे स्टूडेण्ट हो, चाहे टीचर हो, माया दोनों में रॉयल लोभ लाने का फुल पुरूषार्थ करती है। मानो स्टूडेण्ट है, बहुत अच्छा निश्चयबुद्धि, सेवाधारी है, सबमें अच्छा है लेकिन जब आगे बढ़ते हैं तो ये रॉयल लोभ आता है कि मैं इतना कुछ करता हूँ, सब रूप (तरह) से मददगार हूँ, तन से, मन से, धन से और जिस समय चाहिये उस समय सेवा में हाज़र हो जाता हूँ फिर भी मेरा नाम कभी भी टीचर वर्णन नहीं करती कि ये जिज्ञासु बहुत अच्छा है। अगर मानों ये भी नहीं आवे तो फिर दूसरा रूप क्या होता है? अच्छा, नाम ले भी लिया तो नाम सुनते-सुनते-मैं ही हूँ, मैं ही करता हूँ, मैं ही कर सकता हूँ, वो आभिमान के रूप में आ जायेगा। या बहुत काम करके आये और किसी ने आपको पूछा भी नहीं, एक गिलास पानी भी नहीं पिलाया, देखा ही नहीं, अपने आराम में या अपने काम में बिज़ी रहे, तो ये भी आता है कि करो भी और पूछे भी कोई नहीं। तो करना ही क्या है, करना या ना करना एक ही बात है। पूछने वाला तो कोई है नहीं, इससे आराम से घर में बैठो, जब होगा तब सेवा करेंगे। तो ये भिन्न-भिन्न प्रकार का विकारों का रॉयल रूप आता है। और एक भी विकार आ गया ना, मानो लोभ नहीं आया लेकिन अभिमान आ गया या अपने मानने तक का, हमारी मान्यता हो - उसका भान आ गया तो जहाँ एक विकार होता है वहाँ उनके चार साथी छिपे हुए रूप में होते हैं। और एक को आपने चांस दे दिया तो वो छिपे हुए जो हैं वो भी समय प्रमाण अपना चांस लेते रहते हैं। फिर कहते हैं कि पहले जैसा नशा अभी नहीं है, पहले बहुत अच्छा था, पहले अवस्था बड़ी अच्छी थी, अभी पता नहीं क्या हो गया है। माया चोर गेट से आ गई - ये है पता, ये नहीं कहो पता नहीं।

और टीचर को भी आता है। टीचर को क्या चाहिये? सेन्टर अच्छा हो, कपड़े भले कैसे भी हो लेकिन सेन्टर थोड़ा रहने लायक तो अच्छा हो। और जो साथी हो वो अच्छे हो, स्टूडेण्ट अच्छे हो, बाबा की भण्डारी अच्छी हो। अगर अच्छा स्टूडेन्ट चेंज हो जाये तो दिल थोड़ा धड़कता है। फिर समझते हैं कि क्या करें, ये मददगार था ना, अभी वो चला गया। मददगार जिज्ञासु था वा बाप है? तो उस समय कौन दिखाई देता है? जिज्ञासु या बाप? तो ये रॉयल माया फाउण्डेशन को हिलाने की कोशिश करती

है। अगर आपको निश्चय है-सर्वशक्तिमान साथ है तो बाप किसी न किसी को निमित्त बना ही देता है। कई फिर सोचते हैं हमें कम से कम एक बार आबू की कांफ्रेंस में या किसी बड़ी कांफ्रेंस में चांस मिलना चाहिए, चलो और नहीं, योग शिविर तो करा लें, ये भी तो चांस होना चाहिये ना, चलो भाषण नहीं करे, स्टेज पर तो आवें, आखिर विनाश हो जायेगा, क्या विनाश तक भी हमारा नम्बर नहीं आयेगा, नम्बर तो आना चाहिये ना! लेकिन पहले भी बापदादा ने सुनाया कि अगर योग्य हैं, चांस मिलता है तो खुशी से करो लेकिन ये संकल्प करना कि हमें चांस मिलना चाहिए..... यह भी मांगना है। चाहिये-चाहिये ये है रॉयल मांगना। ये होना चाहिये..... ये हमें पहचानते नहीं हैं, दादी-दीदियाँ भी सभी को पहचानती नहीं हैं, जो आगे आते हैं उसको आगे कर लेते हैं-तो ये संकल्प आना यह भी एक सूक्ष्म मांगना है। लेकिन बापदादा ने सुना दिया है कि मानों आप स्टेज पर आ गई या आपकी कोई भी विशेषता के कारण, योग नहीं भी है, अवस्था इतनी अच्छी नहीं है लेकिन बोल में, कैचिंग पॉवर में विशेषता है तो चांस मिल जाता है, क्योंकि किसी की वाणी में मिठास होता है, स्पष्टता होती है और कैचिंग पावर होती है तो यहाँ के वहाँ के मिसाल वगैरह कैच करके सुनाते हैं इसीलिए उन्हों का नाम भी हो जाता है। कौन चाहिये? फलानी चाहिये। कौन आवे? फलानी आवे, चाहे योग में कच्ची भी हो.... तो इस पर नम्बर फाइनल नहीं होने हैं। जो फाइनल नम्बर मिलेंगे वो ये नहीं होगा कि इसने कितने भाषण किये या इसने कितने स्टूडेण्ट वा सेन्टर बनाये हैं, लेकिन योग्य कितनों को बनाया है? सेन्टर बनाना बड़ी बात नहीं है लेकिन योग्य कितनी आत्माओं को बनाया? नाम हो गया-30 सेन्टर की इंचार्ज है और 30 में से 15 हिल रहे हैं, 15 ठीक हैं तो फायदा हुआ या सिर्फ नाम हुआ? सिर्फ नाम होता है कि फलानी के 30 सेवाकेन्द्र हैं। लेकिन नम्बर इससे नहीं मिलेगा। फाइनल नम्बर जितनों को सुख दिया, जितना स्वयं शक्तिशाली रहे, उसी प्रमाण मिलेंगे। इसीलिये ये भी चाहिये-चाहिये खत्म कर दो। नहीं तो योग नहीं लगेगा। रोज़ यही देखते रहेंगे कि फलानी जगह प्रोग्राम हुआ मेरे को फिर भी नहीं बुलाया, अभी परसों यहाँ हुआ, कल वहाँ हुआ, आज यहाँ हुआ! तो योग लगेगा या गिनती होती रहेगी?

तो मुख्य बात - जो यथार्थ निश्चय है उसको पक्का करो। कहने में तो कह देते हो मैं आत्मा हूँ और बाप सर्वशक्तिमान है लेकिन प्रैक्टिकल में, कर्म में आना चाहिये। बाप सर्वशक्तिमान है लेकिन मेरे को माया हिला रही है तो कौन मानेगा आपका बाप

सर्वशक्तिमान है! क्योंकि उससे ऊपर तो कोई है नहीं। तो बापदादा आज निश्चय के फाउण्डेशन को देख रहे हैं। चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं लेकिन इस निश्चय के फाउण्डेशन को प्रैक्टिकल में लाओ और समय पर यूज़ करो। समय बीत जाता है फिर बाप के आगे पश्चाताप के रूप में आते हो-क्या करें, बाबा हो गया, आप तो रहमदिल हो, रहम कर दो.....तो ये क्या हुआ? ये भी रॉयल पश्चाताप है। साथ है तो किसी की हिम्मत नहीं है, निश्चयबुद्धि का अर्थ ही है विजयी। अगर कोई हिसाब-किताब आता भी है तो मन को नहीं हिलाओ। स्थिति को नीचे-ऊपर नहीं करो। चलो आया और फट से उसको दूर से ही खत्म कर दो। अभी योद्धे नहीं बनो। कई अभी निरन्तर योगी नहीं हैं। कुछ समय योगी हैं और कुछ समय युद्ध करने वाले योद्धे हैं। लेकिन अपने को कहलाते क्या हो? योद्धे कि योगी? कहलाते तो सहजयोगी हो। तो नये जो भी आये हैं उनको बापदादा फिर से भाग्य प्राप्त करने की मुबारक देते हैं। लेकिन मुबारक के साथ ये चेक भी करना कि फाउण्डेशन नम्बरवन है या नम्बर दो का है?

कई कहते हैं ज्ञान-योग बहुत अच्छा लगता है, अच्छा है वो तो ठीक है लेकिन कर्म में लाते हो? ज्ञान माना आत्मा, परमात्मा, ड्रामा....यह कहना नहीं। ज्ञान का अर्थ है समझ। समझदार जैसा समय होता है वैसे समझदारी से सदा सफल होता है। कभी भी देखो जीवन में दु:ख आते हैं तो क्या सोचते हो? पता नहीं, मुझे यह क्यों नहीं समझ में आया - यहीं कहेंगे। तो समझदार हो? ज्ञानी हो? बोलो हाँ या ना? (हाँ जी) हाँ तो बहुत अच्छी बोलते हैं। समझदार की निशानी है कभी धोखा नहीं खाना - ये है ज्ञानी की निशानी, और योगी की निशानी है - सदा क्लीन और क्लियर बुद्धि। क्लीन भी हो और क्लियर भी हो। योगी कभी नहीं कहेगा-पता नहीं, पता नहीं। उनकी बुद्धि सदा ही क्लियर है। और धारणा स्वरूप की निशानी है सदा स्वयं भी डबल लाइट। कितनी भी ज़िम्मेवारी हो लेकिन धारणामूर्त, सदा डबल लाइट। चाहे मेला हो, चाहे झमेला हो-दोनों में डबल लाइट। और सेवाधारी की निशानी है-सदा निमित्त और निर्माण भाव। तो ये सभी अपने में चेक करो। कहने में तो सभी कहते हो ना कि चारों ही सब्जेक्ट के गॉडली स्टूडेण्ट हैं। तो निशानी दिखाई देनी चाहिये।

तो नये-नये क्या करेंगे? अपने निश्चय को और पक्का करना। नहीं तो फिर क्या होता है दो साल चलेंगे, तीन साल चलेंगे फिर वापस पुरानी दुनिया में चले जायेंगे। और फिर जो वापस जाते हैं वो उस दुनिया में भी सेट नहीं हो सकते हैं। न इस दुनिया के

रहते, न उस दुनिया के। इसलिए अपना फाउण्डेशन बहुत पक्का करो। अनुभव करो- सर्वशक्तिमान बाप साथ है। बस एक बात भी अनुभव किया तो सबमें पास हो जायेंगे। रिवाज़ी प्राइम मिनिस्टर है, मिनिस्टर है उसके साथ का भी नशा रहता है। ये तो सर्वशक्तिमान है! अच्छा!

जो इस कल्प में पहले बारी आये हैं वो हाथ उठाओ। जो पहली बार आये हैं वो सदा खुश रहना और सदा आबाद रहना। अच्छा-टीचर्स भी बहुत आती हैं। एक साल में कितने चांस मिलते हैं? एक ही मिलता है। 12 मास को 13 मास तो कर नहीं सकते। बापदादा को तो दिल होती है टीचर्स ऐसे रिफ्रेश हो जायें, शक्तिशाली बन जायें जो किसी भी सेन्टर पर कोई भी जाये तो एक आत्मा भी कमज़ोर नहीं दिखाई दे। निर्विघ्न सेवाकेन्द्र, उसको ही मार्क्स मिलती हैं। बापदादा इसमें खुश नहीं होते कि इस ज़ोन में हज़ार सेन्टर हैं, हज़ार गीता पाठशालायें हैं। बापदादा खुश होते हैं जिस ज़ोन में कोई खिटखिट नहीं हो, कोई कंप्लेंट नहीं हो। क्योंकि वास्तव में मानो टीचर मेहनत कर रही है और कमज़ोर संस्कार ही माया के आने का चोर गेट है। 52 खिटखिट भी हो रही है, वातावरण वैसे का वैसा है तो क्या वो सेवा है? कि झमेला है? तो आये किसलिए? ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारियां किसलिए बनें? झमेले के लिए? अगर झमेले ही चाहियें तो दुनिया में बहुत जगह हैं। बापदादा वहाँ का एड्रेस भी दे सकते हैं। लेकिन ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ बनना माना मिलन मेला मनाना, न कि झमेला। देखो अभी आये हो तो किस लक्ष्य से आये हो? झमेले के लिए आये हो? मिलन मनाने आये हो तो अच्छा लगता है ना! तो कभी भी, कोई भी स्टूडेन्ट हो वा टीचर हो, हैं तो सभी स्टूडेन्ट-कभी भी झमेला नहीं करो। झमेला करना अर्थात् क्या कहें! बापदादा को कहना भी अच्छा नहीं लगता। इसलिए चाहे टीचर, चाहे मधुबन, चाहे मधुबन के उप सेवाकेन्द्र, गीता पाठशालायें या आपके ज़ोन के उपसेवाकेन्द्र या केन्द्र, जो भी अपने को ब्राह्मण आत्मा कहलाते हैं, नहीं तो अपने को ब्राह्मण नहीं कहलाओ, क्षत्रिय कहलाओ, ब्राह्मण नाम को खराब नहीं करो। ब्राह्मण माना विजयी। अगर झमेला करते हैं तो क्षत्रिय हैं, न कि ब्राह्मण।

तो आज का पाठ क्या पक्का करेंगे? कौन सा संकल्प करेंगे? हर एक को मन, वाणी, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क में झमेला मुक्त बनना है। झमेला नहीं होना चाहिये। रोज़ चेक करो। ये व्यर्थ संकल्प का भी झमेला है। दूसरे के साथ नहीं है लेकिन अपने मन में तो झमेला है। तो सभी क्या संकल्प करेंगे? क्या

बनेंगे? बोलो, झमेला मुक्त। क्योंकि डायमण्ड जुबली आ रही है तो डायमण्ड जुबली में झमेला वाला डायमण्ड चाहिये क्या? आप लोग पसन्द करेंगे? या बहुत सुन्दर डायमण्ड के बीच में दो-चार झमेले वाले डायमण्ड हों तो पसन्द करेंगे? नहीं करेंगे। लेकिन इसकी बहुत सहज विधि है, मेहनत करने की भी ज़रुरत नहीं। झमेला मुक्त होने की विधि सबसे सहज है कि पहले स्वयं को झमेले मुक्त करो। दूसरे के पीछे नहीं पड़ो। ये स्टूडेन्ट ऐसा है, ये साथी ऐसा है, ये सरकमस्टांस ऐसे हैं-उसको नहीं देखो लेकिन अपने को झमेला मुक्त करो। जहाँ झमेला हो वहाँ अपने मन को, बुद्धि को किनारे कर लो। आप सोचते हो-ये झमेला पूरा होगा तो बहुत अच्छा हो जायेगा, हमारी सेवा भी अच्छी, हमारी अवस्था भी अच्छी हो जायेगी। लेकिन झमेले पहाड़ के समान हैं। क्या पहाड़ से माथा टकराना है? पहाड़ हटेगा क्या? स्वयं किनारा कर लो या उड़ती कला से झमेले के पहाड़ के भी ऊपर चले जाओ। तो पहाड़ भी आपको एकदम सहज अनुभव होगा। मुझे बनना है। अमृतवेले से ये स्वयं से संकल्प करो कि मुझे झमेला मुक्त बनना है। बाकी तो है ही झमेलों की दुनिया, झमेले तो आयेंगे ही। आपकी दुनिया आपका सेवाकेन्द्र है तो आपकी दुनिया ही वो है, तो वहाँ ही आयेंगे ना। आप पेपर देने के लिए अमेरिका, लण्डन जायेंगी क्या? सेन्टर पर ही देंगी ना! तो झमेला नहीं आवे-यह नहीं सोचो। झमेला मुक्त बनना है-ये सोचो। हो सकता है? कि वहाँ सेन्टर पर या घर में जायेंगे तो कहेंगे कि ये झमेला तो मेरे से नहीं होगा। ऐसे तो नहीं? जब बाप ने कहा है कि पुरानी दुनिया से, पुरानी दुनिया के प्राप्तियों से अभी अपने मन और बुद्धि को ऊंचा करो। पुरानी दुनिया से लंगर उठा लिया कि अभी लगा हुआ है? बंधा हुआ तो नहीं है? वो कहानी सुनाते हैं ना तो अन्जान रहना ये भी अन्धकार है। वो अन्धकार नहीं लेकिन अन्जान रहना भी अन्धकार है। तो अन्धकार में नहीं रह जाना। अच्छी तरह से चेक करो। देखेंगे, ये झमेला मुक्त नम्बरवन कौन सा सेवाकेन्द्र या मधुबन बनता है?

मधुबन वालों को भी बनना है। ऐसे नहीं जो ग्रुप आया है उनको ही बनना है। मधुबन वाले नीचे बैठे हैं ना। (ओम् शान्ति भवन का हाल फुल होने के कारण सभी पाण्डव भवन में मुरली सुन रहे हैं) चाहे यहाँ बैठे हैं, चाहे नीचे बैठे हैं, लेकिन बापदादा के तो सामने हैं। आप टी.वी. के सामने हो, बापदादा आपके सामने है। तो मधुबन वाले या जो भी देश-विदेश सभी इसमें नम्बरवन बनो फिर डायमण्ड जुबली बहुत धूमधाम से मनायेंगे। अभी बापदादा को थोड़ा- थोड़ा होता है कि क्या सभी मुक्त हो जायेंगे!

लेकिन ये बापदादा का संकल्प ठीक नहीं है, ऐसे ना? बाप को तो बच्चों पर निश्चय है ना! लेकिन थोड़ा-थोड़ा आता है - क्या करेंगे! बाकी है ही क्या? एक मास। डायमण्ड जुबली तो जनवरी से शुरू है। डायमण्ड जुबली के बीच में करेंगे, आरम्भ में करेंगे, क्या करेंगे? बताओ, राय बताओ कि डायमण्ड जुबली के आरम्भ में मुक्त हो जायेंगे या समाप्ति में मुक्त होंगे? जो समझते हैं थोड़ा समय तो चाहिये, इतने में कैसे हो जायेंगे, 63 जन्म के संस्कार हैं, एक मास में खत्म हो जायेंगे-मुश्किल लगता है....! टाइम चाहिये? 2 मास, 6 मास, क्या समझते हो? जो समझते हैं कुछ टाइम चाहिये वो हाथ उठाओ। अच्छा, जिन्होंने हाथ उठाया वो खड़े हो जाओ। सच्चे तो हैं ना। इन्हों का फोटो निकालो, इन्हों को टाइम देंगे। घबराओ नहीं। जिन्होंने भी हाथ उठाया है वो अपनी चिटकी में सेन्टर और अपना नाम ये परिचय लिख करके शान्तामणि को देना। कोई हर्जा नहीं है, आप लोगों ने सच बोला - तो जल्दी हो जायेंगे। बाकी इतने सभी अगर मुक्त हो गये तो ये थोड़े तो आपकी पूँछ पकड़कर भी मुक्त हो जायेंगे। अच्छा, पोस्ट वाली इशू कहाँ है? इसके पास पोस्ट आती है। तो एक मास के बाद कोई ऐसी झमेले की पोस्ट नहीं आनी चाहिये। अगर आवे तो आप बापदादा को बताना। ठीक है ना। पक्का काम करना चाहिये। इनको पहचानते हो ना। इससे सबका काम पड़ता है। भविष्य बनाने के निमित्त तो रखा हुआ है ना! सभी जमा यहीं आ करके करते हैं।

अच्छा, डबल विदेशियों ने क्या कहा? ज़ोन तो बहुत आये हैं। (सभी ज़ोन वालों से बापदादा ने हाथ उठवाये)

अच्छा, सभी ज़ोन, चाहे दिल्ली, चाहे गुजरात, चाहे तामिलनाडु जो भी हैं बापदादा ने देखा कि सभी के मन में डायमण्ड जुबली का उमंग-उत्साह बहुत अच्छा है। और सभी समझते हैं कि ये डायमण्ड जुबली, यज्ञ की स्थापना निर्विघ्न 60 साल चली है और आगे भी चलती रहेगी। तो 60 साल वृद्धि होती रही है, खत्म नहीं हो जाये संस्था या खिटखिट में बिगड़ नहीं जाये... यह इस विश्वविद्यालय की दुनिया के लिए बहुत बड़ी शान है। तो डायमण्ड जुबली मनाना अर्थात् हर ब्राह्मण का ये शान है कि हम ऐसे विश्वविद्यालय के या ऐसे श्रेष्ठ कार्य के साथी हैं। 60 साल कोई कम नहीं हैं, दुनिया के लिए तो असम्भव बात है। लेकिन आप जानते हो कि परमात्म कार्य सदा अचल, अविनाशी है। तो संस्था की शान अर्थात् हर ब्राह्मण आत्मा की शान है। फ़लक से कह सकते हो कि हमारे कार्य की डायमण्ड जुबली है। दुनिया वाले तो समझते हैं

कि कोई भी बड़ा गुरू गया तो संस्था भी गई। इन्हों का ब्रह्मा बाबा गया तो सब कुछ गया.... लेकिन आप जानते हो कि ब्रह्मा बाप द्वारा भी चलाने वाला अविनाशी बाप है। तो ये डायमण्ड जुबली - एक कार्य के सफलता की निशानी है। इसमें चाहे युवा हो चाहे प्रवृत्ति वाले हो, सभी को डायमण्ड बन और अन्य डायमण्ड की माला बनानी है। अगर स्वयं निर्विघ्न श्रेष्ठ डायमण्ड हैं तो औरों को भी ऐसे ही बनायेंगे।

युवकों से

युवा हाथ उठाओ। मैजारिटी देश-विदेश में देखा जाता है कि जो नये-नये आते हैं वो मैजारिटी युवा आते हैं, युवा वर्ग का आना ये संस्था की शान है। क्योंकि गवर्नमेंट तो हार गई, वो तो साफ कहती है हमारी हिम्मत नहीं। तो आप युवा वर्ग ऐसी कमाल करके दिखाओ जो बाप का नाम हर युवा के चलन से, परिवर्तन से दिखाई दे। इसके लिए हर एक युवा को अपने को क्या बनाना है? दिव्य दर्पण। दर्पण में शक्ल दिखाई देती है ना। तो आपके चेहरे से औरों को फरिश्ता या दिव्य गुणधारीमूर्त दिखाई दे। (एजुकेशन विंग की ओर से गुजरात में चले अभियान का समाचार बापदादा को सुनाया) अच्छा है, कितनी आत्माओं को परिचय मिल गया ना! तो सेवा किया अर्थात् अपने पुण्य का खाता जमा किया। अभी एजुकेशन डिपार्टमेन्ट या वर्ग वालों ने चक्कर तो लगाया, बहुत अच्छा किया लेकिन एजुकेशन डिपार्टमेन्ट या वर्ग गवर्नमेंट को यह सिद्ध करके दिखावे कि सचमुच जो नाम है विश्वविद्यालय वो रीयल विश्वविद्यालय यही है। अभी मान्यता नहीं दिलाई है। तो ये काम अभी रहा हुआ है, अधूरा है अभी। तो ऐसा प्लैन बनाओ जो गवर्नमेंट स्वयं बोले कि हमारे विश्वविद्यालय इस विद्यालय के आगे कुछ नहीं हैं। अगर है तो ये है। यही है, यही है - ये बोले, तब एजुकेशन वालों को इनाम देंगे। अभी तो युद्ध चल रही है - एजुकेशन है या नहीं है? तो जो रीयल है, जो सत्य है वो सिद्ध तो होना है ना। तो थोड़ी और मेहनत करो। होना तो है लेकिन वो बिचारे इतने भटक रहे हैं, जल्दी से बच जावें। अच्छा, युवा अर्थात् दिव्य दर्पण। समझा?

प्रवृत्ति वालों से

प्रवृत्ति वाले क्या करेंगे? बापदादा प्रवृत्ति वालों की सदा किस पुष्प से तुलना करते हैं? (कमलपुष्प से)

अच्छा तो आप प्रवृत्ति वाले कमल पुष्प हो? कभी-कभी कोई बूंद तो नहीं लग जाती? कोई मिट्टी का प्रभाव तो नहीं पड़ जाता? तो प्रवृत्ति वाले इस सारी पुरानी

दुनिया को, कमल पुष्प का तालाब बना दो। तालाब के बीच में कमल पुष्प बहुत अच्छे लगते हैं। तो इस पुरानी दुनिया को कमल पुष्प का बड़े से बड़ा तालाब बनाओ, जो जहाँ भी देखे ना तो कमल ही कमल दिखाई दें। इतनी हिम्मत है? डायमण्ड जुबली तक बनायेंगे? एक मास में नहीं कहते लेकिन एक वर्ष में तो बनाओ। बिचारे आत्माओं की हालतें देखो तो सचमुच रहम आता है। दुनिया की हालत देखो और अपने को देखो-कितना अन्तर है! कितनी बातों से, दुःखों से, दर्दों से छूट गये हो। समझते हो - दुनिया की ऐसी हालत है? किसी से भी पूछो क्या हालचाल है तो कहेंगे कि दुनिया का तो बेहाल है। और आपसे पूछे क्या हाल है? खुशहाल है। तो दुनिया बेहाल और आप सभी खुशहाल। पक्का है या कभी-कभी खुशी कम होती है? कम नहीं होने देना। तो सभी प्रवृत्ति वाले कमल हो ना! पक्का याद रखो कि हम कमल हैं। न्यारे और बाप के प्यारे। अच्छा!

कुमारियों से

कुमारियों की तो महिमा सदा बापदादा करते हैं। क्योंकि कुमारी साधारण कुमारी से विश्व की सेवाधारी कुमारी बन गई। कहाँ घर की चार दीवारों में रहने वाली और कहाँ विश्व के सेवाधारी बन गये या बन रहे हैं। तो कुमारियाँ अपने को ऐसे योग्य समझती हो? ऐसे योग्य हो या टोकरी उठाने वाली हो? टोकरी उठाते-उठाते तो सिरदर्द करता है। अभी कुमारियों को टोकरी वाली बनना है या ताज वाली बनना है? टोकरी छोड़ देंगी? कि टोकरी उठाना ज़रूरी है? कुमारियां क्या समझती हैं? जो समझती हैं कि नौकरी करनी ही पड़ेगी, मजबूरी है, वो हाथ उठाओ। मजबूरी वाली कोई नहीं है। तो घरों में क्यों बैठे हो? जब नौकरी की आवश्यकता नहीं तो क्यों बैठे हो? क्यों नहीं आते हो मैदान में? घर अच्छा लगता है? छोटा सा घर है, कोई खिटखिट नहीं है, माँ-बाप का प्यार मिल रहा है, ठीक है। सेवाकेन्द्र पर पता नहीं क्या-क्या होगा, कैसे चलेंगे, चल सकेंगे या नहीं सकेंगे, इसीलिए चार दीवारी ठीक है... ऐसे समझती हो? कुमारियों पर तो सब युगों में से संगमयुग पर विशेष परमात्म-कृपा है। अगर संगम पर परमात्म कृपा के अधिकारी नहीं बने तो सारे कल्प में नहीं बनेंगे। तो कुमारियों को परमात्म वरदान है या परमात्म-कृपा है, वो कभी भी छोड़नी नहीं चाहिये, लेनी चाहिये। समझा कुमारियों ने? डरो नहीं। आजकल समाचार सुना है, कई कुमारियाँ डरती हैं- पता नहीं, पता नहीं, पता नहीं! लेकिन सभी सेवाकेन्द्र एक जैसे नहीं होते हैं। अगर कोई बात है भी तो बड़ों को दे सकते हैं। उसके लिए कोई को मना नहीं है। अगर टीचर

मना भी करती है तो बापदादा की छुट्टी है कि कहाँ से भी पत्र डाल सकते हो। सिर्फ क्या होता है-बापदादा पत्र के लिए तो कहते हैं लेकिन लम्बा बहुत लिख देते हैं। थोड़े में ही समझ में आ जाता है, लेकिन लम्बी कहानी होगी तो जो चार्ज वाली देखेगी ना, वो भी किनारे रख देगी। जब टाइम मिलेगा तब पढ़ेगी। और बड़ों तक भी नहीं जायेगा। उन्हों को भी टाइम मिले ना, तब तो आपका रामायण पढ़ेंगे। इसलिए लम्बा नहीं लिखो। शॉर्टकट में लिखो कि ये तकलीफ है और इसकी ये सैलवेशन चाहिये। फिर स्पष्टीकरण लेना होगा तो बड़े आपको आपेही बुलायेंगे। और ही मधुबन में आने का चांस मिलेगा। तो लम्बा नहीं लिखना। बाकी सबको छुट्टी है, अगर कोई ऐसी अयथार्थ बात है तो सुना सकते हैं। डरो नहीं। डरने के कारण अपनी परमात्म-कृपा का भाग्य नहीं गँवाओ। समझा कुमारियों ने? न अपने को तंग करो, न दूसरे को तंग करो। भाग्य अच्छा है। कुमारियाँ हिम्मत रखती हैं तभी सेन्टर खुल सकते हैं। अगर कुमारियाँ हिम्मत नहीं रखतीं तो सेन्टर भी नहीं खुलते। तो लक्की तो हो ना। सभी दीदी जी, दादी जी तो कहते हैं। यहीं टाइटल मिल जाता है। अच्छा।

बाकी मधुबन वाले या जो भी सम्पर्क में गीता पाठशालायें कहो, उपसेवाकेन्द्र कहो, जो भी हैं सभी को बापदादा अभी अपने समान सम्पन्न और मास्टर सर्वशक्तिमान देखना चाहते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा मॉडल मधुबन है। मधुबन कौन सा मॉडल बनाता है, वह देखेंगे। जो सच्ची दिल से सेवा करते हैं उसको बापदादा भी पद्मगुणा मुबारक देते हैं। मधुबन वाले खातिरी तो करते हैं ना। चाहे ज्ञान सरोवर में, चाहे यहाँ पाण्डव भवन में, खातिरी तो करते हैं। तो खातिरी करने वालों को आप सभी भी मुबारक दे रहे हो ना। तो सारी सभा की तरफ से मुबारक।

अच्छा, चारों ओर के सदा श्रेष्ठ भाग्यवान भाग्य विधाता को अपना बनाने वाले ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बापदादा के श्रीमत को सुना और किया ऐसे सर्व सपूत बच्चों को, सदा सेवा में अचल रहने वाले झमेला मुक्त और परमात्म-मिलन मेला मनाने वाले सभी बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

अच्छा-डबल विदेशियों को डबल नशा है ना? डबल विदेशी अर्थात् डबल लाइट, डबल नशा और डबल बापदादा और परिवार के प्यारे। समझा?

अच्छा! हेल्थ मेला करने वालों को भी मुबारक। वैसे रिज़ल्ट अच्छी है और रहेगी।

(दादियां बापदादा के सामने बैठी हैं) टीचर्स को अच्छा चांस मिल जाता है। मेहनत भी करती हैं, यहाँ थकावट उतर जाती है। यहाँ रिफ्रेश होते हो या यहाँ भी पार्टी की चिन्ता

रहती है? वैसे तो मधुबन की दिनचर्या ऐसी सेट है जो टाइम भी नहीं है। बिज़ी रहने चाहे, क्लासेस का लाभ उठाना चाहे तो स्टूडेण्ट को फुर्सत मिलती है? मधुबन में फ्री होते हो? पाण्डवों से पूछते हैं कि क्लासेस में बिज़ी रहते हो, क्या होता है? मधुबन में यहाँ वहाँ की बातें करने का फ्री टाइम मिलता है? क्लासेस में बिज़ी रहते हो? सभी क्लासेस अटेण्ड करते हो? क्लासेस ज़रुर अटेण्ड करना चाहिये क्योंकि हर एक रत्न में बापदादा वा ड्रामानुसार कोई न कोई विशेषता भरी हुई है। तो क्लास कोई भी करावे। ऐसे नहीं फलाने का क्लास है तो सभी भागो और कोई दूसरे का है तो आधा घूमना...। कोई भी क्लास कराता है उसमें विशेषता होती है। और आप लोगों के पास सभी तो पहुँच भी नहीं सकते। यहीं मिलते हैं। तो जिन्हों ने सभी क्लास अटेण्ड किये हैं, एक भी मिस नहीं किया है, वह हाथ उठाओ। अच्छा, टीचर्स अपने काम उतारती हैं। आप एक तो ऑफिशियल राउण्ड लगाने जाते हो वो तो अच्छी बात है, लेकिन क्लास के टाइम जो क्लास छोड़ करके और कहाँ घूमने गये हैं वो हाथ उठाओ। तो अभी ऐसे नहीं करना। क्लास की कई बातें समय पर बरोबर काम में आयेंगी। अभी सुनते हो, तो समझते हो बहुत सुन लिया। लेकिन कोई-कोई पॉइन्ट ऐसे टाइम में काम पर आती हैं जो आप अन्दर ही अन्दर शुक्रिया मानेंगे, इसलिए बिजी रहो। मधुबन माना पढ़ाई में बिज़ी। बाकी खाओ पियो मौज करो, वो भले करो लेकिन टाइम पर। अच्छा है, नयों-नयों को तो नई बातें मिलती हैं। पढ़ाई में अटेन्शन बहुत ज़रूरी है। पढ़ाई माना सिर्फ सुनना नहीं। पढ़ाई का अर्थ है सुनना और करना। अच्छा, सब खुशहाल तो हैं ही। बेहाल नहीं, खुशहाल हो। अच्छा। (एजुकेशन अभियान के भाई-बहनें बापदादा के सामने खड़े हुए) अच्छा है, सेवा का फल, मधुबन में आने की छुट्टी मिल गई। लेकिन इनाम तभी देंगे जब गवर्नमेंट से कहलवायेंगे। कहने से भी कुछ नहीं होता। ये तो ऑफिशियल लिखा-पढ़ी हो। कहने में तो प्राइम मिनिस्टर भी कहकर गया-बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा है। तो चाहे डॉक्टर्स, एजुकेशन वाले वा इन्जीनियर्स आदि, जो भी सेवा अर्थ रैली निकालते हैं वो अच्छा है। तो मुबारक हो।
अच्छा! ओम् शान्ति।

27-02-1996 "सत्यता का फाउण्डेशन है पवित्रता और निशानी है-चलन वा चेहरे में दिव्यता"

आज सत्-बाप, सत्-शिक्षक, सतगुरु अपने चारों ओर के सत्यता के शक्ति स्वरूप बच्चों को देख रहे हैं। सत्यता का फाउण्डेशन पवित्रता है। और सत्यता का प्रैक्टिकल प्रमाण चेहरे पर और चलन में दिव्यता होगी। दुनिया में भी अनेक आत्मायें अपने को सत्यवादी कहते हैं वा समझते हैं लेकिन सम्पूर्ण सत्यता पवित्रता के आधार पर होती है। पवित्रता नहीं तो सदा सत्यता रह नहीं सकती है। तो आप सबका फाउण्डेशन क्या है? पवित्रता। तो पवित्रता के आधार पर सत्यता का स्वरूप स्वत: और सहज सदा होता है। सत्यता सिर्फ सच बोलना, सच करना इसको नहीं कहा जाता लेकिन सबसे पहला सत्य जिससे आपको पवित्रता की वा सत्यता की शक्ति आई, तो पहली बात है अपने सत्य स्वरूप को जाना, मैं आत्मा हूँ-ये सत्य स्वरूप पहले नहीं जानते थे। लेकिन पहला सत्य अपने स्वरूप को जाना। मैं फलानी हूँ या फलाना हूँ, बॉडी के हिसाब से वह सत्य स्वरूप था? सत्य स्वरूप है पहले स्व स्वरूप और फिर बाप के सत्य परिचय को जाना। अच्छी तरह से अपना सत्य स्वरूप और बाप का सत्य परिचय जान लिया है? तीसरी बात-इस सृष्टि चक्र को भी सत्य स्वरूप से जाना। यह चक्र क्या है और इसमें मेरा पार्ट क्या है! तो अपना पार्ट अच्छी तरह से स्पष्ट रूप से जान लिया? आपका पार्ट अच्छा है ना? सबसे अच्छा पार्ट संगमयुग का कहेंगे। लेकिन आपका देव आत्मा का पार्ट भी विश्व में सारे चक्र की आत्माओं से श्रेष्ठ है। चाहे धर्म आत्मायें, महान आत्मायें भी पार्ट बजाती हैं लेकिन वो आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र नहीं हैं और आप देव आत्मायें शरीर और आत्मा दोनों से पवित्र हैं, जो सारे कल्प में और कोई आत्मा ऐसी नहीं। तो पवित्रता का फाउण्डेशन सिवाए आपके और कोई भी आत्मा का श्रेष्ठ नहीं है। आपको देव आत्मा का पार्ट याद है? पाण्डवों को याद है? देव आत्मा की पवित्रता नेचुरल रूप में रही है। महान आत्मायें, आत्माओं को पवित्र बनाती हैं लेकिन बहुत पुरूषार्थ से, नेचुरल नहीं। न नेचुरल है न नेचर रूप में है। और आपकी आधा कल्प पवित्रता की जीवन नेचुरल भी है और नेचर भी है। कोई पुरूषार्थ वहाँ नहीं है। यहाँ का पुरूषार्थ वहाँ नेचुरल हो जाता है। क्योंकि वहाँ अपवित्रता का नाम-निशान

नहीं, मालूम ही नहीं कि अपवित्रता भी होती है। इसलिए आपके पवित्रता का प्रैक्टिकल स्वरूप देवता अर्थात् दिव्यता का है। इस समय दुनिया वाले कितना भी अपने को सत्यवान समझें लेकिन स्व स्वरूप की सत्यता ही नहीं जानते। बाप के सत्य परिचय को ही नहीं जानते। तो सम्पूर्ण सत्य स्वरूप नहीं कहेंगे। आपमें भी सत्यता की शक्ति सदा तब रहेगी जब अपने और बाप के सत्य स्वरूप की स्मृति रहेगी, तो स्वत: ही हर संकल्प भी आपका सत्य होगा। अभी कभी भूल भी जाते हो, बॉडी कानसेस में आ जाते हो तो संकल्प सदा सत्यता के शक्तिशाली हो, पवित्रता के शक्तिशाली हो, वह सदा नहीं रहता। सदा रहता है कि व्यर्थ भी होता है? तो व्यर्थ को सत्य कहेंगे? झूठ तो बोला ही नहीं तो क्यों नहीं सत्य है? अगर कोई यह समझकर बैठे कि मैं कभी भी झूठ नहीं बोलती, सदा सच बोलती लेकिन सत्यता की परख है कि संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें दिव्यता अनुभव हो। बोल सच रहे हैं लेकिन दिव्यता नहीं है, देखते हो ना-कई बार-बार कहेंगे मैं सच बोलती, मैं सच बोलती। मैं सदा सच्ची हूँ लेकिन बोल में, कर्म में अगर दिव्यता नहीं है तो दूसरे को आपका सच, सच नहीं लगेगा। यही समझेंगे कि यह अपने को सिद्ध कर रही है लेकिन समझ में नहीं आता कि यह सत्य है। सत्य को सिद्ध करने के लिए सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। अगर अपने सत्य को जिद्द से सिद्ध करते हैं तो वह दिव्यता दिखाई नहीं देती है। ये साधारणता है, जो दुनिया में भी करते हैं। और बापदादा सत्य की निशानी एक स्लोगन में कहते हैं, साकार द्वारा भी सुना जो सच्चा होगा वह कैसे दिखाई देगा! सच तो नच। सदा खुशी में नाचता रहेगा। जब जिद्द करके सिद्ध करते तो आप अपना या दूसरे का चेहरा नोट करेंगे तो वह खुशी का नहीं होगा। थोड़ा सोचने का और थोड़ा उदासी का होगा। नाचने का नहीं होगा। सच तो बिठो नच, सच्चा खुशी में नाचता है। तो खुशी में जीवन के दिन या रात बहुत अच्छी लगती है। और थोड़ा भी सत्य में असत्य मिक्स है तो उस समय की जीवन इतनी अच्छी नहीं लगेगी। तो सत्यता का अर्थ ही है सत्य स्वरूप में स्थित होकर चाहे संकल्प, चाहे बोल, चाहे कर्म करना। आजकल दुनिया वाले तो स्पष्ट कहते हैं कि आजकल सच्चे लोगों का चलना ही मुश्किल है, झूठ बोलना ही पड़ेगा। लेकिन कई समय पर, कई परिस्थितियों में ब्राह्मण आत्मायें भी मुख से नहीं बोलती लेकिन अन्दर समझती हैं कि कहाँ-कहाँ चतुराई से तो चलना ही पड़ता है। उसको झूठ नहीं कहते लेकिन चतुराई कहते हैं। तो चतुराई क्या है? यह तो करना ही पड़ता है! तो वह स्पष्ट बोलते हैं और ब्राह्मण रॉयल भाषा में

बोलते हैं। फिर कहते हैं मेरा भाव नहीं था, न भावना थी न भाव था लेकिन करना ही पड़ता है, चलना ही पड़ता है। लेकिन ब्रह्मा बाप को देखा, साकार है ना, निराकार के लिए तो आप भी सोचते हो कि शिव बाप तो निराकार है, ऊपर मजे में बैठा है, नीचे आवे तो पता पड़े क्या है! लेकिन ब्रह्मा बाप तो साकार स्वरूप में आप सबके साथ ही रहे, स्टूडेन्ट भी रहे और सत्यता व पवित्रता के लिए कितनी आपोज़ीशन हुई तो चालाकी से चला? लोगों ने कितना राय दी कि आप सीधा ऐसे नहीं कहो कि पवित्र रहना ही है, यह कहो कि थोड़ा-थोड़ा रहो। लेकिन ब्रह्मा बाप घबराया? सत्यता की शक्ति धारण करने में सहनशक्ति की भी आवश्यकता है। सहन करना पड़ता है, झुकना पड़ता है, हार माननी पड़ती है लेकिन वह हार नहीं है, उस समय के लिए हार लगती है लेकिन है सदा की विजय।

सत्यता की शक्ति से आज डायमण्ड जुबली मना रहे हैं। अगर पवित्रता और सत्यता नहीं होती तो आज आपके चेहरों से, चलन से आने वालों को जो दिव्यता अनुभव होती है वह नहीं होती। चाहे प्यादा भी है, नम्बरवार तो है ही ना। महारथी भी हैं, नाम के महारथी नहीं, लेकिन जो सच्चे महारथी हैं अर्थात् सत्यता की शक्ति से चलने वाले महारथी हैं। जो परिस्थिति को देखकर सत्यता से ज़रा भी किनारा कर लेते, कहते हैं और कुछ नहीं किया एक दो शब्द ऐसे बोल दिये, दिल से नहीं बोले ऐसे बाहर से थोड़ा बोल दिये तो यह सम्पूर्ण सत्यता नहीं है। सत्यता के पीछे अगर सहन भी करना पड़ता तो वह सहन नहीं है भल बाहर से लगता है कि हम सहन कर रहे हैं लेकिन आपके खाते में वह सहन शक्ति के रूप में जमा होता है। नहीं तो क्या होता कि अगर कोई थोड़ा सा भी सहन करने में कमजोर हो जाता है तो उसे असत्य का सहारा जरूर लेना पड़ता है। तो उस समय ऐसे लगता है जैसे सहारा मिल गया, ठीक हो गया लेकिन उसके खाते में सहनशक्ति जमा नहीं होती है। तो बाहर से ऐसे समझेंगे कि हम बहुत अच्छे चलते हैं, हमको चलने की चतुराई आ गई है, लेकिन अगर अपना खाता देखेंगे तो जमा का खाता बहुत कम होगा। इसलिए चतुराई से नहीं चलो, एक दो को देखकर भी कापी करते हैं, यह ऐसे चलती है ना तो इसका नाम बहुत अच्छा हो गया है, यह बहुत आगे हो गई है और हम सच्चे चलते हैं ना तो हम पीछे के पीछे ही रह गये। लेकिन वह पीछे रहना नहीं है, वह आगे बढ़ना है। बाप के आगे, आगे बढ़ते हो और दूसरों के आगे चाहे पीछे दिखाई भी दो लेकिन काम किससे है! बाप से या आत्माओं से? (बाप से) तो बाप के दिल में आगे बढ़ना अर्थात् सारे कल्प के प्रालब्ध में आगे बढ़ना। और

अगर यहाँ आगे बढ़ने में आत्माओं को कॉपी करते हो, तो उस समय के लिए आपका नाम होता है, शान मिलता है, भाषण करने वाली लिस्ट में आते हो, सेन्टर सम्भालने की लिस्ट में आते हो लेकिन सारे कल्प की प्रालब्ध नहीं बनती। जिसको बापदादा कहते हैं मेहनत की, बीज डाला, वृक्ष बड़ा किया, फल भी निकला लेकिन कच्चा फल खा गये, हमेशा के लिए प्रालब्ध का फल खत्म हो जाता है। तो अल्पकाल के शान, मान, नाम के लिए कॉपी नहीं करो। यहाँ नाम नहीं है लेकिन बाप के दिल में नम्बर आगे नाम है। इसलिए डायमण्ड बनना है तो यह सब चेकिंग करो। ज़रा भी रॉयल रूप का दाग डायमण्ड में छिपा हुआ तो नहीं है? तो सत्यता की शक्ति से दिव्यता को धारण करो। कुछ भी सहन करना पड़े, घबराओ नहीं। सत्य समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होगा। कहते भी हो ना कि सत्य की नाव डोलती है लेकिन डूबती नहीं, तो किनारा तो ले लेंगे ना। निर्भय बनो। अगर कहाँ भी सामना करना पड़ता है तो ब्रह्मा बाप के जीवन को आगे रखो। ब्रह्मा बाप के आगे दुनिया की परिस्थितियां तो थी लेकिन वेराइटी बच्चों की भी परिस्थितियां रहीं लेकिन संगठन में होते, जिम्मेवारी होते सत्यता की शक्ति से विजयी हो गये। बच्चों की खिटखिट ब्रह्मा बाप ने नहीं देखी क्या? ब्रह्मा बाप के आगे भी वेराइटी संस्कार वाली आत्मायें रही, लेकिन इतनी सब परिस्थितियां होते हुए सत्यता की स्व-स्थिति ने सम्पूर्ण बना दिया।

तो आप सबको क्या बनना है? चतुराई तो नहीं है ना! बहुत अच्छा बोलते हैं - मैंने कुछ नहीं किया थोड़ा चतुराई से तो चलना ही पड़ता है। लेकिन कब तक? तो सहनशक्ति धारण कर असत्य का सामना करो। प्रभाव में नहीं आ जाओ। कई समझते हैं कि हमने महारथियों में भी ऐसे देखा ना तो फॉलो तो महारथियों को करना है ना, अभी ब्रह्मा बाबा तो सामने हैं नहीं, महारथी हैं उसको फॉलो किया। लेकिन अगर महारथी भी मिक्स करता है, चतुराई से चलता है तो उस समय महारथी, महारथी नहीं है। उस समय ग्रहचारी में है न कि महारथी है। इसीलिए बाप ने क्या स्लोगन दिया-फॉलो फादर या सिस्टर ब्रदर? तो साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को आगे रखो, फॉलो करो और अशरीरी बनने में निराकार बाप को फॉलो करो। चाहे अच्छे-अच्छे बच्चे भी हैं लेकिन वह भी फॉलो फादर करते हैं। तो आपको क्या करना है? फॉलो फादर। पक्का या थोड़ा-थोड़ा एडवान्टेज मिलता है तो ले लो भविष्य में देखा जायेगा? कई ऐसे भी सोचते हैं कि सतयुग में चाहे कम पद पायेंगे लेकिन सुखी तो होंगे ही। दु:ख तो होगा ही नहीं। सब प्राप्तियां तो होंगी। चाहे प्रजा की भी प्रजा होगी तो भी अप्राप्ति तो होगी

नहीं, तो अभी तो मज़ा ले लें, पीछे देखा जायेगा। लेकिन यह अल्पकाल का मज़ा, सज़ा के भागी बना देगा। तो वह मंजूर है, सजा खायेंगे थोड़ी! वह भी मज़ा ले लो? नहीं!

तो तीनों बातें याद रखो-पवित्रता, सत्यता और दिव्यता। ऐसे साधारण बोल नहीं, साधारण संकल्प नहीं, साधारण कर्म नहीं, दिव्यता। दिव्यता का अर्थ ही है दिव्य गुण द्वारा कर्म करना, संकल्प करना, वही दिव्यता है। जैसे लोग पूछते हैं ना कि पाप कर्म क्या होता है? तो आप कहते हो कि कोई भी विकार के वश कर्म करना यह पाप है। ऐसे समझाते हो ना! तो दिव्यता अर्थात् दिव्य गुण के आधार पर मन-वचन और कर्म करना। तो सत्यता का महत्व जाना!

(ड्रिल)

एक सेकण्ड में अपने को अशरीरी बना सकते हो? क्यों? संकल्प किया मैं अशरीरी आत्मा हूँ, तो कितना टाइम लगा? सेकण्ड लगा ना! तो सेकण्ड में अशरीरी, न्यारे और बाप के प्यारे - ये ड्रिल सारे दिन में बीच-बीच में करते रहो। करने तो आती है ना? तो अभी सब एक सेकण्ड में सब भूलकर एकदम अशरीरी बन जाओ। (बापदादा ने 5 मिनट ड्रिल कराई) अच्छा।

चारों ओर के सर्व पवित्रता के फाउण्डेशन को सदा मजबूत रखने वाले, सदा सत्यता की शक्ति से विश्व में भी सतयुग अर्थात् सत्यता की शक्ति के वायब्रेशन फैलाने वाले सदा हर समय मन-वाणी-कर्म तीनों में दिव्यता धारण करने वाले, सदा फॉलो फादर करने के नेचुरल अभ्यास वाली आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

इस ड्रिल को दिन में जितना बार ज्यादा कर सको उतना करते रहना। चाहे एक मिनट करो। तीन मिनट, दो मिनट का टाइम न भी हो एक मिनट, आधा मिनट यह अभ्यास करने से लास्ट समय अशरीरी बनने में बहुत मदद मिलेगी। बन सकते हैं? अभी सभी अशरीरी हुए या युद्ध में, मेहनत करते-करते टाइम पूरा हो गया? सेकण्ड में बन सकते हो! बहुत काम है फिर भी बन सकते हो? मुश्किल नहीं है? यू.एन. में बहुत भाग दौड़ कर रही हो और अशरीरी बनने की कोशिश करो, होगा? अगर यह अभ्यास समय प्रति समय करेंगे तो ऐसे ही नेचुरल हो जायेगा जैसे शरीर भान में आना, मेहनत करते हो क्या? मैं फलानी हूँ, यह मेहनत करते हो? नेचुरल है। तो यह भी नेचुरल हो जायेगा। जब चाहो अशरीरी बनो, जब चाहो शरीर में आओ। अच्छा काम है आओ इस शरीर का आधार लो लेकिन आधार लेने वाली मैं आत्मा हूँ, वह नहीं भूले। करने वाली नहीं

हूँ, कराने वाली हूँ। जैसे दूसरों से काम कराते हो ना। उस समय अपने को अलग समझते हो ना! वैसे शरीर से काम कराते हुए भी कराने वाली मैं अलग हूँ, यह प्रैक्टिस करो तो कभी भी बॉडी कानसेस की बातों में नीचे ऊपर नहीं होंगे। समझा।

डबल विदेशी आगे जाने चाहते हो ना! हैं भी अच्छे, अटेन्शन अच्छा है। सेवा में भी उमंग-उत्साह अच्छा है। और बढ़ता रहेगा।

डबल विदेशियों से पूछ रहे हैं कि सभी ने इस वर्ष जो सेवा की, जो प्रोजेक्ट मिला, उसमें सन्तुष्ट रहे? सभी ने प्रोग्राम किया ना? तो सन्तुष्ट हैं? हाँ या ना? कुछ भी सेवा करो चाहे जिज्ञासू कोर्स वाले आवे या नहीं आवे लेकिन स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट रहो। निश्चय रखो कि अगर मैं सन्तुष्ट हूँ तो आज नहीं तो कल यह मैसेज काम करेगा, करना ही है। इसमें थोड़ा सा उदास नहीं बनो। खर्चा तो किया.... प्रोग्राम भी किया.... लेकिन आया कोई नहीं। स्टूडेन्ट नहीं बढ़े, कोई हर्जा नहीं आपने तो किया ना। आपके हिसाब-किताब में जमा हो गया और उन्हों को भी सन्देश मिल गया। तो टाइम पर सभी को आना ही है, इसलिए करते जाओ। खर्चा बहुत हुआ, उसको नहीं सोचो। अगर स्वयं सन्तुष्ट हो तो खर्चा सफल हुआ। घबराओ नहीं, पता नहीं क्या हुआ! कई बच्चे ऐसे कहते हैं मेरा योग ठीक नहीं था, तभी यह हुआ। किससे योग था? और कोई है क्या जिससे योग था? योग है और सदा रहेगा। बाकी कोई सीजन का फल है, कोई हर समय का फल है। तो अगर आया नहीं तो सीजन का फल है, सीजन आयेगी। दिलशिकस्त नहीं बनो। क्योंकि श्रीमत को तो माना ना। श्रीमत प्रमाण कार्य किया। इसीलिए श्रीमत को मानना यह भी एक सफलता है। बढ़ते जाओ, करते जाओ। और ही पश्चाताप करके आपके पांव पड़ेंगे कि आपने कहा हमने नहीं माना। यहाँ ही आप देवियां बनेंगी। आपके पांव पर पड़ेंगे, तभी तो भक्ति में भी पांव पड़ेंगे ना। तो वह टाइम भी आना है जो सब आपके पांव पड़ेंगे कि आपने कितना अच्छा हमारा कल्याण किया।

अभी तो आई.पी. भी अच्छे-अच्छे लाते ही हो। बापदादा के पास तो रिजल्ट आती ही है तो अच्छे-अच्छे वी.आई.पी., आई.पी. भी लाये, वह भी सफलता हुई। आगे बच्चों का प्रोग्राम भी किया ना। बच्चों में कितने बच्चे फॉरेन के थे? (100) एक सौ फॉरेन के थे और अभी फिर महिलाओं का कर रहे हो। वह भी तैयारी कर रहे हो। तो आगे बढ़ रहे हो ना? पहले जब कहते थे आई.पी. लाओ तो कहते थे फॉरेन से बहुत मुश्किल है, बहुत मुश्किल है, यह जयन्ति बोलती थी। अभी क्या बोलती है? सहज। और यह

डायमण्ड जुबली है ना तो देखो भारत में भी जो प्रोग्राम हुए हैं वह भी मैजारिटी सभी जगह बहुत सफल हुआ है। क्योंकि यह जो विधि रखी है ना कि सभी डायमण्ड जुबली के कारण दीपक जगाने आवें, तो वह समझते हैं हमको कोई पोजीशन मिला। वैसे कहेंगे आओ सुनने तो नहीं आते। तो डायमण्ड जुबली की विधि के कारण अभी आई.पी. कनेक्शन में अच्छे आये हैं और आते रहेंगे। क्योंकि अज्ञानी हैं ना तो सिर्फ सुनने जाना है, तो देह अभिमान आता है। और कुछ करना है तो समझते हैं कुछ पोजीशन है। तो जिसको जो चाहिए वह दे दिया, आपका काम हो गया, अभी दीपक जगाने में वैसे सोचो तो क्या है? लेकिन वह खुश हो जाते हैं। समझते हैं हमारा रिगार्ड रखा। तो देश विदेश में डायमण्ड जुबली की जो सेवा कर रहे हो वह सफल है और रहेगी। अच्छा।

महिलायें कितनी आ रही हैं? (180) उनके निमित्त कौन-कौन हैं? सेवा अच्छी लगती है ना? थकते तो नहीं?

टीचर्स हाथ उठाओ। टीचर्स थकती हो? जो थोड़ा-थोड़ा कभी थकता हो? वह तो हाथ उठायेंगे नहीं। जो कभी थकता नहीं टीचर्स में वह हाथ उठाओ। पाण्डव हाथ उठा रहे हैं, बहनों ने नहीं उठाया तो पाण्डव पास हो गये। मुबारक। थको नहीं। जिस समय थकावट फील हो ना तो कहाँ भी जाकर डांस शुरू कर दो। चाहे बाथरूम में। क्या है इससे मूड चेंज हो जायेगी। चाहे मन की खुशी में नाचो, अगर वह नहीं कर सकते हो तो स्थूल में गीत बजाओ और नाचो। फॉरेन में डांस तो सबको आता है। डांस करने में तो होशियार हैं। फरिश्ता डांस तो आता है। अच्छा।

(शील दादी और रामी बहन बापदादा के सम्मुख आई तथा गले मिली)

अपने घर मधुबन में पहुंच गई ना। खुश है ना? खुश रहती हो और सदा खुश रहो। बहुत अच्छा हिम्मत से हिसाब-किताब को चुक्तू किया। हिम्मत अच्छी है। डायमण्ड जुबली मनाने आई हो ना। (रामी से) ठीक है?

(मधुबन के प्रफुल्ल भाई ने एक्सीडेंट में शरीर छोड़ा है) बच्चा अच्छा था और सेवा के उमंग-उत्साह में भी रहा लेकिन हिसाब-किताब का टाइम बनता है तो कोई न कोई कारण से बन ही जाता है। बाकी बच्चा स्वयं ठीक था। (बाबा जब बच्चों को मदद करता है तो उस टाइम क्यों नहीं की?) उनका हिसाब उसी ड्राइवर से उसी स्थान से होता है। भावी को नहीं टाल सकते। (डाक्टरों ने बचाने के बहुत प्रयास किये) सभी का प्यार भी था। मृत्यु की डेट टल नहीं सकती। भगवान भी बदल नहीं सकता।

ज्ञान सरोवर में स्पार्क मीटिंग (रिसर्च) के लिए आये हुए भाई बहिनों से
सभी रिसर्च करने के लिए इकट्ठे हुए हैं। अच्छा है जितना अन्तर्मुखता के कमरे में बैठ रिसर्च करेंगे उतना अच्छे से अच्छी टचिंग होंगी। और इसी टचिंग से अनेक आत्माओं को लाभ मिलेगा। तो अच्छा है। करते रहो लेकिन प्रयोग और योग दोनों का बैलेन्स रखते आगे बढ़ते चलो। बाकी अच्छा है। जितना मनन करो उतना ही मक्खन निकलता है। तो कोई न कोई अच्छा माखन निकालेंगे जो सबमें शक्ति भरे। अच्छा।

01-03-1999 होली मनाना अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र बनकर संस्कार मिलन मनाना

आज बापदादा चारों ओर के अपने होलीएस्ट और हाइएस्ट बच्चों को देख रहे हैं। विश्व में सबसे हाइएस्ट ऊँचे-ते-ऊँचे श्रेष्ठ आत्मायें आप बच्चों के सिवाए और कोई है? क्योंकि आप सभी ऊँचे-ते-ऊँचे बाप के बच्चे हैं। सारे कल्प में चक्र लगाकर देखो तो सबसे ऊँचे मर्तबे वाले और कोई नज़र आते हैं? राज्य-अधिकारी स्वरूप में भी आपसे ऊँचे राज्य अधिकारी बने हैं? फिर पूजन और गायन में देखो जितनी पूजा विधिपूर्वक आप आत्माओं की होती है उससे ज्यादा और किसी की है? वण्डरफुल राज़ ड्रामा का कितना श्रेष्ठ है जो आप स्वयं चैतन्य स्वरूप में, इस समय अपने पूज्य स्वरूप को नॉलेज के द्वारा जानते भी हो और देखते भी हो। एक तरफ आप चैतन्य आत्मायें हैं और दूसरे तरप् आपके जड़ चित्र पूज्य रूप में हैं। अपने पूज्य स्वरूप को देख रहे हो ना? जड़ रूप में भी हो और चैतन्य रूप में भी हो। तो वण्डरफुल खेल है ना! और राज्य के हिसाब से भी सारे कल्प में निर्विघ्न, अखण्ड-अटल राज्य एक आप आत्माओं का ही चलता है। राजे तो बहुत बनते हैं लेकिन आप विश्वराज़न वा विश्वराजन की रॉयल फैमिली सबसे श्रेष्ठ है। तो राज्य में भी हाइएस्ट, पूज्य रूप में भी हाइएस्ट और अब संगम पर परमात्म-वर्से के अधिकारी, परमात्म मिलन के अधिकारी, परमात्म-प्यार के अधिकारी, परमात्म-परिवार की आत्मायें और कोई बनती हैं? आप ही बने हो ना? बन गये हो या बन रहे हो? बन भी गये और अब तो वर्सा लेकर सम्पन्न बन बाप के साथ-साथ अपने घर में भी चलने वाले हैं। संगम का सुख, संगमयुग की प्राप्तियाँ, संगमयुग का समय सुहाना लगता है ना! बहुत प्यारा लगता है। राज्य के समय से भी संगम का समय प्यारा लगता है ना? प्यारा है या जल्दी जाने चाहते हो? फिर पूछते क्यों हो कि बाबा विनाश कब होगा? सोचते हो ना - पता नहीं विनाश कब होगा? क्या होगा? हम कहाँ होंगे? बापदादा कहते हैं जहाँ भी होंगे - याद में होंगे, बाप के साथ होंगे। साकार में या आकार में साथ होंगे तो कुछ नहीं होगा। साकार में कहानी सुनाई है ना। बिल्ली के पूंगरे भट्ठी में होते हुए भी सेफ रहे ना! या जल गये? सब सेफ रहे। तो आप परमात्म बच्चे जो साथ होंगे वह सेफ रहेंगे। अगर

और कहाँ बुद्धि होगी तो कुछ-न-कुछ सेक लगेगा, कुछ-न-कुछ प्रभाव होगा। साथ में कम्बाइण्ड होंगे, एक सेकण्ड भी अकेले नहीं होंगे तो सेफ रहेंगे। कभी-कभी कामकाज़ या सेवा में अकेले अनुभव करते हो? क्या करें अकेले हैं, बहुत काम है! फिर थक भी जाते हैं। तो बाप को क्यों नहीं साथी बनाते! दो भुजा वालों को साथी बना देते, हज़ार भुजा वाले को क्यों नहीं साथी बनाते। कौन ज्यादा सहयोग देगा? हज़ार भुजा वाला या दो भुजा वाला?

संगमयुग पर ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी अकेले नहीं हो सकते। सिर्फ जब सेवा में, कर्मयोग में बहुत बिजी हो जाते हो ना तो साथ भी भूल जाते हो और फिर थक जाते हो। फिर कहते हो थक गये, अभी क्या करें! थको नहीं, जब बापदादा आपको सदा साथ देने के लिए आये हैं, परमधाम छोड़कर क्यों आये हैं? सोते, जागते, कर्म करते, सेवा करते, साथ देने के लिए ही तो आये हैं। ब्रह्मा बाप भी आप सबको सहयोग देने के लिए अव्यक्त बनें। व्यक्त रूप से अव्यक्त रूप में सहयोग देने की रफ्तार बहुत तीव्र है, इसलिए ब्रह्मा बाप ने भी अपना वतन चेंज कर दिया। तो शिव बाप और ब्रह्मा बाप दोनों हर समय आप सबको सहयोग देने के लिए सदा हाज़र हैं। आपने सोचा बाबा और सहयोग अनुभव करेंगे। अगर सेवा, सेवा, सेवा सिर्फ वही याद है, बाप को किनारे बैठ देखने के लिए अलग कर देते हो, तो बाप भी साक्षी होकर देखते हैं, देखें कहाँ तक अकेले करते हैं। फिर भी आने तो यहाँ ही हैं। तो साथ नहीं छोड़ो। अपने अधिकार और प्रेम की सूक्ष्म रस्सी से बाँधकर रखो। ढीला छोड़ देते हो। स्नेह को ढीला कर देते हो, अधिकार को थोड़ा सा स्मृति से किनारा कर देते हो। तो ऐसे नहीं करना। जब सर्वशक्तिवान साथ का आफर कर रहा है तो ऐसी आफर सारे कल्प में मिलेगी? नहीं मिलेगी ना? तो बापदादा भी साक्षी होकर देखते हैं, अच्छा देखें कहाँ तक अकेले करते हैं!

तो संगमयुग के सुख और सुहेजों को इमर्ज रखो। बुद्धि बिजी रहती है ना तो बिजी होने के कारण स्मृति मर्ज हो जाती है। आप सोचो सारे दिन में किसी से भी पूछें कि बाप याद रहता है या बाप की याद भूलती है? तो क्या कहेंगे? नहीं। यह तो राइट है कि याद रहता है लेकिन इमर्ज रूप में रहता है या मर्ज रहता है? स्थिति क्या होती है? इमर्ज रूप की स्थिति या मर्ज रूप की स्थिति, इसमें क्या अन्तर है? इमर्ज रूप में याद क्यों नहीं रखते? इमर्ज रूप का नशा शक्ति, सहयोग, सफलता बहुत बड़ी है। याद तो भूल नहीं सकते क्योंकि एक जन्म का नाता नहीं है, चाहे शिव बाप सतयुग में

साथ नहीं होगा लेकिन नाता तो यही रहेगा ना! भूल नहीं सकता है, यह राइट है। हाँ कोई विघ्न के वश हो जाते हो तो भूल भी जाता है लेकिन वैसे जब नेचरल रूप में रहते हो तो भूलता नहीं है लेकिन मर्ज रहता है। इसलिए बापदादा कहते हैं - बार-बार चेक करो कि साथ का अनुभव मर्ज रूप में है या इमर्ज रूप में? प्यार तो है ही। प्यार टूट सकता है? नहीं टूट सकता है ना? तो प्यार जब टूट नहीं सकता तो प्यार का फायदा तो उठाओ। फायदा उठाने का तरीका सीखो।

बापदादा देखते हैं प्यार ने ही बाप का बनाया है। प्यार ही मधुबन निवासी बनाता है। चाहे अपने स्थान पर कैसे भी रहें, कितना भी मेहनत करें लेकिन फिर भी मधुबन में पहुँच जाते हैं। बापदादा जानते हैं, देखते हैं, कई बच्चों को कलियुगी सरकमस्टांश होने के कारण टिकिट लेना भी मुश्किल है परन्तु प्यार पहुँचा ही देता है। ऐसे है ना? प्यार में पहुँच जाते हैं लेकिन सरकमस्टांश तो दिन प्रतिदिन बढ़ते ही जाते हैं। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी तो होता ही है। लेकिन स्थूल सहयोग भी कहाँ-न-कहाँ कैसे भी मिल जाता है। चाहे डबल फॉरेनर्स हों, चाहे भारतवासी, सबको यह बाप का प्यार सरकमस्टांश की दीवार पार करा लेता है। ऐसे है ना? अपने-अपने सेन्टर्स पर देखो तो ऐसे बच्चे भी हैं जो यहाँ से जाते हैं, सोचते हैं पता नहीं दूसरे वर्ष आ सकेंगे या नहीं आ सकेंगे लेकिन फिर भी पहुंच जाते हैं। यह है प्यार का सबूत। अच्छा।

आज होली मनाई? मना ली होली? बापदादा तो होली मनाने वाले होली हंसों को देख रहे हैं। सभी बच्चों का एक ही टाइटल है होलीएस्ट। द्वापर से लेकर किसी भी धर्मात्मा या महात्मा ने सर्व को होलीएस्ट नहीं बनाया है। स्वयं बनते हैं लेकिन अपने फॉलोअर्स को, साथियों को होलीएस्ट, पवित्र नहीं बनाते और यहाँ पवित्रता ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार है। पढ़ाई भी क्या है? आपका स्लोगन भी है "पवित्र बनो-योगी बनो"। स्लोगन है ना? पवित्रता ही महानता है। पवित्रता ही योगी जीवन का आधार है। कभी-कभी बच्चे अनुभव करते हैं कि अगर चलते-चलते मन्सा में भी अपवित्रता अर्थात् वेस्ट वा निगेटिव, परचिन्तन के संकल्प चलते हैं तो कितना भी योग पावरफुल चाहते हैं, लेकिन होता नहीं है क्योंकि ज़रा भी अंशमात्र संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता है तो जहाँ अपवित्रता का अंश है वहाँ पवित्र बाप की याद जो है, जैसा है वैसे नहीं आ सकती। जैसे दिन और रात इकठ्ठा नहीं होता। इसीलिए बापदादा वर्तमान समय पवित्रता के ऊपर बार-बार अटेन्शन दिलाते हैं। कुछ समय पहले बापदादा सिर्फ कर्म में अपवित्रता के लिए इशारा देते थे लेकिन अभी समय सम्पूर्णता के समीप आ

रहा है इसलिए मन्सा में भी अपवित्रता का अंश धोखा दे देगा। तो मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें पवित्रता अति आवश्यक है। मन्सा को हल्का नहीं करना क्योंकि मन्सा बाहर से दिखाई नहीं देती है लेकिन मन्सा धोखा बहुत देती है। ब्राह्मण जीवन का जो आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए। बाहर के साधनों द्वारा या सेवा द्वारा अपने आपको खुश करना - यह भी अपने को धोखा देना है।

बापदादा देखते हैं कभी-कभी बच्चे अपने को इसी आधार पर अच्छा समझ, खुश समझ धोखा दे देते हैं, दे भी रहे हैं। दे देते हैं और दे भी रहे हैं, यह भी एक गु¿ राज़ है। क्या होता है, बाप दाता है, दाता के बच्चे हैं, तो सेवा युक्तियुक्त नहीं भी है, मिक्स है, कुछ याद और कुछ बाहर के साधनों वा खुशी के आधार पर है, दिल के आधार पर नहीं लेकिन दिमाग के आधार पर सेवा करते हैं तो सेवा का प्रत्यक्ष फल उन्हों को भी मिलता है; क्योंकि बाप दाता है और वह उसी में ही खुश रहते हैं कि वाह हमको तो फल मिल गया, हमारी अच्छी सेवा है। लेकिन वह मन की सन्तुष्टता सदाकाल नहीं रहती और आत्मा योगयुक्त पावरफुल याद का अनुभव नहीं कर सकती, उससे वंचित रह जाते। बाकी कुछ भी नहीं मिलता हो, ऐसा नहीं है। कुछ-न-कुछ मिलता है लेकिन जमा नहीं होता। कमाया, खाया और खत्म। इसलिए यह भी अटेन्शन रखना। सेवा बहुत अच्छी कर रहे हैं, फल भी अच्छा मिल गया, तो खाया और खत्म। जमा क्या हुआ? अच्छी सेवा की, अच्छी रिज़ल्ट निकली, लेकिन वह सेवा का फल मिला, जमा नहीं होता। इसलिए जमा करने की विधि है - मन्सा, वाचा, कर्मणा - पवित्रता। फाउण्डेशन पवित्रता है। सेवा में भी फाउण्डेशन पवित्रता है। स्वच्छ हो, साफ हो। और कोई भी भाव मिक्स नहीं हो। भाव में भी पवित्रता, भावना में भी पवित्रता। होली का अर्थ ही है - पवित्रता। अपवित्रता को जलाना। इसीलिए पहले जलाते हैं फिर मनाते हैं और फिर पवित्र बन संस्कार मिलन मनाते हैं। तो होली का अर्थ ही है - जलाना, मनाना। बाहर वाले तो गले मिलते हैं लेकिन यहाँ संस्कार मिलन, यही मंगल मिलन है। तो ऐसी होली मनाई या सिर्फ डांस कर ली? गुलाबजल डाल दिया? वह भी अच्छा है खूब मनाओ। बापदादा खुश होते हैं गुलाबजल भले डालो, डांस भले करो लेकिन सदा डांस करो। सिर्फ 5-10 मिनट की डांस नहीं। एक-दो में गुणों का वायब्रेशन फैलाना - यह गुलाबजल डालना है। और जलाने को तो आप जानते ही

हो, क्या जलाना है! अभी तक भी जलाते रहते हो। हर वर्ष हाथ उठाकर जाते हैं, बस दृढ़ संकल्प हो गया। बापदादा खुश होते हैं, हिम्मत तो रखते हैं। तो हिम्मत पर बापदादा मुबारक भी देते हैं। हिम्मत रखना भी पहला कदम है। लेकिन बापदादा की शुभ आशा क्या है? समय की डेट नहीं देखो। 2 हज़ार में होगा, 2001 में होगा, 2005 में होगा, यह नहीं सोचो। चलो एवररेडी नहीं भी बनो इसको भी बापदादा छोड़ देते हैं, लेकिन सोचो बहुतकाल के संस्कार तो चाहिए ना! आप लोग ही सुनाते हो कि बहुतकाल का पुरुषार्थ, बहुतकाल के राज्य-अधिकारी बनाता है। अगर समय आने पर दृढ़ संकल्प किया, तो वह बहुतकाल हुआ या अल्पकाल हुआ? किसमें गिनती होगा? अल्पकाल में होगा ना! तो अविनाशी बाप से वर्सा क्या लिया? अल्पकाल का। यह अच्छा लगता है? नहीं लगता है ना! तो बहुतकाल का अभ्यास चाहिए, कितना काल है वह नहीं सोचो, जितना बहुतकाल का अभ्यास होगा, उतना अन्त में भी धोखा नहीं खायेंगे। बहुतकाल का अभ्यास नहीं तो अभी के बहुतकाल के सुख, बहुतकाल की श्रेष्ठ स्थिति के अनुभव से भी वंचित हो जाते हैं। इसलिए क्या करना है? बहुतकाल करना है? अगर किसी के भी बुद्धि में डेट का इन्तजार हो तो इन्तज़ार नहीं करना, इन्तज़ाम करो। बहुतकाल का इन्तज़ाम करो। डेट को भी आपको लाना है। समय तो अभी भी एवररेडी है, कल भी हो सकता है लेकिन समय आपके लिए रुका हुआ है। आप सम्पन्न बनो तो समय का पर्दा अवश्य हटना ही है। आपके रोकने से रुका हुआ है। राज्य-अधिकारी तो तैयार हो ना? तख़्त तो खाली नहीं रहना चाहिए ना! क्या अकेला विश्वराजन तख़्त पर बैठेगा! इससे शोभा होगी क्या? रॉयल फैमिली चाहिए, प्रजा चाहिए, सब चाहिए। सिर्फ विश्वराजन तख़्त पर बैठ जाए, देखता रहे कहाँ गई मेरी रॉयल फैमिली। इसलिए बापदादा की एक ही शुभ आशा है कि सब बच्चे चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, जो भी अपने को ब्रह्माकुमारी या ब्रह्माकुमार कहलाते हैं, चाहे मधुबन निवासी, चाहे विदेश निवासी, चाहे भारत निवासी - हर एक बच्चा बहुतकाल का अभ्यास कर बहुतकाल के अधिकारी बनें। कभी-कभी के नहीं। पसन्द है? एक हाथ की ताली बजाओ। पीछे वाले होशियार हैं, अटेन्शन से सुन रहे हैं। बापदादा पीछे वालों को अपने आगे देख रहा है। आगे वाले तो हैं ही आगे। (मेडीटेशन हाल में बैठकर मुरली सुन रहे हैं) नीचे वाले बापदादा के सिर के ताज होकर बैठे हैं। वह भी ताली बजा रहे हैं। नीचे वालों को त्याग का भाग्य तो मिलना ही है। आपको सम्मुख बैठने का भाग्य है और उन्हों के त्याग का भाग्य जमा हो रहा है। अच्छा बापदादा

की एक आश सुनी! पसन्द है ना! अभी अगले वर्ष क्या देखेंगे? ऐसे ही फिर भी हाथ उठायेंगे! हाथ भले उठाओ, दो-दो उठाओ परन्तु मन का हाथ भी उठाओ। दृढ़ संकल्प का हाथ सदा के लिए उठाओ।

बापदादा एक-एक बच्चे के मस्तक में सम्पूर्ण पवित्रता की चमकती हुई मणी देखने चाहते हैं। नयनों में पवित्रता की झलक, पवित्रता के दो नयनों के तारे, रूहानियत से चमकते हुए देखने चाहते हैं। बोल में मधुरता, विशेषता, अमूल्य बोल सुनने चाहते हैं। कर्म में सन्तुष्टता, निर्माणता सदा देखने चाहते हैं। भावना में - सदा शुभ भावना और भाव में सदा आत्मिक भाव, भाई-भाई का भाव। सदा आपके मस्तक से लाइट का, फरिश्ते पन का ताज दिखाई दे। दिखाई देने का मतलब है अनुभव हो। ऐसे सजे सजाये मूर्त देखने चाहते हैं। और ऐसी मूर्त ही श्रेष्ठ पूज्य बनेगी। वह तो आपके जड़ चित्र बनायेंगे लेकिन बाप चैतन्य चित्र देखने चाहते हैं। अच्छा –

चारों ओर के सदा बापदादा के साथ रहने वाले, समीप के सदा के साथी, सदा बहुतकाल के पुरूषार्थ द्वारा बहुतकाल का संगमयुगी अधिकार और भविष्य राज्य-अधिकार प्राप्त करने वाले अति सेन्सीबुल आत्मायें, सदा अपने को शक्तियों, गुणों से सजे-सजाये रखने वाले, बाप की आशाओं के दीपक आत्मायें, सदा स्वयं को होलीएस्ट और हाइएस्ट स्थिति में स्थित रखने वाले बाप समान अति स्नेही आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

सर्व विदेश वा देश में दूर बैठे हुए भी सम्मुख अनुभव करने वालों को बापदादा का बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार।

दादी जी से :

बापदादा आपको सदा मुबारकें बहुत देते हैं। तन की दुआयें भी देते हैं, मन का साथ भी देते हैं और सेवा के साथी भी बनते हैं। ऐसे अनुभव होता है? तन की दुआयें भी बहुत मिलती हैं। यह दवाई बहुत अच्छी मिल रही है। बाकी हिसाब-किताब तो ब्रह्मा बाप ने भी चुक्तू किया तो सबको करना है। सब सूली से कांटा हो जाता है, बाकी दुआयें बहुत मिलती हैं। परिवार द्वारा भी तो बापदादा द्वारा भी। अमृतवेले से लेकर रात तक बापदादा दुआओं से मालिश करते रहते हैं। ऐसे अनुभव होता है ना? आप नहीं चल रही हैं, चलाने वाला चला रहा है, इसीलिए अथक हैं। अच्छा।

स्पेशल दुआयें हैं। (दादी जानकी से) स्पेशल दुआयें हैं ना? सब निमित्त बनने वालों को स्पेशल दुआयें मिलती हैं। आप फॉरेनर्स से क्या चाहती हो? (सभी बापदादा के

गले में पिरो जायें) यह तो बहुत कुछ चाहती हैं, आप भी बहुत कुछ करते हो ना! यह प्यार की पालना दे रही हैं, इतना अटेन्शन रखना - यही दिल का प्यार है। जिससे प्यार होता है ना उसकी कमी देख नहीं सकते। (बापदादा ने दादी, दादी जानकी को साथ में बिठाया)

यह दादियाँ जो हैं ना - यह बाप के बड़े भाई हैं। तो भाई तो साथ बैठते हैं ना? अच्छी मेहनत नहीं लेकिन मुहब्बत अच्छी करते हैं। बापदादा भी निमित्त बनने वालों को और जो करने वाले हैं उन्हों को देखकर खुश होते हैं। आप भी कम नहीं हो। और यह भी कम नहीं हैं। अच्छा।

(शान्तिवन से यहाँ अच्छा लगता है) लेकिन अनेक वंचित रह जायेंगे। सभी भाई-बहनों का ख्याल तो रखना है ना। यह तो होली का चांस आपको मिल गया है।

विदेशी भाई-बहनों से

पहला चांस डबल फॉरेनर्स को मिला है। देखो सबका डबल फॉरेनर्स से कितना प्यार है। पहला चांस आपको ही मिला है। अच्छा है, बापदादा सेवा में वृद्धि का उमंग-उत्साह देख खुश होता है। बापदादा वतन में भी आपकी मीटिंग्स, प्लैन, प्रोग्राम, रूह-रूहान सब कुछ देखते हैं। अच्छा चांस भी मिलता है। हर साल फॉरेन में इतना संगठन तो नहीं हो सकता है। यहाँ एक तो कितना बेहद का बड़ा परिवार है, यह देखने को मिलता है, सबका परिचय हो जाता है। और दूसरा पावरफुल पालना भी मिलती है, प्यार भी मिलता है। और बीच बीच में थोड़ी सी स्ट्रिक्ट की आँख दिखाना भी ज़रूरी है। अटेन्शन है लेकिन अटेन्शन को अन्डरलाइन हो जाता है। ऐसे अनुभव करते हो जो मधुबन में पालना मिलती है तो अण्डरलाइन तो होती है ना! और समीप भी आते हैं।

बापदादा को डबल फॉरेनर्स की, मैजारिटी की एक विशेषता वर्तमान समय की बहुत अच्छी लगती है, एक तो जो बार-बार समथिंग-समथिंग कहते थे ना, वह अभी मैजारिटी का कम है। पहले तो छोटी-छोटी बात में कहते थे समथिंग, समटाइम। लेकिन अभी अच्छे हिम्मत वाले बन आगे बढ़ रहे हैं। बचपन पूरा हुआ है, कहाँ-कहाँ पुरूषार्थ में यूथ हैं और कहाँ-कहाँ वानप्रस्थ के नज़दीक हैं। तो यूथ वालों को अभी भी थोड़ी लहर आती है। आयु में यूथ नहीं, पुरूषार्थ में। फिर भी पहले और अभी में अन्तर है। अभी नॉलेज़फुल हो गये हैं। समझ गये हैं - क्या करना है, कैसे चलना है, इसके नॉलेज़फुल बन गये हैं। बाकी क्या रहा है? अभी पावरफुल बनना है, उसमें अण्डरलाइन करो। सेन्टर भी बढ़ते जाते हैं। हिम्मत रखकर सेन्टर खोलते अच्छे हैं।

जो सभी सेन्टर्स सम्भालते हैं, सेन्टर पर रहते हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा - तो सेन्टर पर रहने वाले वा निमित्त बनने वाले कभी थकावट होती है? थोड़ी-थोड़ी होती है? थोड़ा टाइम होती है फिर ठीक हो जाते हैं। अच्छा है, देखो आप लोगों को एक विशेष लिफ्ट है सेवा की। भारत में तो पहले ट्रेनिंग करते हैं फिर ट्रायल पर रहती फिर टीचर बनती और आप लोग सीधा ही सेन्टर इन्चार्ज बन जाते। तो यह चांस तो अच्छा है ना। डबल काम करते हैं। हिम्मत के कारण आगे बढ़ रहे हो और बढ़ते रहेंगे। जॉब भी करते, सेन्टर भी सम्भालते, थक कर आते फिर थोड़े टाइम में अपने को रिफ्रेश कर फिर सेन्टर सम्भालते, यह देख करके बापदादा को कभी-कभी दिल में विशेष प्यार आता है। डबल बिजी हो गये ना। लेकिन डबल कार्य करने का डबल फायदा भी होता है। सेवा करना अर्थात् अपने पुण्य का खाता जमा करना और जितना नि:स्वार्थ, युक्तियुक्त सेवा भाव से सेवा करते हैं, उतनी पुण्य की पूंजी जमा करते हो। और वही पुण्य की पूंजी, खज़ाना साथ में ले जायेंगे। उस पुण्य की कमाई आधाकल्प की कमाई हो जायेगी। तो पुण्य आत्मायें अच्छी हो। मैं निमित्त सेवाधारी पुण्य आत्मा हूँ, यह स्मृति छोटे-छोटे पापों से मुक्त कर देती है। तो सदा चेक करो कि आज के दिन मन्सा द्वारा या सेवा द्वारा कितने पुण्य जमा किये? और पुण्य के आधार से छोटी-छोटी बातें कितनी समाप्त हो गई? खर्च कितना हुआ और बचत कितनी हुई? अगर बार-बार विघ्न आते हैं और उसको मिटाने के लिए गुण और शक्तियों का खर्च करते हैं तो वह कितना हुआ? और योगयुक्त अवस्था से बाप को साथी बनाकर सेवा करने में पुण्य का खाता कितना जमा हुआ? सबसे बड़े से बड़े मल्टीमिलियनेर आप हो। एक दिन में देखो कितनी कमाई करते हो? इतनी कमाई न फॉरेन में कोई कर सकता है, न भारत में कर सकता है। तो मल्टी मल्टी लगाते जाओ जैसे हिसाब में बिन्दी लगाओ तो बढ़ जाता है ना। एक के आगे एक बिन्दी लगाओ तो 10 हो जाता है और दो बिन्दी लगाओ तो 100 हो जाता है और लगाओ तो हजार हो जाता है, बिन्दी की कमाल है। तो आप ऐसे बिन्दी लगाते जाओ, मल्टी मल्टी मल्टी-मिल्युनर हो जाओ।

अच्छा - सब ठीक हो? पाण्डव ठीक हैं? बहुत अच्छा। बापदादा को भी नाज़ है कि विश्व में जहाँ भी जाओ बाप के बच्चे हैं। आप लोगों को भी नशा होता है ना जिस देश में भी जाओ तो क्या कहेंगे? हमारा घर है। ऐसे लगता है ना कितने घर हो गये हैं आपके? इतने घर किसके होंगे? सभी कहते हो बाबा का घर है, बाबा के घर में जा रहे हैं। कितने लाडले हो गये हो। इसीलिए सदा खुश। स्वप्न में भी दु:ख की लहर नहीं

आवे। स्वप्न भी आवें तो खुशी के। उदासी के नहीं, थकावट के नहीं, मूंझने वाले नहीं। खुशी के। तो ऐसे है? ऐसे खुश रहो जो आपका खुशी का चेहरा देख रोने वाले भी खुश हो जाएं। ऐसी खुशी है ना? रोने वाले को हँसा सकते हो ना! चेहरा बदली नहीं हो। कभी ऐसा, कभी ऐसा नहीं। सदा मुस्कराता रहे। अच्छा - कितने परसेन्ट रिफ्रेश हुए? 100 परसेन्ट या 90 परसेन्ट? 101 परसेन्ट अच्छा।

अच्छा - दूसरे वर्ष जब आयेंगे तो 101 होगा या नीचे जायेगा या ऊपर जायेगा? सभी का ऊपर जायेगा! जो समझते हैं देखेंगे, जाने के बाद पता पड़ेगा। चाहते तो ऐसे हैं लेकिन देखेंगे, वह हाथ उठाओ। ऐसे कोई है। फर्स्ट टाइम वाले हाथ उठाओ। अच्छा...।

दूसरा ग्रुप - आबू निवासी,सेवाधारी,हॉस्पिटल निवासी तथा पार्टियों से

सभी अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख हर्षित होते हैं? सदा हर्षित। कभी-कभी तो नहीं? सभी कहते हैं बाप मिला सब कुछ मिला। जब सब मिला, तो जहाँ सर्व प्राप्ति हैं, वहाँ सदा खुशी है ही। ऐसे है ना? खुशी कम तब होती है जब कोई अप्राप्ति है। तो कोई अप्राप्ति है क्या? तो सदा खुश। खुशी अपनी खुराक है। तो खुराक को कोई छोड़ता है क्या? तो सदा खुश रहने वाले, औरों को भी खुशी बांटते हैं। जब भी आपको कोई देखे तो खुशी की झलक दिखाई दे। ऐसे अनुभव करते हो? बापदादा सदा हर बच्चे को खुशनसीब की नज़र से देखते हैं। खुशनसीब हैं और खुशमिजाज हैं। कभी चेहरा बदली तो नहीं होता? थोड़ा सा सोच में, थोड़ा सा कनफ्युज़ चेहरा तो नहीं होता है ना! या थोड़ा-थोड़ा हो जाते हो? कनफ्युज़ होते हो? हाँ हाँ कह रहे हो? कभी-कभी होते हैं। कभी-कभी भी नहीं। बाप के बच्चे सदा एकरस रहते हैं। कभी किस रस में, कभी किस रस में, नहीं। एकरस, सदा खुश। ठीक है ना? अभी नहीं बदलना। आज के दिन इसको जला दो। खत्म। कुछ भी हो, बाप साथ है, मूंझने की क्या बात है। कनफ्युज़ होने की क्या बात है। बाप के साथ का सहयोग लो, अकेले समझते हो तो मौज के बजाए मूंझ जाते हो। तो मूंझना नहीं। ठीक है ना? अभी भी मूंझेंगे। (नहीं) अभी नहीं मूंझ रहे हो, मौज में हो इसलिए कहते हो कि नहीं मूंझेंगे! कुछ भी हो जाए लेकिन मौज नहीं जाए। ठीक है ना या मौज चली जायेगी? मौज नहीं जानी चाहिए। सेवा का बल है तो उस बल को कार्य में लगाओ। सिर्फ सेवा नहीं करो लेकिन सेवा का बल जो बाप से मिलता है, उसको काम में लगाओ। सिर्फ सेवा कर रहे हैं, सेवा कर रहे हैं तो थक जाते हो, मूंझ भी जाते हो लेकिन बाप के साथ का अनुभव, जहाँ बाप है वहाँ मौज ही मौज है। तो

साथ को इमर्ज करो, सुनाया ना - याद करते हो लेकिन साथ को यूज़ नहीं करते, इसीलिए मूंझ जाते हो। संगमयुग मौजों का युग है या मूंझने का युग है? मौज का है तो फिर मूंझते क्यों हो? अभी अपने जीवन की डिक्शनरी से मूंझना शब्द निकाल दो। निकाल लिया? पक्का। या थोड़ा-थोड़ा दिखाई देगा? एकदम मिटा दो। परमात्मा के बच्चे और मौज में नहीं रहे तो और कौन रहेगा और कोई है क्या? तो सदा मौज ही मौज है। सभी अपनी ड्यूटी पर खुश हो? या थोड़ा-थोड़ा ड्यूटी में खिटखिट है? कुछ भी हो जाए, यह पेपर पास करना है। बात नहीं है, पेपर है। तो पेपर पास करने में खुशी होती है ना। क्लास आगे बढ़ते हैं ना! तो बात हो गई, समस्या आ गई यह नहीं सोचो। पेपर आया पास हुआ, मौज मनाओ। जब बच्चे पेपर पास करके आते हैं तो कितने मौज में होते हैं, मूंझते हैं क्या! यह पेपर तो आयेंगे। पेपर ही अनुभव में आगे बढ़ाते हैं, इसलिए सदा मौज में रहने वाले। सेवाधारी नहीं लेकिन मौज में रहने वाले। सदा यह अपना टाइटल याद करो। हॉस्पिटल के सेवाधारी हैं, नहीं, मौज में रहने वाले सेवाधारी हैं। अच्छा।

डाक्टर्स तो मौज में रहते हो ना? पेशेन्ट को मौज दिलाने वाले। बहुत अच्छा। (बापदादा सभी से हाथ उठवाकर मिल रहे हैं।)

सभी बहुत-बहुत पुण्य का खाता जमा कर रहे हो। वैरायटी गुलदस्ता सबसे प्यारा लगता है। वैरायटी की सदा शोभा होती है, सुन्दरता होती है, इसलिए प्यारा लगता है। तो स्थान अनेक हैं लेकिन हैं सब एक। एक ही लक्ष्य है, एक ही मत है और एक ही बाप है, एक ही परिवार है और अवस्था भी एकरस। एकरस है ना? और रस में नहीं जाना, माया खा जायेगी। इसलिए एकरस रहना। माया को भी आपसे प्यार है ना। 63 जन्मों का प्यार है। लेकिन आप जानते हो कि माया से प्यार रखना है या बाप से? तो जहाँ बाप होगा वहाँ माया नहीं आयेगी। माया भाग जायेगी, हिम्मत ही नहीं होगी बाप के नजदीक आने की। कोई भी परिस्थिति आवे तो दिल से बाबा कहा, परिस्थिति भागी। अनुभव है ना! भगाना आता है या बिठाना आता है? उसको बिठाना नहीं। भगाओ, दूर से भगाओ। आ जावे फिर निकालने की मेहनत करो, वह भी नहीं करना। दूर से ही भगाओ। बाप का हाथ पकड़ लो तो देखेगी यह तो बाप का हाथ पकड़ा हुआ है तो भाग जायेगी। तो सदा मायाजीत। ठीक है ना! देखो आज नजदीक में तो बैठे हो ना। चांस तो मिला ना। अभी तो नहीं कहेंगे हमको तो कभी चांस नहीं मिला। मिल गया ना? बड़ा परिवार है तो बांटकर मिलता है। अच्छा तो सब

खुशराजी। बापदादा का शब्द याद है ना - सदा। कभी कभी वाले नहीं, सदा। हॉस्पिटल वाले भी अच्छी मेहनत कर रहे हैं। हॉस्पिटल का कार्य भी बढ़ रहा है। अच्छा।

तीसरा ग्रुप—मधुबन निवासी भाई-बहनों से

मधुबन निवासी अर्थात् कर्म में मधुरता और वृत्ति में बेहद का वैराग्य। वन में क्या होता है? बेहद का वैराग्य होता है ना! तो मधुबन निवासी अर्थात् एकस्ट्रा गिफ्ट के अधिकारी। गिफ्ट है ना! कितने निश्चिंत हो। अपनी ड्युटी बजाई और मौज में रहे। मदोगरी करनी है, जिज्ञासुओं को सम्भालना है, इससे तो फ्री हैं ना! ज्यादा में ज्यादा 8 घण्टा ड्यूटी। कम ही है। इतफाक कभी एक्स्ट्रा देनी पड़ती होगी। लेकिन और जिम्मेवारी तो नहीं है ना। चलो बिजली वाले को बिजली की जिम्मेवारी या जो भी ड्यूटी है, एक ही ड्युटी है ना। अनेक तो नहीं है। तो 8 घण्टा तो ड्यूटी के लिए बापदादा ने दिया है, कभी 12 घण्टा भी हो जाता होगा, तो भी 8 घण्टा आराम, अच्छा 12 घण्टा ड्यूटी तो भी 4 घण्टा तो बचता है। 12 घण्टा से ज्यादा तो ड्यूटी होगी नहीं। 12 घण्टे में तो सारा दिन आ गया। फिर कभी रात को करनी पड़ती होगी तो दिन में हल्का होगा। तो कम से कम 4 घण्टा पावरफुल योग रहता है? निरन्तर याद तो है ही लेकिन पावरफुल याद वह कम से कम 4 घण्टे है? तो मधुबन निवासियों को स्पेशल अटेन्शन रखना है कि हमें चारों ओर पावरफुल याद के वायब्रेशन फैलाने हैं क्योंकि आप ऊँचे-ते-ऊँचे स्थान पर बैठे हो। स्थान तो ऊँचा है ना! इससे ऊँचा तो कोई है नहीं। तो ऊँची टावर जो होती है, वह क्या करती है? सकाश देती है ना! लाइट माइट फैलाते हैं ना। तो कम से कम 4 घण्टे ऐसे समझो हम ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर बैठ विश्व को लाइट और माइट दे रहा हूँ। यह तो आपको अच्छी तरह से अनुभव है कि मधुबन का वायब्रेशन चाहे कमजोरी का, चाहे पावर का - दोनों ही बहुत जल्दी फैलता है। अनुभव है ना! मधुबन में सुई भी गिरती है तो वह आवाज भी पहुंचता है क्योंकि मधुबन निवासियों की तरफ सबका अटेन्शन होता है। मधुबन वाले समझो विजय प्राप्त करने और कराने के निमित्त हैं। मधुबन की महिमा कितनी सुनते हो! मधुबन के गीत भी गाते हो ना। तो मधुबन के दीवारों की महिमा है या मधुबन निवासियों की महिमा है! किसकी महिमा है? आप सबकी। तो ऐसे अपनी जिम्मेवारी समझो। सिर्फ अपना काम किया, ड्यूटी पूरी की यह जिम्मेवारी नहीं। मधुबन का वायुमण्डल चारों ओर वायुमण्डल बनाता है। बापदादा को खुशी है कि आपस में संगठन बनाकर उन्नति

के प्लैन वा रूहरिहान करते हैं। यह बहुत अच्छा है, इसको छोड़ना नहीं। संगठन में लाभ होता है और सारा दिन समझो कर्मणा किया, थोड़ा समय भी आपस में उन्नति की रूहरिहान करने से चेंज हो जाते हैं। उमंग-उत्साह भी बढ़ता है। तो बापदादा को यह अच्छा लगता है, जो ग्रुप बनाकर बैठते हो उसको हल्का नहीं करो और पावरफुल बनाओ। मिस भी नहीं करना चाहिए। आप समझो हमारे में तो ताकत है, हमने तो सब कुछ कर लिया है, नहीं। सहयोग देना भी सेवा है। बैठने की जरूरत नहीं हो, लेकिन बैठना - यह बहुत सेवा है। बापदादा ने समाचार सुना है, अच्छा है। इसको और बढ़ाओ। मुरली तो सुनते हो लेकिन मुरली सुनने के बाद कर्मणा में चले जाते हो तो बीच-बीच में कर्म कान्सेस भी हो जाते हो। कुछ योग लगाते हो, कुछ कर्म कान्सेस हो जाते हो। लेकिन आपस में ऐसी रूहरिहान करना - यह एक दो को रिफ्रेश करना है। वायुमण्डल को पावरफुल बनाना है। तो इस खुशखबरी पर बाबा बहुत खुश है।

अभी सबको कम से कम 4 घण्टे का चार्ट दादी को देना चाहिए। पसन्द है? 4 से 6 हो जाए तो कम नहीं करना। 6 हो जाए, 8 हो जाए बहुत अच्छा। लेकिन कम से कम 4 घण्टा, इकठ्ठा नहीं मिले कोई हर्जा नहीं। 5 मिनट 10 मिनट पावरफुल स्टेज बनाओ - टोटल में 4 घण्टा होना चाहिए। चाहे आधा घण्टा मिलता है, चाहे 5 मिनट मिलता है लेकिन जमा 4 घण्टा होना चाहिए। हो सकता है? जो समझते हैं हो सकता है वह हाथ उठाओ। अच्छा यह तो सभी एवररेडी हैं। बापदादा खुश है, हिम्मत बहुत अच्छी है। बापदादा एकस्ट्रा मदद देगा, हिम्मत नहीं हारना। हिम्मत रखेंगे तो परिवार की भी मदद, बड़ों का भी मन से सहयोग मिलेगा। और बापदादा तो एक का पदमगुणा देता ही है। तो सबको पसन्द है? अच्छा - 4 घण्टे से कम नहीं करना। एक दिन अगर 4 घण्टे नहीं हो तो दूसरे दिन 6 घण्टे करके 4 घण्टे पूरे करना। कर सकते हो? देखो, सोच समझकर हाँ करो। अभी प्रभाव में आकर हाँ नहीं करो। कर सकते हैं? (दादी से) देख रही हो ना। सभी ने हाथ उठाया है। इन्हों को तो मुबारक का इनाम है। एडवांस में मुबारक है। इनाम को छोड़ना नहीं। बहुत अच्छा।

बापदादा तो मधुबन निवासियों को सदा नयनों के सामने देखते हैं। नूरे रत्न देखते हैं। मधुबन निवासी बनना कोई छोटी सी बात नहीं है। मधुबन निवासी बनना अर्थात् अनेक गिफ्ट के अधिकारी बनना। देखो, स्थूल गिफ्ट भी मधुबन में बहुत मिलती है ना! और कितना स्वमान मिलता है। अगर मधुबन वाला कहाँ भी जाता है तो किस नजर से सभी

देखते हैं? मधुबन वाला आया है। तो इतना अपना स्वमान सदा इमर्ज रखो। मर्ज नहीं, इमर्ज। ठीक है ना?

अभी बापदादा चार्ट पूछते रहेंगे? 15-15 दिन के बाद चार्ट की रिजल्ट देखेंगे। ठीक है ना! चार्ट में देना - हाँ या ना। ऊपर तारीख लिखना और नीचे हाँ ना, हाँ ना। बस दो या 3 या 4 घण्टा पावरफुल याद रही। बस, ज्यादा नहीं लिखना। पढ़ने का टाइम नहीं मिलता है ना। मधुबन निवासियों से सभी का प्यार है और आप लोगों को कितनी दुआयें मिलती हैं। जो आई.पी. भी आते हैं, योग शिविर में आते हैं, कांफ्रेंस में आते हैं तो मधुबन की सेवा देख करके दुआयें तो देते हैं ना। हर एक के दिल से निकलता है - वाह सेवाधारी वाह! तो दुआयें भी तो जमा हो रही हैं। तो कमाल करके दिखाना। मधुबन वालों का रिकार्ड 4 घण्टे का जरूर हो, ज्यादा भी हो तो और अच्छा। यही प्रवृत्ति वालों को, सेन्टर वालों को, सभी को पावरफुल बनायेगा। निमित्त आप बनो। अच्छा। खुशराजी हैं, यह पूछने की आवश्यकता है? या खुश रहते ही हो, पूछने की आवश्यकता है? खुश तो सभी हैं ही। सभी के चेहरे देखो, सभी के दांत निकले हुए हैं। बहुत अच्छे हो। अपनी विशेषता देखो और उसको कार्य में लगाओ।

विशेष मधुबन की बहिनों से बात कर रहे हैं। बापदादा सब देखते हैं। बापदादा से कुछ छिपता नहीं है। अन्दर का भी देखता है, तो बाहर का भी देखता है। मधुबन की बहिनें विशेष अपनी-अपनी विशेषता को कार्य में लगाओ। हर एक में विशेषतायें हैं, ऐसे नहीं कोई विशेषता नहीं है। सभी में हैं। सिर्फ उसको कार्य में लगाने से वृद्धि को प्राप्त होती जायेंगी। औरों की भी विशेषता देखो और अपनी विशेषता कार्य में लगाओ। कम नहीं हैं। सभी क्या बुलाते हैं! मधुबन की बहिनें। मधुबन नाम आने से ही कितनी खुशी हो जाती है। तो मधुबन की बहिनें कम नहीं हैं। सभी के दुआओं की पात्र हो। पुण्य का खाता जितना बनाने चाहो उतना बना सकते हो। चांस है। समय को जितना सफल करने चाहो उतना कर सकते हो। चांस तो है ना! या चांस नहीं मिलता है? चांस आपेही लो, चांस ऐसे नहीं मिलेगा। कोई कहे हाँ यह करो, नहीं। चांस लो। चांस लेने से क्या बन जायेंगे? चांसलर। मधुबन वाले भाग्यवान तो हैं ही लेकिन अपने भाग्य को कार्य में लगाओ। समझा। बहिनें हैं सिकीलधी और भाई हैं बहुत। सिकीलधी हैं ना! बहुत अच्छा है। अभी 4 घण्टे में पहला नम्बर बहिनें आनी चाहिए। ऐसे नहीं कहना - यह हो गया ना। यह होना नहीं चाहिए ना! यह नहीं। करना ही है। पक्का! इन्हों की फोटो निकालो। अच्छा। ओम् शान्ति।

15-12-2001 "एकव्रता बन पवित्रता की धारणा द्वारा रूहानियत में रह मनसा सेवा करो"

आज रूहानी बाप चारों ओर के रूहानी बच्चों की रूहानियत को देख रहे हैं। हर एक बच्चे में रूहानियत की झलक कितनी है? रूहानियत नयनों से प्रत्यक्ष होती है। रूहानियत की शक्ति वाली आत्मा सदा नयनों से औरों को भी रूहानी शक्ति देती है। रूहानी मुस्कान औरों को भी खुशी की अनुभूति कराती है। उनकी चलन, चेहरा फ़रिश्तों के समान डबल लाइट दिखाई देता है। ऐसी रूहानियत का आधार है पवित्रता। जितनी-जितनी मन-वाणी-कर्म में पवित्रता होगी उतना ही रूहानियत दिखाई देगी। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का शृंगार है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। तो बापदादा हर बच्चे की पवित्रता के आधार पर रूहानियत को देख रहे हैं। रूहानी आत्मा इस लोक में रहते हुए भी अलौकिक फ़रिश्ता दिखाई देगी।

तो अपने आपको देखो, चेक करो - हमारे संकल्प, बोल में रूहानियत है? रूहानी संकल्प अपने में भी शक्ति भरने वाले हैं और दूसरों को भी शक्ति देते हैं। जिसको दूसरे शब्दों में कहते हो रूहानी संकल्प मनसा सेवा के निमित्त बनते हैं। रूहानी बोल स्वयं को और दूसरे को सुख का अनुभव कराते हैं। शान्ति का अनुभव कराते हैं। एक रूहानी बोल अन्य आत्माओं के जीवन में आगे बढ़ने का आधार बन जाता है। रूहानी बोल बोलने वाला वरदानी आत्मा बन जाता है। रूहानी कर्म सहज स्वयं को भी कर्मयोगी स्थिति का अनुभव कराते हैं और दूसरों को भी कर्मयोगी बनाने के सैम्पुल बन जाते हैं। जो भी उनके सम्पर्क में आते हैं वह सहजयोगी, कर्मयोगी जीवन का अनुभवी बन जाते हैं। लेकिन सुनाया रूहानियत का बीज है पवित्रता। पवित्रता स्वप्न तक भी भंग न हो तब रूहानियत दिखाई देगी। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, लेकिन हर बोल ब्रह्माचारी हो, हर संकल्प ब्रह्माचारी हो, हर कर्म ब्रह्माचारी हो। जैसे लौकिक में कोई-कोई बच्चे की सूरत बाप समान होती है तो कहा जाता है कि इसमें बाप दिखाई देता है। ऐसे ब्रह्माचारी ब्राह्मण आत्मा के चेहरे में रूहानियत के आधार पर ब्रह्मा बाप समान अनुभव हो। जो सम्पर्क वाली आत्मायें अनुभव करें - यह बाप समान

है। चलो 100 परसेन्ट नहीं भी हो तो समय अनुसार कितनी परसेन्ट दिखाई दे? कहाँ तक पहुँचे हैं? 75 परसेन्ट, 80 परसेन्ट, 90 परसेन्ट, कहाँ तक पहुँचे हैं? यह आगे की लाइन बताओ, देखो बैठने में तो आपको नम्बर आगे मिला है। तो ब्रह्माचारी बनने में भी नम्बर आगे होंगे ना! हैं आगे कि नहीं?

बापदादा हर बच्चे की पवित्रता के आधार पर रूहानियत देखने चाहते हैं। बापदादा के पास सबका चार्ट है। बोलते नहीं हैं लेकिन चार्ट है, क्या-क्या करते हैं, कैसे करते हैं, सब बापदादा के पास चार्ट है। पवित्रता में भी अभी कोई-कोई बच्चों की परसेन्टेज़ बहुत कम है। समय के अनुसार विश्व की आत्मायें आप आत्माओं को रूहानियत का सैम्पुल देखने चाहती हैं। इसका सहज साधन है - सिर्फ एक शब्द अटेन्शन में रखो, बार-बार उस एक शब्द को अपने आप अण्डरलाइन करो, वह एक शब्द है - एकव्रता भव। जहाँ एक है वहाँ एकाग्रता स्वत: ही आ जाती है। अचल, अडोल स्वत: ही बन जाते हैं। एकव्रता बनने से एकमत पर चलना बहुत सहज हो जाता है। जब है ही एकव्रता तो एक की मत से एकमती सद्गति सहज हो जाती है। एकरस स्थिति स्वत: ही बन जाती है। तो चेक करो - एकव्रता हैं? सारे दिन में मनबुद्धि एकव्रता रहता है? हिसाब में भी आदि हिसाब एक से शुरू होता है। एक बिन्दी और एक शब्द, एक अंक लगाते जाओ, एक बिन्दी लगाते जाओ तो कितना बढ़ता जायेगा! तो और कुछ भी याद नहीं आवे, एक शब्द तो याद रहेगा ना! समय, आत्मायें आप एकव्रता आत्माओं को पुकार रहे हैं। तो समय की पुकार, आत्माओं की पुकार - हे देव आत्मायें सुनने नहीं आती? प्रकृति भी आप प्रकृतिपति को देख-देख पुकार रही है - हे प्रकृतिपति रूहानी संकल्प स्वयं में व दूसरों में शक्ति भरने वाले हैं आत्मायें, अब परिवर्तन करो। यह तो बीच-बीच में छोटे-छोटे झटके लग रहे हैं। बिचारी आत्माओं को बार-बार दु:ख के, भय के झटके नहीं खिलाओ। आप मुक्ति दिलाने वाली आत्मायें मास्टर मुक्तिदाता कब इन आत्माओं को मुक्ति दिलायेंगे? क्या मन में रहम नहीं आता? कि समाचार सुन करके चुप हो जाते हो, बस, हो गया, सुन लिया। इसलिए बापदादा हर बच्चे का अभी मर्सीफुल स्वरूप देखने चाहते हैं। अपनी हद की बातें अभी छोड़ दो, मर्सीफुल बनो। मनसा सेवा में लग जाओ। सकाश दो, शान्ति दो, सहारा दो। अगर मर्सीफुल बन औरों को सहारा देने में बिजी रहेंगे तो हद की आकर्षणों से, हद की बातों से स्वत: ही दूर हो जायेंगे। मेहनत से बच जायेंगे। वाणी की सेवा में बहुत समय दिया, समय सफल किया, सन्देश दिया। आत्माओं को सम्बन्ध सम्पर्क

में लाया, ड्रामानुसार अब तक जो किया वह बहुत अच्छा किया। लेकिन अभी वाणी के साथ मनसा सेवा की ज्यादा आवश्यकता है। और यह मनसा सेवा हर एक नया, पुराना, महारथी, घोड़ेसवार, प्यादा सब कर सकते हैं। इसमें बड़े करेंगे, हम तो छोटे हैं, हम तो बीमार हैं, हम तो साधनों वाले नहीं हैं..... कोई भी आधार नहीं चाहिए। यह छोटे-छोटे बच्चे भी कर सकते हैं। बच्चे, मनसा सेवा कर सकते हैं ना? (हाँ जी) इसलिए अभी वाचा और मनसा सेवा का बैलेन्स रखो। मनसा सेवा से आप करने वालों को भी बहुत फायदा है। क्यों? जिस आत्मा को मनसा सेवा अर्थात् संकल्प द्वारा शक्ति देंगे, सकाश देंगे वह आत्मा आपको दुआ देगी। और आपके खाते में स्व का पुरुषार्थ तो है ही लेकिन दुआओं का खाता भी जमा हो जायेगा। तो आपका जमा खाता डबल रीति से बढ़ता जायेगा। इसलिए चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, क्योंकि इस बारी नये बहुत आये हैं ना! नये जो पहले बारी आये हैं, वह हाथ उठाओ। पहले बारी आये हुए बच्चों से भी बापदादा पूछते हैं कि आप आत्मायें मनसा सेवा कर सकती हो? (बापदादा ने पाण्डवों से, माताओं से सबसे अलग-अलग पूछा आप मनसा सेवा कर सकते हो?) यह तो बहुत अच्छा हाथ उठाया, चाहे कोई टी.वी. से देख सुन रहे हैं, चाहे सम्मुख सुन रहे हैं, अभी बापदादा सभी बच्चों को जिम्मेवारी देते हैं कि रोज़ सारे दिन में कितने घण्टे मनसा सेवा यथार्थ रीति से की, उसका हर एक अपने पास चार्ट रखना। ऐसे नहीं कहना हाँ कर ली। यथार्थ रूप में कितने घण्टे मनसा सेवा की, वह हर एक चार्ट रखना। फिर बापदादा अचानक चार्ट मंगायेंगे। डेट नहीं बतायेंगे। अचानक मंगायेंगे, देखेंगे कि जिम्मेवारी का ताज पहना या हिलता रहा है? जिम्मेवारी का ताज पहनना है ना! टीचर्स ने तो जिम्मेवारी का ताज पहना हुआ है ना! अभी उसमें यह एड करना। ठीक है ना! डबल फारेनर्स हाथ उठाओ। यह जिम्मेवारी का ताज अच्छा लगता है, तो ऐसे हाथ उठाओ। टीचर्स भी हाथ उठाओ आपको देखकर सबको प्रेरणा मिलेगी। तो चार्ट रखेंगे? अच्छा, बापदादा अचानक एक दिन पूछेगा, अपना- अपना चार्ट लिखकर भेजो, फिर देखेंगे क्योंकि वर्तमान समय बहुत आवश्यकता है। अपने परिवार का दु:ख, परेशानी आप देख सकते हो! देख सकते हो? दु:खी आत्माओं को अंचली तो दो। जो आपका गीत है - एक बूंद की प्यासी हैं हम... आज के समय में सुख शान्ति के एक बूंद की आत्मायें प्यासी हैं। एक सुख-शान्ति के अमृत की बूंद मिलने से भी खुश हो जायेंगी। बापदादा बार-बार सुनाते रहते हैं - समय आपका इन्तजार कर रहा है। ब्रह्मा बाप अपने घर का गेट खोलने का इन्तजार कर रहा है।

प्रकृति तीव्रगति से सफाया करने का इन्तजार कर रही है। तो हे फ़रिश्ते, अभी अपने डबल लाइट से इन्तजार को समाप्त करो। एवररेडी शब्द तो सब बोलते हो लेकिन सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में एवररेडी बने हो? सिर्फ शरीर छोड़ने के लिए एवररेडी नहीं बनना है, लेकिन बाप समान बनकर जाने में एवररेडी बनना है।

यह मधुबन के सब आगे-आगे बैठते हैं, अच्छा है। सेवा भी करते हैं। मधुबन वाले एवररेडी हैं? हंसते हैं, अच्छा पहली लाइन वाले महारथी एवररेडी हैं? बाप समान बनने में एवररेडी? ऐसे जाना तो एडवांस पार्टी में जायेंगे। एडवांस पार्टी तो न चाहते बढ़ती जाती है। अभी वाणी और मनसा सेवा के जहाँ एक है वहाँ एकाग्रता स्वतः ही आ जाती है बैलेन्स में बिजी हो जायेंगे तो ब्लैसिंग बहुत मिलेंगी। डबल खाता जमा हो जायेगा - पुरूषार्थ का भी और दुआओं का भी। तो संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, वाणी द्वारा, कर्म द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा दुआयें दो और दुआयें लो। एक ही बात करो बस दुआयें देनी हैं। चाहे कोई बद्दुआ दे तो भी आप दुआ दो क्योंकि आप दुआओं के सागर के बच्चे हो। कोई नाराज़ हो आप नाराज़ नहीं हो। आप राज़ी रहो। ऐसे हो सकता है? 100 जने आपको नाराज़ करें और आप राज़ी रहो, हो सकता है? हो सकता है? दूसरी लाइन वाले बताओ हो सकता है? अभी और भी नाराज़ करेंगे, देखना! पेपर तो आयेगा ना। माया भी सुन रही है ना! बस यह व्रत लो, दृढ़ संकल्प लो - "मुझे दुआयें देनी हैं और लेनी हैं, बस"। हो सकता है? माया भले नाराज़ करे ना! आप तो राज़ी करने वाले हो ना? तो एक ही काम करो बस। नाराज़ न होना है, नकरना है। करे तो वह करे, हम नहीं होवें। हम न करें न होवें। हर एक अपनी जिम्मेवारी ले। दूसरे को नहीं देखें, यह करती है, यह करता है, हम साक्षी होके खेल देखने वाले हैं, सिर्फ राज़ी का खेल देखेंगे क्या, नाराज़गी का भी तो बीच-बीच में देखना चाहिए ना। लेकिन हर एक अपने आपको राज़ी रखे।

मातायें, पाण्डव हो सकता है? बापदादा नक्शा देख लेंगे। बापदादा के पास बहुत बड़ी टी.वी. है, बहुत बड़ी है। एक एक का देख सकते हैं, किस समय कोई क्या कर रहा है, बापदादा देखता है लेकिन बोलता नहीं है, आपको सुनाता नहीं है। बाकी रंग बहुत देखते हैं। छिप-छिपकर क्या करते हो वह भी देखता है। बच्चों में चालाकी भी बहुत है ना! चालाक बहुत हैं। अगर बापदादा बच्चों की चालाकियां सुनायें ना तो सुनकर ही आप थोड़ा सा सोचने लगेंगे, इसलिए नहीं सुनाते हैं। आपको सोच में क्यों डालें। लेकिन करते बहुत होशियारी से हैं। अगर सबसे होशियार देखना हो तो भी ब्राह्मणों

में देखो। लेकिन अभी किसमें होशियार बनेंगे? मनसा सेवा में। नम्बर आगे ले लो। पीछे नहीं रहना। इसमें कोई कारण नहीं। समय नहीं मिलता, चांस नहीं मिलता, तबियत नहीं चलती, पूछा नहीं गया, यह कुछ नहीं। सब कर सकते हो। बच्चों ने दौड़ लगाने का खेल खेला था ना, अभी इसमें दौड़ लगाना। मनसा सेवा में दौड़ लगाना। अच्छा।

कनार्टक का टर्न है - कर्नाटक वाले जो सेवा में आये हैं, वह उठो। इतने सब सेवा के लिए आये हैं। अच्छा है, यह भी सहज श्रेष्ठ पुण्य जमा करने का गोल्डन चांस मिलता है। भक्ति में कहा जाता है - एक ब्राह्मण की भी सेवा करो तो बड़ा पुण्य होता है और यहाँ कितने सच्चे ब्राह्मणों की सेवा करते हो। तो यह अच्छा चांस मिलता है ना! अच्छा लगा कि थकावट हुई? थके तो नहीं! मज़ा आया ना! अगर सच्ची दिल से पुण्य समझ करके सेवा करते हैं तो उसका प्रत्यक्ष फल है, उसको थकावट नहीं होगी, खुशी होगी। यह प्रत्यक्षफल पुण्य के जमा का अनुभव होता है। अगर थोड़ा भी किसी कारण से थकावट होती या थोड़ा सा महसूस करते तो समझो सच्ची दिल से सेवा नहीं है। सेवा अर्थात् प्रत्यक्षफल, मेवा। सेवा नहीं करते मेवा खाते हैं। तो कनार्टक के सभी सेवाधारियों ने अपनी अच्छी सेवा का पार्ट बजाया और सेवा का फल खाया।

अच्छा सभी टीचर्स ठीक हैं। टीचर्स को तो कितने बारी सीजन में टर्न मिलता है। यह टर्न मिलना भी भाग्य की निशानी है। अभी टीचर्स को मनसा सेवा में रेस करनी है। लेकिन ऐसे नहीं करना कि सारा दिन बैठ जाओ, मैं मनसा सेवा कर रही हूँ। कोई कोर्स करने वाला आवे तो आप कहो नहीं, नहीं मैं तो मनसा सेवा कर रही हूँ। कोई कर्मयोग का टाइम आवे तो कहो मनसा सेवा कर रही हूँ, नहीं। बैलेन्स चाहिए। कोई कोई को ज्यादा नशा चढ़ जाता है ना! तो ऐसा नशा नहीं चढ़ाना। बैलेन्स से ब्लैसिंग है। बैलेन्स नहीं तो ब्लैसिंग नहीं। अच्छा।

दिल्ली के सेवाधारी भी आये हैं, उठो कौन-कौन आये हैं? इन्जीनियर्स आये हैं। उद्घाटन तो कर लिया ना! अच्छा किया। सभी ठीक हैं। थक तो नहीं गये हैं? नहीं, और मकान भी बनाने के लिए देवें, एवररेडी हैं? और मकान बनाने का आर्डर देवें? अच्छा। यह तो एवररेडी हैं, विश्वकर्मा के समान जो आप आर्डर करो वह बन जायेंगे। हैं ना! ब्राह्मण परिवार के संगमयुगी विश्वकर्मा का पार्ट बजाने वाले। द्वापर वाले नहीं, संगम वाले। बहुत अच्छा है। सभी बहुत खुश हुए। मुहूर्त में सब खुश होकर आये, इसलिए सफलता है। थोड़ा-बहुत तो होता ही है। लेकिन मैजारिटी सब देख देख खुश हुए। इसलिए

आप सबको दुआयें मिली। आपके खाते में दुआयें जमा हुई। ठीक है ना! एक-एक विशेष आत्मा है। किसी भी ड्युटी पर रहे लेकिन विशेष आत्मायें हैं। इसीलिए देखो आप लोगों को विशेष निमन्त्रण मिला। बहुत अच्छा किया, बापदादा और परिवार खुश है। ठीक है ना?

अभी सभी एक सेकण्ड में मनसा सेवा का अनुभव करो। आत्माओं को शान्ति और शक्ति की अंचली दो। अच्छा।

चारों ओर के सर्व श्रेष्ठ रूहानियत का अनुभव कराने वाले रूहानी आत्माओं को, सर्व संकल्प और स्वप्न में भी पवित्रता का पाठ पढ़ने वाले ब्रह्माचारी बच्चों को, सर्व दृढ़ संकल्पधारी, मनसा सेवाधारी तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को, सदा दुआयें देने और लेने वाले पुण्य आत्माओं को बापदादा का, दिलाराम बाप का दिल व जान, सिक व प्रेम सहित याद-प्यार और नमस्ते।

दादी जी, दादी जानकी जी से पर्सनल मुलाकात

बापदादा ने त्रिमूर्ति ब्रह्मा का दृश्य दिखाया। आप सबने देखा? क्योंकि बाप समान, बाप के हर कार्य में साथी हो ना! इसलिए यह दृश्य दिखाया। बापदादा ने आप दोनों को विशेष पावर्स की विल की है। विल पावर भी दी और सर्व पावर्स की विल भी की। इसलिए वह पावर्स अपना काम कर रही हैं। करावनहार करा रहा है, और आप निमित्त बन कर रहे हो। मजा आता है ना! करन करावनहार बाप करा रहा है। इसलिए कराने वाला करा रहा है, आप बेफिकर होकर कर रहे हैं। फिकर नहीं रहता है ना! बेफिकर बादशाह। (दादी जानकी ने कहा कि बापदादा से मास्टर डिग्री लेनी है)

मास्टर डिग्री तो पास करना ही है। हुई पड़ी है। सिर्फ थोड़ा रिपीट करना है। पास हुई पड़ी है ना! अनेक कल्प अनेक बार पास की है, अभी सिर्फ रिपीट करना है। रिपीट करने में मुश्किल नहीं होता है। नहीं तो मास्टर डिग्री प्राप्त करने वाले कौन होंगे! और आपके साथी होंगे। साथी तो चाहिए ना! लेकिन बनना तो है ही। पास हुआ पड़ा है। कितने बार पास किया है? (अनेक बार) अनेक बार किया है और हुआ ही पड़ा है। अच्छा।

तबियत के भी नॉलेजफुल। थोड़ा-थोड़ा नटखट होता है। इसमें भी नॉलेजफुल बनना ही पड़ेगा क्योंकि सेवा बहुत करनी है ना। तो तबियत भी साथ देती है। तो डबल नॉलेजफुल। अच्छा। ओम् शान्ति।

25-10-2002 "ब्राह्मण जीवन का आधार - प्युरिटी की रॉयल्टी"

आज स्नेह का सागर अपने स्नेही बच्चों को देख रहे हैं। चारों ओर के स्नेही बच्चे रूहानी सूक्ष्म डोरी में बंधे हुए अपने स्वीट होम में पहुंच गये हैं। जैसे बच्चे स्नेह से खिंचकर पहुंच गये हैं वैसे बाप भी बच्चों के स्नेह की डोर में बंधा हुआ बच्चों के सम्मुख पहुंच गये हैं। बापदादा देख रहे हैं कि चारों ओर के बच्चे भी दूर बैठे भी स्नेह में समाये हुए हैं। सम्मुख के बच्चों को भी देख रहे हैं और दूर बैठे हुए बच्चों को भी देख देख हार्षित हो रहे हैं। ये रूहानी अविनाशी स्नेह, परमात्म स्नेह, आत्मिक स्नेह सारे कल्प में अभी अनुभव कर रहे हो।

बापदादा हर एक बच्चे की पवित्रता की रॉयल्टी देख रहे हैं। ब्राह्मण जीवन की रॉयल्टी है ही प्युरिटी। तो हर एक बच्चे के सिर पर रूहानी रॉयल्टी की निशानी प्युरिटी की लाइट का ताज देख रहे हैं। आप सभी भी अपने प्युरिटी का ताज, रूहानी रॉयल्टी का ताज देख रहे हो? पीछे वाले भी देख रहे हो? कितनी शोभनिक ताजधारी सभा है। है ना पाण्डव? ताज चमक रहा है ना! ऐसी सभा देख रहे हो ना! कुमारियां, ताजधारी कुमारियां हो ना! बापदादा देख रहे हैं कि बच्चों की रायल फैमिली कितनी श्रेष्ठ है! अपने अनादि रॉयल्टी को याद करो, जब आप आत्मायें परमधाम में भी रहती हो तो आत्मा रूप में भी आपकी रूहानी रॉयल्टी विशेष है। सर्व आत्मायें भी लाइट रूप में हैं लेकिन आपकी चमक सर्व आत्माओं में श्रेष्ठ है। याद आ रहा है परमधाम? अनादि काल से आपकी झलक फलक न्यारी है। जैसे आकाश में देखा होगा सितारे सभी चमकते हैं, सब लाइट ही हैं लेकिन सर्व सितारों में कोई विशेष सितारों की चमक न्यारी और प्यारी होती है। ऐसे ही सर्व आत्माओं के बीच आप आत्माओं की चमक रूहानी रॉयल्टी, प्युरिटी की चमक न्यारी है। याद आ रहा है ना? फिर आदिकाल में आओ, आदिकाल को याद करो तो आदिकाल में भी देवता स्वरूप में रूहानी रॉयल्टी की पर्सनालिटी कितनी विशेष रही? सारे कल्प में देवताई स्वरूप की रॉयल्टी और किसी की रही है? रूहानी रॉयल्टी, प्युरिटी की पर्सनाल्टी याद है ना! पाण्डवों को भी याद है? याद आ गया? फिर मध्यकाल में आओ तो मध्यकाल द्वापर से लेकर आपके

जो पूज्य चित्र बनाते हैं, उन चित्रों की रॉयल्टी और पूजा की रॉयल्टी द्वापर से अभी तक किसी चित्र की है? चित्र तो बहुतों के हैं लेकिन ऐसे विधि पूर्वक पूजा और किसी आत्माओं की है? चाहे धर्म पितायें हैं, चाहे नेतायें हैं, चाहे अभिनेतायें हैं, चित्र तो सबके बनते लेकिन चित्रों की रॉयल्टी और पूजा की रॉयल्टी किसी की देखी है? डबल फारेनर्स ने अपनी पूजा देखी है? आप लोगों ने देखी है या सिर्फ सुना है? ऐसे विधिपूर्वक पूजा और चित्रों की चमक, रूहानियत और किसकी भी नहीं हुई है, न होगी। क्यों? प्युरिटी की रॉयल्टी है। प्युरिटी की पर्सनाल्टी है। अच्छा देख लिया अपनी पूजा? नहीं देखी हो तो देख लेना। अभी लास्ट में संगमयुग पर आओ तो संगम पर भी सारे विश्व के अन्दर प्युरिटी की रॉयल्टी ब्राह्मण जीवन का आधार है। प्युरिटी नहीं तो प्रभु प्यार का अनुभव भी नहीं। सर्व परमात्म प्राप्तियों का अनुभव नहीं। ब्राह्मण जीवन की पर्सनाल्टी प्युरिटी है और प्युरिटी ही रूहानी रॉयल्टी है। तो आदि अनादि, आदि मध्य और अन्त सारे कल्प में यह रूहानी रॉयल्टी चलती रही है।

तो अपने आपको देखो - दर्पण तो आप सबके पास है ना? दर्पण है? देख सकते हो? तो देखो। हमारे अन्दर प्युरिटी की रॉयल्टी कितने परसेन्ट में है? हमारे चेहरे से प्युरिटी की झलक दिखाई देती है? चलन में प्युरिटी की फलक दिखाई देती है? फलक अर्थात् नशा। चलन में वह फलक अर्थात् रूहानी नशा दिखाई देता है? देख लिया अपने को? देखने में कितना समय लगता है? सेकण्ड ना? तो सभी ने देखा अपने को?

कुमारियां - झलक फलक है? अच्छा है, सभी उठो, खड़े हो जाओ। (कुमारियां लाल पट्टा लगाकर बैठी हैं, जिस पर लिखा है एकव्रता) सुन्दर लगता है ना। एकव्रता का अर्थ ही है प्युरिटी की रॉयल्टी। तो एकव्रता का पाठ पक्का कर लिया है! वहाँ जाकर कच्चा नहीं कर लेना। और कुमार ग्रुप उठो। कुमारों का ग्रुप भी अच्छा है। कुमारों ने दिल में प्रतिज्ञा का पट्टा बांध लिया है, इन्होंने (कुमारियों ने) तो बाहर से भी बांध लिया है। प्रतिज्ञा का पट्टा बांधा है कि सदा अर्थात् निरन्तर प्युरिटी की पर्सनाल्टी में रहने वाले कुमार हैं। ऐसे हैं? बोलो, जी हाँ। ना जी या हाँ जी? या वहाँ जाकर पत्र लिखेंगे थोड़ा-थोड़ा ढीला हो गया! ऐसे नहीं करना। जब तक ब्राह्मण जीवन में जीना है तब तक सम्पूर्ण पवित्र रहना ही है। ऐसा वायदा है? पक्का वायदा है तो हाथ हिलाओ। टी.वी. में आपके फोटो निकल रहे हैं। जो ढीला होगा ना उसको यह चित्र भेजेंगे। इसलिए ढीला नहीं होना, पक्का रहना। हाँ पक्के हैं, पाण्डव तो पक्के होते हैं। पक्के पाण्डव, बहुत अच्छा।

प्युरिटी की वृत्ति है - शुभ भावना, शुभ कामना। कोई कैसा भी हो लेकिन पवित्र वृत्ति अर्थात् शुभ भावना, शुभ कामना और पवित्र दृष्टि अर्थात् सदा हर एक को आत्मिक रूप में देखना वा फरिश्ता रूप में देखना। तो वृत्ति, दृष्टि और तीसरा है कृति अर्थात् कर्म में, तो कर्म में भी सदा हर आत्मा को सुख देना और सुख लेना। यह है प्युरिटी की निशानी। वृत्ति, दृष्टि और कृति तीनों में यह धारणा हो। कोई क्या भी करता है, दु:ख भी देता है, इन्सल्ट भी करता है, लेकिन हमारा कर्त्तव्य क्या है? क्या दु:ख देने वाले को फालो करना है या बापदादा को फालो करना है? फालो फादर है ना! तो ब्रह्मा बाप ने दु:ख दिया वा सुख दिया? सुख दिया ना! तो आप मास्टर ब्रह्मा अर्थात् ब्राह्मण आत्माओं को क्या करना है? कोई दु:ख देवे तो आप क्या करेंगे? दु:ख देंगे? नहीं देंगे? बहुत दु:ख देवे तो? बहुत गाली देवे, बहुत इनसल्ट करे, तो थोड़ा तो फील करेंगे या नहीं? कुमारियां फील करेंगी? थोड़ा। तो फालो फादर। यह सोचो मेरा कर्त्तव्य क्या है! उसका कर्त्तव्य देख अपना कर्त्तव्य नहीं भूलो। वह गाली दे रहा है, आप सहनशील देवी, सहनशील देव बन जाओ। आपकी सहनशीलता से गाली देने वाले भी आपको गले लगायेंगे। सहनशीलता में इतनी शक्ति है, लेकिन थोड़ा समय सहन करना पड़ता है। तो सहनशीलता के देव वा देवियां हो ना? हो? सदा यही स्मृति रखो – मैं सहनशील का देवता हूँ, मैं सहनशीलता की देवी हूँ। तो देवता अर्थात् देने वाला दाता, कोई गाली देता है, रिस्पेक्ट नहीं करता है तो किचड़ा है ना कि अच्छी चीज़ है? तो आप लेते क्यों हो? किचड़ा लिया जाता है क्या? कोई आपको किचड़ा देवे तो आप लेगें? नहीं लेंगे ना। तो रिस्पेक्ट नहीं करता, इन्सल्ट करता, गाली देता, आपको डिस्टर्व करता, तो यह क्या है? अच्छी चीज़ें हैं। फिर आप लेते क्यों हो? थोड़ा-थोड़ा तो ले लेते हो, पीछे सोचते हो नहीं लेना था। तो अभी लेना नहीं। लेना अर्थात् मन में धारण करना, फील करना। तो अपने अनादिकाल, आदिकाल, मध्यकाल, संगम काल, सारे कल्प के प्युरिटी की रॉयल्टी, पर्सनाल्टी याद करो। कोई क्या भी करे आपकी पर्सनाल्टी को कोई छीन नहीं सकता। यह रूहानी नशा है ना? और डबल फारेनर्स को तो डबल नशा है ना! डबल नशा है ना? सब बात का डबल नशा। प्युरिटी का भी डबल नशा, सहनशील देवी-देवता बनने का भी डबल नशा। है ना डबल? सिर्फ अमर रहना। अमर भव का वरदान कभी नहीं भूलना।

अच्छा - जो प्रवृत्ति वाले हैं अर्थात् युगल, वैसे सिंगल रहते हैं, कहने में युगल आता है, वह उठो। खड़े हो जाओ। युगल तो बहुत हैं, कुमार, कुमारियां तो थोड़े हैं। कुमारों

से तो युगल बहुत हैं। तो युगल मूर्त बापदादा ने आप सबको प्रवृत्ति में रहने के लिए डायरेक्शन क्यों दिया है? आपको युगल रहने की छुट्टी क्यों दी है? प्रवृत्ति में रहने की छुट्टी क्यों दी है, जानते हो? क्योंकि युगल रूप में रहते इन महामण्डलेश्वरों को आपको पांव में झुकाना है। है इतनी हिम्मत? यह लोग कहते हैं कि साथ रहते पवित्र रहना मुश्किल है और आप क्या कहते हो? मुश्किल है या सहज है? (बहुत सहज है) पक्का है? या कभी इजी, कभी लेजी? इसलिए बापदादा ने ड्रामानुसार आप सबको दुनिया के आगे, विश्व के आगे एग्जैम्पुल बनाया है। चैलेन्ज करने के लिए। तो प्रवृत्ति में रहते भी निवृत्त, अपवित्रता से निवृत्त रह सकते हो? तो चैलेन्ज करने वाले हो ना? सभी चैलेन्ज करने वाले हो, थोड़ा-थोड़ा डरते तो नहीं हो, चैलेन्ज तो करें लेकिन पता नहीं क्या हो! तो चैलेन्ज करो विश्व को क्योंकि नई बात यही है कि साथ रहते भी स्वप्न मात्र भी अपवित्रता का संकल्प नहीं आये, यही संगमयुग के ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। तो ऐसे विश्व के शोकेस में आप एग्जैम्पुल हो, सैम्पुल कहो एग्जैम्पुल कहो। आपको देख करके सबमें ताकत आयेगी हम भी बन सकते हैं। ठीक है ना? शक्तियां ठीक है? पक्के हो ना? कच्चे पक्के तो नहीं? पक्के। बापदादा भी आपको देख करके खुश है। मुबारक हो। देखो कितने हैं? बहुत अच्छे।

बाकी रही टीचर्स। टीचर्स के बिना तो गति नहीं। टीचर्स उठो। अच्छा - पाण्डव भी अच्छे-अच्छे हैं। वाह! टीचर्स की विशेषता है कि हर टीचर के फीचर से फ्युचर दिखाई दे। या हर एक टीचर के फीचर्स से फरिश्ता स्वरूप दिखाई दे। ऐसे टीचर्स हो ना! आप फरिश्तों को देखकर और भी फरिश्ते बन जायें। देखो कितने टीचर्स हैं। फारेन ग्रुप में टीचर्स बहुत हैं। अभी तो थोड़े आये हैं। जो नहीं आये हैं उनको भी बापदादा याद कर रहे हैं। अच्छा है, अभी टीचर्स मिलकरके यह प्लैन बनाओ कि अपने चलन और चेहरे से बाप को प्रत्यक्ष कैसे करें? दुनिया वाले कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है और आप कहते हो नहीं है। लेकिन बापदादा कहते हैं कि अभी समय प्रमाण हर टीचर में बाप प्रत्यक्ष दिखाई दे तो सर्वव्यापी दिखाई देगा ना! जिसको देखे उसमें बाप ही दिखाई दे। आत्मा, परमात्मा के आगे छिप जाये और परमात्मा ही दिखाई दे। यह हो सकता है? अच्छा इसकी डेट क्या? डेट तो फिक्स होनी चाहिए ना? तो डेट कौन सी है इसकी? कितना समय चाहिए? (अब से चालू करेंगे) चालू करेंगे, अच्छी हिम्मत है, कितना समय चाहिए? 2002 तो चल रहा है अभी दो हजार कब तक? तो टीचर्स को यही अटेन्शन रखना है किबस अभी बाप के अन्दर मैं समाई हुई दिखाई दूं। मेरे

द्वारा बाप दिखाई दे। प्लैन बनायेंगे ना! डबल विदेशी मीटिंग करने में तो होशियार हैं? अभी यह मीटिंग करना, इस मीटिंग के बिना जाना नहीं - कि कैसे हम एक एक से बाप दिखाई दे। अभी ब्रह्माकुमारियां दिखाई देती हैं, ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छी हैं लेकिन इनका बाबा कितना अच्छा है, वह देखें। तभी तो विश्व परिवर्तन होगा ना! तो डबल विदेशी इस प्लैन को प्रैक्टिकल शुरू करेंगे ना! करेंगे? पक्का। अच्छा। तो आपकी दादी है ना, उसकी आशा पूर्ण हो जायेगी। ठीक है ना? अच्छा।

अधरकुमार और मातायें - जो सिंगल हैं वह उठो। आप भी सिंगल नहीं हो। आपका युगल तो बहुत पॉवरफुल है क्योंकि बापदादा सभी बच्चों को कहते हैं कि आप सभी ``आप और बाप'' कम्बाइण्ड हैं। तो कम्बाइण्ड हैं तो सिंगल हुए क्या? लौकिक जीवन अलग चीज़ है, लेकिन ब्राह्मण जीवन में कम्बाइण्ड रूप में हो। ऐसे कम्बाइण्ड हो जो कोई भी अलग कर नहीं सकता। ऐसे कम्बाइण्ड हो ना? या अकेले हो? कम्बाइण्ड हो। सदा बाप हर कार्य में सहयोगी है, साथी है। यह नशा रहता है ना? कभी अपने को अकेले तो नहीं समझते? कभी-कभी समझते हो? नहीं। पहले बापदादा आप सबका साथी है और अविनाशी साथ निभाने वाले हैं। बाबा कहा और बाबा हाजिर है। कहते हैं हजूर सदा हाजर है। तो मौज में रहते हो ना? उदास तो नहीं होते? होते हैं? हाँ ना नहीं करते? उदास तो नहीं हैं ना? मौज में रहते हो ना! मौज ही मौज है, हम बाप के, बाप हमारे। बाप आपकी हर सेवा में सहयोग देने वाले हैं। इसलिए इसी रूहानी नशे में सदा रहना - हम कम्बाइण्ड हैं। कम्बाइण्ड हैं ना? बहुत अच्छे रूहानी नशे वाले हैं। नशा है ना? बापदादा को अति प्रिय से भी प्रिय हैं।

छोटे बच्चे भी आये हैं - बच्चों ने बापदादा को स्पेशल कार्ड भेजे थे, कार्ड भेजे हैं ना? आप सबके कार्ड मिल गये हैं। सुना बच्चों ने। अच्छे अच्छे कार्ड हैं। (कार्ड सभी को दिखाये गये) बहुत अच्छे कार्ड लिखे हैं। देखा बच्चों की कमाल, देखी ना! बच्चों की लगन अच्छी है तब यहाँ पहुंचते हैं। और यही बाप से प्यार बच्चों को आगे बढ़ाता रहेगा। अच्छा।

पहली बार बहुत आये हैं - अच्छा हाथ ऊपर करो। पहली बारी आने वालों को पहला नम्बर जाना है। लास्ट सो फास्ट होना है। ऐसे है ना! फास्ट जायेंगे ना, पहला नम्बर लेना है। सारा ब्राह्मण परिवार आप सब पहली बारी आने वालों को बहुत-बहुत-बहुत मुबारक दे रहे हैं।

अच्छा - बाकी जो भारत वाले बैठे हैं, वह भी उठो। भारत वाले, भारत महान है, तो भारतवासी भी महान हैं। भारत से बाप का प्यार है तब तो भारत में आया ना। विदेश में नहीं आया, भारत में ही आया। लेकिन विदेश, देश वालों को भी जगाने के निमित्त बनेगा। तो भारत वाले तो चांस लेने में होशियार हैं। देखो डबल विदेशियों के टर्न में भी कितने भारत वाले आये हैं। इसीलिए अभी भारत के टर्न में विशेष डबल विदेशियों को निमन्त्रण है। ठीक है ना! वेलकम। तो डबल विदेशी तो होशियार हैं, जाते ही पहले टिकेट इकट्ठी करने लग जाते हैं। मधुबन से भी प्यार है ना! मधुबन वा भारत से प्यार है क्यों? क्योंकि असुल में आप सब भारतवासी थे, यह तो सेवा के कारण गये हो। अगर भारतवासी नहीं होते तो भारत की फिलॉसाफी से भी प्यार नहीं होता। भारत की कलचर से भी प्यार नहीं होता, इससे सिद्ध है कि आप भारत वाले ही हो। सिर्फ सेवा के लिए गये हो, विश्व सेवा है ना। तो विश्व सेवा के कारण अलग-अलग स्थान में पहुंचे हो। भाषायें देखो कितनी हैं। तो भारत से भाषायें सीखने जायें या सेवा करने जायें, इसलिए आपको सेवा के लिए वहाँ का जन्म मिला है। आदि सतयुग में भी भारत में थे, बीच में भी भारत के ही थे, अभी थोड़े समय के लिए सेवा के लिए गये हुए हो। नशा है ना – हम भारत के हैं! बीज आपका भारत ही है। खुशी होती है ना, हम भारत के हैं। थे, हैं और होंगे। हर कल्प में होंगे। अच्छा।

पीस आफ माइण्ड रिट्रीट के गेस्ट भी बैठे हैं - अच्छा है, आप सभी गेस्ट नहीं हो लेकिन होस्ट हो। बच्चे जो सभी हैं वह सब होस्ट हैं, गेस्ट नहीं हैं। निशानी में कहते हैं गेस्ट लेकिन हो होस्ट। मधुबन अच्छा लगता है ना? अभी औरों को भी निमन्त्रण देकर अपने साथी बनाना। हमेशा ऐसे ही समझो कि हम परमात्म सन्देश देने वाले सन्देशवाहक हैं। अच्छा है। तो सदा बाप की याद और सेवा करते रहना। अच्छा।

पाण्डव भवन में भी बहुत बैठे हैं, ज्ञान सरोवर, शान्तिवन सभी जगह सुन रहे हैं - साइंस का फायदा तो आप लोग ले रहे हैं। साइंस आपके लिए ही बनी है। जब से स्थापना का पार्ट हुआ है तो थोड़ा समय पहले ही यह साइंस की इन्वेन्शन तीव्रगति पर जा रही है। लोग चाहे फायदा लेवें, नुकसान लेवें। लेकिन आप तो फायदा ले रहे हो ना। इसलिए बापदादा साइंस के साधन देने वालों को भी मुबारक देते हैं। नीचे भी आराम से सुन रहे हैं। विदेश में भी कोई-कोई सुन रहे हैं, मोहिनी बहन (न्यूयार्क) और चन्द्रू बहन (सेनफ्रानसिसको) भी सुन रहे हैं। (न्युयार्क की मोहिनी बहन ने आपरेशन कराया है) चाहे बीमारी आती है, चाहे सेवा आती है, दोनों को अपनी शक्ति से पार करके

विजयी बन जाते हैं। यह बीमारी भी एक पेपर है। जैसे और पेपर पास करते हो ऐसे यह भी एक पेपर पास हो जाता है और सहज पास हो जाता है।

तो मधुबन निवासी जो भी हैं, बापदादा शान्तिवन, हॉस्पिटल, आबू निवासी, ज्ञान सरोवर निवासी, संगम निवासी, सभी को मधुबन निवासी कहते हैं। अच्छा है, यह भी अच्छा पुण्य कमाया जो औरों को चांस दिया, तो चांस देना भी आपके पुण्य के खाते में जमा हो गया। आराम से बैठ कर सुन रहे हैं। तो बापदादा जो भी नीचे सुन रहे हैं, पहले याद उन्हों को दे रहे हैं। उनके साथ-साथ जो फारेन में सुन रहे हैं, जो दूर बैठे सुन रहे हैं, चाहे भारत में चाहे विदेश में, उन सबको भी पहले याद दे रहे हैं। और साथ में सभी बच्चों ने जिन्होंने भी कार्ड भेजे हैं, पत्र भेजे हैं, वह सबके पत्र, कार्ड, दिल के समाचार, सेवा के समाचार, हिम्मत के समाचार सब बापदादा के पास पहुंच गये हैं और बापदादा रिटर्न में एक-एक बच्चे को नाम सहित दिल से बहुत-बहुत यादप्यार दे रहे हैं। बहुत प्यार से पत्र लिखते हैं। कितना खर्चा करते हैं। कार्ड कितना बढ़िया भेजते हैं। लेकिन बापदादा खर्च को नहीं देखते, उन्हों के प्यार को देखते हैं। प्यार के आगे कोई बड़ी चीज़ नहीं है। अच्छा।

हॉस्पिटल के सभी ट्रस्टी भी आये हैं - अच्छा है, यह हॉस्पिटल भी विश्व में आवाज फैलाने का अच्छा साधन है क्योंकि इसमें डबल लाभ मिल जाता है। एक शरीर का और दूसरा आत्मा को भी लाभ मिलता है, डबल लाभ है इसीलिए बापदादा, जो भी हॉस्पिटल में ट्रस्टी हैं वा सेवाधारी हैं, सभी को विशेष सेवा की मुबारक देते हैं। यह हॉस्पिटल, नाम हॉस्पिटल है लेकिन है आत्माओं को बाप से मिलाने का साधन। हॉस्पिटल के नाम से सहज आ जाते हैं। तो सब अच्छा चल रहा है ना। जहाँ भी हॉस्पिटल हैं, ठीक चल रहे हैं। बाम्बे का अच्छा चल रहा है? ग्लोबल हॉस्पिटल का तो नाम प्रसिद्ध हो गया है। बहुत अच्छा है। मुबारक हो।

विदेश के पुराने-पुराने भाई-बहनों को देख कर - अच्छा है आदि रत्न हो ना। यह चार्ला भी आदि है। बापदादा को खुशी होती है कि आदि रत्न, फारेन सेवा के आदि रत्न बहुत अच्छे सेवाधारी हैं। अथक भी हैं और आगे बढ़ने वाले भी हैं। (25 वर्ष वाले बहुत बैठे हैं) अच्छा - सभी लम्बा हाथ उठाओ। अच्छा है। अमर भव के वरदानी हैं। जन्म से अमर वरदान मिला है। अमर रहे हैं, अमर रहेंगे। अच्छा है। सबका मिलन हो गया या कोई रह गया?

सिन्धी ग्रुप रह गया - सिन्धी तो अभी ब्राह्मण ग्रुप हो गया। अभी अपने को सिन्धी समझते हो या ब्राह्मण? क्या समझते हो? लेकिन नशा है कि जहाँ से ब्रह्मा बाप निकला वहाँ के हम हैं। यह नशा भी अच्छा है लेकिन अभी तो ब्राह्मण परिवार के विशेष सेवाधारी आत्मायें हो। सेवाधारी हो ना? बापदादा जानते हैं कि सेवा का शौक सारे ग्रुप को है। और धीरे-धीरे सिन्धी ग्रुप को बढ़ा रहे हैं, बढ़ता रहता है, बढ़ता रहेगा। इसीलिए आप सबको डबल मुबारक है, एक सिन्धी होने की और दूसरा ब्राह्मण जीवन की। अच्छा है सभी पक्के हैं। बापदादा देख करके खुश हैं। अच्छा।

देखो, डबल विदेशी कितने सेवाधारी हो, आपके कारण सबको यादप्यार मिल रहा है। बापदादा को भी डबल विदेशियों से ज्यादा तो नहीं कहेंगे लेकिन स्पेशल प्यार है। क्यों प्यार है? क्योंकि डबल विदेशी आत्मायें जोसेवा के निमित्त बन गये हैं, वह विश्व के कोने-कोने में बाप का सन्देश पहुंचाने के निमित्त बने हुए हैं। नहीं तो विदेश की आत्मायें चारों ओर की प्यासी रह जाती। अभी बाप को उल्हना तो नहीं मिलेगा ना कि भारत में आये, विदेश में क्यों नहीं सन्देश दिया। तो बाप का उल्हना पूरा करने के निमित्त बने हो। और जनक को तो उमंग बहुत है, कोई देश रह नहीं जावे। अच्छा है। बाप का उल्हना तो पूरा करेंगे ना! लेकिन आप (दादी जानकी) साथियों को थकाती बहुत हो। थकाती है ना! जयन्ती, थकाती नहीं है? लेकिन इस थकावट में भी मौज समाई हुई होती है। पहले लगता है कि यह बार-बार क्या है, लेकिन जब भाषण करके दुआयें ले आते हैं ना तो चेहरा बदल जाता है। अच्छा है, दोनों दादियों में उमंग-उत्साह बढ़ाने की विशेषता है। यह शान्त करके बैठ नहीं सकते। सेवा अभी रही हुई तो है ना? अगर नक्शा लेके देखो चाहे भारत में, चाहे विदेश में, अगर नक्शे में एक-एक स्थान पर राइट लगाते जाओ तो दिखाई देंगे कि अभी भी रहे हुए हैं। इसलिए बापदादा खुश भी होते हैं और कहते भी हैं ज्यादा नहीं थकाओ। आप सब सेवा में खुश हो ना! अभी यह कुमारियां भी तो टीचर बनेंगी ना। जो टीचर हैं वह तो हैं ही लेकिन जो टीचर नहीं हैं वह टीचर बनके कोई न कोई सेन्टर सम्भालेंगी ना। हैण्डस बनेंगी ना! डबल विदेशी बच्चों को दोनों काम करने का अभ्यास तो है ही। जॉब भी करते हैं सेन्टर भी सम्भालते हैं, इसीलिए बापदादा डबल मुबारक भी देते हैं। अच्छा -

चारों ओर के अति स्नेही, अति समीप सदा आदिकाल से अब तक रॉयल्टी के अधिकारी, सदा अपने चेहरे और चलन से प्युरिटी की झलक दिखाने वाले, सदा स्वयं को सेवा और याद में तीव्र पुरूषार्थ द्वारा नम्बरवन बनने वाले, सदा बाप के समान सर्व

शक्ति, सर्व गुण सम्पन्न स्वरूप में रहने वाले, ऐसे सर्व तरफ के हर एक बच्चे को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादी जी से - (तबियत ठीक है) है ही ठीक, और सदा ठीक रहना ही है। सभी की दुआयें मिल गई हैं ना। दुआयें सबसे बड़ी दवाई है। यह दुआओं की दवाई ठीक कर रही है, बाकी तो निमित्त है। (आपकी भी दवाई रोज लेते हैं) वह भी दुआयें हैं। सबका दादियों से बहुत प्यार है ना। कितना प्यार है? बाप का तो है ही। लेकिन साकार रूप में तो आप लोग हो ना। निमित्त तो हैं ना!

विदेश की मुख्य टीचर्स बहनों से - सभी ने सेवा के प्लैन अच्छे-अच्छे बनाये हैं ना क्योंकि सेवा समाप्त हो तब आपका राज्य आये। तो सेवा का साधन भी आवश्यक है। लेकिन मन्सा भी हो, वाचा भी हो, साथ-साथ हो। सेवा और स्व-उन्नति दोनों ही साथ हों। ऐसी सेवा सफलता को समीप लाती है। तो सेवा के निमित्त तो हो ही और सभी अपने-अपने स्थान पर सेवा तो अच्छी कर ही रहे हो। बाकी अभी जो काम दिया है, उसका प्लैन बनाओ। उसके लिए क्या-क्या स्वयं में वा सेवा में वृद्धि चाहिए, एडीशन चाहिए वह प्लैन बनाओ। बाकी बापदादा सेवाधारियों को देख करके खुश तो होते ही हैं। सभी अच्छे सेवाकेन्द्र उन्नति को पा रहे हैं ना! उन्नति है ना? अच्छा है। अच्छा हो रहा है ना। हो रहा है और होता रहेगा। अभी सिर्फ जो अलग-अलग बिखरे हुए हैं, उनके संगठन करके उन्हों को पक्का करो। प्रैक्टिकल सबूत सबके आगे दिखाओ। चाहे कोई भी सेवा कर रहे हो, भिन्न-भिन्न प्लैन बनाते हो, कर भी रहे हो, अच्छे चल भी रहे हैं, अभी उन सभी का ग्रुप एक सामने लाओ। जो सेवा का सबूत सारे ब्राह्मण परिवार के सामने आ जाए। ठीक है ना! बाकी सभी अच्छे हो, अच्छे ते अच्छे हो।

अच्छा। ओम् शान्ति।

07-03-2005 सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत रखना और मैं-पन को समर्पित करना ही शिव जयन्ती मनाना है

आज विशेष शिव बाप अपने सालिग्राम बच्चों का बर्थ डे मनाने आये हैं। आप बच्चे बाप का जन्म दिन मनाने आये हो और बापदादा बच्चों का बर्थ डे मनाने आये हैं क्योंकि बाप का बच्चों से बहुत प्यार है। बाप अवतरित होते ही यज्ञ रचते हैं और यज्ञ में ब्राह्मणों के बिना यज्ञ सम्पन्न नहीं होता है। इसलिए यह बर्थ डे अलौकिक है, न्यारा और प्यारा है। ऐसा बर्थ डे जो बाप और बच्चों का इकठ्ठा हो यह सारे कल्प में न हुआ है, न कभी हो सकता है। बाप है निराकार, एक तरफ निराकार है दूसरे तरफ जन्म मनाते हैं। एक ही शिव बाप है जिसको अपना शरीर नहीं होता इसलिए ब्रह्मा बाप के तन में अवतरित होते हैं, यह अवतरित होना ही जयन्ती के रूप में मनाते है। तो आप सभी बाप का जन्म दिन मनाने आये हो वा अपना मनाने आये हो? मुबारक देने आये हो वा मुबारक लेने आये हो? यह साथ-साथ का वायदा बच्चों से बाप का है। अभी भी संगम पर कम्बाइण्ड साथ है, अवतरण भी साथ है, परिवर्तन करने का कार्य भी साथ है और घर परमधाम में चलने में भी साथ-साथ है। यह है बाप और बच्चों के प्यार का स्वरूप।

शिव जयन्ती भगत भी मनाते है लेकिन वह सिर्फ पुकारते हैं, गीत गाते हैं। आप पुकारते नहीं, आपका मनाना अर्थात् समान बनना। मनाना अर्थात् सदा उमंग-उत्साह से उडते रहना। इसीलिए इसको उत्सव कहते है। उत्सव का अर्थ ही है उत्साह में रहना। तो सदा उत्सव अर्थात् उत्साह में रहने वाले हो ना! सदा है या कभी-कभी है? वैसे देखा जाए तो ब्राह्मण जीवन का श्वास ही है - उमंग-उत्साह। जैसे श्वास के बिना रह नहीं सकते हैं, ऐसे ब्राह्मण आत्माये उमंग-उत्साह के बिना ब्राह्मण जीवन में रह नहीं सकते हैं। ऐसे अनुभव करते हो ना? देखो विशेष जयन्ती मनाने के लिए कहाँ-कहाँ से, दूर-दूर से भाग करके आये हैं। बापदादा को अपने जन्म दिन की इतनी खुशी नहीं है जितनी बच्चों के जन्म दिन की है। इसलिए बापदादा एक-एक बच्चे को पदमगुणा खुशी की थालियां भर- भर के मुबारक दे रहे है। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

बापदादा को आज के दिन सच्चे भगत भी बहुत याद आ रहे हैं। वह व्रत रखते हैं एक दिन का और आपने व्रत रखा है सारे जीवन में सम्पूर्ण पवित्र बनने का। वह खाने का व्रत रखते हैं. आपने भी मन के भोजन व्यर्थ संकल्प, निगेटिव संकल्प, अपवित्र संकल्पो का व्रत रखा है। पक्का व्रत रखा है ना? यह डबल फोरेनेर्स आगे आगे बैठे हैं। यह कुमार बोलो, कुमारों ने व्रत रखा है, पक्का? कच्चा नहीँ। माया सुन रही है। सब झण्डिया हिला रहे है ना तो माया देख रही है, झण्डियां हिला रहे हैं। जब व्रत रखते हैं - पवित्र बनना ही है, तो व्रत रखना अर्थात् श्रेष्ठ वृत्ति बनाना। तो जैसी वृत्ति होती है वैसे ही दृष्टि, कृति स्वत: ही बन जाती है। तो ऐसा व्रत रखा है ना? पवित्र शुभ वृत्ति, पवित्र शुभ दृष्टि, जब एक दो को देखते हो तो क्या देखते हो? फेस को देखते हो या भृकुटी के बीच चमकती हुई आत्मा को देखते हो? कोई बच्चे ने पूछा कि जब बात करना होता है, काम करना होता है तो फेस को देख करके ही बात करनी पड़ती है, आंखो के तरफ ही नज़र जाती है, तो कभी-कभी फेस को देख करके थोडा वृत्ति बदल जाती है। बापदादा कहते है आंखो के साथ-साथ भृकुटी भी है, तो भृकुटी के बीच आत्मा को देख बात नहीं कर सकते हैं! अभी बापदादा सामने बैठे बच्चों के आंखो में देख रहे है या भृकुटी में देख रहे है, मालूम पडता है? साथ-साथ ही तो है। तो फेस में देखो लेकिन फेस में भृकुटी में चमकता हुआ सितारा देखो। तो यह व्रत लो, लिया है लेकिन और अटेन्शन दौ। आत्मा को देख बात करना है, आत्मा से आत्मा बात कर रहा है। आत्मा देख रहा है। तो वृत्ति सदा ही शुभ रहेगी और साथ-साथ दूसरा फायदा है जैसी वृत्ति वैसा वायुमण्डल बनता है। वायुमण्डल श्रेष्ठ बनाने से स्वयं के पुरुषार्थ के साथ-साथ सेवा भी हो जाती है। तो डबल फायदा है ना! ऐसी अपनी श्रेष्ठ वृत्ति बनाओ जो कैसा भी विकारी, पतित आपके वृत्ति के वायुमण्डल से परिवर्तन हो जाए। ऐसा व्रत सदा स्मृति में रहे. स्वरूप में रहे।

आजकल बापदादा ने बच्चों का चार्ट देखा, अपने वृत्ति से वायुमण्डल बनाने के बजाए कहाँ-कहाँ, कभी-कभी दूसरों के वायुमण्डल का प्रभाव पड़ जाता है। कारण क्या होता? बच्चे रूहरिहान में बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं, कहते हैं इसकी विशेषता अच्छी लगती है, इनका सहयोग बहुत अच्छा मिलता है, लेकिन विशेषता प्रभु की देन है। ब्राह्मण जीवन में जो भी प्राप्ति है, जो भी विशेषता है, सब प्रभु प्रसाद है, प्रभु देन है। तो दाता को भूल जाए, लेवता को याद करे! प्रसाद कभी किसका पर्सनल गाया नहीँ जाता, प्रभु प्रसाद कहा जाता है। फलाने का प्रसाद नहीँ कहा जाता है। सहयोग

मिलता है, अच्छी बात है लेकिन सहयोग दिलाने वाला दाता तो नहीँ भूले ना! तो पक्का-पक्का बर्थ डे का व्रत रखा है? वृत्ति बदल गई है? सम्पन्न पवित्रता, यह सच्चा-सच्चा व्रत लेना वा प्रतिज्ञा करना। चेक करो - बड़े-बड़े विकार का व्रत तो रखा है लेकिन छोटे-छोटे उनके बाल-बच्चों से मुक्त हैं? वैसे भी देखो जीवन में प्रवृत्ति वालों का बच्चों से ज्यादा पोत्रे- धोत्रे से प्यार होता है। माताओं का प्यार होता है ना। तो बड़े बड़े रूप से तो जीत लिया लेकिन छोटे-छोटे सूक्ष्म स्वरूप में वार तो नहीं करते? जैसे कई कहते हैं - आसक्ति नहीं है लेकिन अच्छा लगता है। यह चीज ज्यादा अच्छी लगती है लेकिन आसक्ति नहीं है। विशेष अच्छा क्यों लगता? तो चेक करो छोटे-छोटे रूप में भी अपवित्रता का अंश तो नहीँ रह गया हैं? क्योंकि अंश से कभी वंश पैदा हो सकता है। कोई भी विकार चाहे छोटे रूप में, चाहे बड़े रूप में आने का निमित्त एक शब्द का भाव है, वह एक शब्द है - "मैं"। बॉडीकानसेस का मैं। इस एक मैं शब्द से अभिमान भी आता है और अभिमान अगर पूरा नहीँ होता तो क्रोध भी आता है क्योंकि अभिमान की निशानी है - वह एक शब्द भी अपने अपमान का सहन नहीँ कर सकता, इसलिए क्रोध आ जाता। तो भगत तो बलि चढाते हैं लेकिन आप आज के दिन जो भी हद का मैं पन हो, उसको बाप को देकर समर्पित करो। यह नहीँ सोचो करना तो है, बनना तो है... तो तो नहीँ करना। समर्थ हो और समर्थ बन समाप्ति करो। कोई नई बात नहीँ हैं, कितने कल्प, कितने बार सम्पूर्ण बने हो, याद है? कोई नई बात नहीँ हैं। कल्प- कल्प बने हो, बनी हुई बन रही है, सिर्फ रिपीट करना है। बनी को बनाना है, इसलिए कहा जाता है बना बनाया ड़ामा। बना हुआ है सिर्फ अभी रिपीट करना अर्थात् बनाना है। मुश्किल है कि सहज है? बापदादा समझते है संगमयुग का वरदान है - सहज पुरुषार्थ। इस जन्म में सहज पुरुषार्थ के वरदान से 21 जन्म सहज जीवन स्वत: ही प्राप्त होगी। बापदादा हर बच्चे को मेहनत से मुक्त करने आये हैं। 63 जन्म मेहनत की, एक जन्म परमात्म प्यार, मुहब्बत से मेहनत से मुक्त हो जाओ। जहाँ मुहब्बत है वहाँ मेहनत नहीँ, जहाँ मेहनत है वहाँ मुहब्बत नहीँ। तो बापदादा सहज पुरुषार्थी भव का वरदान दे रहा है और मुक्त होने का साधन है - मुहब्बत, बाप से दिल का प्यार। प्यार में लवलीन और महामन्त्र है - मनमना भव का मन्त्र। तो यन्त्र को काम में लगाओ। काम में लगाना तो आता है ना। बापदादा ने देखा संगमयुग में परमात्म प्यार द्वारा, बापदादा द्वारा कितनी शक्तियां मिली हैं, गुण मिले

हैं, ज्ञान मिला है, खुशी मिली है, इन सब प्रभु देन को, खज़ानों को समय पर कार्य में लगाओ।

तो बापदादा क्या चाहते हैं, सुना? हर एक बच्चा सहज पुरुषार्थी, सहज भी, तीव्र भी। द्रढ़ता को यूज करो। बनना ही है, हम नहीँ बनेंगे तो कौन बनेगा। हम ही थे, हम ही हैं और हर कल्प हम ही होंगे। इतना दृढ निच्च्य स्वयं में धारण करना ही है। करेंगे नहीँ कहना, करना ही हैं। होना ही है। हुआ पड़ा है।

बापदादा देश विदेश के बच्चों को देख खुश है। लेकिन सिर्फ आप सामने सम्मुख वालों को नहीँ देख रहे हैं, चारों ओर के देश और विदेश के बच्चों को देख रहे हैं। मैजारिटी जहाँ-तहॉ से बर्थ डे की मुबारक आई हैं, कार्ड भी मिले हैं, ई-मेल भी मिलै हैं, दिल का संकल्प भी मिला है। बाप भी बच्चों के गीत गाते हैं, आप लोग गीत गाते हो ना - बाबा आपने कर दी कमाल, तो बाप भी गीत गाते हैं मीठे बच्चों ने कर दी कमाल। बापदादा सदा कहते हैं कि आप तो सन्मुख बैठे हो लेकिन दूर वाले भी बापदादा के दिल पर बैठे हैं। आज चारो ओर बच्चों के संकल्प में है - मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। बापदादा के कानो में आवाज पहुंच रहा है और मन में संकल्प पहुंच रहे हैं । यह निमित्त कार्ड हैं, पत्र हैं लेकिन बहुत बडे हीरे से भी ज्यादा मूल्यवान गिफ्ट हैं। सभी सुन रहे हैं, हर्षित हो रहे हैं। तो सभी ने अपना बर्थ डे मना लिया। चाहे दो साल का हो, चाहे एक साल का हो, चाहे एक सप्ताह का हो, लेकिन यज्ञ की स्थापना का बर्थ डे है। तो सभी ब्राह्मण यज्ञ निवासी तो हैं ही। इसलिए सभी बच्चों को बहुत-बहुत दिल का यादप्यार भी है, दुआयें भी हैं, सदा दुआओं में ही पलते रहो, उड़ते रहो। दुआयें देना और लेना सहज है ना! सहज है? जो समझते है सहज है, वह हाथ उठाओ। झण्डियां हिलाओ। तो दुआयें छोडते तो नहीं? सबसे सहज पुरुषार्थ ही है - दुआयें देना, दुआयें लेना। इसमें योग भी आ जाता, ज्ञान भी आ जाता, धारणा भी आ जाती, सेवा भी आ जाती। चारों ही सबजैक्ट आ जाती है दुआयें देने और लेने में ।

तो डबल फारेनर्स दुआयें देना और लेना सहज है ना! सहज है? 2० साल वाले जो आये है वह हाथ उठाओ। आपको तो 2० साल हुए हैं लेकिन बापदादा आप सबको पदम गुणा मुबारक दे रहे हैं । कितने देशों के आये है? (69 देशों के) मुबारक हो 69 वाँ बर्थ डे मनाने के लिए 69 देशों से आये हैं । कितना अच्छा है। आने में तकलीफ तो नहीँ हुई ना। सहज आ गये ना! जहाँ मुहब्बत है वहाँ कुछ मेहनत नहीँ। तो आज का

विशेष वरदान क्या याद रखेगें? सहज पुरुषार्थी। सहज कार्य जल्दी-जल्दी किया ही जाता है। मेहनत का काम मुश्किल होता है ना तो टाइम लगता है। तो सभी कौन हो? सहज पुरुषार्थी। बोलो, याद रखना। अपने देश में जाके मेहनत में नहीँ लग जाना। अगर कोई मेहनत का काम आवे भीं तो दिल से कहना, बाबा, मेंरा बाबा, तो मेहनत खत्म हो जायेगी। अच्छा। मना लिया ना! बाप ने भी मना लिया. आपने भी मना लिया। अच्छा।

डबल विदेशी 6 ग्रुप में अलग अलग भट्टियाँ कर रहे हैं

कुमारियों से - एक-एक कुमारी 1०० ब्राह्मणों से उत्तम है। तो चेक करना जो गायन है हर एक कुमारी को कम से कम 1०० ब्राह्मण जरूर बनाने पड़ेगे। बनायेंगे? बनाना है। हाँ तो हाथ हिलाओ। कितने समय में बनायेंगे? समय नजदीक है ना, तो आप बताओ कितना समय चाहिए? रिजल्ट भेजनी पडेगी। (एक साल में) एक साल! आपको एक साल कलियुगी दुनिया में रहना है! चलो, आपके मुख में गुलाबजामुन। तो 6 मास में 5० बनाना, एक साल में 1००, तो 6 मास में 5०, 6 मास के बाद रिपोर्ट भेजना, पसन्द है? क्या नहीँ कर सकते हो, जो चाहो वह कर सकते हो। अच्छा है कुमारियोँ का ग्रुप अच्छा है। बापदादा कुमारियोँ को देख विशेष खुश होता है क्योंकि कुमारियां सेवा में सहयोगी नम्बरवन बन सकती हैं। अच्छा। बहुत अच्छा किया है।

कुमार ग्रुप - (गीत गाया - मै बाबा का, बाबा मेरा) अच्छा है, कुमार, डबल कुमार हो गये हो। एक दुनिया के हिसाब से भी कुमार हो और इस ब्राह्मण जीवन में भी ब्रह्माकुमार हो। तो डबल कुमार हो। तो डबल काम करना पडेगा। करेंगे? हुआ ही पड़ा है। दृढ़ संकल्प किया और सफलता हुई पडी है। अच्छा। सभी ने बहुत अच्छे बैनर बनाये हैं। (हर ग्रुप अपना- अपना बैनर बापदादा को दिखा रहा है)

माताओं से - बहुत अच्छा। बापदादा देख रहे हैं माताओं में बहुत अच्छा उमंग-उत्साह है। इसलिए बापदादा ने माताओं को ही निमित्त बनाया है। बहुत अच्छा बापदादा को पसन्द है।

अधर कुमार - अधर कुमार भी कमाल करेंगे। हर एक अधरकुमार अपना परिवर्तन का अनुभव सुनाकर सभी को बाप के समीप का बना सकते हैं क्योंकि दुनिया वाले समझते हैं कि अधरकुमार जीवन बहुत मुश्किल है लेकिन आप सभी नं मुश्किल को सहज बनाया है। बस सिर्फ अपना अनुभव सुनाते जाओ, ऐसे मुश्किल को मिटा सकते

हो। एक शब्द का अन्तर करने से, गृहस्थी से ट्रस्टी बनने से मुश्किल से सहज हो जाता है। तो ऐसे अधरकुमार सेवा में सफलता प्राप्त है और होती रहेगी। अच्छा।
युगलों से - (बैनर दिखा रहे है) लक्ष्मी-नारायण का सिम्बल अच्छा बनाया है। आप तो विजयी रत्नो में हैं। साथ रहते न्यारे और प्यारे। युगलों को बापदादा कहते हैं यह कमल पुथ समान न्यारे और प्यारे हैं । रहते भी साकार में आपस में परिवार में रहते लेकिन मन से सदा बाप के साथ रहते हैं । बहुत अच्छा। सभी डबल फारेनर्स ने रिफ्रेशमेंट अच्छी ली है, अभी ली हुई रिफ्रेशमेंट औरो को देनी है। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।
सेन्टर वासी - (बैनर - प्रेम और दया की ज्योति जगा कर रखेंगे) बहुत अच्छा संकल्प लिया है। अपने पर भी दया दृष्टि, साथियोँ के ऊपर भी दया दृष्टि और सर्व के ऊपर भी दया दृष्टि। ईश्वरीय लव चुम्बक है, तो आपके पास ईश्वरीय लव का चुम्बक है। किसी भी आत्मा को ईश्वरीय लव के चुम्बक से बाप का बना सकते हो। बापदादा सेन्टर पर रहने वालों को विशेष दिल की दुआयें देते हैं, जो आप सभी ने विश्व में नाम बाला किया है। कोने-कोने में ब्रह्माकुमारीज का नाम तो फैलाया है ना! और बापदादा को बहुत अच्छी बात लगती है कि जैसे डबल विदेशी हो, वैसे डबल जॉब करने वाले हो। मैजारिटी लौकिक जॉब भी करते हैं तो अलौकिक जॉब भी करते हैं और बापदादा देखते हैं, बापदादा की टीवी. बहुत बडी है, ऐसी बड़ी टी.वी. यहाँ नहीँ है। तो बापदादा देखते हैं कैसे फटाफट क्लास करते, नाश्ता खड़े-खड़े करते, जॉब में टाइम पर पहुंचते, कमाल करते हैं। बापदादा देखते-देखते दिल का प्यार देते रहते हैं। बहुत अच्छा, सेवा के निमित्त बने हो और निमित्त बनने की गिफ्ट बाप सदा विशेष दृष्टि देते रहते है। बहुत अच्छा लक्ष्य रखा हैं, अच्छे हो, अच्छे रहेंगे, अच्छे बनायेंगे।
आई. टी. ग्रुप
सेवा का कोई नया प्लैन बनाया है? (ब्रह्माकुमारीज वेबसाइट को और अच्छा बवनाना है, जो विश्व में वापदादा को प्रत्यक्ष करने की सेवा में यूज किया जा सके) जो बनाया है, वह प्रैक्टिकल करके रिजल्ट लिखना। जैसे अफ्रीका वालो ने रिजल्ट लिखी ना, ऐसे आप लोग भी रिजल्ट भेजना। मुबारक हो बनाया, उमंग है, उत्साह है। जहाँ उमंग-उत्साह है, वहाँ सफलता है ही है। बहुत अच्छा किया।
सेवा का टर्न – राजस्थान और यु. पी. जोन

अच्छा है, रूहानी लश्कर है। बहुत अच्छा, सेवा दिल से की भी है और सभी को सन्तुष्ट भी किया है। तो जो सन्तुष्ट करता है उसको दिल से जो सन्तुष्टता की लहरे पहुचती हैं, उससे बहुत खुशी होती है। तो बहुत खुशी मिली है ना। आपने स्थूल सेवा की और सभी भाई बहिनों ने आपको खुशी की सौगात दी है। सन्तुष्टता सबसे बडी खुशी की खुराक है। सारा ग्रुप सन्तुष्टमणियोँ का हो गया। सन्तुष्ट करने वाले सन्तुष्टमणि। सन्तुष्टमणियोँ को बापदादा और सारे परिवार की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

अच्छा - भारत की मातायें देख रही है, हमारा नाम नहीँ लिया बाबा ने। बापदादा कहते है कि जहाँ भी मातायें होती है ना, तो माताओं की विशेषता है कि उस स्थान का भण्डारा और भण्डारी भरपूर होती है। माताओं को वरदान है, फुरी- फुरी (बूंद-बूंद) तलाब भरने का। तो मातायें बहुत भाग्यवान है, बाप की भण्डारी भर देती है। भण्डारा भी भर जाता है। इसलिए माताओं को बहुत-बहुत मुबारक है। अच्छा - भाई भी कम नहीं है। देखो जहाँ भाई हैं ना, वहाँ सेवा को चार चाँद लग जाते हैं। भाइयोँ द्वारा आलराउण्ड सेवा होती है। भण्डारा भरपूर तो करते ही है, लेकिन सेवा बढाने के निमित्त विशेष भाई निमित्त बनते हैं। तो सेवा की रौनक बढाने वाले भाई हैं। इसलिए बापदादा सभी माताओं को, सभी भाइयोँ को बहुत-बहुत मुबारक दे रहे हैं। भले पधारे अपने घर में। देखो हाल की रौनक कौन बढाता है' आप बच्चे जब आते हैं तो डायमण्ड हाल, डायमण्ड बन जाता है। अच्छा दृश्य लगता है। अच्छा है दादी को डायमण्ड हाल बहुत पसन्द आ गया है। अच्छा, नचाती अच्छा है। खुश हो जाते हो ना, जब दादी आके नचाती है तो खुश हो जाते हैं। बहुत अच्छा। अभी एक सेकण्ड में ड्रिल कर सकते हो? कर सकते हो ना। अच्छा।

चारों ओर के सदा उमंग-उत्साह में रहने वाले श्रेष्ठ बच्चों को, सदा सहज पुरुषार्थी संगमयुग के सर्व बरदानी बच्चों को, सदा बाप और मैं आत्मा इसी स्मृति से मैं बोलने वाले, मैं आत्मा, सदा सर्व आत्माओं को अपने वृत्ति से वायुमण्डल का सहयोग देने वाले ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों को बापदादा का यादप्यार, दुआयें, मुबारक और नमस्ते।

दादियोंसे:-

आप सबसे मधुबन की रौनक है। विशेष आज बाप के साथ उसी समय अवतरण तो आपका भी है। विशेष आप सबका है, आदि रत्नो का आदि समय में अवतरण है। तो

आप लोगों को विशेष मुबारक है। हैपी बर्थ डे है। एक गीत है ना - आप मधुबन की रौनक हैं। आदि से कुछ तो चल गये, लेकिन आप अमर हो। (बाबा की दुआयें है, सबकी दुआयें है) यह अच्छा है, ऊपर ही हाथ जाता है नीचे नहीं जाता है। अच्छा है। दादियोँ को देखकर सभी खुश होते हो ना!

निर्वैर भाई, रमेश भाई से:-

अच्छा है, पाण्डवों के बिना भी गति नहीँ है। चाहे पाण्डव चाहे शक्तियां सबका संगठन, संगठन बना रहा है।

डबल विदेशी बडी बहेनोंसे:-

सभी ने मेहनत अच्छी की है। ग्रुप-ग्रुप बनाया है ना तो मेहनत अच्छी की है। और यहाँ वायुमण्डल भी अच्छा है, संगठन की भी शक्ति है, तो सबको रिफ्रेशमेंट अच्छी मिल जाती है और आप निमित्त बन जाते हो। अच्छा है। दूर-दूर रहते हैं ना, तो संगठन की जो शक्ति होती है वह भी बहुत अच्छी है। इतना सारा परिवार इकट्ठा होता है तो हर एक की विशेषता का प्रभाव तो पडता है। अच्छा प्लैन बनाया है। बापदादा खुश है। सबकी खुशबू आप ले लेते हो। वह खुश होते हैं आपको दुआयें मिलती हैं । अच्छा है, यह जो सभी इकट्ठे हो जाते हो यह बहुत अच्छा है, आपस में लेन देन भी हो जाती है और रिफ्रेशमेंट भी हो जाती है। एक दो की विशेषता जो अच्छी पसन्द आती है, उसको यूज करते है, इससे सगठन अच्छा हो जाता है। यह ठीक है।

जयन्ती बहन से:-

अभी थोडा-थोड़ा सेवा में पार्ट लिया क्योंकि खुशी मिलेगी। सबकी दुआयें, वह भी दवा का काम करेगी। बहुत अच्छा।

डा. निर्मला बहन श्री लंका जा रही हैं, वहाँ रिट्रीट है अच्छा है उन्हों को रिफ्रेशमेंट चाहिए।

काठमांडू नेपाल की किरन बहन से:-

प्रकृतिजीत हो, शिव शक्ति हो, यह थोडा बहुत हिसाब-किताब है, सब चला जायेगा। मजबूत रहना और सभी नेपाल निवासियो को याद देना, घबराना नहीँ।

बापदादा ने अपने हस्तों से शिव ध्वज फहराया और उऐर 69वीं शिव जयन्ती की बधाइयां दी ।

आप सबके दिल में तो बाप की याद का झण्डा लहरा ही रहा है। अभी सारे विध में जो कोने-कोने में सेवा कर रहे हो, उसकी सफलता निकलनी है जो चारों ओर से यही

आवाज आयेगा "मेरा बाबा" आ गया। यही है, यही है, यही है। वह दिन भी दूर नहीँ है, आना ही है, होना ही है, हुआ ही पडा है। ऐसे ऐसे माइक तैयार हो रहे हैं। आप माइट देगे और वह माइक बापदादा को प्रत्यक्ष करेंगे। करना है ना। (बापदादा कोई वी.आई.पी. माइक को सभा में देखकर बोले) यह माइक बैठी है ना। बढिया माइक है। ऐसें माइक निकालेंगे जो आपको सिर्फ दृष्टि देनी पडेगी। वही दिन आ रहा है, आ रहा है, आ रहा है 1 अच्छा। ओम शान्ति।

25-03-2005 मास्टर सूर्य बन अनुभूति की किरणें फैलाओ, विधाता बनो, तपस्वी बनो

आज बापदादा अपने चारों ओर के होलीहंस बच्चों से होली मनाने के लिए आये हैं। बच्चे भी प्यार की डोर में बंधे हुए होली मनाने के लिए पहुंच गये हैं। मिलन मनाने के लिए कितने प्यार से पहुंच गये हैं । बापदादा सर्व बच्चों के भाग्य को देख रहे थे कितना बड़ा भाग्य, जितने ही होलीएस्ट हैं उतने ही हाइएस्ट भी हैं। सारे कल्प में देखो आप सबके भाग्य से ऊंचा भाग्य और किसी का नहीं है। जानते हो ना अपने भाग्य को? वर्तमान समय भी परमात्म पालना, परमात्म पढ़ाई और परमात्म वरदानों से पल रहे हो। भविष्य में भी विश्व के राज्य अधिकारी बनते हो। बनना ही है, निश्चित है, निश्चय ही है। बाद में भी जब पूज्य बनते हो तो आप श्रेष्ठ आत्माओं जैसी पूजा विधिपूर्वक और किसी की भी नहीं होती है। तो वर्तमान, भविष्य और पूज्य स्वरूप में हाइएस्ट अर्थात् ऊंचे ते ऊंचे हैं। आपके जड़ चित्र उन्हों की भी हर कर्म की पूजा होती है। अनेक धर्म पिता, महान आत्मायें हुए हैं लेकिन ऐसे विधि पूर्वक पूजा आप ऊंचे ते ऊंचे परमात्म बच्चों की होती है क्योंकि इस समय हर कर्म में कर्मयोगी बन कर्म करने की विधि का फल पूजा भी विधिपूर्वक होती है। इस संगम समय के पुरूषार्थ की प्रालब्ध मिलती है। तो ऊंचे ते ऊंचे भगवन आप बच्चों को भी ऊंचे ते ऊंची प्राप्ति कराते हैं।
होली अर्थात् पवित्रता, होलीएस्ट भी हो तो हाइएस्ट भी हो। इस ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन ही पवित्रता है। संकल्प मात्र भी अपवित्रता श्रेष्ठ बनने नहीं देती। पवित्रता ही सुख, शान्ति की जननी है। पवित्रता सर्व प्राप्तियों की चाबी है। इसलिए आप सबका स्लोगन यही है -``पवित्र बनो, योगी बनो।" जो होली भी यादगार है, उसमें भी देखो पहले जलाते हैं फिर मनाते हैं। जलाने के बिना नहीं मनाते हैं। अपवित्रता को जलाना, योग के अग्नि द्वारा अपवित्रता को जलाते हो, उसका यादगार वह आग में जलाते हैं और जलाने के बाद जब पवित्र बनते हैं तो खुशियों में मनाते हैं। पवित्र बनने का यादगार मिलन मनाते हैं क्योंकि आप सभी भी जब अपवित्रता को जलाते हो, परमात्म संग के रंग में लाल हो जाते हो तो सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना शुभ कामना का मिलन मनाते हो। इसका यादगार मंगल मिलन मनाते हैं। इसलिए

बापदादा सभी बच्चों को यही स्मृति दिलाते हैं कि सदा हर एक से दुआयें लो और दुआयें दो। अपने दुआओं की शुभ भावना से मंगल मिलन मनाओ क्योंकि अगर कोई बद-दुआ देता भी है, वह तो परवश है अपवित्रता से लेकिन अगर आप बद-दुआ को मन में समाते हो तो क्या खुश रहते हो? सुखी रहते हो? कि व्यर्थ संकल्पों का क्यों, क्या, कैसे, कौन.. इस दु:ख का अनुभव करते हो। बद-दुआ लेना अर्थात् अपने को भी दु:ख और अशान्ति अनुभव कराना। जो बापदादा की श्रीमत है सुख दो और सुख लो, उस श्रीमत का उल्घंन हो जाता है। तो अभी सभी बच्चे दुआ लेना और दुआ देना सीख गये हो ना! सीखा है?

प्रतिज्ञा और दृढ़ता, दृढ़ता से प्रतिज्ञा करो - सुख देना है और सुख लेना है। दुआ देनी है, लेनी है। है प्रतिज्ञा, हिम्मत है? जिसमें हिम्मत है आज से दृढ़ता का संकल्प लेते हैं दुआ लेंगे, दुआ देंगे, वह हाथ उठाओ। पक्का? पक्का? कच्चा नहीं होना। कच्चे बनेंगे ना - तो कच्चे फल को चिड़िया बहुत खाती है। दृढ़ता सफलता की चाबी है। सभी के पास चाबी है? है चाबी? चाबी कायम है, माया चोरी तो नहीं कर लेती? उसको भी चाबी से प्यार है। सदैव संकल्प करते हुए यह संकल्प इमर्ज करो, मर्ज नहीं, इमर्ज। इमर्ज करो मुझे करना ही है। बनना ही है। होना ही है। हुआ ही पड़ा है। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि, विजयन्ती। ड्रामा विजय का बना ही पड़ा है। सिर्फ रिपीट करना है। बना बनाया ड्रामा है। बना हुआ है, रिपीट कर बनाना है। मुश्किल है? कभी-कभी मुश्किल हो जाता है! मुश्किल क्यों होता है? अपने आप ही सहज को मुश्किल कर देते हो। छोटी सी गलती कर लेते हो - पता है कौन सी गलती करते हो? बापदादा को उस समय बच्चों पर बहुत रहम क्या कहें, प्यार आता है। क्या प्यार आता है? एक तरफ तो कहते कि बाप हमारे कम्बाइन्ड है, है कम्बाइन्ड? कम्बाइन्ड है?साथ नहीं कम्बाइन्ड। कम्बाइन्ड है? डबल फारेनर्स कम्बाइन्ड है? पीछे वाले कम्बाइन्ड है? गैलरी वाले कम्बाइन्ड है?

अच्छा आज तो बापदादा को समाचार मिला कि मधुबन निवासी पाण्डव भवन, ज्ञान सरोवर और यहाँ वाले भी अलग हाल में सुन रहे हैं। तो उन्हों से भी बापदादा पूछ रहे हैं कि बापदादा कम्बाइन्ड हैं? हाथ उठा रहे हैं। जब कम्बाइन्ड है, सर्व शक्तिवान बापदादा कम्बाइन्ड है फिर अकेले क्यों बन जाते? अगर आप कमज़ोर भी हो तो बापदादा तो सर्वशक्तिवान है ना! अकेले बन जाते हो तब ही कमज़ोर बन जाते हो। कम्बाइन्ड रूप में रहो। बापदादा हर एक बच्चे के हर समय सहयोगी हैं। शिव बाप

परमधाम से आये क्यों हैं? किसलिए आये हैं?बच्चों के सहयोगी बनने के लिए आये हैं। देखो ब्रह्मा बाप भी व्यक्त से अव्यक्त हुए किसलिए? साकार शरीर से अव्यक्त रूप में ज्यादा से ज्यादा सहयोग दे सकते हैं। तो जब बापदादा सहयोग देने के लिए आफर कर रहे हैं तो अकेले क्यों बन जाते? मेहनत में क्यों लग जाते? 63 जन्म तो मेहनत की है ना! क्या वह मेहनत के संस्कार अभी भी खींचते हैं क्या? मुहब्बत में रहो, लव में लीन रहो। मुहब्बत मेहनत से मुक्त कराने वाली है। मेहनत अच्छी लगती है क्या? क्या आदत से मजबूर हो जाते हो? सहज योगी हैं, बापदादा विशेष बच्चों के लिए परमधाम से सौगात लाये हैं, पता है क्या सौगात लाये हैं? तिली पर भिस्त लाया है। (हथेली पर स्वर्ग लाये हैं) आपका चित्र भी है ना। राज्य भाग्य लाये हैं बच्चों के लिए। इसलिए बापदादा को मेहनत अच्छी नहीं लगती।

बापदादा हर बच्चे को मेहनत मुक्त, मुहब्बत में मगन देखने चाहते हैं। तो मेहनत वा माया की युद्ध से मुक्त बनने का आज संकल्प द्वारा होली जलायेंगे? जलायेंगे? जलाना माना नाम-निशान गुम। कोई भी चीज़ जलाते हैं तो नाम-निशान खत्म हो जाता है ना! तो ऐसी होली मनायेंगे? मनायेंगे? हाथ तो हिला रहे हैं। बापदादा हाथ देख करके खुश हो रहा है। लेकिन, लेकिन है? लेकिन बोलें क्या कि नहीं? मन का हाथ हिलाना। यह हाथ हिलाना तो बहुत इजी है। अगर मन ने माना करना ही है तो हुआ ही पड़ा है। नये-नये भी बहुत आये हैं। जो पहले बारी मिलन मनाने के लिए आये हैं, वह हाथ उठाओ। डबल फारेनर्स में भी हैं।

अभी जो भी पहले बारी आये हैं, बापदादा विशेष उन्हों को अपना भाग्य बनाने की मुबारक दे रहे हैं। लेकिन यह मुबारक स्मृति में रखना और सदा यह लक्ष्य रखो क्योंकि फाइनल रिजल्ट आउट नहीं हुई है। सबको चांस है, लास्ट में आने वाले भी, पहले वालों से लास्ट में आये हो ना, तो लास्ट वाले लास्ट सो फास्ट और फास्ट सो फर्स्ट आ सकते हैं। छुट्टी है, जा सकते हो। यह सदा याद रखना मुझे अर्थात् मुझ आत्मा को फास्ट और फर्स्ट क्लास में आना ही है। हॉ, वी.आई.पी बहुत आये हैं ना, टाइटल वी.आई.पी का है। जो वी.आई.पी आये हैं वह लम्बा हाथ उठाओ। वेलकम। अपने घर में आने की वेलकम, भले पधारे। अभी तो परिचय के लिए वी.आई.पी. कहते हैं लेकिन अभी वी.आई.पी से वी.वी.वी. आई.पी बनना है। देखो देवतायें आपके जड़ चित्र वी.वी.वी. आई.पी हैं तो आपको भी पूर्वज जैसा बनना ही है। बापदादा बच्चों

को देखकर खुश होते हैं। रिलेशन में आये। जो वी.आई.पी आये हैं उठो। बैठे-बैठे थक भी गये होंगे, थोड़ा उठो। अच्छा।

मातायें जो पहली बार मिल रही है, वह उठो। यह सब पहली बारी आये हैं। अच्छा पाण्डव जो पहले बारी आये हैं वह उठो। बापदादा को खुशी है, क्यों? बच्चों ने सेवा अच्छी की है। सेवा का सबूत बापदादा ने देखा। इस सीजन में मैजारिटी हर ग्रुप में पहले बारी मिलने वाले आधा से भी ज्यादा हैं। इसलिए जिन बच्चों ने मेगा प्रोग्राम किया वा अपने-अपने स्थान में सेवा की है और सबूत दिया है उन सभी बच्चों को बापदादा सेवा की मुबारक, दिल की दुआयें दे रहे हैं। अभी आगे क्या करना है?

दादी ने सन्देश भेजा, आगे क्या करना है? तो बापदादा बच्चों को देख खुश तो है ही लेकिन आगे के लिए जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये हैं उन आत्माओं की विशेष ग्रुप-ग्रुप में हर सेन्टर वाले बुलाकर उनका फाउण्डेशन पक्का करने की पालना करो। रिलेशन तो जोड़ दिया, सम्बन्ध जोड़ा, चाहे कभी-कभी आने वाले, चाहे रेगुलर आने वाले, चाहे सम्पर्क में आये, चाहे सम्बन्ध में आये, लेकिन रिलेशन के साथ-साथ आत्माओं का बाप के साथ कनेक्शन ऐसा मजबूत करो जो ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़े इन्हों को। माया से बार-बार युद्ध नहीं करनी पड़े। मन की लगन ऐसी पक्की करो जो विघ्न आ नहीं सके। जहाँ बाप से लगन है वहाँ विघ्न नहीं आ सकता। असम्भव है। इसलिए सन्देश देने की सेवा करो लेकिन जो सेवा का फल निकला है उस फल को मजबूत बनाओ, पक्का बनाओ। कच्चा फल नहीं रह जाये क्योंकि समय फास्ट जा रहा है। समय का कोई भरोसा नहीं, कब भी क्या भी हो सकता है और अचानक होना है। बापदादा को पता भी है कब होना है लेकिन बतायेंगे नहीं क्योंकि अचानक पेपर होना है। इसलिए जमा का खाता बहुत बढ़ाओ।

वर्तमान समय बापदादा दो बातों पर बार-बार अटेन्शन दिला रहे हैं - एक स्टॉप, बिन्दी लगाओ, प्वाइंट लगाओ। दूसरा - स्टॉक जमा करो। दोनों जरूरी हैं। तीन खज़ाने विशेष जमा करो - एक अपने पुरूषार्थ की प्रालब्ध अर्थात् प्रत्यक्ष फल, वह जमा करो। दूसरा - सदा सन्तुष्ट रहना, सन्तुष्ट करना। सिर्फ रहना नहीं, करना भी। उसके फल स्वरूप दुआयें जमा करो। दुआओं का खाता कभी-कभी कोई बच्चे जमा करते हैं लेकिन चलते-चलते कोई छोटी-मोटी बात में कनफ्यूज हो करके, हिम्मतहीन हो करके जमा हुए खज़ाने में भी लकीर लगा देते हैं। तो दुआओं का खाता भी जमा हो। उसकी विधि सन्तुष्ट रहना, सन्तुष्ट करना। तीसरा - सेवा द्वारा सेवा का फल जमा

करना या खज़ाना जमा करना और सेवा में भी विशेष निमित्त भाव, निर्मान भाव, निर्मल वाणी। बेहद की सेवा। मेरा नहीं, बाबा। बाबा करावनहार मुझ करनहार से करा रहा है, यह है बेहद की सेवा। यह तीनों खाते चेक करो -तीनों ही खाते जमा हैं? मेरापन का अभाव हो। इच्छा मात्रम् अविद्या। सोचते हैं इस वर्ष में क्या करना है? सीजन पूरी हो रही है अब 6 मास क्या करना है? तो एक तो खाते जमा करना, चेक करना अच्छी तरह से। कहाँ कोने में भी हद की इच्छा तो नहीं है? मैं और मेरापन तो नहीं है? लेवता तो नहीं है? विधाता बनो, लेवता नहीं। न नाम, न मान, न शान, किसी के भी लेवता नहीं, दाता, विधाता बनो।

अभी दु:ख बहुत-बहुत बढ़ रहा है, बढ़ता रहेगा। इसलिए मास्टर सूर्य बन अनुभूति की किरणें फैलाओ। जैसे सूर्य एक ही समय में कितनी प्राप्तियां कराता है, एक प्राप्ति नहीं कराता। सिर्फ रोशनी नहीं देता, पावर भी देता है। अनेक प्राप्तियां कराता है। ऐसे आप सभी इन 6 मास में ज्ञान सूर्य बन सुख की, खुशी की, शान्ति की, सहयोग की किरणें फैलाओ। अनुभूति कराओ। आपकी सूरत को देखते ही दु:ख की लहर में कम से कम मुस्कान आ जाये। आपकी दृष्टि से हिम्मत आ जाये। तो यह अटेन्शन देना है। विधाता बनना है, तपस्वी बनना है। ऐसी तपस्या करो जो तपस्या की ज्वाला कोई न कोई अनुभूति कराये। सिर्फ वाणी नहीं सुनें, अनुभूति कराओ। अनुभूति अमर होती है। सिर्फ वाणी थोड़ा समय अच्छी लगती है सदा याद नहीं रहती। इसलिए अनुभव की अथॉरिटी बन अनुभव कराओ। जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आ रहे हैं उन्हों को हिम्मत, उमंग-उत्साह अपने सहयोग से बापदादा के कनेक्शन से दिलाओ। ज्यादा मेहनत नहीं कराओ। न खुद मेहनत करो न औरों को कराओ। निमित्त हैं ना! तो वायब्रेशन ऐसे उमंग-उत्साह का बनाओ जो गम्भीर भी उमंग-उत्साह में आ जाये। मन नाचने लगे खुशी में। सुना क्या करना है? देखेंगे रिजल्ट। किस स्थान ने कितनी आत्माओं को दृढ़ बनाया, खुद दृढ़ बने, कितनी आत्माओं को दृढ़ बनाया, साधारण पोतामेल नहीं देखेंगे, भूल नहीं की, झूठ नहीं बोला, कोई विकर्म नहीं किया, लेकिन कितनी आत्माओं को उमंग-उत्साह में लाया, अनुभूति कराई, दृढ़ता की चाबी दी। ठीक है ना, करना ही है ना। बापदादा भी क्यों कहे कि करेंगे! नहीं, करना ही है। आप नहीं करेंगे तो कौन करेगा? पीछे आने वाले? आप ही कल्प-कल्प बाप से अधिकारी बने थे, बने हैं और हर कल्प बनेंगे। ऐसा दृढ़ता पूर्वक बच्चों का संगठन बापदादा को

देखना ही है। ठीक है ना! हाथ उठाओ, बनना ही है, मन का हाथ उठाओ। दृढ़ निश्चय का हाथ उठाओ। यह तो सब पास हो गये हैं। पास हैं ना? अच्छा।

सभी खुश हैं? प्रबन्ध से ज्यादा आ गये हैं। (23 हजार से भी अधिक पहुंच गये हैं) कोई बात नहीं, जब ज्यादा आयेंगे तो दादी का संकल्प चलेगा ना, बढ़ाने का। भले आये। अच्छा है - हाल को कभी तो छोटा होना ही चाहिए। होना चाहिए ना! पहली लाइन वाले होना चाहिए ना। तब तो बनायेंगे ना! ड्रामा में वृद्धि होनी ही है। सेवाधारी थक तो नहीं जाते? किसका टर्न है अभी? गुजरात का है। गुजरात तो बड़ा है। गुजरात वाले उठो। आधा हाल तो गुजरात है। (7 हजार हैं) तो गुजरात के सेवाधारी बहुत आये हैं इसलिए सेवा लेने वाले भी बहुत आ गये हैं। थक तो नहीं गये? नहीं। मातायें, मातायें रोटी बेल-बेल कर थक गई? नहीं थकी। सबसे मेहनत का काम है रोटी बनाना। गुजरात वालों को वरदान है - जैसे देश के हिसाब से समीप है, ऐसे ही बापदादा के दिल के भी समीप रहना है। रहते भी हैं, रहना भी है। बापदादा ने देखा कि कभी भी कोई भी आवश्यकता में गुजरात हाज़िर हो जाता है। तो हाज़िर होने वाली आत्माओं के लिए बापदादा भी सदा हाज़िर है।

अच्छा - आज बापदादा को सन्देश ज्ञान सरोवर, पाण्डव भवन और शान्तिवन वालों ने दिया है कि हमें दूर बैठे नजदीक देखना। तो बापदादा सभी स्थान निवासी शार्ट में सभी तरफ के मधुबन निवासी चाहे बहनें, चाहे भाई सभी को सम्मुख देख रहे हैं। दूर नहीं है, दिल पर हैं और बापदादा दिल से याद प्यार दे रहे हैं। वैसे तो दिखाई नहीं देते, आज विशेष दिखाई दे रहे हैं। अच्छा।

डबल विदेशी:- हाथ हिलाओ। बापदादा ने सभी डबल विदेशी बच्चों की जो रिफ्रेशमेंट हुई है, वह देखा। चार्ट अच्छा बनाया है। अच्छा किया है और अच्छे ते अच्छे ही रहना है। कभी भी कोई पूछे - हालचाल क्या है?तो सभी का एक ही जवाब हो - कुशल हाल है, फरिश्ते की चाल है। ठीक है ना। पसन्द है? ऐसे नहीं, अमेरिका अफ्रीका में जाकर बदल जाओ। बदलना नहीं और उड़ना है और उड़ाना है। उमंग उत्साह के पंख सदा हैं ही। दूसरों को भी उमंग-उत्साह के पंख लगाने हैं। यह अच्छा है, बापदादा सब समाचार सुनते रहते हैं। मधुबन का लाभ अच्छे ते अच्छा उठाने का प्रोग्राम बनाते हैं, यह देखके सुनके बापदादा खुश होते हैं। सिर्फ अमर भव का वरदान भूलना नहीं, अमर भव। 60 देशों से आये हैं। 60 देशों के एक-एक भिन्न-भिन्न देश वाले हाथ उठाओ, देखें 60 हैं, जो आस्ट्रेलिया से आये, अफ्रीका से आये, अमेरिका से आयें, वह हाथ

उठाओ। भले पधारे। अच्छा है बापदादा और सर्व ब्राह्मण परिवार भी आप सबको देखके खुश होते हैं। क्यों जितने देशों में आप कर रहे हो, उतने देशों की भाषा सीखने के लिए भारतवासियों को सहयोग दे दिया आपने। इसीलिए आप सबको देखके खुश होते हैं। अच्छे, उमंग-उत्साह में हैं और सदा रहने वाले हैं। सब टीचर्स ठीक हैं ना! बहुत मेहनत की कि उमंग-उत्साह में रहे? अच्छा प्रोग्राम बनाते हैं, बापदादा खुश होते हैं। अभी बापदादा डबल विदेशियों से एक बात चाहते हैं - सुनायें?

बापदादा ने सुना है कि डबल विदेशी ईमेल बड़े लम्बे-लम्बे करते हैं। जनक बच्ची को बहुत बिजी कर दिया है। रात को जागना पड़ता है। तो यह भी शार्टकट करते जाओ, लम्बा नहीं। ठीक है ना! शार्ट तो हो सकता है। तो ठीक है? शार्ट करेंगे? भले समाचार भेजो लेकिन शार्ट, 3-4 लाइन, ज्यादा में ज्यादा 5 लाइन में। हो सकता है ना! जो शार्टकट करेंगे वह हाथ उठाओ। जो करते ही नहीं हैं वह हाथ नहीं उठाते हैं, होशियार हैं। अच्छा है। अच्छा।

माताओं को भावना और प्यार की मुबारक हो विशेष। पाण्डवों को सदा नम्बरवन और विन करने की मुबारक हो और आये हुए निशानी वी.आई.पी. उन सभी बच्चों को भी सदा हर कदम में उमंग-उत्साह द्वारा आगे कनेक्शन बढ़ाने की, कदम में पदम की कमाई जमा करने की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

अच्छा - चारों ओर के दिलतख्तनशीन बच्चों को, दूर बैठे भी परमात्म प्यार का अनुभव करने वाले बच्चों को, सदा होली अर्थात् पवित्रता का फाउण्डेशन दृढ़ करने वाले, स्वप्न मात्र भी अपवित्रता के अंशमात्र से भी दूर रहने वाले महावीर, महावीरनी बच्चों को, सदा हर समय सर्व जमा का खाता, जमा करने वाले सम्पन्न बच्चों को, सदा सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने वाले बाप समान बच्चों को बापदादा का यादप्यार, दुआयें और नमस्ते।

दादियों से:- दादियां तो गुरू भाई हैं ना, तो साथ में बैठो। तो भाई साथ में बैठते हैं। अच्छा है। बापदादा रोज़ स्नेह की मालिश करते हैं। निमित्त है ना! यह मालिश चला रही है। अच्छा है - आप सभी का एक्जैम्पुल देख करके सभी को हिम्मत आती है। निमित्त दादियों के समान सेवा में, निमित्त भाव में आगे बढ़ना है। अच्छा है आप लोगों का यह जो पक्का निश्चय है ना - करावनहार करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है। यह निमित्त भाव सेवा करा रहा है। मैं पन है? कुछ भी मैं पन आता है? अच्छा है। सारे विश्व के आगे निमित्त एक्जैम्पुल है ना। तो बापदादा भी सदा विशेष प्यार और

दुआयें देते ही रहते हैं। अच्छा। बहुत आये हैं तो अच्छा है ना! लास्ट टर्न फास्ट गया है। अच्छा।

डबल विदेशी मुख्य टीचर्स बहिनों से:- सभी मिलके सभी की पालना करने के निमित्त बनते हो यह बहुत अच्छा पार्ट बजाते हो। खुद भी रिफ्रेश हो जाते हो और दूसरों को भी रिफ्रेश कर देते हो। अच्छा प्रोग्राम बनाते हो। बापदादा को पसन्द है। खुद रिफ्रेश होंगे तब तो रिफ्रेश करेंगे। बहुत अच्छा। सभी ने रिफ्रेशमेंट अच्छी की। बापदादा खुश है। बहुत अच्छा।

03-02-2006 "परमात्म प्यार में सम्पूर्ण पवित्रता की ऐसी स्थिति बनाओ जिसमें व्यर्थ का नामनिशान न हो"

आज बापदादा चारों ओर के अपने प्रभु प्यारे बच्चों को देख रहे हैं। सारे विश्व के चुने हुए कोटों में से कोई इस परमात्म प्यार के अधिकारी बनते हैं। परमात्म प्यार ने ही आप बच्चों को यहाँ लाया है। यह परमात्म प्यार सारे कल्प में इस समय ही अनुभव करते हो। और सभी समय आत्माओं का प्यार, महान आत्माओं का, धर्म आत्माओं का प्यार अनुभव किया लेकिन अभी परमात्म प्यार के पात्र बन गये। कोई आपसे पूछे परमात्मा कहाँ है? तो क्या कहेंगे? परमात्म बाप तो हमारे साथ ही है। हम उनके साथ रहते हैं। परमात्मा भी हमारे बिना रह नहीं सकता और हम भी परमात्मा के बिना रह नहीं सकते। इतना प्यार अनुभव कर रहे हो। फलक से कहेंगे वह हमारे दिल में रहता और हम उनके दिल में रहते। ऐसे अनुभवी हैं ना! हैं अनुभवी? क्या दिल में आता? अगर हम नहीं अनुभवी होंगे तो कौन होगा! बाप भी ऐसे प्यार के अधिकारी बच्चों को देख हर्षित होते हैं। परमात्म प्यार की निशानी - जिससे प्यार होता है उसके पीछे सब कुर्बान करने के लिए सहज तैयार हो जाते हैं। तो आप सब भी जो बाप चाहते हैं कि हर एक बच्चा बाप समान बन जाए, हर एक के चेहरे से बाप प्रत्यक्ष दिखाई दे, ऐसे बने हो ना? बापदादा की दिलपसन्द स्थिति जानते हो ना। बाप के दिलपसन्द स्थिति है ही सम्पूर्ण पवित्रता। इस ब्राह्मण जन्म का फाउण्डेशन भी सम्पूर्ण पवित्रता है। सम्पूर्ण पवित्रता की गुण को तो जानते हो? संकल्प और स्वप्न में भी रिंचक मात्र अपवित्रता का नामनिशान न हो। बापदादा आजकल के समय की समीपता प्रमाण बार-बार अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि सम्पूर्ण पवित्रता के हिसाब से व्यर्थ संकल्प, यह भी सम्पूर्णता नहीं है। तो चेक करो व्यर्थ संकल्प चलते हैं? किसी भी प्रकार के व्यर्थ संकल्प सम्पूर्णता से दूर तो नहीं करते? जितना-जितना पुरूषार्थ में आगे बढ़ते जाते हैं, उतना रॉयल रूप के व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय तो समाप्त नहीं कर रहे हैं? रॉयल रूप में अभिमान और अपमान व्यर्थ संकल्प के रूप में वार तो नहीं करते? अगर अभिमान रूप में कोई भी परमात्म देन को अपनी विशेषता समझते हैं तो उस विशेषता

का भी अभिमान नीचे ले आता है। विघ्न रूप बन जाता है और अभिमान भी सूक्ष्म रूप में यही आता, जो जानते भी हो - मेरापन आया, मेरा नाम, मान, शान होना चाहिए। यह मेरापन अभिमान का रूप ले लेता है। यह व्यर्थ संकल्प भी सम्पूर्णता से दूर कर लेते हैं क्योंकि बापदादा यही चाहते हैं - स्वमान, न अभिमान, न अपमान। यही कारण बनते हैं व्यर्थ संकल्प आने के।

बापदादा हर बच्चे को डबल मालिकपन के निश्चय और नशे में देखने चाहते हैं। डबल मालिकपन क्या है? एक तो बाप के खज़ानों के मालिक और दूसरा स्वराज्य के मालिक। दोनों ही मालिकपन क्योंकि सभी बालक भी हो और मालिक भी हो। लेकिन बापदादा ने देखा बालक तो सभी हैं ही क्योंकि सभी कहते हैं मेरा बाबा। तो मेरा बाबा अर्थात् बालक हैं ही। लेकिन बालक के साथ दोनों प्रकार के मालिक। तो मालिकपन में नम्बरवार हो जाते हैं। मैं बालक सो मालिक भी हूँ। वर्से का खज़ाना प्राप्त है इसलिए बालकपन का निश्चय और नशा रहता है लेकिन मालिकपन का प्रैक्टिकल में निश्चय का नशा उसमें नम्बरवार हो जाते हैं। स्वराज्य अधिकारी मालिक, इसमें विशेष विघ्न डालता है मन। मन के मालिक बन कभी भी मन के परवश नहीं हो। कहते हैं स्वराज्य अधिकारी हैं, तो स्वराज्य अधिकारी अर्थात् राजा हैं, जैसे ब्रह्मा बाप ने हर रोज चेकिंग कर मन के मालिक बन विश्व के मालिक का अधिकार प्राप्त कर लिया। ऐसे यह मन बुद्धि राजा के हिसाब से तो मन्त्री हैं, यह व्यर्थ संकल्प भी मन में उत्पन्न होते हैं, तो मन व्यर्थ संकल्प के वश कर देता है। अगर आर्डर से नहीं चलाते तो मन चंचल बनने के कारण परवश कर लेता है। तो चेक करो। वैसे भी मन को घोड़ा कहते हैं, क्योंकि चंचल है ना। और आपके पास श्रीमत का लगाम है। अगर श्रीमत का लगाम थोड़ा भी ढीला होता है तो मन चंचल बन जाता है। क्यों लगाम ढीला होता? क्योंकि कहाँ न कहाँ साइडसीन में देखने लग जाते हैं। और लगाम ढीला होता तो मन को चांस मिलता है। तो मैं बालक सो मालिक हूँ, इस स्मृति में सदा रहो। चेक करो खज़ाने का भी मालिक तो स्वराज्य का भी मालिक, डबल मालिक हूँ? अगर मालिकपन कम होता है तो कमज़ोर संस्कार इमर्ज हो जाते हैं। और संस्कार को क्या कहते हो? मेरा संस्कार ऐसा है, मेरी नेचर ऐसी है, लेकिन क्या यह मेरा है? कहने में तो ऐसे ही कहते हो, मेरा संस्कार। यह मेरा है? राइट है कहना मेरा संस्कार? राइट है? मेरा है? कि रावण की जायदाद है? कमज़ोर संस्कार रावण की जायदाद है, उसको मेरा कैसे कह सकते हैं। मेरा संस्कार कौन सा है? जो बाप का संस्कार वह मेरा संस्कार। तो बाप का संस्कार

कौन सा है? विश्व कल्याण। शुभ भावना, शुभ कामना। तो कोई भी कमज़ोर संस्कार को मेरा संस्कार कहना ही रांग है। और मेरा संस्कार अगर मानो दिल में बिठाया है, अशुद्ध चीज़ बिठा दी है दिल में। मेरी चीज़ से तो प्यार होता है ना। तो मेरा समझने से अपने दिल में जगह दे दी है। इसीलिए कई बार बच्चों को युद्ध बहुत करनी पड़ती है क्योंकि अशुभ और शुभ दोनों को दिल में बिठा दिया है तो दोनों क्या करेंगे? युद्ध ही तो करेंगे! जब यह संकल्प में आता है, वाणी में भी आता है, मेरा संस्कार। तो चेक करो यह अशुभ संस्कार मेरा संस्कार नहीं है। तो संस्कार परिवर्तन करना पड़े।

बापदादा हर एक बच्चे को पदम-पदमगुणा भाग्यवान चलन और चेहरे में देखने चाहते हैं। कई बच्चे कहते हैं भाग्यवान तो बने हैं लेकिन चलते-फिरते भाग्य इमर्ज हो, वह मर्ज हो जाता है और बापदादा हर समय, हर बच्चे के मस्तक में भाग्य का सितारा चमकता हुआ देखने चाहते हैं। कोई भी आपको देखे तो चेहरे से, चलन से भाग्यवान दिखाई दे तब आप बच्चों द्वारा बाप की प्रत्यक्षता होगी क्योंकि वर्तमान समय मैजारिटी अनुभव करने चाहते हैं, जैसे आजकल की साइन्स प्रत्यक्ष रूप में दिखाती है ना! अनुभव कराती है ना! गर्म का भी अनुभव कराती है, ठण्डाई का भी अनुभव कराती है तो साइलेन्स की शक्ति से भी अनुभव करने चाहते हैं। जितना-जितना स्वयं अनुभव में रहेंगे तो औरों को भी अनुभव करा सकेंगे। बापदादा ने इशारा दिया ही है कि अभी कम्बाइन्ड सेवा करो। सिर्फ आवाज से नहीं, लेकिन आवाज के साथ अनुभवीमूर्त बन अनुभव कराने की भी सेवा करो। कोई न कोई शान्ति का अनुभव, खुशी का अनुभव, आत्मिक प्यार का अनुभव..., अनुभव ऐसी चीज़ है जो एक बारी भी अनुभव हुआ तो छोड़ नहीं सकते हैं। सुनी हुई ची ज भूल सकती है लेकिन अनुभव की चीज़ भूलती नहीं है। वह अनुभव कराने वाले के समीप लाती है।

सभी पूछते हैं कि अभी आगे के लिए क्या नवीनता करें? तो बापदादा ने देखा सर्विस तो सभी उमंग-उत्साह से कर रहे हो, हर एक वर्ग भी कर रहा है। आज भी बहुत वर्ग इकट्ठे हुए है नाक| मेगा प्रोग्राम भी कर लिया, सन्देश तो दे दिया, अपना उलाहना निकाल लिया, इसकी मुबारक हो। लेकिन अब तक यह आवाज नहीं फैला है कि यह परमात्म ज्ञान है। ब्रह्माकुमारियाँ कार्य अच्छा कर रही हैं, ब्रह्माकुमारियों का ज्ञान बहुत अच्छा है लेकिन यही परमात्म ज्ञान है, परमात्म कार्य चल रहा है यह आवाज फैले। मेडीटेशन कोर्स भी कराते हो, आत्मा का परमात्मा से कनेक्शन भी जोड़ते हो लेकिन अब परमात्म कार्य स्वयं परमात्मा करा रहा है, यह बहुत कम अनुभव करते हैं। आत्मा

और धारणायें यह प्रत्यक्ष हो रहा है, अच्छा कार्य कर रहे हैं, अच्छा बोलते हैं, अच्छा सिखाते हैं, यहाँ तक ठीक है। नॉलेज अच्छी है इतना भी कहते हैं लेकिन परमात्म नॉलेज है... यह आवाज बाप के नजदीक लायेगा और जितना बाप के नजदीक आयेंगे उतना अनुभव स्वत: ही करते रहेंगे। तो ऐसा प्लैन और भाषणों में ऐसा कुछ जौहर भरो, जिसमें परमात्मा के नजदीक आ जायें। दिव्यगुणों की धारणा इसमें अटेन्शन गया है, आत्मा का ज्ञान देते हैं, परमात्मा का ज्ञान देते हैं, यह कहते हैं लेकिन परमात्मा आ चुका है, परमात्म कार्य स्वयं परमात्मा चला रहा है, यह प्रत्यक्षता चुम्बक की तरह समीप लायेगी। आप लोग भी समीप तब आये जब समझा बाप मिला है, बाप से मिलना है। स्नेही मैजॉरिटी बनते हैं, वह क्या समझके? कार्य बहुत अच्छा है। जो कार्य कर रही हैं ब्रह्माकुमारियाँ, वह कार्य कोइ और कर नहीं सकता, परिवर्तन् कराती हैं। लेकिन परमात्मा बोल रहा है, परमात्मा से वर्सा लेना है, इतना नजदीक नहीं आते। क्योंकि अभी जो पहले समझते नहीं थे कि ब्रह्माकुमारियाँ क्या करती हैं, क्या इन्हों की नॉलेज है, वह समझने लगे हैं। लेकिन परमात्म प्रत्यक्षता, अगर समझ सकते कि परमात्मा का ज्ञान है तो रूक सकते हैं क्या। जैसे आप भागकर आ गये हो ना, ऐसे भागेंगे। तो अभी ऐसा प्लैन बनाओ, ऐसे भाषण तैयार करो, ऐसे परमात्म अनुभूति के प्रैक्टिकल सबूत बनो। तभी बाप की प्रत्यक्षता प्रैक्टिकल में दिखाई देगी। अभी अच्छा है यहाँ तक पहुंचे हैं, अच्छा बनना है, वह लहर परमात्म प्यार की अनुभूति से होगी। तो अनुभवी मूर्त बन अनुभव कराओ। अच्छा। अभी डबल मालिकपन की स्मृति से समर्थ बन समर्थ बनाओ। अच्छा अभी क्या करना है?

सेवा का टर्न पंजाब जोन का है:- हाथ हिलाओ। अच्छा है जिस भी जोन को टर्न मिलता है वह खुली दिल से आ जाते हैं। अच्छा चांस ले लेते हैं। बापदादा को भी खुशी होती है कि हर एक जोन सेवा का चांस अच्छा ले लेते हैं। पंजाब को सभी कामन रीति से शेर कहते हैं, पंजाब शेर। और बापदादा कहते हैं शेर अर्थात् विजयी। तो सदा पंजाब वालों को अपने मस्तक के बीच विजय का तिलक अनुभव करना है। विजय का तिलक मिला हुआ है। यह सदा स्मृति रहे हम ही कल्प कल्प के विजयी हैं। थे, हैं और कल्प-कल्प बनेंगे। अच्छा है। पंजाब भी वारिस क्वालिटी को बाप के आगे लाने का प्रोग्राम बना रहे हैं ना! अभी बापदादा के आगे वारिस क्वालिटी लाई नहीं है। स्नेही क्वालिटी लाई है, सभी जोन ने स्नेही सहयोगी क्वालिटी लाई है लेकिन वारिस क्वालिटी नहीं लाये हैं। तैयारी कर रहे हैं ना! सब प्रकार के चाहिए ना। वारिस भी

चाहिए, स्नेही भी चाहिए, सहयोगी भी चाहिए, माइक भी चाहिए, माइट भी चाहिए। सब प्रकार के चाहिए। अच्छा है, सेन्टरों में वृद्धि तो हो रही है। हर एक उमंग-उत्साह से सेवा में वृद्धि कर भी रहे हैं, अभी देखेंगे कि किस जोन में यह प्रत्यक्ष होता है - परमात्मा आ चुका है। बाप को प्रत्यक्ष कौन सा जोन करता है, वह बापदादा देख रहे हैं। फॉरेन करेगा? फॉरेन भी कर सकता है। पंजाब नम्बर ले लो। ले लो अच्छा है। सब सहयोग देंगे आपको। बहुत समय से प्रयत्न कर रहे हैं, यही है, यही है, यही है, यह आवाज फैलाने का। अभी है यह भी है, यही है नहीं है। तो पंजाब क्या करेगा? यह आवाज आ जाये यही है, यही है...। ठीक है टीचर्स? कब तक करेंगे? इस साल में करेंगे? नया साल शुरू हुआ है ना! तो नये साल में कोई नवीनता होनी चाहिए ना! यह भी है, यह तो बहुत सुन लिया। जैसे आपके मन में बस बाबा, बाबा, बाबा स्वत: याद रहता है ऐसे उनके मुख से निकले हमारा बाबा आ गया। वह भी सभी मेरा बाबा, मेरा बाबा, यह आवाज चारों कोनों से निकले, लेकिन शुरूआत तो एक कोने से होगी ना। तो पंजाब कमाल करेगा? क्यों नहीं करेंगे। करना ही है। बहुत अच्छा। इन एडवांस मुबारक हो। अच्छा।

इस ग्रुप में 6 वर्गो की मीटिंग चल रही है:- (साइंस एण्ड इंजीनियर विंग, बिजनेस विंग, धार्मिक प्रभाग, समाज सेवा प्रभाग, मीडिया प्रभाग, सुरक्षा प्रभाग) सभी उठो। (सभी अपने-अपने प्रभाग का बैनर दिखा रहे हैं) अच्छा सब बिजी हो गये हो तो सेवा में बिजी रहने की मुबारक हो। हर एक अपनी-अपनी विधि अपना रहे हैं। देखो, साइस्ं इंजनियर का बैनर देख रहे हैं, लेकिन कमाल यह है जैसे साइंस प्रत्यक्ष प्रमाण दिखा रही है, ऐसे साइलेन्स पावर। ऐसा प्रैक्टिकल में अनुभव फैलाओ जो हर एक के मुख से निकले कि साइंस तो साइंस है लेकिन साइलेन्स अपरमअपार है क्योंकि धर्मवाले आरै साइंसवाले दोनों को प्रैक्टिकल में साइलेन्स का चमत्कार नहीं लेकिन साइलेन्स का कार्य सिद्ध करके दिखाना पड़ेगा। धर्म वालों को प्रैक्टिकल में एक परमात्मा है और परमात्मा का कार्य चल रहा है यह सिद्ध करके दिखाना पड़ेगा। अनेक तरफ से बुद्धि हटकर एक तरफ लग जाए। एकाग्र बुद्धि हो जाए। जो भी विंग हैं, बापदादा ने कह दिया कि काम तो सभी कर रहे हैं, प्लैन भी अच्छे अच्छे बनाते हैं लेकिन अभी समय की रफ्तार तेज जा रही है तो समय के प्रमाण अभी ऐसा कोई प्लैन बनाओ जो सबकी बुद्धि में परमात्मा के सिवाए कुछ सूझे नहीं, मैजारिटी के मुख से बाबा, बाबा निकले। प्लैन भी अच्छे बनाये हैं, बापदादा ने सुने हैं। लेकिन अभी फास्ट करना

पड़ेगा। साइन्स भी देखो, समय को, चीजों को बिल्कुल सूक्ष्म बनाती जाती है ना। तो साइलेन्स पावर कितना शक्तिशाली बना रही है यह अनुभव कराओ। जो भी वर्ग आये हैं, सभी को बापदादा मुबारक दे रहे हैं। वैसे तो मीडिया और मेडिकल यह भी आगे बढ़ रहे हैं। बापदादा ने सुना तो मीडिया भी विस्तार को प्राप्त कर रही है लेकिन मीडिया के लिए भी सुनाया था तो जिसके हाथ में अखबार आये, जिसके रेडियो का स्विच खुले, टी.वी. का स्विच खुले, आवाज आये हमारा बाबा आ गया। ऐसे नहीं और वर्ग नहीं कर रहे हैं, सब कर रहे हैं लेकिन बापदादा देख रहे हैं लेकिन कौन सा वर्ग नम्बरवन निमित्त बनता है। कौन सा जोन नम्बरवन निमित्त बनता है। चलो और तो छोड़ो लेकिन जहाँ भी प्रोग्राम करते हैं वह प्रोग्राम वाले ही सभी कहें कि बाबा आ गया, यह तो शुरू हो कि आप कहेंगे, हम अभी पुरूषार्थ कर रहे हैं, सम्पन्न बन जायेंगे जल्दी जल्दी तो यह कार्य भी हो जायेगा क्योंकि कनेक्शन है, आपका सम्पन्न बनना और प्रत्यक्षता का झण्डा लहरना। तो बापदादा ने सुनाया कि अभी वेस्ट थॉट्स यह अभी भी चलते हैं, रॉयल रूप में भी चलते, साधारण रूप में भी चलते हैं, सभी मन के मालिक बन जायें, परमात्म बालक सो मालिक। अच्छा मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

डबल विदेशी:- बापदादा कहते हैं कि डबल फॉरेनर्स सबसे पहले तो मधुबन का बहुत बढ़िया श्रृंगार हैं। कितना अच्छा लगता है। देश विदेश एक मत होके एकाग्र बुद्धि से विश्व सेवा कर रहे हैं। एक ही स्टेज पर सब इन्टरनेशनल हैं, काले भी तो गोरे भी, सांवले भी, सब प्रकार के एक स्टेज पर बैठते हैं। और सब एक बाप दूसरा न कोई, है? दूसरा है? व्यर्थ संकल्प हैं तो भी दूसरा है। आज बापदादा सब संकल्प की विधि को एक शुभ संकल्प बनाने चाहते हैं क्योंकि मन के संकल्प में बहुत समय से जो कमज़ोरी चलती है वह बहुत कारण से मन बुद्धि को भी सहयोगी बना देता है और मन बुद्धि में जो भी संकल्प चलता रहता है कमज़ोरी का, वह संस्कार बन जाता है। क्योंकि बहुत समय चलता है ना तो वह संस्कार का रूप हो जाता है। लेकिन मेरा संस्कार अभी कभी नहीं कहना, अगर मेरा संस्कार कहेंगे ना तो बापदादा और ब्राह्मण समझेंगे कि इसको रावण की जायदाद से प्यार है। तो डबल विदेशियों ने तो विदाई दे दी है ना! दे दी? व्यर्थ स्टॉप। समर्थ बाप, समर्थ हम, व्यर्थ खत्म। ठीक है ना - फारेनर्स की एक विशेषता है जो बाप को अच्छी लगती है, वह क्या है? अन्दर नहीं रखते हैं, सब बोल देते हैं, छिपाते नहीं है, मैजारिटी। मैजारिटी ऐसे हैं। और जो संकल्प किया दृढ़, उसको प्रैक्टिकल में लाने की भी आदत है इसीलिए डबल फॉरेनर्स शुरू

करो दृढ़ संकल्प, वेस्ट खत्म, बेस्ट। ठीक है? करेंगे डबल फॉरेनर्स? करेंगे? आप में संस्कार रूप में भी है, जो संकल्प किया वह करके दिखाते हो। तो सारे फॉरेन में वेस्ट का नाम निशान न हो, न वेस्ट टाइम, न वेस्ट बोल, न वेस्ट संकल्प, न वेस्ट कर्म, न वेस्ट सम्बन्ध-सम्पर्क। ठीक है? पसन्द है? अच्छा। तो कब रिजल्ट यह आयेगी? एक्जैम्पुल बनेंगे ना! तो कब तक रिजल्ट आयेगी? कब तक यह रिजल्ट आयेगी? तीन मास में या साल में? क्या सोचती हैं? टीचर्स क्या सोचती हैं? (दादी जानकी कह रही हैं अभी शिवरात्रि आ रही है, अभी-अभी करेंगे, बाबा ने कहा, हो गया) अच्छा है देखो दृढ़संकल्प रखेंगे, करना ही है, कुछ भी हो जाए, करना ही है। (सभी कह रहे हैं शिवजयन्ती तक हो जायेगा) मुबारक हो लाख, लाख मुबारक हो। बहुत अच्छा आप सभी के मुख में गुलाबजामुन। अच्छा। जो भी उमंग-उत्साह से आगे बढ़ने चाहे वह बढ़ सकता है। ऐसे नहीं डबल फारेनर्स ने हाथ उठाया और आप सभी क्या करेंगे? इन्डिया वाले क्या करेंगे? नम्बरवन तो लेना चाहते हैं ना! सभी के दिल में यह उमंग आना चाहिए कि हमने कहा नहीं है लेकिन करके दिखायेंगे। तो इन्डिया वाले ऐसे करेंगे? हिम्मत दिखायेंगे? हिम्मत दिखायेंगे?पहली लाइन हाथ नहीं उठा रही है। हाँ मधुबन वाले भी करेंगे? मधुबन वाले बड़ा हाथ उठाओ।

मधुबन वालों के लिए बापदादा कहते हैं जो चुल पर सो दिल पर, मधुबन वालों को बहुत बड़ी लिफ्ट है। लिफ्ट पर अगर चढ़ने चाहो तो बहुत जल्दी सम्पन्न बन सकते हो। लोग तो मधुबन में आते हैं, आप मधुबन में रहते हैं। सिर्फ अलबेले नहीं बनना बस। लिफ्ट को छोड़कर सीढ़ी नहीं चढ़ो, लिफ्ट में चढ़ो। बाकी बापदादा मधुबन वालों को हर सीजन की मुबारक देते हैं। सेवा अच्छी करते हैं। लेकिन.. लेकिन है। कहें लेकिन वाला, कि प्राइवेट कहें? मधुबन वाले समझदार बहुत हैं, समझ तो गये हैं अन्दर में, इसीलिए कहते नहीं हैं। देखो, मधुबन वालों को हर साल, हर सीजन में सम्मुख मुरली सुनने का मिलता है, औरों को नहीं मिलता है। तो मधुबन वाले सभी को मुस्कराके मिलते अपने चेहरे से बाप को प्रत्यक्ष कर सकते हैं। जो मेरा बाबा कहते हैं ना, वह मेरे बाबा का चेहरे से चलन से दिखाई दे। कर भी रहे हैं, ऐसे नहीं है नहीं कर रहे हैं, कर रहे हैं। अभी और थोड़ा फास्ट करना है, बाकी कर भी रहे हैं। मधुबन का नाम सुनके जहाँ भी जाते हो ना, मधुबन वाले हैं, मधुबन वाले हैं। देखो, कितना रिगार्ड से देखते हैं। मधुबन से प्यार है, तो मधुबन निवासियों से भी प्यार है। तो अच्छा आज

तो मिल लिया ना मधुबन वालों से। आज किसने कहा था मधुबन वालों से मिलना है, तो बापदादा मिला ना। तो बापदादा मिला? अच्छा।

सभी तरफ के सर्व रूहानी, गुलाब बच्चों को सदा बाप के अति प्यारे और देहभान से अतिन्यारे, बापदादा के दिल के दुलारे बच्चों को, सदा एक बाप, एकाग्र मन और एकरस स्थिति में स्थित रहने वाले बच्चों को, चारों ओर के भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न स्थान में रहते भी साइंस के साधनों से मधुबन में पहुँचने वाले, सम्मुख देखने वाले, सभी लाडले, सिकीलधे, कल्प-कल्प के परमात्म प्यार के पात्र अधिकारी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और दिल की दुआयें, पदम-पदम गुणा स्वीकार हो और साथ में डबल मालिक बच्चों को बापदादा की नमस्ते।

दादी जी से:- मधुबन का हीरो एक्टर है, सदा जीरो याद है। शरीर भले नहीं चलता, थोड़ा धीरे-धीरे चलता लेकिन सभी का प्यार और दुआयें चला रही हैं। बाप की तो हैं ही लेकिन सभी की हैं। सभी दादी को बहुत प्यार करते हो ना! देखो सभी यही कहते हैं कि दादियां चाहिए, दादियां चाहिए, दादियां चाहिए...। तो दादियों की विशेषता क्या है? दादियों की विशेषता है बाप की श्रीमत पर हर कदम उठाना। मन को भी बाप की याद और सेवा में समर्पण करना। आप सभी भी ऐसे ही कर रहे हो ना! मन को समर्पण करो। बापदादा ने देखा है, मन बड़ी कमाल करके दिखाता है। कमाल क्या करता है? चंचलता करता है। मन एकाग्र हो जाए, जैसे झण्डा ऊपर करते हो ना, ऐसे मन का झण्डा शिव बाबा, शिवबाबा में एकाग्र हो जाए, आ रहा है, समय समीप आ रहा है। कभी-कभी बापदादा बच्चों के संकल्प बहुत अच्छे-अच्छे सुनते हैं। सबका लक्ष्य बहुत अच्छा है। अच्छा। दादियाँ बहुत थोड़ी सी रह गई हैं। गिनी चुनी हुई दादियां रह गई हैं। दादियों से प्यार है ना सबको। अच्छा। (सब दादियाँ ऐसे ही चलती रहें) अभी तो हैं ही ना, अभी तो क्वेश्चन ही नहीं। अच्छा। देखो हाल की शोभा कितनी अच्छी है। माला लगती है ना! और माला के बीच में मणके बैठे हैं। अच्छा।

30-11-2007 "सत्यता और पवित्रता की शक्ति को स्वरूप में लाते बालक और मालिकपन का बैलेन्स रखो"

आज सत बाप, सत शिक्षक, सतगुरू अपने चारों ओर के सत्यता स्वरूप, शक्ति स्वरूप बच्चों को देख रहे हैं क्योंकि सत्यता की शक्ति सर्वश्रेष्ठ है। इस सत्यता की शक्ति का आधार है सम्पूर्ण पवित्रता। मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क, स्वप्न में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो। ऐसी पवित्रता का प्रत्यक्ष स्वरूप क्या दिखाई देता? ऐसी पवित्र आत्मा के चलन और चेहरे में स्पष्ट दिव्यता दिखाई देती है। उनके नयनों में रूहानी चमक, चेहरे में सदा हर्षितमुखता और चलन में हर कदम में बाप समान कर्मयोगी। ऐसे सत्यवादी सत बाप द्वारा इस समय आप सभी बन रहे हो। दुनिया में भी कई अपने को सत्यवादी कहते हैं, सच भी बोलते हैं लेकिन सम्पूर्ण पवित्रता ही सच्ची सत्यता शक्ति है। जो इस समय इस संगमयुग में आप सभी बन रहे हो। इस संगमयुग की श्रेष्ठ प्राप्ति है - सत्यता की शक्ति, पवित्रता की शक्ति। जिसकी प्राप्ति सतयुग में आप सभी ब्राह्मण सो देवता बन आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र बनते हो। सारे सृष्टि चक्र में और कोई भी आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र नहीं बनते। आत्मा से पवित्र बनते भी हैं लेकिन शरीर पवित्र नहीं मिलता। तो ऐसी सम्पूर्ण पवित्रता इस समय आप सब धारण कर रहे हो। फलक से कहते हो, याद है क्या फलक से कहते हो? याद करो। सभी दिल से कहते हैं, अनुभव से कहते हैं कि पवित्रता तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, जन्म सिद्ध अधिकार सहज प्राप्त होता है क्योंकि पवित्रता वा सत्यता प्राप्त करने के लिए आप सभी ने पहले अपने सत स्वरूप आत्मा को जान लिया। अपने सत बाप, शिक्षक, सतगुरू को पहचान लिया। पहचान लिया और पा लिया। जब तक कोई अपने सत स्वरूप वा सत बाप को नहीं जानते तो सम्पूर्ण पवित्रता, सत्यता की शक्ति आ नहीं सकती। तो आप सभी सत्यता और पवित्रता की शक्ति के अनुभवी है ना! हैं अनुभवी? अनुभवी हैं? वह लोग प्रयत्न रते हैं लेकिन यथार्थ रूप में ना अपने स्वरूप, न सत बाप के यथार्थ स्वरूप को जान सकते। और आप सबने इस समय के अनुभव द्वारा पवित्रता को ऐसे सहज अपनाया जो इस समय की प्राप्ति का प्रालब्ध देवताओं की पवित्रता नेचरल है और नेचर है। ऐसी नेचरल नेचर

का अनुभव आप ही प्राप्त करते हो। तो चेक करो कि पवित्रता वा सत्यता की शक्ति नेचरल नेचर के रूप में बनी है? आप क्या समझते हो? जो समझते हैं कि पवित्रता तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है वह हाथ उठाओ। जन्म सिद्ध अधिकार है कि मेहनत करनी पड़ती है? मेहनत करनी तो नहीं पड़ती ना! सहज है ना! क्योंकि जन्मसिद्ध आधिकार तो सहज प्राप्त हाता है | मेहनत नह करनी पड़ती। दुनिया वाले असम्भव समझते हैं और आपने असम्भव को सम्भव और सहज बना दिया है।

जो नये नये बच्चे आये हैं, जो पहले बारी आये हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा जो नये नये बच्चे हैं, मुबारक हो नये पहली बार आने वालों को क्योंकि बापदादा कहते हैं कि भले लेट तो आये हो लेकिन टू लेट में नहीं आये हो। और नये बच्चों को बापदादा का वरदान है कि लास्ट वाला भी फास्ट पुरूषार्थ कर फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। फर्स्ट नम्बर नहीं लेकिन फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। तो नये बच्चों को इतनी हिम्मत है, हाथ उठाओ जो फर्स्ट आयेंगे। देखना टी.वी. में आपका हाथ दिखाई दे रहा है। अच्छा। हिम्मत वाले हैं। मुबारक हो हिम्मत की। और हिम्मत है तो बाप की तो मदद है ही लेकिन सर्व ब्राह्मण परिवार की भी शुभ भावना, शुभ कामना आप सबके साथ है। इसलिए जो भी नये पहले बारी आये हैं उन सबके प्रति बापदादा और परिवार की तरफ से दुबारा पदमगुणा बधाई हो, बधाई हो, बधाई हो। आप सभी जो पहले आने वाले हैं उन्हों को भी खुशी हो रही है ना! बिछुड़ी हुई आत्मायें फिर से अपने परिवार में पहुंच गये हैं। तो बापदादा भी खुश हो रहे हैं और आप सब भी खुश हो रहे हैं।

बापदादा ने वतन में दादी के साथ एक रिजल्ट देखी। क्या रिजल्ट देखी? आप सभी जानते हो, मानते हो कि हम मालिक सो बालक हैं। हैं ना! मालिक भी हो, बालक भी हो। सभी हैं? हाथ उठाओ। सोच के उठाना, ऐसे नहीं। हिसाब लेंगे ना! अच्छा, हाथ नीचे करो। बापदादा ने देखा कि बालकपन का निश्चय और नशा यह तो सहज रहता है क्योंकि ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी कहलाते हो तो बालक हो तभी तो ब्रह्माकुमार कुमारी कहलाते हो। और सारा दिन मेरा बाबा, मेरा बाबा यही स्मृति में लाते हो फिर भूल भी जाते हो लेकिन बीच-बीच में याद आता है। और सेवा में भी बाबा बाबा शब्द नेचरल मुख से निकलता है। अगर बाबा शब्द नहीं निकलता तो ज्ञान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। प्रभाव जो भी सेवा करते हो, भाषण करते हो, कोर्स कराते हो, भिन्न-भिन्न टॉपिक पर करते हो। सच्ची सेवा का प्रत्यक्ष स्वरूप वा प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि सुनने वाले भी अनुभव करें कि मैं भी बाबा का हूँ। उनके मुख से भी बाबा बाबा शब्द

निकले। कोई ताकत है, यह नहीं। अच्छा है, यह नहीं। लेकिन मेरा बाबा अनुभव करें इसको कहेंगे सेवा का प्रत्यक्ष फल। तो बालकपन का नशा वा निश्चय फिर भी अच्छा रहता है। लेकिन मालिकपन का निश्चय और नशा नम्बरवार रहता है। बालकपन से मालिकपन का प्रैक्टिकल चलन और चेहरे से नशा कभी दिखाई देता है, कभी कम दिखाई देता है। वास्तव में आप डबल मालिक हो एक बाप के खज़ानों के मालिक हो। सभी मालिक हो ना खज़ानों के? और बाप ने सभी को एक जितना ही खज़ाना दिया है। कोई को लाख दिया हो, कोई को हजार दिया हो, ऐसा नहीं है। सभी को सब खज़ाने बेहद के दिये हैं क्योंकि बाप के पास बेहद के खज़ाने हैं। कम नहीं हैं। तो बापदादा ने सभी को सर्व खज़ाने दिये हैं और एक जैसे, एक जितने दिये हैं। और दूसरा मालिक है - स्व राज्य के मालिक हो। इसीलिए बापदादा फलक से कहते हैं कि मेरा एक एक बच्चा राजा बच्चा है। तो राजा बच्चे हो ना! प्रजा तो नहीं? राजयोगी हो कि प्रजायोगी हो? राजयोगी हो ना! तो स्वराज्य के मालिक हो।

लेकिन बापदादा ने दादी के साथ रिजल्ट देखा - तो जितना बालकपन का नशा रहता है, उतना मालिकपन का कम रहता है। क्यों? अगर स्वराज्य के मालिकपन का नशा सदा रहता तो यह जो बीच-बीच में समस्यायें वा विघ्न आते हैं वह आ नहीं सकते। वैसे देखा जाता है तो समस्या वा विघ्न आने का आधार विशेष मन है। मन ही हलचल में आता है। इसीलिए बापदादा का महामन्त्र भी है मनमनाभव। तनमनाभव, धनमनाभव नहीं है, मनमनाभव है। तो अगर स्वराज्य का मालिक है तो मन मालिक नहीं है। मन आपका कर्मचारी है, राजा नहीं है। राजा अर्थात् अधिकारी। अधीन वाले को राजा नहीं कहा जाता है। तो रिजल्ट में क्या देखा? कि मन का मालिक मैं राज्य अधिकारी मालिक हूँ। यह स्मृति, यह आत्म स्थिति की सदा स्थिति कम रहती है। है पहला पाठ, आप सबने पहला पाठ क्या किया था? मैं आत्मा हूँ, परमात्मा का पाठ दूसरा नम्बर है। लेकिन पहला पाठ मैं मालिक राजा इन कर्मेन्द्रियों का अधिकारी आत्मा हूँ। शक्तिशाली आत्मा हूँ। सर्वशक्तियां आत्मा के निजीगुण हैं। तो बापदादा ने देखा कि जो मैं हूँ, जैसा हूँ, उसको नेचरल स्वरूप स्मृति में चलना, रहना, चेहरे से अनुभव होना, समस्या से किनारा होना, इसमें अभी और अटेन्शन चाहिए। सिर्फ मैं आत्मा नहीं, लेकिन कौन सी आत्मा हूँ, अगर यह स्मृति में रखो तो मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा के आगे समस्या वा विघ्न की कोई शक्ति नहीं जो आ सके। अभी भी रिजल्ट में कोई न कोई समस्या वा विघ्न दिखाई देता है। जानते हैं लेकिन चलन और चेहरे में

निश्चय का प्रत्यक्ष स्वरूप रूहानी नशा वह और ही प्रत्यक्ष होना है। इसके लिए यह मालिकपन का नशा इसको बार-बार चेक करो। सेकण्ड की बात है चेक करना। कर्म करते, कोई भी कर्म आरम्भ करते हो, आरम्भ करने टाइम चेक करो - मालिकपन की अथॉरिटी से कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाला कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर वाली आत्मा हूँ? कि साधारण कर्म शुरू हुआ? स्मृति स्वरूप से कर्म आरम्भ करना और साधारण स्थिति से कर्म आरम्भ करना उसमें बहुत फर्क है। जैसे हद के मर्तबे वाले अपना कार्य करते हैं तो कार्य की सीट पर सेट होके फिर कार्य आरम्भ करते हैं ऐसे अपने मालिकपन के स्वराज्य अधिकारी की सीट पर सेट होके फिर हर कार्य करो। इस मालिकपन के अथॉरिटी की चेकिंग को और बढ़ाना है। और इसकी निशानी है, मालिकपन के अथॉरिटी की निशानी है सदा हर कार्य में डबल लाइट और खुशी की अनुभूति होगी और रिजल्ट सफलता सहज अनुभव होगी। अभी कहाँ-कहाँ, अभी तक भी अधिकारी के बजाए अधीन बन जाते हो। अधीनता की निशानी क्या दिखाई देती? जो बार-बार कहते हैं मेरे संस्कार हैं, चाहते नहीं हैं लेकिन मेरे संस्कार हैं, मेरी नेचर है। बापदादा ने पहले भी सुनाया कि जिस समय यह कहते हैं कि मेरे संस्कार हैं, मेरी नेचर है, क्या यह कमज़ोरी के संस्कार आपके संस्कार हैं? मेरे हैं? यह तो रावण के मध्य के संस्कार हैं, रावण की देन है। उसको मेरा कहना ही रांग है। आपके संस्कार तो जो बाप के संस्कार हैं वही संस्कार हैं। उस समय सोचो कि मेरा-मेरा कहके मेरे हैं, तो वह अधिकारी बन गये हैं और आप अधीन बन जाते हैं। समान बाप जैसे बनना है तो मेरे संस्कार नहीं, जो बाप के संस्कार वह मेरे संस्कार। बाप के संस्कार क्या हैं? विश्व कल्याणकारी, शुभ भावना, शुभ कामनाधारी। तो उस समय बाप के संस्कार सामने लाओ, लक्ष्य है बाप समान बनने का और लक्षण रहे हुए हैं रावण के। तो मिक्स हो जाते हैं, कुछ अच्छे बाप के, कुछ वह मेरे पास्ट के संस्कार। इसीलिए दोनों मिक्स रहते हैं ना तो खिटखिट होती रहती है। और संस्कार बनते कैसे हैं? वह तो सभी जानते हैं ना! संस्कार मन और बुद्धि के संकल्प और कार्य से संस्कार बनते हैं। पहले मन संकल्प करता, बुद्धि सहयोग देती और अच्छे या बुरे संस्कार बन जाते।

तो बापदादा ने दादी के साथ-साथ रिजल्ट में देखा कि मालिकपन का नेचुरल और नचर का नशा रहे वह बालकपन की भेंट में अभी भी कम है। इसीलिए बापदादा देखते हैं कि समाधान करने के लिए फिर युद्ध करने लग पड़ते हैं। हैं ब्राह्मण लेकिन बीच-बीच में क्षत्रिय बन जाते हैं। तो क्षत्रिय नहीं बनना है। ब्राह्मण सो देवता बनना है।

क्षत्रिय बनने वाले तो बहुत आने वाले हैं, वह पीछे आने वाले हैं आप तो अधिकारी आत्मायें हैं। तो सुना रिजल्ट। इसलिए बारबार मैं कौन, यह स्मृति में लाओ। है ही, नहीं लेकिन स्मृति स्वरूप में लाओ। ठीक है ना। अच्छा। रिजल्ट भी सुनाई। अभी समस्या का नाम, विघ्न का नाम, हलचल का नाम, व्यर्थ संकल्प का नाम, व्यर्थ कर्म का नाम, व्यर्थ सम्बन्ध का नाम, व्यर्थ स्मृति का नाम समाप्त करो और कराओ। ठीक है ना, करेंगे? करेंगे? जो दृढ़ संकल्प का हाथ उठायें, यह हाथ उठाना तो कामन हो गया है इसलिए हाथ नहीं उठवाते हैं, मन में दृढ़ संकल्प का हाथ उठाओ। मन में, शरीर का हाथ नहीं, वह बहुत देख लिया है। जब सभी का मिलकर मन से दृढ़ संकल्प का हाथ उठेगा तब ही विश्व के कोने-कोने में सभी का खुशी से हाथ उठेगा - हमारा सुखदाता, शान्तिदाता बाप आ गया।

बाप को प्रत्यक्ष करने का बीड़ा उठाया है ना! उठाया है? पक्का? टीचर्स ने उठाया है? अच्छा। पाण्डवों ने उठाया है, पक्का। अच्छा डेट फिक्स की है। डेट नहीं फिक्स है? कितना टाइम चाहिए? एक वर्ष चाहिए, दो वर्ष चाहिए? कितना वर्ष चाहिए? बापदादा ने कहा था हर एक अपने पुरूषार्थ की यथा शक्ति प्रमाण अपनी नेचुरल चलने की या उड़ने की विधि समान अपनी डेट सम्पन्न बनने की खुद ही फिक्स करो। बापदादा तो कहेगा अब करो, लेकिन यथाशक्ति अपने पुरूषार्थ अनुसार अपनी डेट फिक्स करो और समय प्रति समय उसको चेक करो कि समय प्रमाण मन्सा की स्टेज, वाचा की स्टेज, सम्बन्ध-सम्पर्क की स्टेज में प्रोग्रेस हो रहा है? क्योंकि डेट फिक्स करने से स्वत: ही अटेन्शन जाता है।

बाकी सभी की तरफ से, चारों ओर की तरफ से सन्देश भी आये हैं। ईमेल भी आये हैं। तो बापदादा के पास तो ईमेल जब तक पहुंचे उसके पहले ही पहुंच जाता है, दिल के संकल्प का ईमेल बहुत रफ्तार का होता है। वह पहले पहुंच जाता है। तो जिन्होंने भी यादप्यार, समाचार अपने स्थिति का, अपनी सेवा का भेजा है, उन सबको बापदादा ने स्वीकार किया, यादप्यार सभी ने बहुत अच्छे उमंग-उत्साह से भी भेजी है। तो बापदादा उन सभी को चाहे विदेश चाहे देश सभी को रिटर्न में यादप्यार और दिल की दुआओं सहित प्यार और शक्ति की सकाश भी दे रहे हैं। अच्छा।

सेवा का टर्न राजस्थान और इन्दौर का है:- अच्छा है, दोनों ने यज्ञ सेवा की सेवा का चांस लिया है, यह भी गोल्डन चांस लेने वाले गोल्डन चांसलर हैं। बापदादा ने देखा है कि सभी को इन्तजार रहता है कि कब हमारा टर्न सेवा का बल और सेवा का फल

मिलने का आयेगा। तो आप दोनों का तो प्रत्यक्ष फल पाने का चांस आ गया। और बापदादा ने देखा है कि हर जोन जो भी निमित्त बनते हैं वह रूचि से सेवा करते हैं क्योंकि संगमयुग में सेवा का वा हर कर्म का प्रत्यक्षफल मिलता है। अभी अभी दिल से सेवा की और अभी अभी ही दिल की खुशी में नाचते रहते हैं। तो जब भी जितने दिन भी मधुबन में चांस मिला है तो सभी ने हर समय मन की खुशी का डांस का अनुभव किया? और डांस तो कामन है, लेकिन आपके मन की डांस, माइंड डांस, पांव की डांस नहीं, अनुभव किया है ना! मन की खुशी की डांस का अनुभव किया? हाथ उठाओ जिन्होंने किया, थकावट तो नहीं हुई ना। अथकपन का अनुभव किया ना। और पुण्य कितना जमा किया? लोग तो एक ब्राह्मण को खिलाते हैं, सेवा करते हैं तो समझते हैं बड़ा पुण्य जमा हो गया। और आपने कितने ब्राह्मणों को खिलाया, सम्भाला, क्लास कराया, रिफ्रेश किया, तो आपके पुण्य का खाता कितना जमा हो गया! और सबसे खुशी की बात तो यह है कि अपना ब्राह्मण परिवार एक समय में एक साथ कितने बड़े परिवार को देखा। और विश्व के चारों ओर के भाई बहिनें अपना ईश्वरीय परिवार देखने का चांस मधुबन में ही मिलता है। विदेश से भी आते, देश से भी आते हैं। इतना बड़ा परिवार का मिलन यह भी एक विशेष खुशी की बात है। दिल में उमंग आता है ना वाह बाबा और वाह मेरा ब्राह्मण परिवार! तो बहुत अच्छा किया, हिम्मत आपकी, मदद मधुबन निवासियों की और बाप की। क्योंकि मधुबन निवासी भी साथी बनते हैं तब तो कार्य कर सकते हो। तो लाटरी ले ली। लाटरी की मुबारक हो। अच्छा है। टीचर्स को भी चांस मिलता, परिवार वालों को भी चांस मिलता, छोटे बड़े साथी टीचर्स को भी चांस मिलता। देखो कितनी टीचर्स आई हैं? दोनों जोन कीकितनी टीचर्स आई हैं? (350 दोनों जोन की टीचर्स आई हैं) अच्छा है, तो मुबारक तो है ही और आगे भी चांस लेते रहना। बाकी दोनों में एक साल में हर एक जोन बताये तो वारिस कितने निकाले? जोन हेड कौन है? हाथ उठाओ। तो सारे जोन में कितने वारिस निकले, कितने माइक निकले? लिस्ट निकाली है? चुप हो गये क्यों? अभी वारिस क्वालिटी एक साल में तो निकलनी चाहिए ना! क्योंकि हर साल के बाद जोन को चांस मिलता है। ठीक है ना! एक साल में कुछ तो वारिस या माइक निकलने चाहिए ना! बोलो ना हाँ जी। ऐसे ही हाँ जी नहीं। लिस्ट चाहिए। अच्छा अगले साल निकालकर आना। अभी तैयार कर रहे होंगे, फिर लिस्ट ले आना। अभी जिसका भी जोन का टर्न होगा इनएडवांस बापदादा कह रहे हैं कि हर जोन से यह दोनों रिजल्ट

लेंगे। पहले ही तैयारी करके आना। कितने माइक निकले और कितने वारिस निकले? पहले वाले हैं वह तो लक्की और लवली हैं, अभी कितने निकले? ठीक है ना? रिजल्ट निकलनी चाहिए ना? बापदादा ने अभी तक हर विंग द्वारा भी वारिस या माइक की लिस्ट नहीं देखी है। हर साल विंग मिलते हैं, बापदादा खुश भी होते हैं लेकिन रिजल्ट अभी तक नहीं आई है। यह विंग्स का प्रोग्राम कितने साल से चल रहा है? कितने साल हुए हैं? (22 साल) तो 22 साल में हर साल में एक तो निकलना चाहिए। लिस्ट नहीं आई है। एक विंग की भी लिस्ट नहीं आई है। तो अच्छा है, आप लोगों ने दिल से सेवा की है इसीलिए दिलाराम बाप की तरफ से बहुत-बहुत-बहुत दिल की दुआयें हैं। अच्छा। दूसरे वर्ष के लिए तैयारी करके आना।

डबल विदेशी:- डबल विदेशी चतुर बहुत हैं। हर टर्न में अपना अच्छा अधिकार रखा है। बापदादा को और सभी ब्राह्मण परिवार को खुशी होती है कि बापदादा का संगठन इन्टरनेशनल संगठन है। अच्छी हिम्मत करके आते हैं। सबसे ज्यादा ग्रुप कहाँ का है? (मलेशिया से 61 आये हैं) अच्छा है, जितना बड़ा ग्रुप है ना, उतनी बड़ी बड़ी बड़ी मुबारक हो। अच्छा है फारेन का विशेष गायन है कि वहाँ की लाइफ फास्ट लाइफ होती है तो जो डबल विदेशी ब्राह्मण परिवार के बन गये उनका भी फास्ट पुरूषार्थ है? जब देश की फास्ट लाइफ है तो ब्राह्मण परिवार की फास्ट पुरूषार्थ की लाइफ है? फास्ट है या स्लो है? फास्ट है? हाँ या ना कहो। जिसकी फास्ट है वह हाथ उठाओ। आधा है, आधा नहीं है। अभी अगले वर्ष जब आओ ना, आना ही पड़ेगा ना। तो इस साल में लक्ष्य रखो कि पुरूषार्थी तो हैं लेकिन पुरूषार्थ के आगे तीव्र शब्द एड कर दो। पुरूषार्थी बनना कामन है, तीव्र पुरूषार्थी बनना विशेष है। तो आप सभी विशेष आत्मायें हो, साधारण थोड़ेही हो, विशेष हो। तो विशेष आत्माओं की पहली निशानी है तीव्र पुरूषार्थी। सोचा और किया। ऐसे नहीं करेंगे, हो जायेगा... होना तो है ही.. नहीं। करना ही है। उड़ना ही है। बाप समान बनना ही है, इसको कहते हैं तीव्र पुरूषार्थी। तो क्या करेंगे? तीव्र पुरूषार्थ है ना! अभी समय तीव्र समीप आ रहा है। समय में तीव्रता आ गई है लेकिन दु:ख के अशान्ति के समय को समाप्त करने वाले, उन्हों को तो समय से भी तीव्र बनना ही है। फिर भी अच्छे हैं, लगन है, पहुंच गये हो, उसकी मुबारक है। अच्छा। तीव्र पुरूषार्थी? ठीक है, जो कहते हैं हाँ, वह हाथ उठाओ। साधारण पुरूषार्थ नहीं, तीव्र पुरूषार्थ? कि बीच बीच में साधारण पुरूषार्थ करेंगे? साधारण नहीं सदा तीव्र पुरूषार्थ। बस मालिकपन का नशा हर समय चेहरे से

ही दिखाई दे। मुख से भी ज्यादा चेहरा बोलता है। तो बहुत अच्छा, अगले साल रिजल्ट देखेंगे। अच्छा। बैठ जाओ, बहुत-बहुत मुबारक हो।

धार्मिक विंग, सोशल विंग और ट्रांसपोर्ट विंग मीटिंग के लिए आये हैं:- समाज सेवा में कोई न कोई सेवा का साधन लोगों को देते हैं, कुछ न कुछ सेवा करते हैं। तो समाज सेवा वाले यही लक्ष्य रखो जो भी आत्मायें सम्पर्क में आती हैं उनको कोई न कोई गुण, कोई न कोई ज्ञान की प्वाइंट, कोई न कोई खज़ाना, जो बाप से मिला है, वह देना है। यह सोशल सेवा हर एक की करनी है, खाली हाथ कोई न जाए, कुछ लेकर ही जाये क्योंकि दाता के बच्चे हैं, कैसे भी लोगों को चाहे किसी साधन द्वारा, चाहे डायरेक्ट कनेक्शन द्वारा लेकिन कुछ न कुछ देना है। यह सोशल सेवा, आध्यात्मिक सेवा चारों ओर फैलानी है, चाहे किसी भी विधि से, जो हर एक के मुख से निकले कि हमें बहुत अच्छी सेवा का साधन मिला। बहुत अच्छी प्राप्ति कराई। आजकल बहुत प्यासी भी हैं, तो कुछ न कुछ प्राप्ति कराके भरपूर बनाओ। अच्छा।

एक बात जो बापदादा ने फिर से कही, लिस्ट आनी चाहिए। एक भी विंग की लिस्ट नहीं आई है। और उन्हों की जो आप लिस्ट लिखो, उसमें उनकी प्राप्ति का अनुभव भी शार्ट में साथ में हो। जैसे यहाँ कहकर जाते हैं ना बहुत प्राप्ति हुई बहुत मिला। लेकिन जो प्राप्ति हुई वह इकट्ठा रहा, उसको बढ़ाया? बापदादा ने देखा है जो भी विंग्स है, चाहे ट्रांसपोर्ट का है चाहे धार्मिक है। लेकिन जब प्रोग्राम करते हैं कनेक्शन में आते हैं, उनसे लगातार कनेक्शन में रखते रहें, वह नहीं होता है। जब फिर प्रोग्राम होगा तब पत्र भेजेंगे, निमन्त्रण भेजेंगे, फिर से आओ। बापदादा ने एक फारेन का समाचार सुना है, जो कॉल ऑफ टाइम का प्रोग्राम करते हैं, उसमें जो भी आते हैं, अच्छा लगता है, 7जिज्ञासा उठती है, कनेक्शन होता है तो उन्हें रिलेशन में लाने के लिए समय प्रति समय लगातार हर सप्ताह कुछ न कुछ भेजते रहते हैं। ऐसे आप पीठ नहीं करते हो, 6 मास, साल के बाद वह याद आ गया तो आ गया, कनेक्शन हो गया तो हो गया। लेकिन हर एक की एड्रेस प्रमाण उनको कुछ न कुछ सप्ताह में भेजना चाहिए, जिससे उन्हों की पालना होती रहे, बिना पालना के वृक्ष भी नहीं बड़ा होता। तो यह करना चाहिए। हर एक विंग को, सिर्फ प्रोग्राम नहीं, प्रोग्रेस भी उन्हों की करानी चाहिए। नजदीक आते जायें। और रिजल्ट अपने पास रखते रहो। इस वर्ष में कितने नजदीक रिलेशन में आये? समझा, सुना ना। अच्छा है फारेन का रिजल्ट अच्छा है | यह भी करते होंगे लेकिन बापदादा के पास रिजल्ट नहीं आई है। बाकी अच्छा है जब यह

वर्गो की सेवा हुई है, तो कनेक्शन में बहुत आये हैं और परिवर्तन भी हुआ है, पहले बुलाना पड़ता था अभी बिना बुलाये भी आने चाहते हैं, फर्क तो है। लेकिन इसकी रिजल्ट सारे परिवार को पता होना चाहिए। एक दो की रिजल्ट से उमंग आता है। और एक का सुनके दूसरे को आता है, हम भी कर सकते हैं, हिम्मत भी आती है। बाकी बापदादा खुश है कि वर्गो की डिपार्टमेंट बनने से भिन्न भिन्न प्रकार की भिन्न भिन्न वर्गो की सेवा बढ़ती जा रही है इसलिए सभी वर्ग वालों को सेवा की मुबारक भी है और आगे बढ़ने का और भी साधन करेंगे तो प्रत्यक्ष फल दिखाई देगा। आखिर तो सभी वर्ग वाले मिलकरके कहें हम सब एक बाप के एक हैं। इस विश्व की स्टेज पर एक है, एक मत हैं, एक के ही हैं। यह आवाज फैले। धार्मिक लोग भी कहें हम एक हैं। एक के हैं। बाकी सेवा की है उसकी मुबारक। अच्छा।

कैड ग्रुप भी आया है:- इसमें ब्राह्मण भी हैं, फायदा उठाया है? तो दिल वालों ने दिलाराम को तो पहचान लिया। इसीलिए दिलाराम को पहचाना तो दिल खुश हो गई और अच्छा है जितना-जितना आप साथ वालों को अनुभवसुनायेंगे, उतना यह सेवा फैलती जायेगी। क्योंकि प्रत्यक्ष प्रमाण है ना। आप स्वयं ही प्रत्यक्ष प्रमाण है तो कोई भी प्रत्यक्ष प्रमाण देख करके जल्दी खुश हो जाते हैं। हिम्मत आती है। तो अपना अनुभव जो भी सम्पर्क में आये वा सम्पर्क करके भी फैलाते जाओ। क्योंकि आवश्यकता तो है। गरीबी बढ़ती जाती है और गरीबी के समय अगर सहज साधन मिल जाए तो सभी खुश होते हैं। तो अच्छा है। समय प्रति समय करते भी रहते हैं और आगे भी करते चलो। अच्छा। मुबारक हो। अच्छा |

ट्रेनिंग में आई हुई टीचर्स से:- ट्रेनिंग तो की, बहुत अच्छा किया लेकिन ट्रेनिंग करने के बाद दिल में स्टैम्प कितनी पक्की लगाई? क्या सदा निर्विघ्न बन औरों को भी निर्विघ्न बनाती रहेंगी? यह वायदा किया? निर्विघ्न रहेंगी? कि थोड़ा थोड़ा बीच में विघ्न आयेगा? अच्छा आ भी जाए तो परिवर्तन करने की शक्ति विघ्न को, समस्या को समाधान के रूप में परिवर्तन करने की शक्ति अनुभव करते हो? जो समझते हैं कि परिवर्तन की शक्ति कार्य में लगाके बापदादा को या जिन टीचर्स ने सेवा की, उसको सबूत दिखायेंगे ऐसी हिम्मत रखने वाले हाथ उठाओ। दिल का हाथ उठाया है ना! कुछ भी हो जाए, सी फादर। औरों की विशेषता को देखना लेकिन फॉलो फादर। अच्छा। कितने हैं ग्रुप में? (70 बहिने हैं) तो आप सभी अपनी टीचर द्वारा मधुबन में रिजल्ट लिखते रहना, बार बार नहीं लिखना, 15 दिन में टीचर द्वारा ओ.के. लिखना, बस।

छोटा सा कार्ड भेजना, लम्बा पत्र नहीं भेजना। सुनाया था ना - अगर कोई कमज़ोरी आ भी जाए तो सिर्फ ओ.के.के बीच में लाइन लगा देना। तो यहाँ से फिर आपको याद दिलाते रहेंगे। अभी 70 तो निर्विघ्न आत्मायें बन गई ना और निर्विघ्न बनायेंगी भी। जहाँ भी जायेंगी वहाँ निर्विघ्न बन निर्विघ्न बनायेंगी। है ना हिम्मत? हिम्मत है? अच्छा। रिजल्ट देखना। रिपोर्ट आती जायेगी ना तो पता पड़ता जायेगा। अच्छा। सब कुछ सुना। जैसे सुनना सहज लगता है ना! ऐसे ही सुनने से परे स्वीट साइलेन्स की स्थिति भी जब चाहो जितना समय चाहो उतना समय मालिक होके, पहले विशेष है मन के मालिक, इसीलिए कहा जाता है, मन जीते जगतजीत। तो अभी सुना, देखा, आत्मा राजा बन मन बुद्धि संस्कार को अपने कन्ट्रोल में कर सकते हो? मन-बुद्धि-संस्कार तीनों के मालिक बन ऑर्डर करो स्वीट साइलेन्स, तो अनुभव करो कि आर्डर करने से, अधिकारी बनने से तीनों ही आर्डर में रहते हैं? अभी-अभी अधिकारी की स्टेज पर स्थित हो जाओ। अच्छा।

चारों ओर के सदा स्वमानधारी, सत्यता के शक्ति स्वरूप, पवित्रता के सिद्धि स्वरूप, सदा अचल अडोल स्थिति के अनुभवी स्व परिवर्तक और विश्व परिवर्तक, सदा अधिकारी स्थिति द्वारा सर्व आत्माओं को बाप द्वारा अधिकार दिलाने वाले चारों तरफ के बापदादा के लकी और लवली आत्माओं को परमात्म यादप्यार और दिल की दुआयें स्वीकार हो और बापदादा का मीठे मीठे बच्चों को नमस्ते।

दादियों से:- अच्छा है बापदादा ने रिजल्ट देखी। अच्छा रहा। शुभचिंतन और शुभचिंतक दोनों ही स्थिति में बिजी रहना, वायुमण्डल फैलाना यह अच्छा है। अच्छा कर रही हैं। अच्छा कर रहे हैं करते रहेंगे। मैजारिटी दिखा गया है कि जो आप निमित्त हैं, सब निमित्त हैं, तो जो भी आप निमित्त हैं, उन्हों को विशेष इस समय यह अटेन्शन रखना है कि सन्तुष्ट रहना तो है ही लेकिन सन्तुष्ट रहे, वायुमण्डल सन्तुष्ट रहे, उसके लिए आपस में कोई न कोई प्लैन बनाते रहना। यह तीन पाण्डव भी आवें। जो भी निमित्त बने हुए हैं उन्हों को आजकल के वायुमण्डल प्रमाण स्वयं तो सन्तुष्ट रहना ही है लेकिन सन्तुष्ट करना भी है। असन्तुष्टता का वायुमण्डल में प्रभाव नहीं हो क्यां कि आजकल सन्तुष्टता सबको चाहिए। लेकिन हिम्मत नहीं है। इसीलिए बीच-बीच में कुछ न कुछ ऐसा परवश होके कर लेते हैं लेकिन उन्हों को भी कुछ शिक्षा, कुछ क्षमा, कुछ रहम, कुछ आत्मिक स्नेह उसकी आवश्यकता है और देखा जाता है कि वायुमण्डल में मैजारिटी को बैलेन्स रखना नहीं आता। बैलेन्स से शिक्षा भी हो और

फिर साथ-साथ उनको हिम्मत भी दो। सिर्फ शिक्षा से, अभी सभी शिक्षक बन गये हैं, इसीलिए शिक्षा के साथ हिम्मत और स्नेह दिल का, बाहर का नहीं लेकिन दिल का स्नेह दोनों का बैलेन्स रख करके देना है। और ऐसे प्लैन बनाओ जो चारों ओर कोई न कोई ऐसा प्लैन चलता रहे। जैसे समय प्रति समय भट्टियाँ चलाते हो वह तो चलाते ही रहो लेकिन छोटा मोटा प्रोग्राम सदा चलता रहे, तो ऐसी विधि निकालो जिससे चारों ओर का वायुमण्डल शक्तिशाली बनें। चाहना है लेकिन हिम्मत कम है। तो आपस में मिलके कोई न कोई हर मास के लिए ऐसा वर्क निकालो जो सभी उसमें बिजी हो जाएं, रिजल्ट आती रहे। और चेकिंग भी हो, अगर नहीं करते हैं तो क्यों? अलबेलापन है तो उनके ऊपर स्नेह से सहयोग देना पड़ेगा क्योंकि समय तीव्रता से समीप आ रहा है। तो ऐसा कोई प्लैन बनाओ। कोई न कोई वर्क इन्ट्रेस्ट का निकालके सबको बिजी रखो उसमें। ठीक है। अच्छा है सभी हिम्मत वाले हो ना। हिम्मत कम तो नहीं होती? हिम्मत कम होती है, तो बाप की मदद का भी अनुभव नहीं होता है, बाप मदद देता है, लेकिन कैच नहीं कर पाते हैं। फायदा नहीं उठा सकते हैं। इसीलिए सदा अपने को देखो, हिम्मत बढ़ाओ। कोई न कोई ऐसी बात बुद्धि में रखो जिससे हिम्मत बढ़ती रहे। जितनी हिम्मत बढ़ेगी ना तो हिम्मत के आगे और बातें आनी भी कम हो जायेंगी। अच्छा है, सोचना इस पर।

सन्देशी दादी ने शरीर छोड़ा है, उनके प्रति भोग लगाने के लिए भुवनेश्वर से ग्रुप आया है:- बापदादा की बहुत रमणीक बच्ची कहें, या सखी कहें जो सन्देशी, इस शरीर को छोड़ करके एडवांस पार्टी में गई, अपने जीवन का बापदादा से साकार में फायदा भी बहुत अच्छा उठाया, सखीपन का पार्ट भी बजाया, खेलने वाली बनी, और अपने स्मृति से अपना भविष्य बनाया। अभी जो आये हैं साथी बनके, वह उठो। जो भी आये हैं। अच्छा है। प्यार का सबूत तो दिया ना। अभी आगे भी प्यार का सबूत है, सभी को सन्तुष्ट रहके सन्तुष्ट करना। हिम्मतहीन को हिम्मत देना। नम्बरवार तो होते ही हैं ना। तो हिम्मत देते रहना। उमंग-उल्हास बढ़ाते रहना। सिर्फ याद नहीं करना, लेकिन उसकी पालना का प्रत्यक्ष सबूत देना। बाकी अच्छा पार्ट बजाया। आप सभी भी अच्छे ते अच्छा पार्ट बजाते रहना और बजायेंगे। सभी ठीक हैं! हाथ हिलाओ। अच्छा।

दादी जानकी बापदादा को भोग स्वीकार करा रही हैं बापदादा बोले:- देखो अच्छी दादियां मिली हैं ना! यह सब साथी भी हैं, दादियों की साथी भी हैं, दादियां भी हैं। तो सदा हर दादी की, हर साथियों की विशेषता को देख, विशेषता को कार्य में लाना

क्योंकि बापदादा ने हर एक बच्चे को कोई न कोई विशेषता स्पेशल दी है, आप सबको भी है, ऐसे नहीं सिर्फ दादियों को है, आपको भी है लेकिन क्या है कोई विशेषता को कार्य में ला रहा है इसलिए वह प्रसिद्ध हो जाता और कोई विशेषता को कार्य में नहीं लाता तो गुप्त रह जाता। बाकी विशेषता सबमें है। छोटे से छोटा जो प्यादे में प्यादा है ना उसमें भी विशेषता है। वह भी स्मृति दिलाता है कि आप महारथी हो, आप महान हो हम प्यादे हैं। इसलिए संगठन सभी जगह मजबूत करो, चाहे दो हैं चाहे 4 हैं, चाहे 12 हैं, लेकिन दो का भी संगठन ऐसा मजबूत हो जो दोनों एकमत हों। स्वभाव एक दो में श्रेष्ठ बनाए, मिलाने की कोशिश करो। जैसे दादी को याद करते हैं ना, क्यों याद करते हो? उसकी विशेषता सबको अपनापन दिया है ना, ऐसे सभी को अपनापन दिया ना, तो क्यों आप सभी नहीं कर सकते हो? जैसे सभी ने अनुभव किया, हमारी दादी है। ऐसे नहीं मधुबन की दादी है, हमारी है, ऐसे सभी ब्राह्मण एक दो में अपनापन अनुभव करें। यह है दादी को याद करना। इसी को ही याद कहा जाता है। समान बनना, विशेषता धारण करना, इसको कहते हैं याद। ठीक है ना! हर एक यही सोचोसब अपने हैं। अपनापन महसूस हो, ऐसे नहीं यह तो पता नहीं कौन है, क्या है। एक परिवार है ना! दादी भी सभी सेन्टर पर तो नहीं रहती थी ना, एक ही स्थान पर रहती थी मधुबन में, लेकिन सभी को अपनापन दिया। तो आप सभी भी अपने अपने स्थान पर रहते भी अपनापन दे सकते हो। यह दिल की स्थिति है। साथ रहने की बात नहीं है, यह दिल का वायब्रेशन अपनापन लाता है। अच्छा।

02-02-2008 "सम्पूर्ण पवित्रता द्वारा रूहानी रॉयल्टी और पर्सनालिटी का अनुभव करते, अपने मास्टर ज्ञान सूर्य स्वरूप को इमर्ज करो"

आज बापदादा चारों ओर के अपने रॉयल्टी और पर्सनालिटी के परिवार को देख रहे हैं। यह रॉयल्टी वा रूहानी पर्सनालिटी का फाउण्डेशन है सम्पूर्ण प्युरिटी। प्युरिटी की निशानी सभी के मस्तक में, सभी के सिर पर लाइट का ताज चमक रहा है। ऐसे चमकते हुए ताजधारी रूहानी रॉयल्टी, रूहानी पर्सनालिटी वाले सिर्फ आप ब्राह्मण परिवार ही हैं क्योंकि प्युरिटी को अपनाया है। आप ब्राह्मण आत्माओं की प्युरिटी का प्रभाव आदिकाल से प्रसिद्ध है। याद आता है अपना अनादि और आदिकाल! याद करो अनादिकाल में भी आप प्युअर आत्मायें आत्मा रूप में भी विशेष चमकते हुए सितारे, चमकते रहते हैं और भी आत्मायें हैं लेकिन आप सितारों की चमक सबके साथ होते भी विशेष चमकती है। जैसे आकाश में सितारे अनेक होते हैं लेकिन कोई कोई सितारे स्पेशल चमकने वाले होते हैं। देख रहे हो सभी अपने को, फिर आदिकाल में आपके प्युरिटी की रॉयल्टी और पर्सनालिटी कितनी महान रही है! सभी पहुंच गये आदिकाल में? पहुंच जाओ। चेक करो मेरी चमकने की रेखा कितनी परसेन्ट में है? आदिकाल से अन्तिम काल तक आपके प्युरिटी की रॉयल्टी, पर्सनालिटी सदा रहती है। अनादि काल का चमकता हुआ सितारा, चमकते हुए बाप के साथ-साथ निवास करने वाले। अभी-अभी अपनी विशेषता अनुभव करो। पहुंच गये सब अनादिकाल में? फिर सारे कल्प में आप पवित्र आत्माओं की रॉयल्टी भिन्न-भिन्न रूप में रहती है क्योंकि आप आत्माओं जैसा कोई सम्पूर्ण पवित्र बने ही नहीं हैं। पवित्रता का जन्म सिद्ध अधिकार आप विशेष आत्माओं को बाप द्वारा प्राप्त है। अभी आदिकाल में आ जाओ। अनादिकाल भी देखा, अब आदिकाल में आपके पवित्रता की रॉयल्टी का स्वरूप कितना महान है! सभी पहुंच गये सतयुग में। पहुंच गये! आ गये? कितना प्यारा स्वरूप देवता रूप है। देवताओं जैसी रॉयल्टी और पर्सनालिटी सारे कल्प में किसी भी आत्मा की नहीं है। देवता रूप की चमक अनुभव कर रहे हो ना! इतनी रूहानी पर्सनालिटी, यह सब पवित्रता की प्राप्ति है। अभी देवता रूप का

अनुभव करते मध्यकाल में आ जाओ। आ गये? आना अनुभव करना सहज है ना। तो मध्यकाल में भी देखो, आपके भक्त आप पूज्य आत्माओं की पूजा करते हैं, चित्र बनाते हैं। कितने रॉयल्टी के चित्र बनाते और कितनी रॉयल्टी से पूजा करते। अपना पूज्य चित्र सामने आ गया है ना! चित्र तो धर्मात्माओं के भी बनते हैं। धर्म पिताओं के भी बनते हैं, अभिनेताओं के भी बनते हैं लेकिन आपके चित्र की रूहानियत और विधि पूर्वक पूजा में फर्क होता है। तो अपना पूज्य स्वरूप सामने आ गया! अच्छा फिर आओ अन्तकाल संगम पर, यह रूहानी ड्रिल कर रहे हो ना! चक्कर लगाओ और अपने प्युरिटी का, अपनी विशेष प्राप्ति का अनुभव करो। अन्तिमकाल संगम पर आप ब्राह्मण आत्माओं का परमात्म पालना का, परमात्म प्यार का, परमात्म पढ़ाई का भाग्य आप कोटों में कोई आत्माओं को ही मिलता है। परमात्मा की डायरेक्ट रचना, पहली रचना आप पवित्र आत्माओं को ही प्राप्त होती है। जिससे आप ब्राह्मण ही विश्व की आत्माओं को भी मुक्ति का वर्सा बाप से दिलाते हो। तो यह सारे चक्कर में अनादिकाल, आदिकाल, मध्यकाल और अन्तिमकाल सारे चक्र में इतनी श्रेष्ठ प्राप्ति का आधार पवित्रता है। सारा चक्कर लगाया अभी अपने को चेक करो, अपने को देखो, देखने का आइना है ना! अपने को देखने का आइना है? जिसको है वह हाथ उठाओ। आइना है, क्लीयर है आइना? तो आइने में देखो मेरी पवित्रता का कितना परसेन्ट है? पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन ब्रह्माचारी। मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें पवित्रता है? कितनी परसेन्ट में है? परसेन्टेज निकालने आती है ना! टीचर्स को आती है? पाण्डवों को आती है? अच्छा होशियार हो। माताओं को आती है? आती है माताओं को? अच्छा। पवित्रता की परख है - वृत्ति, दृष्टि और कृति तीनों में चेक करो, सम्पूर्ण पवित्रता की जो वृत्ति होगी, वह आ गई ना बुद्धि में। सोचो, सम्पूर्ण पवित्रता की वृत्ति अर्थात् हर आत्मा के प्रति शुभभावना, शुभकामना। अनुभवी हो ना! और दृष्टि क्या होगी? हर आत्मा को आत्मा रूप में देखना। आत्मिक स्मृति से बोलना, चलना। शार्ट में सुना रहे हैं। डिटेल तो आप भाषण कर सकते हैं और कृति अर्थात् कर्म में सुख लेना सुख देना। यह चेक करो - मेरी वृत्ति, दृष्टि, कृति इसी प्रमाण है? सुख लेना, दु:ख नहीं लेना। तो चेक करो कभी दु:ख तो नहीं ले लेते हो! कभी कभी थोड़ा-थोड़ा? दु:ख देने वाले भी तो होते हैं ना। मानों वह दु:ख देता है तो क्या आपको उसको फॉलो करना है! फॉलो करना है कि नहीं? फॉलो किसको करना है? दु:ख देने वाले को वा बाप को? बाप ने, ब्रह्मा बाप ने निराकार की तो बात

है ही, लेकिन ब्रह्मा बाप ने किसी बच्चे का दु:ख लिया? सुख दिया और सुख लिया। फॉलो फादर है या कभी-कभी लेना ही पड़ता है? नाम ही है दु:ख, जब दु:ख देते हैं, इनसल्ट करते हैं, तो जानते हो कि यह खराब चीज़ है, कोई आपकी इनसल्ट करता है तो उसको आप अच्छा समझते हो? खराब समझते हो ना! तो वह आपको दु:ख देता है या इनसल्ट करता है, तो खराब चीज़ अगर आपको कोई देता है, तो आप ले लेते हो? ले लेते हो? थोड़े समय के लिए, ज्यादा समय नहीं थोड़ा समय? खराब चीज़ लेनी होती है? तो दु:ख या इनसल्ट लेते क्यों हो? अर्थात् मन में फीलिंग के रूप में रखते क्यों हो? तो अपने से पूछो हम दु:ख लेते हैं? या दु:ख को परिवर्तन के रूप में देखते हैं? क्या समझते हो पहली लाइन। दु:ख लेना राइट है? है राइट? मधुबन वाले राइट है? थोड़ा थोड़ा ले लेना चाहिए? पहली लाइन, दु:ख ले लेना चाहिए ना! नहीं लेना चाहिए लेकिन ले लेते हो। गलती से ले लेते हो। यह दु:ख की फीलिंग, परेशान कौन होता? मन में किचड़ा रखा तो परेशान कौन होगा? जहाँ किचड़ा होगा वहाँ ही परेशान होंगे ना! तो उस समय अपने रॉयल्टी और पर्सनालिटी को सामने लाओ और अपने को किस स्वरूप में देखो? जानते हो आपका क्या टाइटल है? आपका टाइटल है सहनशीलता की देवी, सहनशीलता का देव। तो आप कौन हो? सहनशीलता की देवियां हो, सहनशीलता के देव हो? कि नहीं? कभी-कभी हो जाते हैं। अपना पोजीशन याद करो, स्वमान याद करो। मैं कौन! यह स्मृति में लाओ। सारे कल्प के विशेष स्वरूप की स्मृति को लाओ। स्मृति तो आती है ना!

बापदादा ने देखा कि जैसे मेरा शब्द को सहज याद में परिवर्तन किया है। तो मेरा के विस्तार को समेटने के लिए क्या कहते हो? मेरा बाबा। जब भी मेरा मेरा आता तो मेरा बाबा में समेट लेते हो। और बार-बार मेरा बाबा कहने से याद भी सहज हो जाती है और प्राप्ति भी ज्यादा होती है। ऐसे ही सारे दिन में अगर किसी भी प्रकार की समस्या या कारण आता है, उसके यह दो शब्द विशेष हैं - मैं और मेरा। तो जैसे बाबा शब्द कहते ही मेरा शब्द पक्का याद हो गया है। हो गया है ना? सभी अभी बाबा बाबा नहीं कहते, मेरा बाबा कहते हैं। ऐसे ही यह जो मैं शब्द है, इसको भी परिवर्तन करने के लिए जब भी मैं शब्द बोलो तो अपने स्वमान की लिस्ट सामने लाओ। मैं कौन? क्योंकि मैं शब्द गिराने के निमित्त भी बनता और मैं शब्द स्वमान की स्मृति से ऊंचा भी उठाता है। तो जैसे मेरा बाबा का अभ्यास हो गया है, ऐसे ही मैं शब्द को बॉडीकान्सेसनेस की स्मृति के बजाए अपने श्रेष्ठ स्वमान को सामने लाओ। मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, तख्तनशीन

आत्मा हूँ, विश्व कल्याणी आत्मा हूँ, ऐसे कोई न कोई स्वमान मैं से जोड़ लो। तो मैं शब्द उन्नति का साधन हो जाए। जैसे मेरा शब्द अभी मैजारिटी बाबा शब्द याद दिलाता है क्योंकि समय प्रकृति द्वारा अपनी चैलेन्ज कर रहा है।

समय की समीपता को कामन बात नहीं समझो। अचानक और एवररेडी शब्द को अपने कर्मयोगी जीवन में हर समय स्मृति में रखो। अपने शान्ति की शक्ति का स्वयं प्रति भी भिन्न-भिन्न रूप से प्रयोग करो। जैसे साइन्स अपना नया-नया प्रयोग करती रहती है। जितना स्व के प्रति प्रयोग करने की प्रैक्टिस करते रहेंगे उतना ही औरों प्रति भी शान्ति की शक्ति का प्रयोग होता रहेगा। अभी विशेष अपने शक्तियों की सकाश चारों ओर फैलाओ। जब आपकी प्रकृति सूर्य की शक्ति, सूर्य की किरणें अपना कार्य कितने रूप से कर रहा है। पानी बरसाता भी है, पानी सुखाता भी है। दिन से रात, रात से दिन करके दिखाता है। तो क्या आप अपने शक्तियों की सकाश वायुमण्डल में नहीं फैला सकते? आत्माओं को अपनी शक्तियों की सकाश से दु:ख अशान्ति से नहीं छुड़ा सकते! ज्ञान सूर्य स्वरूप को इमर्ज करो। किरणें फैलाओ, सकाश फैलाओ। जैसे स्थापना के आदिकाल में बापदादा के तरफ से अनेक आत्माओं को सुख-शान्ति की सकाश मिलने का घर बैठे अनुभव हुआ। संकल्प मिला जाओ। ऐसे अब आप मास्टर ज्ञान सूर्य बच्चों द्वारा सुख-शान्ति की लहर फैलाने की अनुभूति होनी चाहिए। लेकिन वह तब होगी, इसका साधन है मन की एकाग्रता। याद की एकाग्रता। एकाग्रता की शक्ति को स्वयं में बढ़ाओ। जब चाहो जैसे चाहो जब तक चाहो तब तक मन को एकाग्र कर सको। अभी मास्टर ज्ञान सूर्य के स्वरूप को इमर्ज करो और शक्तियों की किरणें, सकाश फैलाओ।

बापदादा ने सुना और खुश है कि बच्चे सेवा के उमंग-उत्साह में जगह-जगह पर सेवा अच्छी कर रहे हैं, बापदादा के पास सेवा के समाचार सब तरफ के अच्छे अच्छे पहुंचे हैं, चाहे प्रदर्शनी करते हैं, चाहे समाचार पत्रों द्वारा, टी.वी. द्वारा सन्देश देने का कार्य बढ़ाते जाते हैं। सन्देश भी पहुंचता है, सन्देश अच्छा पहुंचा रहे हो। गांव में भी जहाँ रहा हुआ है, हर एक जोन अच्छा अपनी अपनी एरिया को बढ़ा रहा है। अखबारों द्वारा टी.वी. द्वारा भिन्न भिन्न साधनों द्वारा उमंग उत्साह से कर रहे हो। उसकी सब करने वाले बच्चों को बापदादा बहुत स्नेहयुक्त दुआओं भरी मुबारक दे रहे हैं। लेकिन अभी सन्देश देने में तो अच्छा उमंग-उत्साह है और चारों ओर ब्रह्माकुमारीज क्या है, बहुत अच्छा शक्तिशाली कार्य कर रही हैं, यह भी आवाज अच्छा फैल रहा है और बढ़ता

जा रहा है। लेकिन, लेकिन सुनायें क्या? सुनायें लेकिन... लेकिन ब्रह्माकुमारियों का बाबा कितना अच्छा है, वह आवाज अभी बढ़ना चाहिए। ब्रह्माकुमारियां अच्छा काम कर रही हैं लेकिन कराने वाला कौन हैं, अभी यह प्रत्यक्षता आनी चाहिए। बाप आया है, यह समाचार मन तक पहुंचना चाहिए। इसका प्लैन बनाओ।

बापदादा से बच्चों ने प्रश्न पूछा कि वारिस या माइक किसको कहें? माइक निकले भी हैं, लेकिन बापदादा माइक अभी के समय अनुसार ऐसा चाहते हैं या आवश्यक है जिसके आवाज की महानता हो। अगर साधारण बाबा शब्द बोल भी देते हैं, अच्छा करते हैं इतने तक भी लाया है, तो बापदादा मुबारक देते हैं लेकिन अभी ऐसे माइक चाहिए जिनके आवाज की भी लोगों तक वैल्यु हो। ऐसे प्रसिद्ध हो, प्रसिद्ध का मतलब यह नहीं कि श्रेष्ठ मर्तबे वाला हो लेकिन उसका आवाज सुनकर समझें कि यह कहने वाला जो कहता है, इसकी आवाज में वैल्यु है। अगर यह अनुभव से कहता है, तो उसकी वैल्यु हो। जैसे माइक तो बहुत होते हैं लेकिन माइक भी कोई पावर वाला कितना होता है, कोई कितना होता है, ऐसे ही ऐसा माइक ढूंढो, जिसकी आवाज में शक्ति हो। उसकी आवाज को सुनकर समझ में आवे कि यह अनुभव करके आया है तो अवश्य कोई बात है लेकिन फिर भी वर्तमान समय हर जोन, हर वर्ग में माइक निकले जरूर हैं। बापदादा यह नहीं कहते कि सेवा का प्रत्यक्ष रिजल्ट नहीं निकली है, निकली है। लेकिन अभी समय कम है और सेवा के महत्व वाली आत्मायें अभी निमित्त बनानी पड़ेंगी। जिसके आवाज की वैल्यु हो। मर्तबा भले नहीं हो लेकिन उनकी प्रैक्टिकल लाइफ और प्रैक्टिकल अनुभव की अथॉरिटी हो। उनके बोल में अनुभव की अथॉरिटी हो। समझा कैसा माइक चाहिए? वारिस को तो जानते ही हो। जिसके हर श्वांस में, हर कदम में बाप और कर्तव्य और साथ-साथ मन-वचन-कर्म, तन-मन-धन सबमें बाबा और यज्ञ समाया हुआ हो। बेहद की सेवा समाई हुई हो। सकाश ने की समर्थी हो।

अच्छा - अभी किसका टर्न है? **तामिलनाडु, ईस्टर्न और नेपाल:-** तो पहले कौन? निमित्त बंगाल, बंगाल वाले उठो। अच्छा। बंगाल वालों ने सेवा का चांस लिया है। तो इन थोड़े दिनों में अपने आपको देखा कि कर्मणा सेवा द्वारा यज्ञ सेवा के महत्व को जान, अपने अन्दर यज्ञ सेवा का पुण्य का खाता कितना जमा किया? सेवा तो वहाँ भी करते रहते हो लेकिन यज्ञ सेवा का महत्व अपना है। तो डबल सेवा की, एक कर्मणा सेवा की और दूसरी सेवा से वायुमण्डल शक्तिशाली बनाया, सन्तुष्ट करने का

बनाया, उसका भी डबल पुण्य यज्ञ सेवा का प्रत्यक्षफल भी खाया, खुशी हुई ना। खुश रहे ना बहुत सभी। तो खुशी का प्रत्यक्षफल भी मिला और भविष्य भी जमा हुआ, डबल प्राप्ति की। क्योंकि सब देख करके खुश होते हैं कि कितनी निर्विघ्न सेवा हो रही है। कितने स्नेह से सेवा हो रही है। यह वायुमण्डल फैलाना वा निमित्त बनना इसका भी बड़ा पुण्य मिलता है। तो जिसको भी चांस मिलता है वह यही समझे विशेष पुण्य का खाता जमा करने का चांस मिलाहै। तो जमा किया? हाथ हिलाओ। वर्तमान भी जमा भविष्य में भी जमा। यह साधन है डबल फल प्राप्त करने का। अच्छा है। तो बंगाल वालों ने कोई नवीनता दिखाई? कोई नया कार्य किया है? कोई इन्वेन्शन की है? की है? क्योंकि बंगाल में बाप की पधरामणी हुई है, प्रवेशता हुई है। तो नया कार्य करना है ना! कोई नई इन्वेन्शन निकालो, बापदादा ने पहले भी कहा कि अभी यह जो सेवा कर रहे हो, अच्छी कर रहे हो, बापदादा ने मुबारक दी लेकिन अभी कुछ नया निकालो। किसी भी जोन ने नया कोई प्लैन बनाया है? किसी ने भी? कि वही रिपीट कर रहे हैं? फारेन वालों ने कुछ नया निकाला? सेवा का साधन कोई नया निकालो। जो चल रहे हैं वह तो अच्छा है लेकिन और अच्छा, कोई ने भी निकाला हो वह हाथ उठाओ। कोई ने नहीं निकाला है। वर्गीकरण की सेवा भी अभी तो बहुत समय से चल रही है। अभी कुछ तो नवीनता होनी चाहिए। तो कौन, बंगाल निकालेगा? बाकी अच्छा है। बापदादा को यह अच्छा लगता है कि हर जोन को चांस मिलता है। सेवा तो वृद्धि को पा रही है, यह तो बापदादा को समाचार मिलते हैं। सेन्टर बढ़ रहे हैं, स्टूडेन्टस भी बढ़ रहे हैं, यह तो है। लेकिन कम खर्चा बालानशीन, ऐसा कोई नया साधन निकालो। बाकी बापदादा बंगाल के जोन (इस्टर्न जोन) में वृद्धि को देख करके खुश है। अच्छा। तो पुण्य जमा किया और यह पुण्य की पूंजी साथ में जायेगी। हाथ खाली नहीं जायेंगे। पुण्य की पूंजी साथ में ले जायेंगे। जितना पुण्य जमा करने चाहो उतना कर सकते हो। बाकी हिम्मत अच्छी की है, हर एक एरिया के सेवासाथी अच्छे हैं। यज्ञ सेवा में पहुंच भी गये हैं और सफल भी किया है। ईस्टर्न में बहुत नदियां इकट्ठी है। बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम, नेपाल, तामिलनाडु, आधी सभा है। इतने योग्य बनाया है, इसकी बहुत-बहुत बधाई हो। देखो, टी.वी. में देखो कितने हैं। बहुत अच्छे अच्छे हैं। हाथ हिलाओ। बहुत अच्छा। बापदादा को खुशी है कि यज्ञ सेवा से कितना प्यार है और कितने पहुंच गये हैं। अभी 5 ही नदियां मिलके कोई नया प्लैन बनाओ। आवाज फैलाने का तो किया, अभी और कुछ करो। बाकी बापदादा को खुशी

है, कि 5 ही तरफ की संख्या बहुत अच्छी आई है। इतने यहाँ हैं, वहाँ कितने होंगे, इतनी वृद्धि की है, इसकी सब परिवार को भी खुशी है, बापदादा को भी खुशी है। तो अभी स्व परिवर्तन और सेवा में नवीनता इसकी प्राइज लेना। नम्बर लेंगे ना। 5 हैं, और बड़े बड़े हैं छोटे नहीं हैं। कमाल करके दिखाना। आपस में मीटिंग करके कोई नवीनता का प्लैन निकालो क्योंकि अभी कई आत्मायें ऐसी हैं जो सुनते हैं ना, मेला है, प्रदर्शनी है, यात्रायें हैं, कानफ्रेन्स है, तो वह समझते हैं यह तो हमने कर लिया है, देख लिया है। इसलिए नवीनता निकालो। बाकी अच्छी हिम्मत रखी है। बाप की विशेष 5 ही को बहुत-बहुतदिल की दुआयें। वरदान भी है, वरदान बतायें कौन सा है? अमरभव का वरदान है। अमर हैं, अमर रहेंगे और बापदादा के साथ अमरलोक में चलेंगे। चलेंगे ना! पहले जन्म में आना। दूसरे तीसरे में नहीं आना। सभी को उमंग है ना। पहले साथ चलेंगे अपने घर में फिर राज्य में जब आयेंगे तो पहले जन्म में आना। दूसरे तीसरे में मजा नहीं आयेगा। पहले जन्म में कौन आयेंगे? सभी आयेंगे। पहले जन्म की विधि का पता है ना! विधि का पता है - जो पहला नम्बर चार ही सबजेक्ट में होंगे, एक सबजेक्ट भी कम नहीं। सब सबजेक्ट में पहला नम्बर। वह पहले जन्म में साथी बनेंगे। हैं हिम्मत? कोई भी देखो स्थूल पढ़ाई में भी अगर एक सबजेक्ट में भी फेल होते हैं, कम मार्क्स लेते हैं तो वह नम्बरवन तो नहीं आता ना। तो वन जन्म में आना अर्थात् वन नम्बर में आना। मंजूर है। अभी हाथ उठाओ। सोचके हाथ उठाना। अच्छा है। अमर रहना और अमर बनाना। अच्छा।

(तामिलनाडु जोन में 12 ज्योर्तिलिंगम् दिखा करके योग की अनुभूति करा रहे हैं, छोटे छोटे स्थानों में यह सेवा बहुत अच्छी तरह से हो रही है, इसमें खर्चा बहुत कम है) सफलता है? अच्छा है, मुबारक है। यह भी देखो नई इन्वेन्शन की ना, ऐसे और भी कोई नई इन्वेन्शन करो और जगह जगह पर ट्रायल करके देखो कम खर्चा है और है भी शिव के प्रतिमा की यादगार। तो सबकी बुद्धि में एक बाप की यादगार रहेगी। अच्छा है। रिजल्ट तो ठीक है। अभी और भी करके देखो। अच्छा है। सभी को सुनाना क्लास में तो कैसे करते हैं, क्या होता है, अनुभव सुनाना। बाकी अच्छा है। बधाई हो। अच्छा बिहार वालों ने कुछ किया है? (बिहार में आई बहार इसका एक प्रोजेक्ट बनाया है, बिहार में जहाँ जहाँ सन्देश नहीं पहुंचा है, उसे इस वर्ष में पूरा करेंगे, हर महीने नया सेवाकेन्द्र खोलेंगे) अच्छा किया क्योंकि बिहार में देखा गया है कि ज्यादा में ज्यादा सन्देश मिलना चाहिए। प्रोग्राम बनाया है, यह उमंग उत्साह की मुबारक। अभी बहार

आयेगी ना। तो बहार को सब देखेंगे, मजा लेंगे ना बहार का। अच्छा। सेवा का तो सब जो भी कर रहे हैं, हर जोन में कोई न कोई सेवा हो रही है, हर वर्ग भी कर रहा है, सेवा का उमंग उत्साह अच्छा है और अच्छा रहना चाहिए। ठीक है ना। अच्छा।

डबल विदेशी:- डबल विदेशी अर्थात् डबल पुरूषार्थी। बापदादा ने अभी नाम रखा है डबल पुरूषार्थी। हैं? डबल पुरूषार्थी हैं? जो समझते हैं वर्तमान समय डबल पुरूषार्थ का लक्ष्य है और कर भी रहे हैं, वह हाथ उठाओ। डबल पुरूषार्थ। डबल? बहुत अच्छा। डबल पर तो ताली बजाओ। अच्छा है। आपको देख करके सब खुशी से आगे बढ़ने का लक्ष्य रखेंगे। और आज देख रहे हैं कि विदेश के जो मेन क्वालिटी है, सर्विसएबुल, नॉलेजफुल, सक्सेसफुल वह पहुंच गई है। और मीटिंग भी अच्छी कर रहे हैं। पहली मीटिंग का समाचार तो बापदादा ने सुना कि सभी इन्टरनेशनल हर देश के विशेष आत्मायें मिलकर जो बनाया है वह बहुत अच्छा और सहज एकमत से सहज पास हो गया। तो आप विशेष आत्मायें जो निमित्त बनी उनको बापदादा पदम पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। पुराने पुराने फाउण्डेशन आये हैं। बापदादा को खुशी होती है। पाण्डव भी कम नहीं हैं। पाण्डव भी एक दो से आगे हैं और शक्तियां भी एक दो से आगे हैं। अच्छा। सभी बापदादा के वरदानों को अमर बनाने के लिए सहज विधि यह अपनाओ कि अमृतवेले और साथ में कर्मयोगी बनने के समय भी बार-बार वरदान को रिवाइज कर स्वरूप में स्थित हैं! या नहीं है तो अपने को वरदान के स्वरूप में स्थित करो। बार-बार रिवाइज करो। बापदादा तो दे देते हैं वरदान, लेकिन वरदान को कायम रखने के लिए बार-बार रिवाइज करके स्वरूप में लाओ। अनुभव करो उस वरदान का। रूहानी नशे का अनुभव करो तो वह वरदान आपका अमर वरदान हो जायेगा क्योंकि वरदान के पात्र आप विशेष आत्मायें हो। भक्तों को भी वरदान मिलता है लेकिन वह अल्पकाल का, एक जन्म के लिए है। आपका संगम का वरदान जन्म जन्मान्तर साथ रहता है। इसलिए वरदान को स्वरूप में लाते रहेंगे तो वरदान की सफलता का अनुभव करते रहेंगे। सिर्फ बुद्धि में नहीं स्वरूप में लाओ। उस नशे में रहो। फलक में रहो। फलक रहे मैं वरदाता की वरदानी हूँ। डायरेक्ट वरदाता ने वरदान दिया है। वरदान को अमर बनाओ, कभी कभी वाला नहीं। और डबल विदेशियों के ऊपर सभी ब्राह्मण आत्माओं का विशेष स्नेह है क्योंकि आपने जो आदि भारत के सेवाधारी हैं उनको बहुत सहयोग दिया है। विश्व कल्याणकारी का जो बाप ने टाइटल दिया उसको साकार रूप में भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न कलचर और भिन्न-भिन्न भाषायें, उसमें

आप सभी विश्व कल्याण की सेवा में सफलता देने में सहयोगी बने। इसीलिए भारतवासियों को आपकी सेवा पर बहुत-बहुत स्नेह है। अच्छा।

विशेष जो पहली मीटिंग वाले आये हैं वह हाथ उठाओ। कान्स्टीट्युशन की मीटिंग वाले ऊंचा हाथ उठाओ। अच्छा है। बापदादा को संगठन बहुत अच्छा लगता है। और मेहनत प्यार से की है, थके नहीं हैं। उमंग उत्साह और अथकपन से किया, भारत वालों ने भी और डबल विदेशियों ने भी बहुत अच्छा किया है। बापदादा को भी पसन्द है। भारत के भी उठो। तीनों पाण्डवों को विशेष बधाई है क्यों बधाई है? क्योंकि ढांचा आपने बनाया। और डबल विदेशियों को इस बात की बधाई है कि जो भी बना उसमें सहयोग और समय देकरके फाइनल किया। देखेंगे नहीं कहा, कर लिया, इसकी बापदादा को खुशी है। बधाई हो, बधाई हो, सभी को। भारत वालों को भी और डबल विदेशियों को भी, शक्तियों को भी बधाई। अभी ऐसा माइक, जो बापदादा ने सुनाया, विशेष माइक देखते हैं कहाँ से निकलता है, भारत से निकलता है या विदेश से निकलता है। हर एक सोचता है हम करेंगे, यह तो आपका उमंग, आपका चेहरा दिखा रहा है। अच्छा।

मीडिया विंग और स्पार्क विंग वाले आये हैं:- (गीत गाया - हम होंगे कामयाब एक दिन....) दोनों ही अपना अपना कार्य कर रहे हैं। अभी बापदादा को समाचार मिलते रहते हैं। तो मीडिया भी दिनप्रतिदिन आगे बढ़ रहा है। जो टी.वी. में प्रोग्राम्स आते हैं वह आवाज अच्छा फैला रहे हैं। अभी पांव तो रख लिया है, अखबारों में भी अभी मेहनत के बिना जगह दे देते हैं और टी.वी. में भी अभी सहज जगह मिलती रहती है, चांस मिलता है। तो इतना तो किया है, तो मीडिया को भी मुबारक है। अभी कोशिश करो कि विदेश में अभी शुरू तो हुआ है, विदेश में भी टी.वी. में कोई कोई समय तो जाता है लेकिन विदेश और देश का इतना नजदीक का कनेक्शन हो जाए जो चारों तरफ आवाज फैलता जाए। बाकी मेहनत की सफलता मिली है यह बापदादा को भी अच्छा लगता है। मेहनत की है फल भी मिला है। और स्पार्क वाले भी अपना प्लैन बना रहे हैं, अच्छा है अभी ऐसा कुछ करके दिखाओ जो जैसे साइंस प्रत्यक्ष फल दिखाती है, ऐसे साइलेन्स की शक्ति इतना स्पष्ट और सहज प्रत्यक्ष रूप में अनुभव कराये जो सब कहें ब्रह्माकुमारियों के पास सहज साधन है। इन्वेन्शन कर रहे हैं और होगा भी। सब बुद्धि अच्छी चला रहे हैं तो बुद्धि द्वारा कोई न कोई प्रत्यक्ष

फल निकल आयेगा। अच्छा है। मेहनत अच्छी है, फल निकल रहा है, निकलता रहेगा, यह तो होना ही है। अच्छा।

अभी एक सेकण्ड में, एक सेकण्ड हुआ, एक सेकण्ड में सारी सभा जो भी जहाँ है वहाँ मन को एक ही संकल्प में स्थित करो मैं बाप और मैं परमधाम में अनादि ज्योतिबिन्दु स्वरूप हूँ, परमधाम में बाप के साथ बैठ जाओ। अच्छा। अभी साकार में आ जाओ। अभी वर्तमान समय के हिसाब से मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास, जो कार्य कर रहे हो उसी कार्य में एकाग्र करो, कन्ट्रोलिंग पावर को ज्यादा बढ़ाओ। मन-बुद्धि संस्कार तीनों के ऊपर कन्ट्रोलिंग पावर। यह अभ्यास आने वाले समय में बहुत सहयोग देगा। वायुमण्डल के अनुसार एक सेकण्ड में कन्ट्रोल करना पड़ेगा। जो चाहे वही हो। तो यह अभ्यास बहुत आवश्यक है। इसको हल्का नहीं करना। क्योंकि समय पर यही अन्त सुहानी करेगा।

अच्छा - चारों ओर के डबल तख्तनशीन, बापदादा के दिलतख्तनशीन, साथ में विश्व राज्य तख्त अधिकारी, सदा अपने अनादि स्वरूप, आदि स्वरूप, मध्य स्वरूप, अन्तिम स्वरूप में जब चाहे तब स्थित रहने वाले सदा सर्व खज़ानों को स्वयं कार्य में लगाने वाले और औरों को भी खज़ानों से सम्पन्न बनाने वाले सर्व आत्माओं को बाप से मुक्ति का वर्सा दिलाने वाले ऐसे परमात्म प्यार के पात्र आत्माओं को बापदादा का यादप्यार, दिल की दुआयें और नमस्ते।

दादियों से:- सभी को अच्छा लगता है, पुराने आदि रत्नों को देख करके सभी को खुशी होती है। (मनोहर दादी से) चाहे क्लास कराओ नहीं कराओ, लेकिन देख करके भी खुशी होती है। मिलते रहो, हंसाते रहो। हर एक को कोई न कोई वरदान देते रहो। कुछ भी हो लेकिन फिर भी आदि रत्नों से जो भासना आती हैं ना वह और ही आती है। इसलिए अपना कार्य करते रहो। सबको बहलाते रहो। खुश हो जाते हैं ना। (परदादी से) मधुबन में पहुंच जाते हैं ना तो देखकर सब खुश हो जाते हैं। आप भी खुश होती हो। अच्छा है, हिसाब अपना काम कर रहा है, आप अपना काम कर रही हो। अच्छा लगता है, संगठन होता है ना तो सबको खुशी होती है। अच्छा किया है, अपने हिसाब किताब को शार्टकट कर रही हो। अच्छा, सब अच्छा है। सब ठीक चल रहा है। (मोहिनी बहन, मुन्नी बहन से) दादी भी देख करके खुश हो रही है। बापदादा तो खुश है ही, बापदादा तो सदा बच्चों को देख कर खुश होते हैं, कार्य को

देख करके भी खुश होते हैं। अच्छा है मिलकर एक दो के सहयोगी बनके जी हाँ, जी हाँ करके चल रहे हैं, चलते रहेंगे। सब खुश हैं ना।

(रमेश भाई ने उषा बहन की तबियत का समाचार सुनाया, आपरेशन हुआ है) वह थोड़ा बहुत होता है, ठीक हो जायेगी। कटकुट होता है तो थोड़ा बहुत फर्क पड़ता है, ठीक हो जायेगी आप अपनी तबियत ठीक करो, ना ना नहीं करो, जो चाहिए वह देते जाओ। जिम्मेवारी है ना। साथी भी बनाते जाओ और अपने को भी बहुत अच्छी रीति से चलाते चलो। ज्यादा बिजी नहीं रखो। थोड़ा थोड़ा सहयोगी बनाते जाओ। बाकी अच्छा कर रहे हैं, अभी तो रिजल्ट बहुत अच्छी है, इन्टरनेशनल हो गया। सभी एक मत होके और निश्चयबुद्धि होके बैठे तो हो गया। सभी की मदद है। लेकिन साकार में तो तीनों एकमत होके और हाँ जी हाँ जी करके घाट तो बनाया बाकी थोड़ा थोड़ा हीरे गढ़ दिये तो अच्छा हो गया। तो मुबारक हो, तीनों को मुबारक हो।

(बृजमोहन भाई से) देखो अपने विचार यूज किया ना, लक्ष्य रखा करना ही है, हो गया ना। इतने वर्ष नहीं हुआ, अभी सभी की बुद्धियों में एक ही संकल्प रहा, करना ही है, सभी का। समय लगा लेकिन सफलता मिली।

तीनों वरिष्ठ भाईयों तथा विदेश की 6 बड़ी बहिनों से:- बापदादा को यह खुशी हुई कि चाहे भाईयों ने चाहे शक्तियों ने लक्ष्य रखा करना ही है तो सहज हो गया ना। टाइम तो देना पड़ता है लेकिन हुआ तो सहज ना। ज्यादा डिसकस तो नहीं हुई ना। तो यह भी एक एक्जैम्पुल बना कार्य करने का।

विदेश के पाण्डवों से: (यह बैकबोन थे) बैकबोन आप थे, निमित्त यह थे। सभी ने जैसे एक कार्य निश्चयबुद्धि होके सफल किया तो इससे सिद्ध है कि सफलता आपके हाथ में है। जो चाहे वह कर सकते हो। यह अनुभव हुआ। खुश हुए। अभी समझा कि संगठन में एक संकल्प दृढ़ता का करने से सब पहाड़ भी राई बन सकता है, रूई बन सकता है। हो सकता है ना। हो सकता है? हुआ ही पड़ा है। शक्तियों का भी शुभ संकल्प है, बापदादा कहेंगे विशेष निमित्त थोड़े बनें लेकिन सबका जो शुभ संकल्प था ना कि करना ही है, उसने काम किया। तो जैसे अभी इन्टरनेशनल फैंसला मिलके किया और प्रैक्टिकल प्रत्यक्ष देखा कि हो गया, ऐसे सदा करते रहना। कोई मुश्किल नहीं है। कितनी भुजायें हैं। हैं तो एक ब्रह्मा बाप की भुजायें। तो भुजाओं ने कमाल तो दिखाई ना। ऐसे ही संगठन को बढ़ाते रहना। एक दो के सहयोगी रहना। ठीक है ना। बापदादा तो समझते हैं कि इस ग्रुप को कोई विशेष यादगार देना चाहिए। यादगार में

एक वरदान याद रखना - कोई भी कार्य करो अमरभव का वरदान पहले याद करो। तो अमर ही होगा। ठीक है ना। अच्छा, बहुत अच्छा। न्युयार्क की मोहिनी बहन ने डिनीस बहन की याद दी: उसको कहना कि आप भी एक डबल विदेशियों में एक्जैम्पुल हो। इशारे में समझने वाली हो। मुबारक हो। अभी इसी ढंग से चलाते चलो। सफलता का वरदान है। किसी द्वारा सफल हो जाता है।

अन्नपूर्णा बहन (चेन्नई):- अभी आपकी शक्ल में बीमारी नहीं है, ऐसे ही रहना। बस मुस्कराती रहना, आपकी दवाई यही है मुस्कराती रहना। दवाई भले करो लेकिन मुस्कराती रहो।

30-11-2008 "फुलस्टाप लगाकर सम्पूर्ण पवित्रता की धारणा कर, मन्सा सकाश द्वारा सुख-शान्ति की अंचली देने की सेवा करो"

आज बापदादा चारों ओर के महान बच्चों को देख रहे हैं। क्या महानता की? जो दुनिया असम्भव कहती है उसको सहज सम्भव कर दिखाया वह है पवित्रता का व्रत। आप सभी ने पवित्रता का व्रत धारण किया है ना! बापदादा से परिवर्तन का दृढ़ संकल्प का व्रत लिया है। व्रत करना अर्थात् वृत्ति द्वारा परिवर्तन करना। क्या वृत्ति परिवर्तन की? संकल्प किया हम सब भाई-भाई हैं इस वृत्ति परिवर्तन द्वारा कितनी बातों में भक्ति में भी व्रत लेते हैं लेकिन आप सबने बाप से दृढ़ संकल्प किया क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है पवित्रता और पवित्रता द्वारा ही परमात्म प्यार और सर्व परमात्म प्राप्तियां हो रही हैं। महात्मा जिसको कठिन समझते हैं असम्भव समझते हैं और आप पवित्रता को स्वधर्म समझते हो। बापदादा देख रहे हैं कई अच्छे अच्छे बच्चे हैं जिन्होंने संकल्प किया और दृढ़ संकल्प द्वारा प्रैक्टिकल में परिवर्तन दिखा रहे हैं। ऐसे चारों ओर के महान बच्चों को बापदादा बहुत-बहुत दिल से दुआयें दे रहे हैं।

आप सभी भी मन वचन कर्म वृत्ति दृष्टि द्वारा पवित्रता का अनुभव कर रहे हो ना! पवित्रता की वृत्ति अर्थात् हर एक आत्मा प्रति शुभ भावना शुभ कामना। दृष्टि हर एक आत्मा को आत्मिक स्वरूप में देखना स्वयं को भी सहज सदा आत्मिक स्थिति में अनुभव करना। ब्राह्मण जीवन का महत्व मन वचन कर्म की पवित्रता है। पवित्रता नहीं तो ब्राह्मण जीवन का जो गायन है सदा पवित्रता के बल से स्वयं भी स्वयं को दुआ देते हैं क्या दुआ देते? पवित्रता द्वारा सदा स्वयं को भी खुश अनुभव करते और दूसरों को भी खुशी देते। पवित्र आत्मा को तीन विशेष वरदान मिलते हैं - एक स्वयं स्वयं को वरदान देता जो सहज बाप का प्यारा बन जाता। 2-वरदाता बाप का नियरेस्ट और डियरेस्ट बच्चा बन जाता इसलिए बाप की दुआयें स्वत: प्राप्त होती हैं और सदा प्राप्त होती हैं। तीसरा - जो भी ब्राह्मण परिवार के विशेष निमित्त बने हुए हैं उन्हों द्वारा भी दुआयें मिलती रहती। तीनों की दुआओं से सदा उड़ता रहता और उड़ाता रहता। तो आप सभी भी अपने से पूछो अपने को चेक करो तो पवित्रता का बल और पवित्रता

का फल सदा अनुभव करते हो? सदा रूहानी नशा दिल में फलक रहती है? कभी-कभी कोई कोई बच्चे जब अमृतवेले मिलन मनाते हैं रूहरिहान करते हैं तो मालूम है क्या कहते हैं? पवित्रता द्वारा जो अतीन्द्रिय सुख का फल मिलता है वह सदा नहीं रहता। कभी रहता है कभी नहीं रहता क्योंकि पवित्रता का फल ही अतीन्द्रिय सुख है। तो अपने से पूछो मैं कौन हूँ? सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में रहते वा कभी-कभी? अपने को कहलाते क्या हो? सभी अपना नाम लिखते तो क्या लिखते हो? बी.के. फलाना.. बी.के. फलानी। और अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान कहते हो। सब हैं ना! मास्टर सर्वशक्तिवान हैं? जो समझते हैं हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं सदा कभी-कभी नहीं वह हाथ उठाओ। सदा? देखना सोचना सदा हैं? डबल फारेनर्स नहीं हाथ उठा रहे हैं थोड़े उठा रहे हैं। टीचर्स उठाओ हैं सदा? ऐसे ही नहीं उठाओ जो सदा हैं वह सदा वाली उठाओ। बहुत थोड़े हैं। पाण्डव उठाओ पीछे वाले बहुत थोड़े हैं। सारी सभा नहीं हाथ उठाती। अच्छा मास्टर सर्वशक्तिवान हैं तो उस समय शक्तियां कहाँ चली जाती? मास्टर हैं इसका अर्थ ही है मास्टर तो बाप से भी ऊंचा होता है। तो चेक करो - अवश्य प्युरिटी के फाउण्डेशन में कुछ कमज़ोर हो। क्या कमज़ोरी है? मन में अर्थात् संकल्प में कमज़ोरी है बोल में कमज़ोरी है या कर्म में कमज़ोरी है या स्वप्न में भी कमज़ोरी है क्योंकि पवित्र आत्मा का मन-वचन-कर्म सम्बन्ध-सम्पर्क स्वप्न स्वत: शक्तिशाली होता है। जब व्रत ले लिया वृत्ति को बदलने का तो कभी कभी क्यों? समय को देख रहे हो समय की पुकार भक्तों की पुकार आत्माओं की पुकार सुन रहे हो और अचानक का पाठ तो सबको पक्का है तो फाउण्डेशन की कमज़ोरी अर्थात् पवित्रता की कमज़ोरी। अगर बोल में भी शुभ भावना शुभ कामना नहीं पवित्रता के विपरीत है तो भी सम्पूर्ण पवित्रता का जो सुख है अतीन्द्रिय सुख उसका अनुभव नहीं हो सकता क्योंकि ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य ही है असम्भव को सम्भव करना। उसमें जितना और उतना शब्द नहीं आता। जितना चाहिए उतना नहीं है। तो कल अमृतवेले विशेष हर एक अपने को दूसरे को नहीं सोचना दूसरे को नहीं देखना लेकिन अपने को चेक करना - कितनी परसेन्टेज़ में पवित्रता का व्रत निभा रहे हैं? चार बातें चेक करना - एक वृत्ति दूसरा - सम्बन्ध-सम्पर्क में शुभ भावना शुभ कामना यह तो है ही ऐसा नहीं। लेकिन उस आत्मा प्रति भी शुभ भावना। जब आप सबने अपने को विश्व परिवर्तक माना है है सभी? अपने को समझते हैं कि हम विश्व परिवर्तक हैं? हाथ उठाओ। इसमें उठाते हैं। इसमें तो बहुत अच्छे हाथ उठाये हैं मुबारक हो इसमें भी।

लेकिन बापदादा एक आप सभी से प्रश्न पूछते हैं? पूछें? प्रश्न पूछें? जब आप विश्व परिवर्तक हो तो विश्व परिवर्तन में यह प्रकृति 5 तत्व भी आ जाते हैं उन्हों को परिवर्तन कर सकते और अपने को या साथियों को परिवार को परिवर्तन नहीं कर सकते? विश्व परिवर्तक अर्थात् आत्माओं को प्रकृति को सबको परिवर्तन करना। तो अपना वायदा याद करो सभी ने बाप से वायदा कई बार किया है लेकिन बापदादा यही देख रहे हैं कि समय बहुत फास्ट आ रहा है सबकी पुकार बहुत बढ़ रही है तो पुकार सुनने वाले और परिवर्तन करने वाले उपकारी आत्मायें कौन हैं? आप ही हो ना!

बापदादा ने पहले भी सुनाया है पर उपकारी वा विश्व उपकारी बनने के लिए तीन शब्द को खत्म करना पड़ेगा - जानते तो हो। जानने में तो होशियार हो बापदादा जानता है सभी होशियार हैं। एक पहला शब्द है पराचिंतन परदर्शन और तीसरा है परमत इन तीनों ही पर शब्द को खत्म कर पर उपकारी बनेंगे। जो विघ्न रूप बनता है वह यह तीन शब्द याद है ना! नई बात नहीं है। तो कल चेक करना अमृतवेले बापदादा भी चक्कर लगाता है देखेंगे क्या कर रहे हो? क्योंकि अभी आवश्यकता है समय प्रमाण पुकार प्रमाण हर एक दु:खी आत्मा को मन्सा सकाश द्वारा सुख शान्ति की अंचली देना। कारण क्या है? बापदादा कभी-कभी बच्चों को अचानक देखते हैं क्या कर रहे हैं? क्योंकि बच्चों से प्यार तो है ना और बच्चों के साथ जाना है अकेला नहीं जाना है। साथ चलेंगे ना! चलेंगे! चलेंगे! साथ चलेंगे? यह आगे वाले नहीं उठा रहे हैं? नहीं चलेंगे? चलना है ना! बापदादा भी बच्चों के कारण एडवांस पार्टी भी आपकी दादियां आपके विशेष पाण्डव आप सबका इन्तजार कर रहे हैं उन्होंने भी दिल में पक्का वायदा किया है कि हम सब साथ में चलेंगे। थोड़े नहीं सबके सब साथ चलेंगे। तो कल अमृतवेले अपने को चेक करना कि किस बात की कमी है? क्या मन्सा की वाणी की वा कर्मणा में आने की। बापदादा ने एक बारी सभी सेन्टर्स का चक्कर लगाया। बतायें क्या देखा? कमी किस बात की है? तो यही दिखाई दिया कि एक सेकण्ड में परिवर्तन कर फुलस्टाप लगाना इसकी कमी है। जब तक फुलस्टाप लगाओ तब तक पता नहीं क्या क्या हो जाता है। बापदादा ने सुनाया है कि एक लास्ट टाइम की लास्ट एक घड़ी होगी जिसमें फुलस्टाप लगाना पड़ेगा। लेकिन देखा क्या? लगाना फुलस्टाप है लेकिन लग जाता है क्वामा दूसरों की बातें याद करते यह क्यों होता यह क्या होता इसमें आश्चर्य की मात्रा लग जाती। तो फुलस्टाप नहीं लगता लेकिन क्वामा आश्चर्य की निशानी और क्यूं क्वेश्चन की क्यू लग जाती। तो इसको चेक करना। अगर फुलस्टाप

लगाने की आदत नहीं होगी तो अन्त मते सो गति श्रेष्ठ नहीं होगी। ऊंची नहीं होगी। इसलिए बापदादा होमवर्क दे रहे हैं कि खास कल अमृतवेले चेक करना और चेंज करना पड़ेगा। एक सप्ताह फुलस्टाप सेकण्ड में लगाने का बार-बार अभ्यास करो और 18 जनवरी में जनवरी का मास सभी को बाप समान बनने का उमंग आता है तो 18 जनवरी में सभी को अपनी चिटकी लिख करके बाक्स में डालना है कि 18 तारीख तक क्या रिजल्ट रही? फुलस्टाप लगा वा और मात्रायें लग गई? पसन्द है? पसन्द है? कांध हिलाओ क्योंकि बापदादा का बच्चों से बहुत प्यार है अकेला नहीं जाने चाहता तो क्या करेंगे? अभी फास्ट तीव्र पुरूषार्थ करो। अभी ढीला-ढाला पुरूषार्थ सफलता नहीं दिला सकेगा।

प्युरिटी को पर्सनैलिटी, रीयल्टी, रॉयल्टी कहा जाता है। तो अपनी रॉयल्टी को याद करो। अनादि रूप में भी आप आत्मायें बाप के साथ अपने देश में विशेष आत्मायें हो। जैसे आकाश में विशेष सितारे चमकते हैं ऐसे आप अनादि रूप में विशेष सितारा चमकते हो। तो अपने आदिकाल की रॉयल्टी याद करो। फिर सतयुग में जब आते हैं तो देवता रूप की रॉयल्टी याद करो। सभी के सिर पर रॉयल्टी की लाइट का ताज है। अनादि आदि कितनी रॉयल्टी है। फिर द्वापर में आओ तो भी आपके चित्रों जैसी रॉयल्टी और किसकी नहीं है। नेताओं के अभिनेताओं के धर्म आत्माओं के चित्र बनते हैं लेकिन आपके चित्रों की पूजा और आपके चित्रों की विशेषता कितनी रॉयल है। चित्र को देख कर ही सब खुश हो जाते हैं। चित्रों द्वारा भी कितनी दुआयें लेते हैं। तो यह सब रॉयल्टी पवित्रता की है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का जन्म सिद्ध अधिकार है। पवित्रता की कमी समाप्त होना चाहिए। ऐसे नहीं हो जायेगा उस समय वैराग्य आ जायेगा तो हो जायेगा बातें बहुत अच्छी-अच्छी सुनाते हैं। बाबा आप फिक्र नहीं करो हो जायेगा। लेकिन बापदादा को इस जनवरी मास में स्पेशल पवित्रता में हर एक को सम्पन्न करना है। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता है। व्यर्थ बोल व्यर्थ रूप बोल का जिसको कहते हैं क्रोध का अंश रोब संस्कार ऐसे बनाओ जो दूर से ही आपको देख पवित्रता के वायब्रेशन लें क्योंकि आप जैसी पवित्रता जो रिजल्ट में आत्मा भी पवित्र शरीर भी पवित्र डबल पवित्रता प्राप्त है। जब भी कोई भी बच्चा पहले आता है तो बाप का वरदान कौन सा मिलता है? याद है? पवित्र भव योगी भव। तो दोनों बात को एक पवित्रता और दूसरा फुलस्टाप योगी। पसन्द है? बापदादा अमृतवेले चक्र लगायेंगे सेन्टरों के भी चक्र लगायेंगे। बापदादा तो एक सेकण्ड में चारों

ओर का चक्र लगा सकता। तो इस जनवरी अव्यक्ति मास का कोई नया प्लैन बनाओ। मन्सा सेवा मन्सा स्थिति और अव्यक्त कर्म और बोल इसको बढ़ाओ। तो 18 जनवरी को बापदादा सभी की रिजल्ट देखेंगे। प्यार है ना 18 जनवरी को अमृतवेले से प्यार की ही बातें करते हो। सभी उल्हना देते हैं बाबा अव्यक्त क्यों हुआ? तो बाप भी उल्हना देता है कि साकार में होते बाप समान कब तक बनेंगे?
तो आज थोड़ा सा विशेष अटेन्शन खिंचवा रहे हैं। प्यार भी कर रहे हैं सिर्फ अटेन्शन नहीं खिंचवा रहे हैं प्यार भी है क्योंकि बाप यही चाहते हैं कि मेरा एक बच्चा भी रह नहीं जाए। हर कर्म की श्रीमत चेक करना अमृतवेले से लेके रात तक जो भी हर कर्म की श्रीमत मिली है वह चेक करना। मजबूत है ना! साथ चलना है ना! चलना है! हाथ उठाओ। चलना है? अच्छा। टीचर्स? अच्छा। पीछे वाले हाथ उठाओ। कुर्सा वाले हाथ उठाओ पाण्डव हाथ उठाओ। तो समान बनेंगे तब तो हाथ में हाथ देकर चलेंगे ना। करना ही है बनना ही है यह दृढ़ संकल्प करो। 15- 20 दिन यह दृढ़ता रहती है फिर धीरे-धीरे थोड़ा अलबेलापन आ जाता है। तो अलबेलापन को खत्म करो। ज्यादा में ज्यादा देखा है एक मास फुल उमंग रहता है दृढ़ता रहती है फिर एक मास के बाद थोड़ा थोड़ा अलबेलापन शुरू हो जाता है। तो अभी यह वर्ष समाप्त होगा तो क्या समाप्त करेंगे? वर्ष समाप्त करेंगे कि वर्ष के साथ जो भी जिस संकल्प में भी धारणा में भी कमज़ोरी है उसको समाप्त करेंगे? करेंगे ना! हाथ नहीं उठाते हैं? तो ऑटोमेटिक दिल में यह रिकार्ड बजना चाहिए अब घर चलना है। सिर्फ चलना नहीं है लेकिन राज्य में भी आना है। अच्छा जो पहली बारी आये हैं बापदादा से मिलने वह हाथ उठाओ।
तो पहली बारी आने वालों को विशेष मुबारक दे रहे हैं। लेट आये हो, टूलेट में नहीं आये हो। लेकिन तीव्र पुरूषार्थ का वरदान सदा याद रखना, तीव्र पुरूषार्थ करना ही है। करेंगे, गे गे नहीं करना, करना ही है। लास्ट सो फास्ट और फर्स्ट आना है। अच्छा। अभी क्या करना है?

सेवा का टर्न पंजाब जोन का है, (पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू कश्मीर, उत्तरांचल)- अच्छा है, यह चांस जो मिलता है वह अच्छा लगता है? स्पेशल है और पंजाब का अर्थ ही है जैसे स्थूल नदियां कहते हैं पावन करती हैं तो पंजाब के पतित-पावन बच्चे, पंजाब को पावन आत्मायें बनाने में तो फर्स्ट नम्बर होंगे ना। देखो पंजाब की एक बात की विशेषता है - तो पहले-पहले आदि जो भाषण किया है, वह महात्मा के निमन्त्रण पर किया है। याद है ना! बच्ची (दादी जानकी) को याद है। और कहाँ भी

महात्माओं की स्टेज पर भाषण का निमन्त्रण मिले, पहला पहला, यह नहीं हुआ है। तो जब पंजाब शेर कहा जाता है, तो शेर का काम तो किया। सभी साधू सन्त के बीच में ललकार की, तो पंजाब शेर तो हुआ ना। अभी भी बच्चे ने (अमीरचन्द भाई ने) लिस्ट दी है, जो बापदादा ने कहा था वी.आई.पी हर एक के सम्बन्ध में कितने कितने है, वह हर वर्ग वाले लिस्ट देवे तो बापदादा को बच्चे की लिस्ट मिली, लिस्ट दी है, ताली बजाओ। अच्छा है। अभी इन सभी को लिस्ट देखी अच्छी है, लेकिन इन्हों की पीठ करो, वी.आई.पी के वी.आई.पी नहीं रहें, पहली स्टेज में तो लाया है लेकिन दूसरी स्टेज है हर कार्य में समय प्रति समय स्नेही सहयोगी बनें। और फिर उसके आगे ब्राह्मण परिवार के साथी बनें, परिवार का अपने को समझें। कहाँ कहाँ के वी.आई.पी आगे बढ़े हैं, बापदादा उन्हों को मुबारक भी दे रहे हैं लेकिन जितनी सेवा इस ज्ञान सरोवर शुरू होते हुई है, जितने वर्ग बने हैं, जितना समय और जितनी सेवा हुई है, उस प्रमाण वी.आई.पी. घरू बन जायें, फोन करो पहुंच जायें, हाँ जी, हाँ जी करें, साथी तो बनें। अभी हर वर्ग यह लक्ष्य रखे सहज सहयोगी बनें, ऐसे नहीं मान देवें, खास सीट देवें तभी आवें। थोड़ा होमली बनाओ। अपने सेन्टर पर, आबू में नहीं आ सकते हैं मानो, तो अपने जोन में भी जो बड़े बड़े सेन्टर हैं उसमें उन्हों को बुलाओ। कम से कम तीन मास या 6 मास में उनसे मिलते रहो, होमली बनाते जाओ। तो समय पर जब यह हालतें बदलेंगी तो समय पर काम में तो आवें। तो सभी वर्ग वाले सुन रहे हैं। कहाँ कहाँ बने भी हैं लेकिन थोड़े बने हैं। तो पंजाब वाले शेर हो, हाँ दोनों हाथ उठाओ। सब शेर हैं। तो पहला नम्बर आप करना, पंजाब के वी.आई पी होमली बन जायें। महात्मायें भी होमली बन जायें। निमन्त्रण पर नहीं आवे खुद कहें हम आयेंगे। अच्छी हैं, वृद्धि तो की है पंजाब में। बापदादा का भी पंजाब से प्यार है क्यों प्यार है? जम्मू कश्मीर उसको भी अपना बनाया है लेकिन थोड़ा और जम्मू कश्मीर का नाम मशहूर है, चाहे पाकिस्तान में, चाहे अमेरिका में.. सबकी नज़र जम्मू कश्मीर पर है। तो वहाँ कोई जलवा निकालो, ऐसे नहीं कि वहाँ की बहिनें करें, आप सहयोग देकर उसमें कुछ ऐसा वन्डरफुल बात करके दिखाओ। थोड़ा अटेन्शन दो नाम बाला हो जायेगा। जिस पर झगड़ा है वहाँ शान्ति का झण्डा फहराओ। ठीक है। संख्या तो बहुत है, एक निर्विघ्न बनो और दूसरा सेवा में शान्ति का झण्डा लहराओ। सबको दिखाई दे झण्डा कि हाँ अशान्ति के स्थान में शान्ति का झण्डा लहर रहा है। ठीक है। अच्छा।

डबल फारेनर्स: अभी डबल विदेशी नहीं अभी डबल तीव्र पुरुषार्थी। ठीक है ना। डबल है? डबल पुरुषार्थी हैं? अच्छा है, आप सबका नाम भी कि इतने देशों के आते हैं, इतने देशों में सेवाकेन्द्र हैं, यह सुनके भी सभी खुश हो जाते हैं। भले अपने अपने देशों में झण्डा नहीं लहराया है, एक लण्डन में झण्डा है, एक ही लण्डन में झण्डा है और कोई देश में है? है हाथ उठाओ। खुली रीति से झण्डा लगा हुआ है? कोई एतराज़ नहीं, अच्छा। कितने देशों में है? 10-12 देशों में होगा? तो यह भी अच्छा है। लेकिन बापदादा को खुशी है कि कई आत्माओं के दिल में तो झण्डा लहराया है। तो आपको देखके खुश होते हैं कि यह वर्ल्ड के सेवाधारी हैं, सिर्फ भारत के सेवाधारी नहीं, विश्व के सेवाधारी हैं। जो टाइटल है ना विश्व सेवाधारी। तो सिर्फ भारत नहीं लेकिन विश्व के कोने कोने में है और अभी तो अच्छी सेवा बढ़ा रहे हैं ना। मुस्लिम देशों में भी सेवा अच्छस है। बापदादा ने समाचार सुना है अच्छा है। कराची का भी प्लैन बनाया है, अच्छा है। जो होगा ड्रामा अच्छे ते अच्छा होगा। जो नये नये शहरों में जो बच्चे रहे हुए हैं वहाँ अभी सेवा के उमंग उत्साह में है और सबसे हिम्मत वाली आपकी एक बच्ची है, वह हिम्मत वाली है। बापदादा उनको रोज़ अमृतवेले वरदान देता है और बच्ची भी एक्यूरेट है। क्या नाम है? (वजीहा) ऐसा काम करके दिखाओ, हिम्मत वाली है, डरती नहीं है। और देखो अपने घर वालों को भी युक्ति से ठीक किया, होशियार है और नैरोबी वालों ने भी बहुत अच्छा पुरुषार्थ किया। उन्हों की विशेषता, नैरोबी के साइड की विशेषता यह है कि बहनें कम हो जाती हैं तो जो स्टूडेन्ट निकले हैं वह सेन्टर सम्भालते हैं यह भी विशेषता है। तो सबकी विशेषता इकट्ठी करके हर एक अपने अपने स्थान को विशेष बनाओ। बाकी अच्छा है डबल पुरुषार्थी अच्छा पुरुषार्थ करके बढ़ रहे हैं लेकिन बाबा चार्ट देखेगा। जो कहा है ना समाचार, वह चार्ट देखेगा सम्पूर्ण पवित्रता का। अच्छा है। लक्ष्य सबका बहुत अच्छा है लेकिन बीच में अलबेलेपन की माया बहुत आती है। अभी उसकी विदाई करना। अलबेलेपन की विदाई और फुलस्टाप का आह्वान। ठीक है ना, करेंगे ना। अलबेलापन नहीं दिखाना। बापदादा ने अलबेलेपन के बहुत खेल देख लिये हैं। अभी सेकण्ड में फुलस्टाप का खेल दिखाना। सबसे जो हिसाब में भी देखो, सबसे सहज फुलस्टाप है। पेन्सिल रखो फुलस्टाप आ गया। अच्छा। डबल विदेशी सदा टर्न लेते रहते हैं यह बहुत अच्छा है, लेते रहना। अच्छा।

दिल वाले, कैड ग्रुप: अच्छा नया कोई प्लैन बनाया है? (गुप्ता जी से) अच्छा, कार्य तो चल रहा है। अभी कोशिश कर रहे हो, गवर्मेन्ट द्वारा आफीशल सबको यह मालूम पड़े कि बिना खर्चे के हार्ट ठीक हो सकती है। पहले सब देखते हैं एक क्वेश्चन पूछते हैं, बापदादा से भी एक क्वेश्चन पूछा है, बतायें। कहते हैं कि ब्राह्मण बच्चों की हार्ट क्यों ठीक नहीं करते, वह क्यों वहाँ जाते? उन्हों की भी ट्रायल करो ना, यह है उन्हों की भी गलती है क्योंकि नियमों पर नहीं चलते, जो परहेज बताई जाती है दूसरे परहेज पूरी करते हैं और ब्राह्मण जो हैं वह अपना घर समझके परहेज कम करते हैं लेकिन ब्राह्मणों में भी ऐसा कोई विशेष एक्जैम्पुल बनाओ जो ब्राह्मण भी समझें कि हम भी कर सकते हैं। बाकी काम अच्छा है, आवाज पहुंचा है लेकिन आवाज थोड़ा बड़ा करो तो चारों ओर फैले। शुभ भावना शुभ कामना भी कार्य कर रही है। हर एक वर्ग को, आगे से आगे जाना है। अच्छा है। और आगे बढ़ो और बढ़ाते चलो। अच्छा।

चारों ओर के महान पवित्र आत्माओं को बापदादा का विशेष दिल की दुआयें, दिल का प्यार और दिल में समाने की मुबारक हो। बापदादा जानते हैं कि जब भी पधरामनी होती है तो ईमेल या पत्र भिन्न-भिन्न साधनों से चारों ओर के बच्चे यादप्यार भेजते हैं और बापदादा को सुनाने के पहले कोई देवे, उसके पहले ही सबके यादप्यार पहुंच जाते हैं क्योंकि ऐसे जो सिकीलधे याद करने वाले बच्चे हैं उनका कनेक्शन बहुत फास्ट पहुंचता है, आप लोग तीन चार दिन के बाद सम्मुख मिलते हो लेकिन उन्हों का यादप्यार जो सच्चे पात्र आत्मायें हैं उनका उसी घड़ी बापदादा के पास यादप्यार पहुंच जाता है। तो जिन्होंने भी दिल में भी याद किया, साधन नहीं मिला, उन्हों का भी यादप्यार पहुंचा है, और बापदादा हर एक बच्चे को पदम पदम पदम गुणा यादप्यार का रेसपान्ड दे रहे हैं।

बाकी चारों ओर अभी दो शब्द की लात-तात लगाओ - एक सम्पूर्ण पवित्रता, सारे ब्राह्मण परिवार में फैलानी है। जो कमज़ोर हैं उसको सहयोग देके भी बनाओ। यह बड़ा पुण्य है। छोड़ नहीं दो, यह तो है ही ऐसा, यह तो बदलना ही नहीं है, यह श्राप नहीं दे दो, पुण्य का काम करो। बदलके दिखायेंगे, बदलना ही है। उनकी उम्मीदें बढ़ाओ, गिरे हुए को गिराओ नहीं, सहारा दो, शक्ति दो। तो चारों ओर खुशनसीब खुशमिजाज, खुशी बांटने वाले बच्चों को बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से: (दादियों की सेवा साथी बहनें ब्राह्मणियों से बापदादा मिल रहे हैं): आप सब भी राज़युक्त हो ना! आप जो निमित्त हो तो आप भी ऐसा अपना रूप बनाओ

स्थिति बनाओ जो सब समझें कि दादी के तरफ से इन्हों से भी कुछ मिला। सिर्फ प्रोग्राम मिला नहीं लेकिन इन्हों से भी कुछ मिला आप दृष्टि से तो दे सकते चेहरे से भी दे सकते हैं। चेहरे और चलन से सेवा में नम्बरवन। हो सकता है? सभी को बापदादा विशेष प्यार करता है। (यह तीनों हाथ नहीं उठाती हैं) बाबा जब कहता है तो हाथ उठाना चाहिए इससे याद रहता है। आज आप चार ही लाडले हो इनकी भी (मोहिनी बहन मुन्नी बहन की) ब्राह्मणियां कहाँ हैं उनको भी बुलाओ। देखो आप सबको ड्युटी बहुत अच्छी मिली हुई है सभी से परिचित हो जाती हो। कोई भी सभी से परिचित नहीं होता है लेकिन आप लोगों की ड्युटी ऐसी है जो सारे ब्राह्मण परिवार से परिचित हो जाती हो। कोई भी नाम लेगा नीलू हंसा प्रवीणा लीला रुकमणि... तो कहेंगे हाँ जानते हैं नाम। तो आप लोग एक सैम्पुल हो तो सैम्पुल देखकर सौदा होता है। तो जो भी निमित्त हो सभी समझो हम एक्जैम्पुल है। दादियों की एक्जैम्पुल। कहेंगी यह भी ऐसी है जैसे मोहजीत की कहानी सुनी है ना कहते हैं गेट वाला भी मोहजीत तो अन्दर क्या होगा। तो आप निमित्त हो ना यह भी एक वरदान है यह ड्युटी मिलना यह भी एक वरदान है कितने नजदीक हो। तो नजदीक का फायदा तो उठाना चाहिए। तो अच्छा है। बापदादा को खुशी है आप लोगों को देखके। आप सब ठीक हो सिर्फ थोड़ा और दादियों का गुण धारण करते जाओ। अच्छा।

परदादी से:- आपकी शक्ल तो सेवा करती है। आपको देख करके ब्रह्मा बाप बहुत याद आता सबको। क्योंकि फॉलो किया है और बच्चों में यह भासना नहीं आयेगी लेकिन आपने फॉलो किया है। फिर भी मधुबन निवासी तो हो गई। मधुबन निवासी। बहुत अच्छा सम्भाल भी अच्छी कर रही हैं। इन्हों को भी सर्टीफिकेट है अच्छा प्यार से कर रही हैं।

शान्तामणि दादी से: (आंख का आपरेशन कराया है) यह तो ठीक हो जायेगी। लेकिन हिम्मत है। आप सबकी हिम्मत को देखकर औरों में भी हिम्मत आती है क्योंकि बीज फाउण्डेशन बहुत अच्छा है फीलिंग में नहीं आते। बीमारी की फीलिंग नहीं है। अपनी मस्ती में रहते। पढ़ाई पर अटेन्शन है। सेवा पर अटेन्शन है। उसकी दुआयें मिल रही हैं। डाक्टर्स भी बहुत खुश होते हैं क्योंकि चिल्लाते नहीं है ना हाय हाय नहीं करते। निर्वैर भाई ने हैदराबाद एकडेमी में चल रहे निर्माण कार्य के बारे में बापदादा को सुनाया: जो कार्य रहा हुआ है उसमें यह जो भी आन्ध्रप्रदेश के हैं उसकी टीचर्स को भी इकठ्ठा करो क्योंकि धन जायेगा ना तो मन भी जायेगा सभी सहयोग देवें कुछ कम

हुआ तो यज्ञ तो है ही लेकिन अगर उनका धन नहीं पड़ता है तो मन भी नहीं जाता। इसलिए उन्हों का संगठन इकठ्ठा करो और हर एक को उमंग दिलाओ। बाकी रहा हुआ कार्य समाप्त करना है उसमें जो अंगुली दे वह अवश्य दे। तो सबको इकठ्ठा करो आन्ध्रप्रदेश थोड़ा आगे आये। अच्छा है अभी तो टर्न आयेगा ना आन्ध्र प्रदेश का। उसमें भी आप विशेष आन्ध्रप्रदेश का संगठन करो और हर मास में या 6 मास में कोई न कोई जाये या कोई मीटिंग बुलाओ तो जब सब ज़ोन मिल रहे हैं तो यह भी मिलें ना तो वह अच्छा हो जाये। ठीक है ना।

रमेश भाई से: तबियत ठीक है। (बाम्बे का समाचार सुनाया) सेन्टर्स तो सब सेफ हैं। फिर भी बाम्बे बाप का है। बाप का परिवार है लेकिन जो बाप ने कहा फुलस्टाप और तपस्या इसको जरूर बढ़ाना है। यह तो कुछ भी नहीं है घर से बाहर नहीं निकल सकेंगे खिड़की नहीं खोल सकेंगे तो क्या करेंगे? इससे भी बहुत कुछ होना है।

बृजमोहन भाई से:- (ओ.आर.सी. के सिन्धी सम्मेलन का समाचार सुनाया) कनेक्शन तो हुआ अभी उनकी पीठ करना। अभी और कनेक्शन में लाना। यह जो फिल्म वाला है वह आपके काम आ सकता है। यह (सिन्धी) रह नहीं जावें फिर भी बाप का अवतरण हुआ है तो रह नहीं जावे। आपका अपना काम है सन्देश देना यह नहीं कहें कि हमको नहीं सुनाया। (आशा बहन से) थोड़ा मेहनत करनी पड़ती है। बाप से मुहब्बत है इसलिए मेहनत नहीं लगती। (अभी ओ.आर.सी. सेवा में दौड़ रहा है) चारों ओर दौड़ना चाहिए। जो भी ज़ोन थोड़े कमज़ोर हैं आपस में नहीं मिलते वहाँ कोई न कोई हर मास जाना चाहिए संगठन करना चाहिए। (दादी जानकी ने कहा इसमें गुल्जार दादी का भी सहयोग चाहिए) एक दो का सहयोग तो चाहिए।

8 बड़ी बहनों ने 5 दिन मौन भट्ठी की है वे बापदादा के सामने आई:- अच्छा यह फरिश्ते आये हैं। फरिश्ते हो ना। यह फरिश्तों की महफिल है। अच्छा स्व में उमंग उत्साह रख के किया ना तो उसकी बहुत बहुत मुबारक है। थोड़े हैं आयेंगे नहीं आयेंगे नहीं सोचा। करना ही है। तो 8 रत्न हो गये। तो 8 रत्नों को देखके सभी को उमंग आयेगा। यह जनवरी मास का जो प्रोग्राम बनायेंगे ना उसमें कोई न कोई ऐसी बात रखो जो सबको उमंग आवे। और उसकी पीठ करें। आप तो खुद जिम्मेवार थे ना तो आपने अपनी जिम्मेवारी सम्भाली। लेकिन दूसरों को पुल करना पड़ेगा। और वायुमण्डल ऐसे हो जाये जैसे मधुबन में प्रैक्टिकल फर्क पड़ जाये। हर एक को सेन्टर में ऐसा वायुमण्डल बनाना है जो गायन है ना घर घर में मन्दिर। तो घर घर में चैतन्य फरिश्तों का मन्दिर

हो। बाकी बापदादा खुश है आप लोगों ने हिम्मत करके किया यह अच्छा किया। तो बापदादा कहेंगे हिम्मते ग्रुप। एक्जैम्पुल बनें। अच्छा लगा ना बहुत अच्छा लगा सहज भी लगा। मेहनत नहीं करनी पड़ी। उठना भी अच्छा नहीं लगता होगा। तो ऐसे घूम जाओ (ताली बजाओ) देखो इन्होंने किस बात की हिम्मत रखी? और बापदादा और परिवार भी सहयोगी बना इन्होंने 5 दिन फुलस्टाप लगाने की भट्ठी की। और 5 ही दिन लगातार कोई भी मिस नहीं हुआ। आदि शुरू भी की और अन्त तक आपके सामने हैं। तो यह पुरूषार्थ अच्छा किया ऐसे आप लोग भी ग्रुप ग्रुप बनाके अन्दर ही अन्दर पुरूषार्थ करना। चलो दो जने हो सेन्टर पर कोई एक सखी को साथी बना दो और अपने बड़े को सुना दो तो क्या है भट्ठी करेंगे ना विशेष नियम बनायेंगे तो उसकी मदद मिलेगी। तो बापदादा को अच्छा लगा। अभी सहज पुरूषार्थ हो गया ना। अभी वहाँ जाके भूल नहीं जाना। बातों में नहीं आ जाना। फुलस्टाप में नम्बरवन लेना। दूसरों को करायेंगे भी और अपना अनुभव भी सुनायेंगे। अच्छा।